प्रसंगथी शुद्ध स्याद्वादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व जव व्यर्थ गया हवे इण समय शुज कर्मोदयें करी मोटी पुण्याइसु मनुष्य गति, आर्यदेश, उत्तम कुल, सपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु, सुगुरुनो सयोग, इत्यादि शुज सामग्री मिली बे, तेम उता जो विषय कषायादिकमांहे तल्लीन हुइने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद कराला, तो प्राप्त हुवेला इष्ट सजोगको विनाश हुयने फेर घणा कालतांई ससारचक्रमाहे परिभ्रमण करणो पडसे एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो सयोग वारंवार मिलणो घणो मुष्कील बे ज्ञानसपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत डुष्कर्मनो बदलो देवण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीजायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंमित पुरुषापासें सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासु हुवे बे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता बे, धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगत्मांहे दूसरी कोइ पण नहीं बे सांसारिक सतति अने सपत्ति केवल अनित्य बे जिहां सुधी शुज कर्मांको उदय रेवे बे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको सयोग आय मिले बे, जद अशुज कर्मांको उदय होवे, ते वखतें सर्व इष्ट वस्तुको वियोग हुयने अनिष्ट सयोगकी प्राप्ति हुवे बे ससारमाहे विवाह आदि आरंजिक कार्य प्रयोजनमाहे हजारा रुपिया मोटा उज्जरगसु खर्च कर देवाबा, सुवो तो फक्त सासारिक इणहीज जवकी यश कीर्त्तिको कारण बे, अने धर्मनिमित्तें जो द्रव्य खर्च होवें तो इण जवना तथा परजवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पिण कारण बे इण वास्ते समस्त जैन बंधुका अत करणमांहे धर्मकी जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण वास्ते तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति द्रव्य अवश्य खर्च होवणो चेहीजें इतरीज हमारी सर्व जैन बंधुने विनति बे

(३) ते पुस्तक छपायने प्रसिद्ध करतां वाचणारा सज्जनलोकांप्रतें इण पुस्तकमांहे दाखल करेला ग्रंथाकी हामे किंचित् सूचना करां छां

(४) इण पुस्तककी आदिमें श्रावकाने नित्य उभयकाल करवा योग्य छे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र छे, तिको अर्थ सहित दाखल कीनो छे कारण श्रावकने कोइ पण शास्त्र वाचणा भणीजणा, तिके सर्व अर्थ सहित भणीजणां चाहिजें कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवें तोहिज वो ग्रथ अनुभव सहित भणीयां कहेंवाय, नहीं जरां सुवाका पाठ प्रमाणें समजवो उणमांहे पण पडिक्कमणादिक छे आवश्यक तो नित्य सांझ सवार क्रिया करती वेला काम आवे छे इण वास्ते उणका अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें. जिणसूं, मात्र मूलपाठ जाणनारा लोकाने जे कांइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वा लोकां सु, अर्थ सहित जाणनारा माहे कितराक दरजे अनुभवकी वृद्धि होवे छे, अने उणका फल पण घतराज दरजे जादा होवे छे, इण प्रमाणें सिद्धातमांहि भगवत फुरमायो छे

(५) उंर, क्रिया करणार पुरुषका आत्माका अध्यवसाय आश्रयी पिण फलकी अधिक न्यूनता कही छे तथापि अर्थ धारणार अने अर्थ न धारणार यां दोनु जिणांका आत्माका अध्यवसाय (प्रणामकी धारा) सरीखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धारणारासु अर्थ धारणाराने अत्यत अधिक फल प्राप्त होवे छे इण वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक छे; इण हेतुसू आवश्यक सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसु सामायिकादि सूत्रकी पाटीया सार्थे पाठका अर्थ पण दाखल कराया छे, ए सर्व हमारा साधर्मी भाई अर्थसहित भणीजणको उद्यम करेल इणतरे हमे पूर्णआशा राखा छा

(६) श्रीजैनधर्ममांहे महान् विद्वान परम पंडित पूज्यश्री श्री १००८ श्रीकानजी रिखजी माहाराजनी सप्रदायना स्वामीजी

श्री १००७ श्री अयवता रिखजी माहाराज तस शिष्य स्वामीजी श्री १००७ श्री तिलोकरिखजी माहाराज महाप्रानाविक हुवा माहाराजसाहेबको जन्म संवत् १९०४की चैत्र वदि ३ के दिन हुवो सवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहेव स्वामीजी श्री अयवतारिखजी माहाराज पासें वैराग्य नाव पामीने मोटा उत्साहसू दीक्षा ग्रहण कीनी सवत् १९३६ को चोमासो दक्षिण देश घोडनदीमाहे करीने अहमदनगर, आंबोरी, हिवरो, पुना, सतारा, औरंगावाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे विचरता नव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाभी ससारसु तारिया ठे सवत् १९४० को चोमासो करणवास्ते आपाढशुद ९ के दिन अहमदनगर शहेरमाहे पधारिया,तणदिन दिन तप चढने सावणवदि २ रविवारके दिन माहाराजसाहेव देवलोक हुवा एसा उत्तम पुरुपाको वियोग घणा नायाने दुःसह हुयने श्री जैनधर्मका महा पंडित पुरुष रत्नमाहेला एक अमुल्यरत्नकी खामी पड गई

(७) स्वामिजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज अल्प आयुष्य माहे,जेम पृथ्वीमंडलमाहे सूर्य प्रकाशकरी अंध कारनो नाश करे ठे, एम मिथ्यात्वरूप अंध कारनो नाश करीने नव्य जीवरूप कमलने विकस्वर करण वास्ते, सिद्धातानुसारें मोटा मोटा ग्रथाकी रचना करी घणा नव्यजीवाने प्रतिबोधी परोपकार करणमाहे मोटो श्रेय लीनो ठे माहाराजसाहेवको स्वनाव चन्द्रनी परें शीतल, समुद्रनी परे गंभीर, मिष्टवचनी, बालब्रह्मचारी करुणाका सागर, इत्यादिक गुणे करी सहित हुयने वा पुरुपामाहे कवित्वशक्ति, वाक्चातुर्य, समयसूचकता श्रीजैनसिद्धात तथा पट्शास्त्रना पारगामी वगैरे अनेक गुण प्रशसनीय हुता माहाराज साहिबका गुणाकी स्तुतिकरां जितरी थोडीज ठे

(८) माहाराजसाहेब निरतर साधु सबधी पडिलेहण, प्रमा

जैन त्रिकाल काउस्सग्ग ध्यान, तथा धर्मसंबधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवरिया पछे शेष रहेला वखतमांहे किंचित् मात्र पण प्रमाद सेवन करता नही थां, पण जैन सिद्धांतमांहेसु आनंद श्रावकादिक महापुरुषांका चरित्रानुसारें चौढालिया, छे ढालिया वगैरेकी रचना करतां हुतां, तथा वैराग्य नावने दर्शावनारी अनेक लावणीया, पद, सवैया, तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणां स्तवन, सझाय, छद, श्रीचन्द्रकेवली, श्रेणिकादिकना चरित्र, रास प्रमुख अनेक छोटा मोटा ग्रंथाकी रचना कीनी छे, अने वे इतरा तो रमणीय छे, के जे ग्रथ वांचणासु जेहवो नावार्थ वा ग्रथामें दरसायो छे, तेवाज नावार्थकी हुवेहुव असर वाचणवालाका मन मांहे वसिया विना रेवेज नही, एसी खुवी माहाराजसाहेबकी कविता मांहे वापरी छे थोडाकालमाहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत नापामें कवितारूपें साठ शीत्तरहजार ग्रंथकी जोड करी जिनधर्मने दीपायो छे

(ए) उपर लिख्या मुजव माहाराज साहेबका रचेला ग्रथ प्रत्येक जैनधर्मी श्रावकने वाचवा नणवा योग्य जाणीने उणमाहेला केइ केइ ग्रथ इण पुस्तकमाहे दाखल करिया छे, जिणने सर्व साधर्मि नाई वाचने नणीजने जरूर धारणा करेला, इणतरेकी हमारी अनिलापा पूर्ण करणमाहे हमारा साधर्मी नाई पछात पडसी नही जो जो ग्रथ इण पुस्तकमाहे दाखल करिया छे, तिके सर्व हमारा साधर्मी नायाने घणाज उपयोगी छे उंर दूसरा श्रावक लोका पासें माहाराजसाहेबकी जोडको ग्रथ घणो शिलकमाहे पडियो छे, पण हाल वे प्रसिद्ध हुवा नही सु मोटी दिलगीरी मालम पडे छे, कारण प्रस्तुतसमयमा विद्वान् पुरुप थोडा लाधे छे, जिणवास्ते पंमित पुरुपाका रचेला ग्रथ जो प्रसिद्ध नही होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किण तरे होसी ? इण वास्ते ज्या श्रावक लोका

पासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांहे प्रमाद करेला नही, एसो हमांने भरोंसो छे

(१०) उ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत हुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते,तथा भव्यजनांकी समकित दृढतर होवण वास्ते,तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण प्रगटकरण वास्तेश्रीदेव गुरु धर्म प्रसादें उपायनु हमारा प्रिय सकल जैन बधुआगल सादर करियो छे

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकने माहाराज साहेबका अतिशयका कारणसू नीचें लिख्या मुजब ज्यां सज्जनलोकां उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत हुवणवास्ते आगाउ मदत दीनी छे,तीके बोहोत प्रशसनीय छे जेम हस पक्षीकी चचूमांहे एहवाज कोई जातना पुगल रह्या छे, के तेहथी तेहनी चचू सदा काल दुधनेज ग्रहण करणका स्वभाववाली होय छे, तेम सद्गुणी जनाका अंत करणना परिणामने विषे एहवाज कोई असमजातिना पुगल रहेला छे, के ते थकी तेहनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्ये करवाना विषेज प्रवर्तमानथकी रहे छे इण प्रमाणेंज सर्व जैनबधु आगासू धर्मको उद्योत करणवास्ते हरएक प्रकारकी मदत करणकी उमेद जादा राखेला, इसीहामे पूर्ण आशा राखाछा

नाव	रूपिया
मुता नवलमलजी किसनदास अहमदनगर	२२५
साह विरदीचदजी चुनीलाल राहाता	२२१
मुता मोकमदासजी हाजारीमल्ल सातारा	२२१
गुगलिया हुकमचदजी नेमीदास अहमदनगर	११५
उस्तवाल पेमराजजी पन्नालाल अहमदनगर	१०१
गुंदेचा माइदासजी छोगमल अहमदनगर	५१
गुंदेचा मोतीचदजी रतनचद अहमदनगर,	५१
मुणोत पनराजजी शिवदास अहमदनगर	५१

मुता हाजार मलजी आगरचद	अहमदनगर	६१
सींगी वनेचदजी दोलतराम	अहमदनगर	६१
गांधी गुलावचदजी रतनचद	आंबोरी	५१
कोटेचा तिलोकचदजी आसकरण	धुलिया	५१
मुता खुबचदजी नूणकरण	हिवडां खानरा	५१
गांधी हिमतमलजी हामीरमल	माहादपटेलकी चिचोंडी	५१
गांधी वछराजजी राजमल	महादपटेलकी चिचोंडी	४१
जमारी माणकचदजी मोतीचद	अहमदनगर	४१
गाधी तेजमलजी राजमल	अहमदनगर	३१
नाहाटा नंदरामजी बालाराम	धुलिया	२५
गांधी किस्तूरचदजी निकनदास	माहादपटेल चिचोंडी	२५
मुता नेमीदासजी श्रेमल	गुलेजगड	२५
मुणोत हुकुमचद जवानमल	हीवडा खानरा	२५
गुदेचा जितमलजी किसनदास	नांदूरवारागाव	२५

क्षमापना

(१२) इण ग्रथमाहे कितराक शब्द हामे शास्त्रका वरावर जाण न होवणासु वे सुधारणवास्ते असमर्थहुयां छां पण सुज्ञविद्वान लोका इण पुस्तकमाहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पच्चरकाण वगैरेका पाठ अने अर्थमाहे तथा ऊर कोइ ठेकाणे चुका होइ हो सी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न रास्वतां आप वाचने सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकामांहे एक प्रकारको स्वाभाविक गुणज होय छे, वास्ते इण वदल जादा लिखणको कांइल कारण नहीं छे, पिण भुल वदल मिच्छामि दुक्कड देने हमाने आलोयणा कीवी चाहिजें इण ग्रथमाहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सझायादिक वाकी विपयको कोइ एक शब्द अगर अक्षर, न्यून, अधिक, अशुद्ध रीतें, आयो

पाछो, जाणता, अजाणतां वगैरे कोइ प्रकारें चूकथी लिखिजग यो होसी तथा ग्रथ छपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लागो होसी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणतां अजाणता हमारी तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री अरिहत सिद्ध केवली भगवतनी साखें सर्व दोषप्रत्यें हमाने मिछामि दुक्कड होजो अपराधकी क्षमा होजो

(१३) ए पुस्तक छपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका काममाहे हमारा प्रिय जैन वंधु भाई भीमसिहमाणके घणी तसदी लीनी छे, जिण वदल उणारो आभार माना छा श्रीजिनधर्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा बधु निरतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा छा किं बहु विलेखनेन शुभ भवतु

विज्ञप्ति

(१) इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधिमांहे सलेहणा आगरे पाप स्थानक कहीने इछामि ठामि कहिजें इणतरे लिख्यो छे सु केइ श्रावक इण मुजवज केवे छे ने केइ सलेहणा आगरे पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौदे स्थानकिया जीवारी आलोयणा करीने पछी इछामि ठामिनी पाटी कहे छे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमाहे काउस्सगमाहे इरियावहीकी पाटी चितववी लिख्यो छे परंतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चितवे छे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका दुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिण करेमि वदामि " लिख्यो छे सु केइ भाया इणतरे केवे छे तथा केइ भाया " पयाहिण वदामि " केवे छे, सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारम्भ ॥

पाठो, जाणता, अजाणता वगैरे कोइ प्रकारें चूलथी लिखिजग यो होसी तथा ग्रथ छपावणमाहे कोइ प्रकारको दोप लागो होसी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणतां अजाणतां हमारी तरफसुं होइ होसी, तो तें सर्व मन वचनकायायें करी श्री अरिहत सिध्द केवली नगवतनी साखे सर्व दोपप्रत्यें हमाने मिछामि डुक्कड होजो अपराधकी क्षमा होजो

(१३) उ पुस्तक छपावणका काममाहे तथा शुध्द करणका काममाहे हमारा प्रिय जैन बधु नाई नीमसिहमाणके घणी तसदी लीनी ठे, जिण वदल उणारो आनार माना ठा श्रीजिनधर्मका व्द्योत करणको उद्यम करने हमारा वधु निरतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा ठा किं वहु विलेखनेन शुन नवतु

विज्ञाप्ति

(१) इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधिमाहे सलेहणा आगारे पाप स्थानक कहीने इछामि ठामि कहिजें इणतरे लिख्यो ठे सु केइ श्रावक इण मुजवज केवे ठे ने केइ सलेहणा आगारे पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौदे स्थानकिया जीवारी आलोयणा करीने पठी इछामि ठामिनी पाटी कहे ठे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परपरा प्रमाणे कहीजे

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमाहे काउस्सग्गमाहे इरियावहीकी पाटी चितववी लिख्यो ठे परतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चितवे ठे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका डुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिण करेमि वदामि " लिख्यो ठे सु केइ नाया इणतरे केवे ठे तथा केइ नाया " पयाहिण वदामि " केवे ठे, सु आप आपकी गुरु आमना तथा परपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारंभ ॥

पाठो, जाणता, अजाणता वगैरे कोइ प्रकारें नूलथी लिखिजग यो होसी तथा ग्रथ छपावणमाहे कोइ प्रकारको दोष लागो हो सी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणता अजाणता हमा री तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री अरिहत सिद्ध केवली नगवतनी साखे सर्व दोषप्रत्यें हमाने मि छामि डुक्कड होजो अपराधकी क्षमा होजो

(१३) उं पुस्तक छपावणका काममाहे तथा शुद्ध करणका काममाहे हमारा प्रिय जैन वंधु नाई नीमसिहमाणके घणी तस दी लीनी ठे, जिण वदल उणारो आनार माना ग श्रीजिनध र्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा वधु निरतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा ग किं वहु विलेखनेन शुन नवतु

विज्ञाप्ति

(१) इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधिमांहे सले हणा आगरे पाप स्थानक कहीने इछामि ठामि कहिजें इणतरे लि ख्यो ठे सु केइ श्रावक इण मुजवज केवे ठे ने केइ सलेहणा आगरे पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौठे स्थानकिया जीवारी आलो यणा करीने पठी इछामि ठामिनी पाटी कहे ठे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काउस्सग्गमाहे इरि यावहीकी पाटी चितववी लिख्यो ठे परतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चिंतवे ठे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका डुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिण करे मि वदामि " लिख्यो ठे सु केइ नाया इणतरें केवे ठे तथा केइ नाया " पयाहिण वदामि " केवे ठे, सु आप आपकी गुरु आम ना तथा परंपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुंक्रमणिका प्रारंभ ॥

दश पच्चरकाणनी अनुक्रमणिका

ठदोनी अनुक्रमणिका

अथ स्तवन पदादिकनी अनुक्रमणिका

लावणीनी अनुक्रमणिका

सद्यार्डनी अनुक्रमणिका

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरिया
ण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥ ए
सो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाण च
सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ –(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने ह ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश कस्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०) जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष नगरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध भगवाननें महारो (णमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण के०) जे पोतें पांच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (उवज्झायाण के०) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोतें भणे, अने बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसाहूण के०) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

अनुक्रमणिका

चोढालीयानी अनुक्रमणिका

छत्रीशीयोनी अनुक्रमणिका

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरिया
ण, णमो उवझायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥ ए
सो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च
सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ —(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने ह ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०) जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष नगरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध भगवाननें महारो (णमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण के०) जे पोतें पांच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (उवझायाण के०) जे सिद्ध सूत्राक्षर पोतें भणे, अने बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसाहूण के०) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

चोढालीयानी अनुक्रमणिका

छत्रीशीयोनी अनुक्रमणिका

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंन ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरिया ण, णमो उवद्यायाण, णमो लोए सवसाढूण ॥ ए सो पच णमुक्कारो, सव पावप्पणासणो ॥ मगलाण च सवेसिं, पढम हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ –(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हं ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श त्रुनो नाश कस्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोनित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०) जेणें सकल कार्य साध्या, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न गरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध नगवाननें महारो (णमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण के०) जे पोतें पाच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (उवज्ञायाण के०) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोतें नणे, अने बीजाने नणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सवसाढूण के०) थिविर कल्पादिक नेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

चोढालीयानी अनुक्रमणिका

छत्रीशीयोनी अनुक्रमणिका

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरिया
ण, णमो उवझायाण, णमो लोए सवसाहूण ॥ ए
सो पच णमुक्कारो, सव पावप्पणासणो ॥ मंगलाण च
सवेसिं, पढम हवइ मगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ –(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हं ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श त्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०) जेणें सकल कार्य साध्या, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न गरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध भगवानने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण के०) जे पोतें पांच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (उवझायाण के०) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोतें भणे, अने बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सवसाहूण के०) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

कमणे के०) पगें करी पीड्यायकी अथवा मसल्यायकी, घणुं श्रु कहुं ? (जे के०) जे कोइ, (मे के०) में (जीवा के०) जीवो, (विराहिया के०) विराध्या होय डुखमांहे पाड्या होय ते कया जीवोने में विराध्या डुखी कीधा होय ? तेना नाम कहे छे (एगिंदिया के०) जेहने शरीररूप एकज इंड्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (बेइंदिया के०) शरीर तथा मुख ए दोय इंड्रियवाला जे शंख, शीप, गंडोला, अलसीयां, एहवा जेहनें पग न होय ते, (तेइंदिया के०) तीन इंड्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जू, लीख, माकड, कीडी प्रमुख जेहना मुख उपरें शिंग होय ते (चउरिंदिया के०) चार इंड्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक ने आंख होय ते, माखी, मछर, डांस, वींछी, नमरी, टीड, जे उडनारा जीव जेने आठ पग, तथा मस्तकें शिंग होय ते, (पंचिंदिया के०) पांच इंड्रियवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आख्य अने कान होय, ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी, ए सर्वे पंचेंड्रिय जीव कहियें हवे ए सर्व जीवोने केवी रीतें विराध्या होय ? तेना प्रकार कहे छे (अभिहया के०) सामा आवता हण्या, (वत्तिया के०) एक ढगले कस्या तथा धूलें करी ढांक्या, (लेसिया के०) चूमियें घस्या तथा लगारेक मसल्या (संघाइया के०) माहोमाहे शरीरनें मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया के०) थोडो स्पर्श करवे करी डुह्व्या (परियाविया के०) समस्त प्रकारें परिताप पमाड्या, पीड्या, (किलामिया के०) गाढी किलामणा उपजावीने मास्या नही, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया के०) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नही एहवा कीधा, (ठाणाउ के०) एक स्थानकथकी उपाडीने (ठाण के०) बीजे ठेकाणे (संकामिया के०) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाउ के०) जीवित

थकी, (विवरोविया के०) चूकाव्या, मार्या, नाश कीधा (तस्स के०) ते संबधी जे अतिचार लाग्या ते (डुक्कड के०) पाप कहीयें ते डुष्कृत (मिछामि के०) महारु मिथ्या एटले निष्फल थाउ ॥३॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभ ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नउ उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुछाए, सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकाय, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ –(तस्स के०) ते पापनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थे जे कांइ आगल करवु तेने उत्तरीकरण कहीयें एटले तेनेज (उत्तरीकरणेणं के०) विशेपें करी वली उपर शुद्ध करवु अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधु छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करु छु ते कायोत्सर्गेतो (पायछित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा करवाथकी होय ते प्रायश्चित्त पण (विसोहिकरणेणं के०) विशुद्धि, निर्मलता करवे करीने होय, वली ते विशुद्धि पण विशल्य होय, तो थाय माटें (विसल्लीकरणेणं के०) मायाशल्य नियाणाशल्य मिथ्यात्वशल्य, ए तीन शल्य टालवाथकी थाय, ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करीने शुं करवु छे? ते

कहे ठे (पावाणकम्माण के०) संसारहेतुरुप जे पाप कर्म तेने (नि ग्घायणछाए के०) निर्घातन एटले उच्छेदन करवानें अर्थें (ठामि के०) कायाने एक ठामें करु बु, (काउस्सग्ग के०) कायाने हला ववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्यें करु बु हवे इहां काया हलाववी नही एवी प्रतिज्ञा करी ठे माटे शरीरनु कांइपण हालवु थवाथी प्रतिज्ञानो नग थाय तेथी काउस्सग्गमा बार आगार मोकला राख्या ठे (अन्नत्र के०) उल्लासादिक जे आगारो कहेशें, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानकें कायाने हलाववानो नियम करु बु तेनां नाम कहे ठे (उससिएणं के०) उचो श्वास लेवाथी, (निससिएण के०) नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खांसी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (ठीएण के०) ठींक आया थकी, (जनाइएण के०) जा नली ते बगासू लेवाथकी, (उड्डुएण के०) उड्कार आयाथका, (वायनिसग्गेण के०) वायु निकलता थका, (नमलिए के०) न्रम रीचक्री आववाथी, (पित्तमुच्छाए के०) पित्तरा कोपसू मूर्छा आया थकां, (सुहुमेहिं के०) सूक्ष्म थोडोक, (अंगसचालेहिं के०) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहिं के०) थोडो, (खेलसचालेहिं के०) श्लेष्म तथा मूखना थूकनु चालववु करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुहुमेहिं के०) सूक्ष्म थोडी, (दिठिसचालेहिं के०) चक्षुर्दृष्टि नो सचार थवाथी एटले चक्षु हलाववा थकी, (एवमाइएहिं के०) ए आदि करीने इहा आदि पदें बीजा पण (आगारेहिं के०) आगार लेवां पडे, ते लेता थकां महारो काउस्सग्ग (अजग्गो के०) जागे नही, खमित हुवे नही, (अविराहिउ के०) अवि राधित अखमित हानी पोहोंचे नही एवो (हुज्ज के०) होजो, (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायस्थिर राखवी ते रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यांसुधि, (अरिहंताण नगवताण के०) श्रीअरिहंत नगवतने, (नमुक्कारेण के०) नमस्कार सहित

(नपारेमि के०) पारू नही, ध्यान सपूर्ण न करू, (ताव के०) त्यां सुधी (कायं के०) महारी कायाने, शरीरने, (ठाणेण के०) एकठिकाणें स्थिरपणे राखीने, (मोणेण के०) अबोलो रहीने, (झाणेण के०) एकाग्र जे ध्यान तेणें करीनें, (अप्पाण के०) महारी जे काया ते प्रत्यें, (वोसिरामि के०) हु वोसिरावु छु तजु छु आ पाटी कहीनें काउस्सग्ग करणो इरियावहीकी पाटी मनमांहे कहेणी पछी नवकार कहीनें काउस्सग्ग पारियें ॥ ४ ॥

॥ अथ लोगस्सकी पाटी लिख्यते ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहं ते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजि यं च वदे, संभव मभिणंदण च सुमइं च ॥ पउमप्प ह सुपास, जिण च चंदप्पहं वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पु प्फदत, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं च ॥ विमल म णतं च जिण, धम्मं सतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अर च मल्लिं, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च ॥ वदामि रि ठ्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एव मए अभि थुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय व दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आ रुग्ग बोहिलाभ, समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चदे सु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा ॥ साग रवर गभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

अर्थ –(लोगस्स के०) पंचास्तिकायात्मक लोकने (उज्जोय

कहे छे (पावाणकम्माण के०) संसारहेतुरुप जे पाप कर्म तेने (नि ग्घायणठाए के०) निर्घातन एटले उच्छेदन करवानें अर्थें (ठामि के०) कायाने एक ठामें करु छु, (काउस्सग्ग के०) कायाने हला ववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्यें करु छु हवे इहा काया हलाववी नही एवी प्रतिज्ञा करी छे माटे शरीरनु कांइपण हालवु थवाथी प्रतिज्ञानो भग थाय तेथी काउस्सग्गमा बार आगार मोकला राख्या छे (अन्नत्थ के०) उच्छासादिक जे आगारो कहेशें, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानकें कायाने हलाववानो नियम करु छु तेनां नाम कहे छे (उससिएणं के०) उचो श्वास लेवाथी, (निससिएण के०) नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खासी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएण के०) छींक आया थकी, (जभाइएण के०) जा भली ते बगासु लेवाथकी, (उड्डुएण के०) उंमकार आयाथकी, (वायनिसग्गेण के०) वायु निकलता थका, (भमलिए के०) भ्रम रीचक्री आववाथी, (पित्तमुछाए के०) पित्तरा कोपथु मूर्छा आया थका, (सुहुमेहि के०) सूक्ष्म थोडोक, (अगसचालेहि के०) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहि के०) थोडो, (खेलसचालेहिं के०) श्लेष्म तथा मूखना थूकनु चालववु करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुहुमेहि के०) सूक्ष्म थोडी, (दिठिसचालेहि के०) चक्षुदृष्टि नो सचार थवाथी एटले चक्षु हलाववा थकी, (एवमाइएहिं के०) ए आदि करीने इहा आदि पर्दे बीजा पण (आगारेहि के०) आगार लेवां पडे, ते लेता थका महारो काउस्सग्ग (अभग्गो के०) भागे नही, खमित हुवे नही, (अविराहिउ के०) अवि राधित अखंमित हानी पोहोंचे नही एवो (हुज्ज के०) होजो, (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायस्थिर राखवी ते रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यासुधि, (अरिहंताण भगवताण के०) श्रीअरिहत भगवतने, (नमुक्कारेण के०) नमस्कार सहित

श्रीअरिष्टनेमिजी प्रत्यें, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्यें, (तह के०) तथा, (वद्धमाण के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हुं वांडु डु, चकार पादपूर्णार्थे ठे ॥ ४ ॥ (एव के०) ए प्रकारें (मए के०) मह्वारे जीवें जे, (अनिथुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या, ते चोवीशे परमेश्वर केह्वा ठे ? तो के (विहुय के०) टाल्या ठे, (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणें एवा ठे वली (पहीण के०) अतिशयें करीनें क्षय कस्या ठे,(जरमरणा के०) जरा तथा मरण जेणें एवा जे (चउवीसपि के०) चोवीश तीर्थंकर तथा अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा ते सर्वे (जिणवरा के०) जिनवर, (तिञ्चयरा के०) तीर्थंकर ते, (मे के०) मह्वारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिय के०) कीर्त्तित ठे (वंदिय के०) वंदित ठे (महिया के०) पूज्य ठे एह्वा, (जे के०) जे तीर्थंकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स के०) लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम एह्वा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया एटले सिद्धि पाम्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धजगवंत तमे मुझने, (आरुग्ग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणवु ते सिद्धपणु तो (बोहिलाज के०) बोधबीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति थाय तेवारें प्राप्त थाय ठे माटें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने अर्थें (उत्तम के०) उत्कृष्ट ते उंची एह्वी (समाहिवर के०) प्रधान समाधि ते प्रत्यें (दिंतु केण) दिउ आपो ॥ ६ ॥ (चंदेसु के०) चंद्रमाथी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल, (आइच्चेसु के०) सूर्य समुदायथकी पण, (अहियं के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रकाशना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, ठेह्लो स्वयंजुरमण नामा समुद्र तेनी पेरें, (गंजीरा के०) गुणें करी गंजीर, एह्वा जे (सिद्धा के०) सिद्धो ते, (सिद्धिं के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुऊ प्रत्यें, (दिसंतु के०) दिउ आपो ॥७॥ इति लोगस्स पाठ समाप्त ॥५॥

गरे के०) उद्योतना करणहार, (धम्मतिष्ठयरे के०) धर्मरूप तीर्थना करणार एवा, (जिणे के०) राग द्वेषना जितनार जे (अरिहते के०) श्री अरिहंत तेनु, (कित्तइस्स के०) कीर्त्तन करीश तेमां (चउवीसपि के०) रुषनादिक चोवीस परमेश्वरनु तो नामोच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपिशब्दथकी अन्य जिनोनु पण कीर्त्तन करीश ते कहेवा ठे ? तो के (केवली के०) केवलज्ञानी ठे ते तीर्थकरनो हुं कीर्त्तन करीश॥१॥ हवे ते चोवीश जिनना नाम कहे ठे (उसन्न के०) श्रीरुषनदेवस्वामी प्रत्यें (च के०) वली (मजिय के०) श्रीअजितनाथ प्रत्यें, (वदे के०) वाडु छु, (सन्नव के०) श्रीसनवनाथ प्रत्यें, (मनिणदण के०) श्रीअनिनदननाथ प्रत्यें (च के०) वली (सुमइ के०) श्रीसुमतिनाथनें (च के०) वली (पउमप्पहं के०) श्री पद्मप्रनस्वामी प्रत्यें, (सुपास के०) श्रीसुपार्श्वनाथजीनें (जिण के०) रागद्वेषना जितनार, (च के०) वली (चदप्पह के०) श्रीचद्रप्रनजीने, (वदे के०) वाडु छु ॥ २ ॥ (सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथजीने (च के०) वली एमनु बीजु नाम (पुप्फदतं के०) श्री पुष्पदतजी ठे, ते प्रत्यें, (सीयल के०) श्रीशीतलनाथजीने, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयासनाथजीनें, (वासुपुज्ज के०) श्रीवासुपूज्यस्वामि प्रत्यें, (च के०) वली, (विमल के०) श्रीविमलनाथजीनें, (मणतं के०) श्रीअनतनाथजीनें, (च के०) वली, (जिण के०) रागद्वेषना जीतणार, एहवा (धम्म के०) श्रीधर्मनाथजीनें, (सतिं के०) श्रीशातिनाथजीनें (च के०) वली, (वदामि के०) वाडु छु ॥३॥ (कुथु के०) श्रीकुथुनाथजीनें, (अर के०) श्रीअरनाथजीनें, (च के०) वली, (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथजीने, (वदे के०) वाडु छु, (मुणिसुव्वय के०) श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिण के०) श्रीनमिजिनने, (च के०) वली, (वदामि के०) वाडु छु (रिठनेमि के०)

श्रीअरिष्टनेमिजी प्रत्यें, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्यें, (तह के०) तथा, (वद्धमाण के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हु वाडु छु, चकार पादपूर्णार्थे ले ॥ ४ ॥ (एव के०) ए प्रकारें (मए के०) महारे जीवें जे, (अभिथुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या, ते चोवीशे परमेश्वर केहवा ले ? तो के (विहुय के०) टाल्या ले, (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणें एवा ले वली (पही ण के०) अतिशयें करीनें क्षय कस्या ले,(जरमरणा के०) जरा तथा मरण जेणें एवा जे (चउवीसपि के०) चोवीश तीर्थंकर तथा अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा ते सर्वे (जिण वरा के०) जिनवर, (तिड्डयरा के०) तीर्थंकर ते, (मे के०) महारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिय के०) कीर्त्तित ले (वदिय के०) वदित ले (महिया के०) पूज्य ले एहवा, (जे के०) जे तीर्थंकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स के०) लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम एहवा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया एटले सिद्धि पाम्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धजगवत तमे मुजने, (आरुग्ग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणवु ते सिद्धपणु तो (वोहिलाज के०) वोधवीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति थाय तेवारें प्राप्त थाय ले मार्टे श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने अर्थे (उत्तम के०) उत्कृष्ट ते उची एहवी (समाहिवर के०) प्रधान समाधि ते प्रत्यें (दितु केण) दिउ आपो ॥ ६ ॥ (चदेसु के०) चन्द्रमाथी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल, (आइच्चेसु के०) सूर्य समुदायथकी पण, (अहियं के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रकाशना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, लेहलो स्वयंभुरमण नामा समुद्र तेनी पेरें, (गम्भीरा के०) गुणें करी गम्भीर, एहवा जे (सिद्धा के०) सिद्धो ते, (सिद्धिं के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुज प्रत्यें, (दिसतु के०) दिउ आपो ॥७॥ इति लोगस्स पाठ समाप्त ॥५॥

॥ अथ सामायिक लेवणकी पाटी लिख्यते ॥

करेमि भंते सामाइय, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियम, पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥१॥ इति ॥६॥

अर्थ –(भंते के०) हे पूज्य ! (सामाइय के०) समता परिणामरूप सामायिकने, (करेमि के०) हु करू छु (सावज्जं के०) अवद्य जे पाप, तेणें करी सहित एवा (जोग के०) मन वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चक्खामि के०) हु निषेध करू छु, (जाव के०) ज्यासुधि, (नियम के०) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि के०) हु सेवु, रहु त्यासुधी, (डुविहं के०) दोयकरणसुं एटले करणो, करावणो ए दोयप्रकारका जो सावद्यव्यापार ते प्रत्यें (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) वचनें करी, (कायसा के०) कायायें करी ए, (तिविहेण के०) तीन जोगसु (नकरेमि के०) हु करू नहि, (नकारवेमि के०) हुं डुजा पासें न करावु, (तस्स के०) ते सावद्यव्यापाररूप पापने, (भंते के०) हे भगवंत ! आपनी समीप हुं (पडिक्कमामि के०) पडिक्कमु छु, (निंदामि के०) हु आत्मानी साखें निंडु छु, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हु गर्हु छु, एटले विशेषें निंडु छुं, (अप्पाण के०) माहरा आत्माने, ते डुष्ट क्रियायकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छु, एटले विशेषें करीनें तज्जु छुं ॥ १ ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नमुत्थुणनी पाटी लिख्यते ॥

नमुत्थुण, अरिहंताणं, भगवंताण, आइगराण, तित्थयराण, सयसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहा

ण, पुरिसवरपुमरीयाण, पुरिसवर गधहत्थीणं, लो गुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाणं, लोगपईवा ण, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाणं, जीवदयाण, बोहिदयाण, धम्मदयाण, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाण, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण, दिवोत्ताण, सरणगइपइठाणं, अप्पडिहय वरनाण दसणधरा णं, विअट्ट छउमाण, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाण, ता रयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताणं, मोयगाणं, सव्व न्नूण, सवदरिसिण, सिव मयल मरुअ मणात मक्खय मवाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाण सं पत्ताण, नमो जिणाण, जियभयाण ॥१॥ इति ॥७॥

अर्थ –(नमुत्थुण के०) इहां नमोस्तु एटले नमस्कार हो अने ण कार जे छे, ते वाक्यालकारने माटें छे, कोने नमस्कारहो, तो के (अरिं हताण के०) श्रीअरिहत देवने, (भगवताण के०) भगवतने, (आइ गराण के०) धर्मना आदिना करणारने (तित्थयराण के०) तीर्थना स्थापनार एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ए चार जा तिना तीर्थना स्थापनारने, (सयसबुद्धाण के०) पोतानीमेलें सम्यक् प्रकारें तत्त्वना जाण थया (पुरिसुत्तमाण के०) पुरुषमाहे उत्तम (पु रिससीहाण के०) पुरुषमाहे सिंहसमान, (पुरिसवरपुमरीयाण के०) पुरुषमाहे पुमरीक कमल समान, (पुरिस के०) पुरुषमाहे, (वर के०) प्रधान, (गधहत्थीण के०) गधहस्ती समान छे, (लोगुत्तमाण के०) लोकमाहें उत्तम छे, (लोगनाहाण के०) लोकना नाथ छे, (लोगहि याण के०) लोकना हितकारी छे, (लोगपईवाण के०) लोकने विषे

प्रदीप समान छे, (लोगपज्जोयगराण के०) लोकमाहे प्रकर्षे करी उ द्योतना करणार छे (अभयदयाण के०) अभयदानना देणार छे, (चक्खुदयाण के०) ज्ञानरूप चक्षुना देणार छे, (मग्गदयाण के०) मोक्ष मार्गना देणार छे, (सरणदयाण के०) शरणना देणार छे,(जी वदयाण के०) संयमरूप जीवतरना देणार छे, (बोहिदयाण के०) समकित रूप बोधना देणार छे, (धम्मदयाण के०) धर्मना देणार छे, (धम्मदेसियाण के०) धर्मना उपदेशना देणार छे, (धम्मनायगा ण के०) धर्मना नायक छे, (धम्मसारहीण के०) धर्मरूप रथना सा रथि छे, (धम्म के०) धर्मने विषे, (वर के०) प्रधान (चाउरंत के०) चार गतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीण के०) चक्रवर्ती स मान छे, (दिवोत्ताण के०) संसारसमुद्रमा द्वीप समान, दुःखना निवारण करणार छे, (सरणगइपइट्ठाण के०) सरणगतिना स्था नक भूत शरणागत वत्सल छे (अप्पडिहय के०) नही हणा य एवु, (वर के०) प्रधान, (नाण के०) ज्ञान (दसण के०) दर्शन तेने (धराण के०) धरणार, (विअट्ट के०) गयुं छे, (छउ माण के०) छद्मस्थपणु एटले कर्मरूपी आवरण जेने एवा, (जिणा ण के०) रागद्वेषनें जीत्या छे जेणें, (जावयाण के०) बीजाने राग द्वेषथकी मूकावे छे (तिन्नाण के०) संसाररूपी समुद्र पोतें तख्या छे अने (तारयाण के०) बीजानें संसारसमुद्रथी तारनार छे (बु द्धाण के०) पोतें तत्त्वज्ञानने समज्या छे (बोहियाण के०) बी जानें तत्त्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताण के०) पोतें चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्मथकी मूकाणा छे,तथा (मोयगाण के०) बीजा भव्य प्राणीनें कर्मथकी मूकावणार छे, (सव्वन्नूण के०) सर्वज्ञ छे, (सव्वदरिसिण के०) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव के०) सर्व उपद्रव रहित एवा (मयल के०) अचल (मरुय के०) अरु ज रोग रहित (मणत के०) अनतज्ञानादि चतुष्टयें करी युक्त

ठे मार्टे अनंत ठे (मरकय के०) सर्वकाल निश्चल (मव्वावाह के०) अव्यावाध एटले वाधा पीडा रहित (मपुणराविति के०) जे गतिथकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी एहवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति एवु ठे (नामधेय के०) नाम जेनु एवा (ठाण के०) स्थानकने (सपत्ताण के०) पाम्या ठे अर्थात् मोक्ष नगर प्रत्यें पाम्या ठे, एहवा अरिहंत नणी (नमो के०) महारो नमस्कार हो ते जिन नगवान् केहवा ठे ? तो के (जिणाण के०) कर्मरूपी शत्रुनें जीतणार, तथा (जियनयाण के०) इहलोकादिक सात नयप्रत्यें जीतणार ठे ॥ ४ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, मण डुप्पणिहाणे, वय डुप्पणिहाणे, कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छामि डुक्कड सामायिकने विषे दस मनना, दस वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोष माहेलो कोई दोष लागो होय तो मिच्छामि डुक्कड आहारसङ्गा, नयसङ्गा, मिहुणसङ्गा, परिग्गहसङ्गा, ए चार सङ्गामाहेली कोई सङ्गा करी होय तो मिच्छामि डुक्कड स्त्रीकथा, राजकथा, नक्तकथा, देशकथा, ए मांहेली कोई कथा करी होय तो मिच्छामि डुक्कड सामायिक समकाएण, फासिय, पालिय, सोहिय, तिरिय, किट्टियं, आराहिय, आणाए अणुपालिय, न नवइ तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ १ ॥ इति॥ठ॥

अर्थ –नवमा सामायिक व्रतना (पच अइयारा के०) पाच अतिचार (जाणियव्वा के०) जाणवा योग्य, (नसमायरियव्वा के०) समाचरवा योग्य नही (तजहा के०) ते हवे कहे ठे तेने (आलोउं के०) आलोचु छु, (मणडुप्पणिहाणे के०) मन माठु वर्त्ताव्यु होय, (वयडुप्पणिहाणे के०) वचन माठु वर्त्ताव्यु होय, (कायडुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकनें (अकरणयाए के०) कीधु के नही कीधुं तेनी बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकने (अणवठियस्सकरणयाए के०) पूरी थयाविना पारी होय, तो (तस्स के०) तेनुं (डुक्कड के०) पाप ते (मिछामि के०) मारु निष्फल थाउ (आहारसन्ना के०) खावानी इछा थइ होय, (नयसन्ना के०) नयनी सन्ना थइ होय (मिहुणसन्ना के०) मैथुननी इछा करी होय, (परिग्गहसन्ना के०) धन इव्यनी इछा करी होय, ए चार सन्ना माहेली कोइ सन्ना करी होय तो ते डुष्कृत पाप (मिछामि के०) मारु निष्फल थाउ (सामायिकसमकाएण के०) सामायिक कायायें बरावर रीतें (फासियं के०) स्पर्शी कछु फरस्यु, अंगीकार कछु (पालियं के०) तेवुज पाल्यु, (सोहियं के०) शोध्यु शुद्ध कछु (तिरियं के०) पार उतारियुं, (कित्तियं के०) कीर्त्युं (आराहिय के०) आराध्यु (आणाए के०) वीतराग देवनी आज्ञायें करी (अणुपालियं के०) पालेलु, (नहवइ के०) न होय (तस्स मिछामिडुक्कड के०) तेनु डुष्कृत जे मने लागेलु होय ते मारु मिथ्या हो ॥ इति सामायिक पारवानी पाटीनो अर्थ सपूर्ण ॥ ८ ॥

॥ अथ सामायिकविधि प्रारंभ

॥ प्रथम श्री सीमधर स्वामीजीनी आज्ञा लेइने एक नवकार गुणीने “ इरियावहिनी ” पाटी नणवी, पठी त

स्स उत्तरीनी पाटी नणीने काउस्सग्ग करवो, काउस्स ग्गमाहि "इरियावहियाएथी" मांमीने "जीवियाउ वव रोविया तस्स मिच्छामि डुक्कडं" सुधीनो पाठ मनमां वो लीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो प ठी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि नतेनी" पाटी "जावनियम" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घाल णो, पठी "पज्जुवासामि" थकी "अप्पाए वोसि रामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चखवो पठे मावो गोडो ऊनो करीने दोयवार "नमुत्थुए" नी पाटी केहवी डुजा नमुत्थुणने ठेहडे "ठाणं संपाविउ कामे नमो जिणाए" एम केहवुं अने सामायिक पारती वे ला "इरियावही, तस्स उत्तरी" नी पाटी नणीने का उस्सग्ग करवो, पठी काउस्सग्गमाहे इरियावहिनी पाटी कहिने एक नवकार गुणीने काउस्सग्ग पारवो पठी "लोगस्स" नणी "नमुत्थुण" दोय वार उ पर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिकव्रतनी पाटी "अणुपालियं न नवइ तस्स मिच्छामि डुक्कड" सु धी कहीने तीन नवकार गुणीने सामायिक पारवु

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री प्रतिक्रमण अर्थ विधिसहित प्रारंभ ॥

प्रथम "चोविस स्तव" कीजें भनो रहीने "तिस्कुत्तो" गुणीजें देव, गुरु तथा वडा साधर्मीनाईनी पडिक्कमण गयवानी आज्ञा लेइने "इच्छामिण भंते" नी पाटी कहीजें ते लखीयें छैयें

॥ अथ इच्छामिणभंतेनी पाटी प्रारंभ ॥

इच्छामिण भंते तुब्भेहिं अब्भणुं नायसमाणे देवसि प डिक्कमणुं ठाएमि देवसि नाण, दसण, चारित्त, तप अ तिचार चिंतवणार्थे करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ –(इच्छामिण के०) हुं इच्छुंछु, (भंते के०) हे भगवन्' (तुब्भेहिं के०) तुमारी (अब्भणुनायसमाणे के०) आज्ञा मा गीने, (देवसि के०) दिवस संबंधी, (पडिक्कमणु के०) पापनु निवारण करवु ते प्रत्यें, (ठाएमि के०) ठाउ छु (देवसि के०) दि वस सबधि, (नाण के०) ज्ञान, (दसण के०) दर्शन सम कित, (चारित्त के०) कर्मरूपि शत्रुको नाशकरणार, ते रूप चारित्र तथा (तप के०) तपस्या ते सबधि जे (अतिचार के०) व्रत भागवाने तैयार थवु, ते रूप अतिचार लाग्यो होवे तेनी (चिंतव णार्थे के०) चितवणा करवाने अर्थे, (काउस्सग्ग के०) कायो त्सर्ग प्रत्यें (करेमि के०) हु करु छु ॥ १ ॥

पछी "नवकार" कहीजें "तिख्कुत्तारा" पारसुं पहिला आवश्य कनी आज्ञा मागीने "करेमि भंते," नी पाटी कहीजें पछी "इ च्छामि ठामि" नी पाटी भणीजें ते लखीयें छैयें

अथ इच्छामि ठामिनी पाटी प्रारंभ

इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसिउ अइयारो कउ काईउ, वाइउ,माणसिउ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अक

प्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाउ, दुविचिंतिउ, अणायारो, अ णिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे तह दंसणे, च रित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिन्ह गुत्तीण, चउन्ह क सायाणं, पंचन्हमणुव्वयाण, तिन्ह गुणव्वयाणं, चउ न्हं सिक्खावयाण, बारसविहस्स सावग धम्मस्स, ज खंडिय, ज विराहिय, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥

अर्थ –(ठामि के०) एक ठेकाणे रहीने, जे (काउस्सग्ग के०) कायानी स्थिरता करवी, तेने (इच्छामि के०) हुं इच्छु छु,(जो के०) जे, (मे के०) महारा जीवें, (देवसिउ कें०) दिवस संबंधि, (अइयारो के०) अतिचार, (कउ के०) कीधो होय, (काईउ के०) काया संबधी, (वाइउ के०) वचन संबधि, (माणसिउ के०) मन संबधि, (उस्सुत्तो के०) सूत्र विरुद्ध परूपणा कीधा थकी उपनो जे (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग एटले जिनमार्ग उल्लघीने दुजो मार्ग तेथकी नीपनो जे (अकप्पो के०) अकल्पनीय एटले चरण करण व्यापारथकी रहितपणु तेनाथी उत्पन्न थयो जे (अकरणि ज्जो के०) करवा योग्य नही एवा कार्य तेने करवें करी ए सर्वअति चारनु स्वरूप कह्यु हवे मन संबधि अतिचारनु स्वरूप कहे छे (दुज्झाउ के०) दुर्ध्यान ते आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्याववु ते माटेंज (दुविचिंतिउ के०) दुष्ट अशुभ कार्यनु मनमा चिंतववु तेमाटेंज (अणायारो के०) अनाचार कहीयें एटले जेथकी व्रतादिकनो सर्वथा भग थाय जे माटें ते अनाचार आचरवा योग्य नही, ते माटेंज (अणिच्छियव्वो के०) इच्छवा योग्य नही, ते माटेंज (अ सावगपाउग्गो के०) श्रावकने उचित नथी, हवे ए सर्व अति चार शेने विषे लगाड्या होय ? ते कहे छे (नाणे के०) ज्ञानने विषे, (तह के०) तेमज, (दसणे के०) समकित दर्शनने विषे,

(चरित्ताचरित्ते के०) काइएक चारित्रने कांइएक नहि चारित्र एहवु जे श्रावकनु चारित्र तेने विषे, (सुए के०) सूत्र सिद्धातने विषे, (सामाइए के०) समतारूप सामायिकने विषे, (तिन्हं गुत्तीण के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए तीन गुप्ति न पालवे करी (चउन्ह कसायाणं के०) क्रोध, मान, माया ने लोभ, ए चार कषायने करवे करी (पचन्हमणुव्वयाण के०) (१) प्राणातिपात, (२) मृषावाद, (३) अदत्तादान, (४) मैथुन, (५) परिग्रह, ए पाच प्रकारना अणुव्रतने विषे, (तिन्हंगुणव्वयाण के०) छठो, सातमो ने आठमो, ए तीन प्रकारका गुणव्रत माहेथी, (चउन्ह सिक्खावयाण के०) चार प्रकारका शिक्षाव्रत, नवमो, दसमो, इग्यारमो, ने बारमो, ए माहेथी घणु थु कहियें परतु (बारसविहस्स के०) ए बारे प्रकारका व्रतरूप, (सावगधम्मस्स के०) श्रावक सबधि जे धर्म तिणमाहेसू म्हारा जीवें, (जखण्डियं के०) जे देशथकी भग कीधु, (जविराहियं के०) जे सर्वथकी भग कीधु (तस्स के०) तेहनुं (दुक्कड के०) पाप (मिच्छामि के०) म्हारु निष्फल थाउ ॥ २ ॥

पछी "तस्स उत्तरी" नी पाटी कहीने उभो रहीने काउस्सग्ग ठाईजें काउस्सग्गमाहे, १४ ग्यानका, ५ समकितका, ६० बारा व्रतका १५ कर्मादानका, ५ सलेहणाका, एव "एण अतिचार" नी चितवणा कीजें ते अतिचार आ प्रमाणें – तपस्या, अशक्तपणा वगेरे कारणसू उभो रहीने काउस्सग्ग करणकी शक्ति न होय तो नीचें बेसीने काउस्सग्ग ठाईजें

१४ ग्यानका आगमे तिविहे पन्नत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई अतिचार लागा होय, ते आलोव, ज वाइद्धं वच्चामेलियं,हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीण, विनयहीण, जोगहीण, घोसहीण, सुट्ठुदिन्न, दुट्ठुपडि

ष्ठियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झा य, सज्झाइए न सज्झाय, जणता, गुणता, चितवतां, अने विचार ता, ग्यान अने ग्यानवतोनी आशातना कीनी होय ॥

(५ समकितना अतिचार) दसण समकित ॥ परमह्न संथवो वा, सुदिठ परमह्न सेवणावावि ॥ वावन कुदसण व, ज्ञणा सम त्त सद्दहणा ॥ १ ॥ एहवा समकितना समणोवासयाण सम्मत्त स्स, पंच अइयारा पेयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते अलोउ, सका, कखा, वितिगिछा, परपासमी परसम्रा, पर पासमी संथुवो ॥

(६० व्रताका अतिचार) पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा पेयाला जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ वधे वहे छविछेए, अइनारे नत्तपाणवुछेए ॥

बीजा थूल मृषावादविरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउं, सहस्सानरकाणे, रहस्सा नरकाणे, सदारमतन्नेए, मोसोवएसे कूडलेहकरणे ॥

त्रीजा थूलअदत्तादान विरमणव्रतना पंच अइयारा जाणि यवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ, तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरुवगववहारे ॥

चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न स मायरिवा तं जहा ते आलोउ, इत्तरपरिग्गहियागमणे, अपरिग्ग हियागमणे अनगकीडा, परविवाहकरणे, कामनोगेसु तिव्वानिलासे॥

पाचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ खित्तवत्थुपमाणाइक्कमे, हिरस्र सुवस्नुपमाणाइक्कमे धण धन्नप्पमाणाइक्कमे, डुपद चउपद पमाणाइक्कमे, कुवियपमाणाइक्कमे ॥

छठा दिशि विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समाय

रियवा तं जहा ते आलोउ, उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे, अहोदिसि पमाणाइक्कमे, तिरियदिसि पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढी, सयंतरद्धा ॥

सातमा उवभोग परिभोग डुविहे पन्नत्ते तं जहा, भोयणाउय, कम्मउय, भोयणाय समणोवासयाण पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धा हारे, अप्पोलसहिभरकणया डुप्पोलसहिभरकणया, तुच्छोसहिभक्खणया, कम्मउण समणोवासयाण पन्नरस कम्मदाणाई, जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ

(१५ कर्मादानका) इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, लक्ख वाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदा वणया, सरदहतलायपरिसोसणया, असईजणपोसणया ॥

आठमा अनर्थदंडविरमणव्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ, कंदप्पे, कुक्कुइए मोहरिए, सजुताहिगरणे, उवभोगपरिभोग अइरत्ते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समाय रियवा तं जहा ते आलोउं, मणडुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहा णे, कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणियाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणयाए ॥

दशमा देसावगासिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समा यरियवा तं जहा ते आलोउ, आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, स हाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्खेवे ॥

अग्यारमा परिपूर्ण पोषध व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय स ज्जासथारए, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सज्जासथारए, अप्पडिले हिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय

उच्चारपासवणनूमि, पोसहस्स, सम्म अणणुपालणया ॥

बारमा अतिथिसंविनाग व्रतना पच अइयारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते आलोउ, सचित्त निक्केवणिया, सचित्त पिहणिया, कालाइक्कम्मे, परोवएसे मच्छरियाए ॥

५ सलेहणारा ॥ अपच्छिम मरणांतिक सलेहणा फुसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियवा न समायरिवा तं जहा ते आलोउ, इहलोगाससप्पउंगे, परलोगाससप्पउंगे, जीवियाससप्पउंगे, मरणाससप्पउंगे, कामनोगाससप्पउंगे ॥

१८ पापस्थानक १ प्राणातिपात, २ मृपावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोन, १० राग, ११ द्वेप, १२ कलह, १३ अन्यारव्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्वदसणशल्य एव १८ पापस्थानकमांहेलु जे कोइ पापस्थानक माहारे जीवें, मनें, वचनें कायायें करी, सेव्युं होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्यें नलुं जाण्युं होय

एम “ ९९ अतिचार, १८ पापस्थानक ” काउस्सग्गमां चिंतवीने पछी “ इच्छामिठामि ” नी पाटी ‘ ज विराहियं ’ सुधी चिंतवी ‘ नवकार ’ नणीने काउस्सग्ग पारीयें ॥ इति प्रथम ‘ सामायिक आवश्यक ’ सपूर्ण

विधि —पछी ‘ तिरकुत्ता’ नो पाठ कही दूजा आवश्यकनी आज्ञा लइने प्रगट एक ‘ लोगस्स ’ नी पाटी कहीजें ॥ इति दूजु ‘ चउविसत्थो ’ आवश्यक सपूर्ण

पछी तिखुत्तो गुणी त्रीजा आवश्यकनी आज्ञा लेइने दोय वार “ इच्छामिखमासमणा ” नी पाटी कहीजें पाटीमाहे प्रथम जिहा ‘ निसीहियाए ’ शब्द आवे तिहा उना गोडा करी, हाथ जोडीने वेसीजें तथा ७ आवर्त्त करियें ते आ प्रमाणें —प्रथम “ अ

होकाय काय " ए शब्द उच्चारतां तीन आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छे – दोनु हाथ लांबा करी हाथनी दश आंगुली भूमि उपर लगावतां मुखसु " अ " अक्षर कहेवो, पछी तेमज दश आंगुली आपणा मस्तकने लगावता " हो " अक्षर कहेवो, ए दोनु अक्षर कहेतां १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसू " का " ने " यं " ए बे अक्षर उच्चारता २ दुजो आवर्त्त हुवो तथा " का " ने " य " ए बे अक्षर उच्चारता ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो पछी " जत्ता, भे, जव णि ज्ज, च, भे " ए शब्द उच्चारता ३ आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छे –प्रथम " ज ' अक्षर मदस्वरसू "त्ता" अक्षर मध्यमस्वरसू, ने "भे" अक्षर उचा स्वरसू उपरली रीतिसू, मस्तकें हाथ लगावता कहेवो एम तीन अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि) ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू उपर मुजब उच्चारता दुजो आवर्त्त तथा (ज्ज) (च) (भे) ए पण तीन अक्षर पूर्वली रीतें कहेतां त्रीजो आवर्त्त होय, एव छ आवर्त्त एक पाटीमाहे थाय एवी बे पाटी कहीजें तेवारें बार आवर्त्त थाय तथा " तित्तीसन्नयराए " ए पाठ आवे तिहा पाछा वना रहीजें एव ए दोय वार " खमा समणा " री पाटी सपूर्ण कहीजें, ते पाटी लखीयें छैयें

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंभ

इच्छामि, खमासमणो, वदिउ, जावणिज्जाए, निसीहिया ए, अणुजाणह, मे, मिउग्गह, निसीही, अहो, कार्यं, कायसफास, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलताणं, वहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कतो, जत्ता, भे, जवणिज्ज, च, भे, खामेमि, खमासमणो, देवसिय, वइक्कम, आवसिया ए, पडिक्कमामि, खमासमणाण, देवसियाए, आसाय

णाए, तित्तीसन्नयराए, ज किंचि मिछाए, मणडुक्कडाए, वयडुक्कडाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालियाए, सव्वमिछोवयाराए, सव्वधम्मा इक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, देवसिउ अइ यारो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निं दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥

अर्थ —(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! (जावणिज्जाए के०) जेणें करी कालक्षेप करीयें तेवी शक्तियें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन छे जेमा तेने नैषेधिकी तनु एटले शरीर कहीयें तेवा शरीरें करी तुमने (वदिउ के०) वांदवाने (इछामि के०) हु इछु छु, वांछु छु माटें (मिउग्गह के०) मित अवग्रह एटले प्रमाण करेला साढा त्रण हाथना अवग्रह माहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुज ने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो

पछी शिष्य (निसीहि के०) एक गुरुवदन विना अन्य क्रिया रूप व्यापारने निषेध्यो छे जेणे एवो छतो मर्यादा करेला अवग्र हमाहे पेसीने गुरुप्रत्यें कहे के तुमारा (अहोकायं के०) अध प्रदेश नो छेहलो नाग जे चरण ते प्रत्यें (कायसफास के०) महारी काया सबधि हाथ अने मस्तकें करीने स्पर्शु ? एवी आज्ञा पामी ने गुरुना चरणने स्पर्शी पछी उचो थइ मस्तकें वे हाथ चढावी 'खमणिज्जो ने' इत्यादि पाठ कहे तेनो अर्थ लखीयें छैयें

हे पूज्य ! तुमारा चरण स्पर्शीता जे काइ (मे के०) महारे जीवें तुमने (किलामो के०) ग्लानि एटले पीडा उपजावी होय खेद उपजाव्यो होय ते (भे के०) तमोयें (खमणिज्जो के०)

होकायं काय " ए शब्द उच्चारता तीन आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छे – दोनु हाथ लांबा करी हाथनी दश आंगुली भूमि उपर लगावतां मुखसु " अ " अक्षर कहेवो, पछी तेमज दश आंगुली आपणा मस्तकने लगावता " हो " अक्षर कहेवो, ए दोनु अक्षर कहेतां १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसू " का " ने " यं " ए बे अक्षर उच्चारता २ बीजो आवर्त्त हुवो तथा " का " ने " य " ए बे अक्षर उच्चारता ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो पछी " जत्ता, भे, जव णि ज्जं, च, भे " ए शब्द उच्चारता ३ आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छे – प्रथम " ज ' अक्षर मदस्वरसू "त्ता" अक्षर मध्यमस्वरसू, ने "भे" अक्षर उचा स्वरसू उपरली रीतिसू, मस्तकें हाथ लगावता कहेवो एम तीन अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि) ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू उपर मुजब उच्चारता बीजो आवर्त्त तथा (ज्जं) (च) (भे) ए पण तीन अक्षर पूर्वेली रीतें कहेतां त्रीजो आवर्त्त होय, एव छ आवर्त्त एक पाटीमाहे थाय एवी बे पाटी कहीजें तेवारें बार आवर्त्त थाय तथा " तित्तीसन्नयराए " ए पाठ आवे तिहा पाछा उभा रहीजें एव ए दोय वार " खमा समणा " री पाटी सपूर्ण कहीजें, ते पाटी लखीयें छैयें

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंभ

इच्छामि, खमासमणो, वंदिउ, जावणिज्जाए, निसीहिया ए, अणुजाणह, मे, मिउग्गह, निसीही, अहो, कार्यं, कायसफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कतो, जत्ता, भे, जवणिज्जं, च, भे, खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कम, आवसिया ए, पडिक्कमामि, खमासमणाए, देवसियाए, आसाय

करी, (लोहाए के०) लोभरूप आशातनायें करी, (सव्वकालियाए के०) अतीत, अनागत अने वर्त्तमान, एव सर्व कालने विषे,(स व्वमिच्छोवयाराए कें०) सर्व,कूडकपट क्रियारूप जे मिथ्या उपचार ते रूप आशातनायें करीने, (सव्वधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्मनी जे करणी, तेने उल्लंघवारूप आशातनायें करीनें, ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारनी (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) महारे जीवें, (देवसिउ के०) दिवस सबधी (अ इयारो के०) अतिचार दोष, जे (कउ के०) कस्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारने (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! तमारी समीपें, (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं छु, मिच्छामि दुक्कड दउ छुं, (निदामि के०) ते दुष्टकर्मकारी आत्मा ने हुं निंदु छुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखे हु विशेषे निंदु छुं (अप्पाणं के०) दुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्यें, (वोसिरामि के०) हुं तजु छु, वोसिरावु छुं ॥ ३ ॥ इति त्रीजु वदनावश्यकसपूर्ण ॥

पछी ' तिक्खुत्तारा ' पाठस्रू चोथा आवश्यकनी आज्ञा मागीजें, प्रथम काउस्सग्गमाहि एए अतिचार कह्या ते "आगमे तिविहे" नी पाटी थकी " इच्छामि ठामि " नी पाटी सुधी प्रगटपणे केहवा, जिणमाहि प्रत्येक पाटी तथा धूलने छेहडे " तस्स मिच्छामि दु क्कडं " कहेवुं पछी "तस्स सव्वस्स" नी पाटी कहीजें ते कहे छे –

॥ अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी प्रारम्भ ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भा
सियं दुच्चिंतिय आलोयते पडिक्कमामि ॥४॥

अर्थ –(तस्स के०) ते पूर्वे चितव्या जे, (सव्वस्स के०) सर्व पण (देवसियस्स के०) दिवस सबधी, (अइयारस्स के०) अतिचा र, तेने तथा (दुब्भासिय के०) उपयोग रहित अनिष्ट भाषा बोलवा

खमवा योग्य छे एटलु कहीने वली पण शिष्य, दिवससंबधि क्षेम कुशलनु स्वरूप पूज्यने पूछे, ते आवीरीतें –

(बहुसुनेण के०) बहु शुनें करीने क्षेमकुशल समाधिनावें करीने (ने के०) तमारो (दिवसो के०) दिवस (वइक्कतो के०) व्यतिक्रात थयो एटले वीत्यो ? तमें कहेवा छो ? तो के (अप्पकिलं ताण के०) अल्पकिलामणावाला छो एम शरीरसंवधि सुखशाता पुछीने वली तप नियमादिक सवधी वार्त्ता पूछे, ते आवी रीतें –

हे पूज्य ! (जत्ता के०) तप सयम रूप यात्रा ते (ने के०) तमारे अव्याबाध पणे वर्त्ते छे ? (जवणिज्जं के०) इंडियोयें करी पीडित नही एवु निराबाध शरीर (च के०) वली (ने के०) तमारु छे ?

(खमासमणो के०) हे क्षमावत साधु ! (देवसिय के०) दिवस सबधि, (वइक्कम के०) व्यतिक्रम एटले अवश्य करणीय विराध नारूप माहारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमावु छुं हवे वली आ प्रमाणें कहे (आवसियाए के०) अवश्य करणी करता जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं निवत्तु छु, (खमासमणाए के०) क्षमावत साधुनी, (देव सियाए के०) दिवसने विषे थइ एवी जे, (आसायणाए के०) आशातना, खंमना, ते आशातनायें करीने, ते केवी आशातना यें करीने ? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहे ली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने, (जं किंचि मिच्छा ए के०) जे कांइ कूडुं आलबन लइने मिथ्यानाव वर्त्ताव्यो होय (मणडुक्कडाए के०) मन सबधि दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (व यडुक्कडाए के०) वचनसबंधी दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (काय डुक्कडाए के०) काया सबधि दुष्कृत जे पाप तेणें करी, (कोहाए के०) क्रोध नाव रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मान रूप अशातनायें करी, (मायाए के०) कपटरूप आशातनायें

के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप, (धम्मो के०) धर्म, ते (मगल के०) मागलिक छे (चत्तारि के०) चार, (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंतजी छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे,त्रीजा (साहू के०) साधु जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, चोथो (केवलिपन्नत्तो के०) केवली भगवानें प्ररूप्यो एवो, (धम्मो के०) धर्म जे छे, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमाहि उत्तम छे, हवे (चत्तारि के०) चारे, (सरण के०) शरणने (पवज्जामि के०) अंगीकार करू छु, एक (अरिहंतासरण के०) श्री अरिहंतजीना शरणने, (पवज्जामि के०) अंगीकार करू छु, बीजो (सिद्धा सरण के०) श्री सिद्धना शरणने, (पवज्जामि के०) अंगीकार करू छुं, त्रीजो (साहू सरण के०) साधुशरण प्रत्यें, (पवज्जामि के०) अंगीकार करू छु, चोथो (केवलि के०) श्री केवलियें (पन्नत्त के०) भाख्यो एवो, जे (धम्म के०) धर्म तेना, (सरण के०) शरण प्रत्यें, (पवज्जामि के०) अंगीकार करू छु आगलनो पाठ तथा इहाको अर्थ सुलभ छे जिणसूं इहां लिख्यो नहिं हे ॥ ५ ॥

विधि —पछी " इच्छामि खमि" तथा "इरियावहि" नी पाटी कहीने 'तिरकुत्तारा' पाठसू "व्रत, अतिचार" भेला केहवानी आज्ञा मागीजें तिहां "आगमे तिविहे" नी पाटी कहीजें,ते आ प्रमाणें —

॥ अथ आगमे तिविहे पन्नत्तेकी पाटी प्रारंभ ॥

आगमे तिविहे पन्नत्ते त जहा,सुत्तागमे,अत्थागमे, तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई अतिचार लागो होय, ते आलोउ, ज वाइद्धं, वच्चामे लिय, हीणक्खर अच्चक्खर, पयहीण, विणयही

थका जे थयो, वली (दुच्चिंतिय के०) दुष्टकार्य मनमां चितवत्रा थकी जे, थयो तेने (आलोयते के०) आलोचवामाटें, प्रगटपणें कहीने, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हु निवृत्तु छु ॥ ४ ॥

विधि –पछी नीचें वेसीने जिमणो गोडो ऊनो करीने " नव कार, तथा करेमि भते" नी पाटी कहीजें तथा "चत्तारि मगलं" नी पाटी कहीजें ते पाटी लखीयें छेयें

॥ अथ चत्तारि मगलकी पाटी प्रारंभ ॥

चत्तारि मगल, अरिहता मगल, सिध्दा मगल, साहू मगल, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगल चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा, सिध्दा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो चत्तारि सरण पवज्जा मि, अरिहता सरण पवज्जामि, सिध्दा सरण पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म सरण पवज्जा मि अरिहताजीको सरणो, सिध्दाजीको सरणो, साधु जीको सरणो, केवलि परूप्या दयाधर्मको सरणो ॥ दुहो॥ चार सरणा दुखहरणा, उर न वीजो कोय ॥ जो भवि प्राणी आदरे, तो अखय अचल गति होय ॥ ५ ॥

अर्थ –(चत्तारि के०) चार, (मगल के०) मांगलिक छे, ते माहि एक तो, (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अतरग वैरीने हण्या ते श्री अरिहंत (मगल के०) मांगलिक छे, दूजा (सिध्दा के०) अष्टकर्मने क्षय करीने जे सिध्द पदने पाम्या छे एवा जे श्री सिध्द, ते (मगल के०) मागलिक छे, त्रीजा (साहू के०) सम्यक् ज्ञानें करी शिवसुखना साधक जे साधु ते (मगल के०) माग लिक छे, चोथो (केवलि के०) श्री केवलि भगवतनो, (पण्णत्तो

के०) दश औदारिक शरीरना अने दश आकाशना एव २० अ सझायमांहि सझाय कर्यो होय, (सज्झाए न सज्झायं के०) सझा य करवा योग्य वेलायें सझाय न कीधो होय, (तस्समिच्छामिडु क्कड के०) तेनु दुष्कृत जे पाप ते मारु निष्फल थाओ ॥ ६ ॥

पछी " दसण समकित " नी पाटी कहीजें, ते कहे छे –

दसण समकित ॥ परमठ सथवो वा,सुदिठ परमठ से वणावावि ॥ वावस कुदंसण वज्जणाय एवी सम्मत्त सद्द हणा ॥ एहवा समकितना समणोवासयाण सम्मत्तस्स पंच अइयारा, पयाला, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं,सका कखा, वितिगिछा,परपासमी परसंसा, परपासमीसंथवो, एवं पाच अतिचार मध्ये जे कोइ अतिचार लागो होय तस्स मिछामि दुक्कडं ॥७॥इति

अर्थ – (दसण समकित के०) समकित दर्शन तेनुं स्वरूप कहीयें छैयें (परमठ के०) परम अर्थ ते जीवादिक नव पदार्थनो (सछवोवा के०) सस्तव ते परिचय करवो, तेनो समागम करवो, तथा (सु के०) नला (दिठ के०) दीठा छे (परमठ के०) सूत्रना अर्थ जेणें एवा गुरुनी (सेवणावावि के०) सेवना करवी अपि शब्द निश्चय वाचक छे (वावस के०) समकित पामीनें पछी तेने वमी नाखे ते तथा (कुदसण के०) कूडु दर्शन जेनु एट ले मूलथी समकित जेने नज होय तेने, (वज्जणा के०) वर्ज वो, एटले तेनो त्याग करवो (सम्मत्त के०) ए समकितनी (स द्दहणा के०) सद्दहणा, श्रद्धा, (एहवा समकितनासमणोवास याण के०) एहवा समकितना धारक श्रावकने, (सम्मत्तस्स के०) समकित सबधि, (पच के०) पांच, (अइयारा के०) अतिचा

ण, जोगहीणं, घोसहीणं, सुठुदिन्नं, डुठुपडिछियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झाय, सज्झाए न सज्झाय, जणता, गुणतां, चिंतवता, ने विचारता, ज्ञान अने ज्ञानवतनी आशातना किनी होय तो तस्स मिछामि डुक्कड ॥६॥इति॥

अर्थ –(आगमे के०) सूत्र सिद्धांत, (तिविहे के०) तीन प्रकारका, (पत्तुत्ते के०) कहेला छे, (तंजहा के०) ते कहे छे, एक (सुत्तागमे के०) सूत्र आगम, बीजो (अछागमे के०) अर्थ आगम ते सूत्रना अर्थ समजवा, त्रीजो (तदुनयागमे के०) सूत्र तथा तेहनो अर्थ, ए दोय आगम जिहां होय ते त्रीजो तदुनय आगम एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लागो होय ते (आलोउ के०) आलोचु छु ते अतिचार कहे छे (जवाइद्ध के०) सूत्र आघा पाछां जमालीनी पेरें जण्या होय, (वच्चामेलियं के०) अनेरा शास्त्रनां वचन मेल्यां होय जेम कोपलादिकनी खीर तेम पदस् मेले (हीणरकर के०) हीनअक्षर बोल्यो होय, (अच रकर के०) अधिक अक्षर बोल्यो होय, (पयहीण के०) पद उंछु जण्युं होय, (विणयहीण के०) विनय रहित जण्यु होय, (जोगहिण के०) मन वचन कायाना जोग ठाम राख्या विना जण्यां होय, (घोसहीण के०) चारी अक्षरने हलको करी जण्यो होय, (सुठुदिन्न के०) सिद्धांतादिकनु ज्ञान अविनीतनें तथा मूर्खमिथ्यात्वीने दीधुं होय, (डुठुपडिछियं के०) अज्ञानपणे साचो छतां पण माठो पाडिवो जण्यो होय, (अकाले कउ सज्झाउ के०) चार सध्याकाल, चार महोत्सव, चार माहापाडिवा एव १२ अकाल ते कालमां सद्याय कीधो होय, (कालेनकउ सज्झाउ के०) कालवेलायें सद्याय न कीधो होय, (असज्झाए सज्झायं

व्रतनी अपेक्षायें छोटो व्रत, छे जेमां केटलु एक अविरति पण मोकलु रहे माटे एने ('थूलाउ के०) थूल कहियें एवा, (पाणाइ वायाउ के०) प्राणीयोना प्राणनी अतिपात एटले हिंसा करवी ते थकी (वेरमण के०) निवर्त्तुं छुं (त्रसजीव के०) त्रस जीव; ते हालता चालता एवा, (बेइंदिय के०) दोय इंडियवाला, (ते इंदिय के०) तीन इंडियवाला, (चउरिंदिय के०) चार इंडियवाला, (पंचिंदिय के०) पाच इंडिय वाला जीव, तेने (जाणी के०) जाणीने, (प्रीछी के०) ओलख्यांथका, (विण अपराधी के०) निरपराधी जीवने (आकुटी के०) उदेरी (संकल्पी के०) संकल्प करीने, (सलेसी के०) लेश्यासहित, (हणवा निमित्तें के०) हणवानी बुद्धियें करीनें, हणवानां पच्चरकाण कीधां छे ते आ प्रमाणें के (जावजीवाए के०) ज्या सुधी जीवु त्या सुधी (डुविह के०) दोय करण, अने (तिविहेण के०) तीन जोगसू (न करेमि के०) हु करु नहीं, (नकारवेमि के०) डुजा पासें हु करावु नहीं, (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) वचनें करी, (कायसा के०) कायायें करी हिंसा करु नही एहवा पहिला थूल एटले महोटा, (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा करवा थकी (विरमणव्रतना के०) निवृत्तवा रूप व्रतना (पंच अइयारा के०) पाच अतिचार, (पयाला के०) महोटा छे ते, (जाणियवा के०) जाणवा, पण (न समायरियवा के०) आवरवा नही, (तं जहा ते आलोउ के०) ते जिम छे तिम तेनां नाम कहीने आलोउ छु, (वधे के०) जीवने गाढें बधणे बाध्यो होय, (वहे के०) गाढा घाव घाल्या होय, (छविछेए के०) शरीरना अवयवो छेद्या होय, (अइभारे के०) अति भार भर्यो होय, (भत्त पाणवुछेए के०) अन्न पाणीनो व्युछेद कीधो होय, (तस्स

र, (पयाला के०) महोटा छे ते (जाणियवा के०) जाणवा पण, (न समायरियवा के०) आदरवा नहीं, (तं जहा के०) ते जेम छे तेम आगल कहीने (ते आलोउ के०) आलोउं छु, १ (संका के०) जिन वचन तणो संदेह कीधो होय २ (कंखा के०) मिथ्यात्व मतनी इछा कीधी होय, सद्गुना मार्ग न्नला जाण्या होय, ३ (वितिगिछा के०) धर्म करणीना फलमाहि संदेह आण्यो होय, धर्मक्रियानुं फल होशे के नहीं ? एहवो संदेह धर्यो होय साधु, साधवीनां मल मलीन वस्त्र देखी डुगंछा कीनी होय, ४ (परपासंडीपरसंसा के०) मिथ्यात्वीनी प्रन्नावना देखी प्रशंसा किनी होय, (परपासंमिसंथवो के०) मिथ्यात्वना प्ररूपकनो संस्तव परिचय कीधो होय, एवं पांच अतिचार माहेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, (तस्स के०) ते संबंधी, (डुक्कडं के०) डुष्कृत जे पाप ते मिछामि के०) मुजने निष्फल थाउ ॥ ६ ॥ इति ॥

पछी १२ वारे " व्रत अतिचार " कहीजें, ते कहे छे —

(१) पहेलुं अणुव्रत थूलाउ पाणाइवायाउ वेरमणं त्रसजीव वेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदिय, जाणी प्रीछी विण अपराधी आकुटी संकल्पी सलेसी हणवानिमित्तें हणवानां पच्चरकाण, जावज्जीवाए डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एहवा पहिला थूलप्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा, पयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउं ॥ वंधे वहे छविछेए, अइन्नारे न्नत्त पाणवुछेए ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थ –(पहिलुं के०) पहिलुं (अणुव्रत के०) साधुना पंचमहा

मृषा ते खोटो उपदेश दीधो होय, (कूडलेहकरणे के०) कूडालेखनुं करवु एटले खोटा लेख लिख्या होय, (तस्स मिच्छामि डुक्कड के०) ते पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ ए ॥ इति ॥

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाउ अदिन्नादाणाउ, वेरमणं, खातर खणी, गाठडी छोडी, तालु परकुचिये करी, पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी, इत्यादिक मोटकू अदत्तादान लेवाना पच्चक्काण, सगा संवधी, व्यापारसवधी तथा निभ्रमी वस्तु उपरात आदत्तादान लेवानां पच्चक्काण जावजीवाए डुविहं तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुध्दरज्जाइक्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरुवगववहारे, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १० ॥

अर्थ –(त्रीजु अणुव्रत के०) त्रीजु अणुव्रत (थूलाउ के०) मोहोटु, (अदिन्नादाणाउ के०) अण दीधेलु लेवाथकी, एटले चोरी करवाथकी, (वेरमण के०) निवर्तु छु (खातरखणी के०) कोइना घरमां खातर पाडी चोरी कीधी होय, (गांठडी छोडी के०) कोईनी गांठडी छोडी होय, (तालुपरकुचियेंकरी के०) कोईनु तालु वीजी कुचीथी उघाडीहोय, (पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी के०) कोईनी पडेली वस्तुनो, कोई धणी छे एम जाण्यां छतां ते लेवी, (इत्यादिक मोटकू के०) ए आदि मोटका, (अदत्तादान के०) धणीना दीधा विनानी वस्तुने (लेवानां पच्चक्काण के०) लेवानो

मिछामि डुक्कड के०) ते अतिचार रुप डुष्कृत जे पाप ते महारु निष्फल थाउ ॥ ८ ॥ इति ॥

(१) वीजु अणुव्रत थूलाउ मोसावायउ वेरमणं कन्नालिए गोवालिए, नोमालिए, थापण मोसो, मोटकी कूडी साख, इत्यादिक मोटकू जूठ बोलवा पच्चखाण जावजीवाए, डुविहं, तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा बीजा थूल मृपावादविरमण व्रतना पच अइयारा, जाणियवा, न समायरिवा त जहा ते आलोउ, सहसाब्भखाणे, रहस्साब्भखाणे, सदारा मतन्नेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे, तस्स मिछामि डुक्कड ॥ ए ॥

अर्थ –बीजु अणुव्रत, (थूलाउ के०) महोटा (मोसावायउ के०) मृपावादथकी, एटले जूठु बोलवाथी (वेरमण के०) हुं निवर्तु छु (कन्नालिए के०) कन्या तथा वर सबधि जूठ, (गोवालिए के०) गाय, नेंप आदि ढोर सबधि जूठ, (नोमालिए के०) जमीन सबधि जूठ, (थापणमोसो के०) कोईनी स्थापण उलववी, (मोटकी कूडी साख के०) मोटी खोटी साक्षी नरवी, (इत्यादिक के०) ए आवें करीनें, (मोटकू जूठ के०) महोटुं जूठ, (बोलवा के०) बोलवानु (पच्चखाण के०) पच्चखाण, (जावजीवाए के०) जावजीव लगें, (डुविहं तिविहेण के०) इत्यादिक नो अर्थ आगल लखाइ गयो छे, (सहसाब्भखाणे के०) सहसात्कारें कोई प्रत्यें कूडुं आल दीधु होय, (रहस्साब्भखाणे के०) कोईनी रहस्य ते छानी वात प्रगट कीनी होय, (सदारामतन्नेए के०) पोतानी स्त्रीना मर्म प्रकाश्या होय, (मोसोवएसे के०)

हा ते अलोउं, इत्तरिय परिग्गहियागमणे, अपरिग्ग हियागमणे अनंगकीडा, परविवाहकरणे, कामभो गेसु तिवाभिलासा, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ – (चोथुं अणुव्रत के०) चोथु अणुव्रत (थूलाउ के०) महोटा (मेहुणाउ के०) मैथुन थकी (वेरमणं के०) निवर्त्तुं छुं, (सदारा के०) पोतानी स्त्रीथीज (सतोसिए के०) सतोष राखवो, (अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथे (मे हुणविह के०) मैथुन सेववानां (पच्चरकाण के०) त्याग बधी छे, ए पुरुष आश्रयी कर्युं अने स्त्रीने (सभ्रतार के०) पोताना भर्तारथी (सतोसिए के०) सतोष राखवो (अवसेस के०) ते शिवाय बीजा कोइनी सार्थे (मेहुणनु के०) मैथुन सेववानी (पच्च रकाण के०) बंधी, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायायें करी मेहुण सेववानु पच्चरकाण होय एटले मैथुन सेववानी बंधी होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच संबधी (मेहुणनु के०) मैथुन सेववानुं (पच्चरकाण के०) त्याग, (जावजीवाए के०) ज्यांसुधी जीवु, त्यां सुधी (देवतासबधि के०) देवतानी सार्थे डुविह ति विहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (म नुष्य तिर्यंच सवधि के०) माणस, तथा पशु वगेरेनी सार्थे (ए गविहं के०) एक करण (एगविहेण के०) एकजोगें (नकरेमि के०) हुं करू नही, (कायसा के०) कायायें करी, एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव्रतना के०) महोटां मैथुन त्यागकरवा स वधि व्रतना (पंचअइयारा के०) पांच अतिचार, जाणियवा न समायरिवा तं जहा ते (अलोउं के०) आलोचु छुं, (इत्तरिय परिग्गहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्पकाल मास छ मास पर्यंत कोइ वेश्या प्रमुखने राखी तेनी सार्थे, गमन कीधुं होय, (अपरि

त्याग, अने पोताना सगां वाहालां सबधी कोइ चीज होय अ थवा व्यापर सबधी कोइ चीज नमुना दाखल तथा सोपारीनो कटको प्रमुख जे उपाडवाथकी तेना मालेकने कोइ भ्रम उपजे नही तेनी जयणा उपरांत पच्चक्काण (जावजीवाए के०) जा वजीव सुधी, डुविहं तिविहेणं, इत्यादिनो अर्थ सुलभ छे एना पाच अतिचार कहे छे (तेनाहडे के०) चोरीनी वस्तु लीनी होय, (तक्करप्पउगे के०) चोरने द्रव्य, उपगरण वगेरे कोइ स हाय दीनी होय, (विरुध्दरज्जाइक्कमे के०) राज्य विरुध्द कार्य कीधु होय,राजानुं दाण भाग्यु होय,तथा राजायें मना करेला गुन्हा कर्या होय, (कूडतोले के०) खोटां तोला कीनां होय, (कूडमाणे के०) खोटां मापा कीनां होय, (तप्पडिरुवगववहारे के०) एक वस्तु मांहे ते वस्तु जेवीज बीजी वस्तुनी भेल सभेल कीनी होय, सर सी वस्तु देखाडीने नरसी वस्तु आपी होय, तो (तस्स मिच्छामि डुक्कड के०) तेनुं पाप महारे निष्फल थाजो ॥१०॥इति॥

(४) चोथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण, सदारा संतोसिए अवसेस,मेहुणविह पच्चक्काण,ए पुरुषने अने स्त्रीने सभर्तारसंतोसिए, अवसेसं मेहुणनुं पच्चक्काण, अने जे स्त्री पुरुपने मूलथकीज कायाएं करी मेहुण से ववानुं पच्चक्काण होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सं बधी मेहुणनु पच्चक्काण, जावजीवाए देवता सबंधी डु विहेण तिविहेणं,न करेमि,न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य तिर्यंच सबधी एगविहं एगविहेणं न क रेमि, कायसा, एहवा चोथा थूलमेहुण विरमणव्रत ना पच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं ज

(यथापरिमाण के०) जेटली मर्यादा कीधी छे, (हिरस्र के०) रूपु (सोवस्रुन्नु के०) सोनानी (यथापरिमाण के०) जे प्र माणे मर्यादा कीधी छे, (धण के०) मोरवधनाणु, (धासुन्नु के०) शाल्यादिक धान्यनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे, (डुपद के०) वेपगां मनुष्यादिक (चउप्पदन्नु के०) चोपगां ढो रादिकनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे (कु विय धातुन्नु के०) सर्व घरनी वस्तु ते घरवखरी वगेरेनी, (यथा परिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी छे, ए यथापरिमाण की धुं छे ते उपरांत पोतानु करी परिग्रह राखवानां पच्चरकाण (जा वजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु त्यां सुधी, एगविह इत्यादिनो अर्थ सु गम छे तेथी लख्यो नथी एना पाच अतिचार कहे छे (खित्तवत्थुप्प माणाइक्कमे के०) उघाडी जमीन तथा ढांकी जमीननु प्रमाण, अति क्रम्युं होय, (हिरस्रसोवस्रुप्पमाणाइक्कमे के०) रुपा तथा सोनानी मर्यादा उल्लघी होय,(धणधासुप्पमाणाइक्कमे के०) रोकड नाणु तथा दाणानी मर्यादा उल्लघी होय, (डुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे के०) वेपगा, चोपगानी मर्यादा उल्लंघी होय, (कुवियप्पमाणाइक्कमे के०) घरवखरीनी मर्यादा उल्लघी होय, (तस्स मिछामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप महारो निष्फल थाजो ॥ १२ ॥ इति ॥

(६) छहुं दिशिव्रत,ऊर्ध्वदिशिनु यथापरिमाण,अ धोदिशिनुं यथापरिमाण, तिरियदिशिनु यथापरि माण, ए यथापरिमाण कीधु छे,ते उपरात सइछाये, कायाये जइने पच आश्रव सेववाना पच्चरकाण जावजीवाए, डुविह, तिविहेण, न करेमि, न कार वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा छठादिशि व्रतना पच अइयारा, जाणियवा न समायरियवा तं

ग्गहियागमणे के०) जे परणेली न होय, एवी कुमारिका, अथवा विधवा जेनो कोइ धणी न होय जेनु कोइयें परिग्रहण कर्युं नथी तेने अपरिग्रहीता कहीयें तेनी सार्थे गमन कीधु होय, (अनंग कीडा के०) अत्यासक्तियें स्वदेह परदेह अनग जे काम तेनी चेष्टा कीधी होय हास्य, कुतूहल कीधां होय, (परविवाहकरणे के०) पोताना गेरु टालीने परना गेरु सबधि विवाह, नात्रु मेलव्युं होय, (कामभोगेसु के०) काम भोगने विषे, (तिव्वाभिलासा के०) तीव्र परिणामें अत्यत अभिलाषा राखी होय, (तस्स मिच्छामि डुक्कडं के०) तें सबंधि कीधेलु पाप महारु निष्फल थाजो ॥११॥इति॥

(५) पाचमु अणुव्रत थूलाउ परिग्गहाउ, वेरमण, खित्तवत्थुनु यथापरिमाण, हिरण्णसोवण्णनुं यथापरिमाण, धनधान्यनु यथापरिमाण, डुपदचउप्पदनु यथापरिमाण, कुविय धातुनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधु छे, ते उपरात पोतानुं करी परिग्रह राखवाना पच्चक्खाण,जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि,मणसा,वयसा, कायसा एहवा पांचमा थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतना, पच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा ते आलोउं, खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसोवण्णप्पमाणाइक्कमे, धनधाण्णप्पमाणाइक्कमे डुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे,तस्स मिच्छा मि डुक्कड ॥१२॥इति॥

अर्थ –पांचमु अणुव्रत (थूलाउ के०) मोहोटुं परिग्रह जे बोल तनें वगेरे ते (वेरमण के०) तजवा विषेनु ते कहेछे (खित्त के०) खेत्रादिक ते उघाडी जमीन,(वत्थुं के०) घरादिक ढाकी जमीननी

पुष्फविहं, आजरणविह, धूपविहं, पेजविहं, जख्ख णविहं, उदनविह, सूपविहं, विगयविहं, सागविहं, माहुरविहं जिमणविहं, पाणीविहं मुखवासविहं, वाहनिविह, वाहनविह, सयणविह, सचित्तविहं, दव्वविहं, इत्यादिकनुं, यथापरिमाण कीधुं छे, ते उ परांत उवजोग परिजोग जोगनिमित्तें जोगववा प च्चख्काण जावजीवाए, एगविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवजोग प रिजोग डुविहे पन्नत्ते तं जहा, जोयणाउय, कम्मउय, जोयणाउ समणोवासयाणं पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउ, सचित्ताहा रे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिउसहिजख्कणया, डुप्पोलिउसहिजख्कणया, तुछोसहिजख्कणया, क म्मउण समणोवासयाणं, पनरस कम्मादाणाइ, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा ते आलोउं, ईगा लकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीक म्में, दंतवाणिज्ज, लख्कवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, रसवा णिज्ज, विसवाणिज्ज, जतपिल्लणकम्मे, निलछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायपरिसोसणया, असइजण पोसणया, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥१४॥ इति ॥

अर्थ — सातमुं व्रत (उवजोग के०) जे वस्तु एकज वार जो गवाय एवा जे अन्नादिक तेनो विधि प्रमुख (परिजोगविहं के०)

जहा ते अलोउं, उढ्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहो दिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुढ्ढि सयंतरद्धाए, तस्स मिछामि डुक्कड ॥ ३ ॥

अर्थ — (छठ्ठु दिशिव्रत के०) छठ्ठु, दिशाना मान बांधवानुं व्रत, ते (ऊर्ध्वदिशिनु के०) उंचीदिशानु (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधु छे, (अधोदिशिनु के०) नीची दिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधु छे, (तिरिय दिशिनु के०) तीर्छी जमीन, एटले उत्तर, दक्षिण, पूर्व अने पश्चिम ए चारे दिशाउं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधु छे, ए यथापरिमाण कीधुं छे ते उपरातनीभूमिमां स्वेच्छायें कायार्ये जइने पंच आश्रवसेववानां पाप भोगववानां,पच्चक्काण जावजीवाए डुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा,एवी रीतें कीधा छे,एहवा छठ्ठ (दिशि व्रतना के०) करेला मानथी उपरात दिशाने तजी देवाना व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउ, (उढ्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) उंची दिशानुं प्रमाण अतिक्रम्यु होय, मर्यादा उल्लंघी होय, (अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) नीची दिशानी मर्यादा उल्लघी होय, (तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) तीर्छी दिशानी मर्यादा उल्लघी होय, (खित्तवुढ्ढि के०) क्षेत्र जमीननी वृद्धि, एटले एक दिशा घटाडीने बीजी दिशा व धारी होय (सयंतरद्धाए के०) सदेह पच्यां छतां आगल चाल्यो होय (तस्स मिछामि डुक्कड के०) तेनु पाप कीधेलु महारुं निष्फल थाजो ॥ १३ ॥ इति ॥

(७) सातमुं व्रत उवभोग परिभोगविहं पच्चक्कायमाणे उल्लणियाविहं,दंतणविहं, फलविहं, अभंगणविहं, उवट्टणविहं, मज्जणविहं, वत्थविहं, विलेवणविहं,

फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फ लाणी वस्तु आज एटली जोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०) जे हद कीधी छे ते उपरांत, (उवन्नोग के०) जे वस्तु एक वार नोगवामा आवे ते, (परिन्नोग के०) जे वस्तु वारवार नोगववामां आवे ते, (नोगनिमित्ते के०) नोगने कारणें, (नोगववापच्चरका ण के०) नोगववानी वधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु त्या सुधी, एगविह तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ए हवा सातमा उवन्नोग परिन्नोग, (डविहे के०) दोय प्रकारें, (प सुत्ते के०) प्ररूप्या छे, (तंजहा के०) ते कहे छे, (नोयणाउय के०) एक नोजन संवधि, (कम्मउय के०) वीजु कर्म ते व्यापार सवधि जाणवु, तेमांथी (नोयणाउसमणोवासयाण के०) नोजन व्रत सवं धिना श्रावकने (पचअइयारा के०) पांच अतिचार छे,ते जाणियवा न समायरियवा (तंजहा तें आलोउ के०) ते जिम छे तिम कहे छे (सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक काचु फल खाय, (सचित्तपडिवद्धाहारे के०) सचित्तनी सार्थे लागेली प्रतिबद्धित वस्तु एटले लींबडानो गुंदर इत्यादिक सचित्त सहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिउंसहि नरकणया के०) अपक्वौषधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रदेश रहि गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु प्रमुख, (डप्पोलिउंसहिनरकणिया के०) डुपक्वौषधि ते काइक काचीने कांइक पाकी रही होय, जेने पूरुं अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं एवीवस्तुनो जोग करे, (तुच्छोसहिनरकणया के०) तेखावु थोडुं अने नाखवी वेवु घणु पडे, एवी वस्तु जे सीताफल,शेलडी प्रमुख ए पाच प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे,ए नोजनथी पांच अतिचार कह्यो,हवे (कम्मउण के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं के०) श्रमणोपासक एटले श्रावकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) प

उपन्नोग वस्तु जे वारवार न्नोगववामा आवे एवा वस्त्र आन्नरण प्रमुख तेनु (पच्चरकायमाणे के०) पच्चरकाण करवु,ते कहे वे (उल्लणि याविह के०) शरीरने लुहवाना वस्त्र ते अगूग तेना प्रकारनु, (दतणविह के०) दातणना प्रकारनु, (फलविह के०) वृक्षनाफल प्र मुखना प्रकारनु (अप्नगणविह के०) तेल प्रमुख शरीरें चोपडवाना प्रकारनु, (उवट्टणविर्ह के०) मर्दन करवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनु, (मक्कणविह के०) न्हावाना पाणी प्रमुखना प्रकारनुं (वथविह के०) वस्त्रना प्रकारनु, (विलेवणविह के०) चदनादिक विलेपन करवाना तथा तिलक प्रमुख करवाना प्रकारनु (पुप्फविर्ह के०) चपादिकना फूल प्रमुखना प्रकारनु, (आन्नरणविह के०) घरेणाना प्रकारनुं (धूपविह के०) धूप करवाना प्रकारनु (पेजविर्ह के०) पीवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनु, (न्नरकणविर्ह के०) सुखडी प्रमुख न्नोजन करवा योग्य वस्तुना प्रकारनु, (उदनविर्ह के०) मत प्रमुखनी दालना प्रकारनुं, (सूपविह के०) शाल चावलना प्रकारनुं (विगयविह के०) घृत, तेल, दुध, दही, गोल, आदि विगयना प्रकारनुं (सागविह के०) नीलां पत्र, शाक, प्रमुखना प्रकारनु, (माहुरविर्ह के०) मधुरपदार्थना प्रकारनु, (जिमणविर्ह के०) जिमवानो विधि जे अमुक आहार जमवो तेना प्रकारनु, (पा णीविह के०) पाणी प्रमुख पीवाना प्रकारनु,(मुखवासविह के०) सो पारी, लविगादिक मुखवास वस्तुना प्रकारनुं, (वाहनिविह के०) पगेपदेरवाना पगरखा प्रमुखना प्रकारनुं, (वाहनविर्ह के०) वाह नना प्रकारनु, (सयणविह के०) शय्या पलग आदि सुवानी वस्तुना प्रकारनुं (सचित्तविर्ह के०) सचित्त वस्तु तेने खावाना प्रकारनुं, (दव्वविर्ह के०) आज महारें अमुक अमुक आटलाज द्रव्य खावां उपरांत न खावा तेहना प्रकारनु, (इत्यादिकनु यथापरिमाण कीधुं वे के०) इत्यादि वस्तुनुं जेम प्रमाण कीधुं वे, एटले

फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फ
लाणी वस्तु आज एटली नोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०)
जे हद कीधी ठे ते उपरांत, (उवन्नोग के०) जे वस्तु एक वार
नोगवामां आवे ते, (परिन्नोग के०) जे वस्तु वारवार नोगववामां
आवे ते, (नोगनिमित्ते के०) नोगने कारणें, (नोगववापच्चरका
ण के०) नोगववानी वंधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु
त्यां सुधी, एगविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ए
हवा सातमा उवन्नोग परिन्नोग, (डुविहे के०) दोय प्रकारें, (प
सुत्ते के०) प्ररूप्या ठे, (तंजहा के०) ते कहे ठे, (नोयणाउय के०)
एक नोजन सवधि, (कम्मउय के०) वीजु कर्म ते व्यापार सवधि
जाणवु, तेमांथी (नोयणाउसमणोवासयाण के०) नोजन व्रत संवं
धिना श्रावकने (पंचअश्यारा के०) पांच अतिचार ठे,ते जाणियवा
न समायरियवा (तंजहा तें आलोउ के०) ते जिम ठे तिम कहे ठे
(सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक
काचु फल खाय, (सचित्तपडिवद्धाहारे के०) सचित्तनी साथे
लागेली प्रतिवद्धित वस्तु एटले लींवडानो गुंदर इत्यादिक सचित्त
सहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिउंसहि
नरकणया के०) अपक्वौषधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रवेश रहि
गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु प्रमुख,
(डुप्पोलिउंसहिनरकणिया के०) डु पक्वौपधि ते काइक काचीने
कांइक पाकी रही होय, जेने पूरु अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं
एवीवस्तुनो नोग करे, (तुडोसहिनरकणया के०) तेखावु थोडुं अने
नाखी देवु घणु पडे, एवी वस्तु जे सीताफल,शेलडी प्रमुख ए पांच
प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे,ए नोजनथी पांच
अतिचार कह्यो,हवे (कम्मउण के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं
के०) श्रमणोपासक एटले श्रावकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) प

न्नर प्रकारें कर्म आववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार छे,ते जाणि यवा न समायरियव्वा (तजहा ते आलोउं के०) ते जेम छे तेम आलोउं छुं, (इगालकम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनु कर्म कीधुं होय,(वणकम्मे के०) वननां झाड वृक्ष कपावी व्यापार कीधो होय, (साडिकम्मे के०) गाडादिक करावीने वेच्यां होय,घरी,उंच प्रमुखनो व्यापार कीधो होय (नाडिकम्मे के०) गाडा, घरादिक, उंट,घोडा, बेल प्रमुखना भाडानो व्यापार कीधो होय, (फोडिकम्मे के०) खाण खणाववी पत्थरा फोडाववा कर्षण करवु,इत्यादि पृथ्वीनां पेट फोडाववां, कूवा, वाव आदि कराववा सवधि कर्म कर्यां होय, ए पाच कुकर्म, श्रावकने अत्यंतपणें वर्जवां, (दंतवाणिज्ज के०) आगरमा जइ हाथीदांत, नखला, कस्तुरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु लेवी, ते दातनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्ख वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज के०) म दिरादिक रसनो व्यापार करवो, (केसवाणिज्ज के०) द्विपद चउ प्पदजीवोनो व्यापार करवो,(विसवाणिज्ज के०) विष जे जेर, लोह, दृषीमार, प्रमुख जीवघातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय,ए पांच कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवां, (जतपिल्लणकम्मे के०) घाणी, उ खल, मुशल, घटी प्रमुखनो व्यापार, (निल्लंछणकम्मे के०) बल दादिकने आंकाववा, मांज देवराववा, खासी कराववी (दवग्गिदाव णया के०) दव देवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (दह के०) द्रह, कुंम (तलाय के०) तलावना पाणीने, (परिसोसणया के०) समस्त प्रकारें शोषाव्युं होय (असईजण पोसणया के०) कुर्कुट, श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा दुराचारी दासदासी प्रमुखनु पोषण कर्युं होय, ते असती जन पोषण कहियें, ए पांच सामान्य कर्म निश्चें वर्जवां, (तस्स मिच्छामि दुक्कड के०) तेनु दुष्कृत एटले पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ १४ ॥

ᜂ आठमु अनर्थदंम विरमण व्रत ते चउविहे, अ णठादंमे, पस्त्ते, तं जहा, अवज्ञाणायरिए, पमायाय रिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदंम सेववा पच्चरकाण, जावजीवाए, ङविहं,तिविहेणं, न क रेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा आठमा अनर्थदंम विरमण व्रतना पंच अश्यारा, जा णियवा, न समायरियवा, त जहा ते आलोउ, कंद प्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवज्ञोगपरि न्नोग अइरत्ते, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ – आठमुं (अनर्थदंम के०) जे अर्थ विना कर्मबंधनां कारण सेववां, कारण विना आत्मानें दमाववो ते अनर्थदंम कहीयें तेथकि (वीरमण के०) निवर्त्तवु ते अनर्थदंम, विरमण व्रत करीयें ते (अणछादम के०) अनर्थ दमे, (चउविहे के०) चार प्रकारें (पस्तुते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम ठे तिम कहे ठे, (अवज्ञाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते खोटु ध्यान धरवु, माठी चिंतवणा करवी, (पमायायरिए के०) होड करवी, विकथा करवी, खेल करावता, सर्व रात्रियें सुई रहेवु धीतेलादिकनां ठाम उघाडां राखवा ते प्रमादाचरित, (हिंसप्पयाणे के०) जे थकी हिंसा थाय एहवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवां, ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) बलद समरावो,खेतर खेडो, गाडी जोडो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते हिंसप्रदान एहवा अनर्थदंम सेववा पच्चखाण, जावजीवाए, डु विहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, आठमा अनर्थदंमविरमणव्रतना पंच अश्यारा, जाणि

न्नर प्रकारें कर्म आववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार छे,ते जाणि यवा न समायरियव्वा (तंजहा ते आलोउ के०) ते जेम छे तेम आलोउं छुं, (इंगालकम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनु कर्म कीधुं होय,(वणकम्मे के०) वननां झाड वृक्ष कपावी व्यापार कीधो होय, (साडिकम्मे के०) गाडादिक करावीने वेच्या होय,धरी,उध प्रमुखनो व्यापार कीधो होय (भाडिकम्मे के०) गाडा, धरादिक, उंट,घोडा, बेल प्रमुखना भाडानो व्यापार कीधो होय, (फोडिकम्मे के०) खाण खणाववी पत्थरा फोडाववा कर्षण करवु,इत्यादि पृथ्वीनां पेट फोडाववां, कूवा, वाव आदि कराववा संबधि कर्म कर्यां होय, ए पांच कुकर्म, श्रावकने अत्यंतपणें वर्जवां, (दंतवाणिज्ज के०) आगरमां जइ हाथीदांत, नखला, कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु लेवी, ते दातनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्ख वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज के०) म दिरादिक रसनो व्यापार करवो, (केसवाणिज्ज के०) द्विपद चउ प्पदजीवोनो व्यापार करवो,(विसवाणिज्ज के०) विष जे जेर, लोह, हथीयार, प्रमुख जीवधातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय,ए पांच कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवां, (जंतपिल्लणकम्मे के०) घाणी, उ खल, मुशल, घंटी प्रमुखनो व्यापार, (निल्लंछणकम्मे के०) बल दादिकने अकाववा, नांक वेंधराववा, खासी कराववी (दवग्गिदाव णया के०) दव देवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (दह के०) द्रह, कुंभ (तलाय के०) तलावना पाणीने, (परिसोसणया के०) समस्त प्रकारें शोषाव्युं होय (असईजण पोसणया के०) कुर्कट, श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा कुराचारी दासदासी प्रमुखनुं पोषण कर्युं होय, ते असती जन पोषण कहियें, ए पाच सामान्य कर्म निश्चें वर्जवां, (तस्स मिच्छामि दुक्कड के०) तेनु दुष्कृत एटले पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ १४ ॥

८ आठमुं अनर्थदंम विरमण व्रत. ते चउविहे, अणठादंमे, पसत्ते, तं जहा, अवचाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदंम सेववा पच्चरकाण, जावजीवाए, डुविहं,तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा आठमा अनर्थदंम विरमण व्रतना पंच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ, कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवनोगपरिनोग अइरत्ते, तस्स मिठामि डुक्कडं ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ – आठमुं (अनर्थदंम के०) जे अर्थ विना कर्मबधनां कारण सेववां, कारण विना आत्मानें दमाववो ते अनर्थदंम कहीयें तेथकि (वीरमण के०) निवर्त्तवुं ते अनर्थदंम, विरमण व्रत करीयें ते (अणठादंम के०) अनर्थ दंमे, (चउविहे के०) चार प्रकारें (पसुते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम छे तिम कहे छे, (अवचाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते खोटुं ध्यान धरवु, माठी चितवणा करवी, (पमायायरिए के०) होड करवी, विकथा करवी, खेल करावना, सर्वे रात्रियें सुई रहेवुं घीतेलादिकनां ठाम उघाडा राखवा ते प्रमादाचरित, (हिंसप्पयाणे के०) जे थकी हिंसा थाय एहवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवां, ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) बलद समरावो,खेतर खेडो, गाडी जोडो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते हिंसप्रदान एहवा अनर्थदंम सेववा पच्चरकाण, जावजीवाए, डुविहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, आठमा अनर्थदमविरमणव्रतना पंच अइयारा, जाणि

यव्वा न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउ (कदप्पे के०) जे थकी काम वृद्धि थाय एहवी वात कीधी होय, (कुक्कुइए के०) नांमनी पेरें कुचेष्टा कीधी होय, (मोहरिए के०) मौखर्य ते वाचालपणे जेम तेम बोल्यो होय, पारकी तांत कीधी होय, (सजुत्ताहिगरणे के०) खखल, मुशलादिक अधिकरण एकठां करी मूक्यां होय, (उवभोगपरिभोग अइरत्ते के०) उपभोग परिभोगमा अतिरक्त रहे, एटले भोगविलासमां बहु मची रह्या होइयें, (तस्स मिछामि डुक्कडं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १५ ॥ इति ॥

नवमुं सामायिक व्रत, सावज्ज जोगनुं, वेरमणं, जावनियमं, पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेण न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंत नाणु, जाणइ, वयसा, कायसा, एहवी सद्दहणा, परूपणा, करियें तिवारे फरसनाये करी शुद्ध, एहवा नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं, मणडुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइविहूणे अकरणियाए, सामाइयस्स, अणवुठियस्स करणयाए, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १६ ॥ इति ॥

अर्थ —नवमुं (सामायिक व्रत के०) समतारूप सामायिकनुं व्रत, (सावज्ज जोगनुं के०) सावद्य जे पाप तेणें करी सहित एवा मनादि योग तेनुं (वेरमण के०) निवर्त्तवु, (जावनियम के०) ज्यां सुधी सामायिकनी नियम एटले मर्यादा कीधी छे त्यां सुधी, (पज्जुवासामि के०) छुन जोगनें पर्युपासु एटले सेवु, (डुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा करंत नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी (सद्दहणा के०) श्रद्धा,

रुचि,प्ररूपणा,करियें त्यारें फरसनायें करीशु.६,एह्वा नवमा सामा यिक व्रतना,पच अइयारा,जाणियवा,न समायरियवा,तं जहा,ते आ लोड (मणडुप्पणिहाणे के०) सामायिक कीधु ठे तेमां मन माठु व र्त्ताव्यु होय, (वयडुप्पणिहाणे के०) वचन माठु वर्त्ताव्यु होय, (काय डुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्ससइवि हूणे अकरणियाए के०) सामायिकने बराबर कीधु के नही ? तेनी ख बर न रही होय,तें सइविहूणे एटले स्मृतिविहीन अतिचार, (सामाइ यस्स के०) सामायिकने (अणवुठियस्स करणयाए के०) पूरु थया विना पाळ्यु होय,ते अनवस्था दोष नामे पाचमो अतिचार जाणवो (तस्स मिछामि डुक्कड के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १६ ॥

१० दशमु देसावगासिक व्रत, दिनप्रतें प्रभातथकी प्रारंभीने पूर्वादिक ठदिशे जेटली भूमिका मोकली रा खी ठे, ते उपरात, सइछाये, कायासें,भइन, पाच आ श्रव सेववा पच्चरकाण,जाव अहोरत्त,डविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा करंतं नाणुजाणिक्का,वयसा,कायसा,जेटली भूमिका मोकली राखी ठे, तेमाहिज जे डव्यादिकनी मर्यादा कीधी ठे, ते भोगववी ते उपरात, उवभोग, परिभोग, भोगनि मित्तें, भोगववा पच्चरकाण, जावअहोरत्त, एगविहं, तिविहेण, न करेमि,न कारवेमि, मणसा, वयसा, काय सा, एह्वा दशमा देशावकाशिक व्रतना,पच अइयारा जाणियवा, न समायरियवा, त जहा, ते आलोउ, आण वणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, ब हिया पुग्गलपरकेवे, तस्स मिछामि डुक्कड ॥१७॥ इति॥

अर्थ —दशमुं(देसावगासिक व्रत के०) देशथकी दिशाउनो अव काश करवो सङ्क्षेपवो तेमज सर्वे व्रतोना नियम सङ्क्षेपवा एटले प्रथम घणी छूट राखी होय ते प्रतिदिवसें सङ्क्षेपीने थोडी छूट रा खवी ते सवधी व्रत ते दिनप्रत्यें प्रजातथकी प्रारन्नीने ठविशें जेटली जूमिका मोकली राखी ठे एटले सवारमां उठीने मान कर्तुं ठे के आज म्हारे दरेक दिशायें अटला गाउ उपरांत जावु नही? ते उपरात (सइछाइ के०) पोतानी इछायें करी कायायें अन्ने जीव हिंसादिक पांच आश्रव, सेववानां पच्चरकाण (जाव अहो रत्त के०) यावत् दिवस ने रात्रि सुधी,डुविह, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणिज्जा, वय सा कायसा, एवी रीतें करेला ठे तिहां जेटली जूमिका मोकली राखी ठे, तेमाही जे इव्यादिकनी मर्यादा कीधी ठे, के आज म हारे एटला पदार्थ उपजोगमां लेवा ते उपरांत उवजोग परिजोग एहवा वे प्रकारें जोगयोग्य वस्तुने जोगनिमित्ते जोगनी इछाएं जोगववानां पच्चरकाण (जावअहोरत्तं के०) यावत् एक दिवसरा त्रि सुधी (एगविहं के०) एक करणे, अने (तिविहेण के०) त्रण जोगें, करी नकरेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवी रीतें पच्चरकाण कर्यां ठे एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा,जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा,ते आलोउं (आ णवणप्पउंगे के०) प्रमाण करेली जूमिथी बाहिरली जूमियें कोइ जनार माणसनी हस्तक कोइ पदार्थनुं आनयन एटले मगाववुं ते प्रथम आनयन प्रयोगनामा अतिचार जाणवो (पेसवण प्पउंगे के०) प्रमाण करेली जूमिथी उपरांत कोइ चाकर मोक लीने वस्तु मगाववी क्रयविक्रयनो आदेश देवो ते वीजो प्रेषवण प्र योगातिचार (सद्दाणुवाइ के०) सावनो उपाय ते कोइ माणसने खुंखारोकरीने हद उपरांतथी वोलाववो ते शब्दानुपाति अतिचार,

(रूवाणुवाइ के०) पोतानु रूप देखाडीने कोईने बोलावे, (बहि यापुग्गलपक्खेवे के०) निर्मेली नूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुषने कांकरादिक नाखी बोलावे, ते पांचमो पुजलप्रक्षेपातिचार ए पांच अतिचारमांहे कोइ अतिचार दोष लाग्यो होय तो (तस्स मिच्छा मि डुक्कडं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १७ ॥ इति ॥

(११) इग्यारमुं पोषध व्रत, असणं, पाणं, खाइमं, साइमनुं पच्चक्खाण, अबंभनु पच्चक्खाण, अमुक मणि सुवर्णनु पच्चक्खाण, मालावन्नग विलेपणनुं पच्चक्खाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगनुं पच्चक्खाण, जावअहोर त्तं पज्जुवासामि. डुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कार वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करतं नाणुजाणइ, वय सा, कायसा, एहवी सद्दहणा, परूपणा करीये, तेवारे फरसनाये करी शुद्ध, एहवा इग्यारमा पडिपुन्नं पो षध व्रतना, पंच अइयारा, जाणियवा न समायरिय वा, तं जहा ते आलोउं, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासथारए, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्जा सथार ए, अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणनूमि, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चार पासवणनूमि, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया, तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥१८॥ इति॥

अर्थ – इग्यारमुं (पोषधव्रत के०) पाप रहित थई, संवरें करी आत्माने पोषवो ते सबधि व्रत ते चार प्रकारें छे, (असण के०) अन्न, (पाण के०) पाणी, (खाइम के०) मेवानी जात, (सा इमनु के०) मुखवास सोपारी लविंग प्रमुख खावानुं (पच्चक्खा

ए के०) निषेधवु ते प्रथम चार प्रकारें आहार परिहार पोसह तथा (अबंभनु पच्चरकाण के०) अब्रह्मचर्यनी बंधी, ते बीजुं ब्रह्मचर्यपोसह (अमुक के०) जे आभरण सुखे उताखां न उतरे ते मूकीने उपरात, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमुखना आभरण राखवानी (पच्चरकाण के०) बंधी तथा (मालावन्नग के०) गुलाबना फुल आदिकनी मालानु अने वन्नग एटले वर्णक वस्तु ते अबीर, गुलाल, अलतादिक जाणवा (विलेपणनुं के०) विलेपन करवानु पच्चरकाण ते त्रीजो शरीर सत्कारपरिहार पोसह तथा (सत्त्थ के०) शस्त्र,हथीयार (मुसलादिक के०) आयुध,लाकडी, सांबेलां वगेरे, सावज्ज जोगनु पच्चरकाण एटले पापिष्ठ काम करवानी बंधी, ते चोथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसह एवु व्रत (जाव अहोरत्तं के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पज्जुवासामि के०) हु पर्युपासुं एटले सेवु आचरुं, दुविहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि,मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सद्दहणा के०) ए करवानी श्रद्धा थाय, (परूपणा करीयें के०) वात करीयें तेवारें फरसनायें करी शुद्ध एटले ते वखत शक्ति मुजब शुद्ध होजो, एहवा इग्यारमा (पडिपुन्न के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिथी अंत पर्यंत समतावार्चे संपूर्ण एवु (पोपधव्रतना के०) धर्मध्यानें तथा संवरें करी आत्माने पोपवानु व्रत तेना, पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं (अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहिय सिज्जा संथारए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सथा संथारानें अप्रतिलेपित एटले बराबर प्रतिलेख्यां न होय अने प्रतिलेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्यां एटले कांइ जोयां कांइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेपितदु प्रतिलेपितसंथासंथारातिचार (अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्जासंथारए के०) संथा संथाराने प्रमार्ज्यो न

होय अथवा प्रमार्ज्यो तो कांइ पुज्यो प्रमार्ज्यो कांइ न पुज्यो न प्रमार्ज्यो एम यद्वा तद्वा पुजे, ते वीजो अप्रमार्जितड प्रमार्जितसथारा अतिचार (अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण नूमि के०) एवी रीतेंज वडीनीत, लघुनीत परठवानी चूमिका तेनो त्रीजो अतिचार जाणवो तथा (अप्रतिलेपित डु प्रतिलेपित अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चार पासवणचूमि के०) वडीनीत लघुनीत परठवानी जूमिका, पुजी नही अथवा कांइ पुजी कांइ नही पुंजी ते चोथो अतिचार तथा (पोसहस्स के०) पोसह कीधो छे तेने (सम्म के०) सम्यक् प्रकारें एटले रूडे प्रकारें (अणणुपालणया के०) अनुपालना कीधी न होय पोसहमां जोजनादिक चिता कीधी होय, जे क्यारें पोसह पूर्ण थाशे अने क्यारें हुं जोजन करीश ? इत्यादिक पाचमो अतिचार जाणवो ए पांच अतिचारमां हेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय (तस्समिच्छामिडुक्कड के०) तेनुं कीधेलुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ जातां तीन वार आवस्सही न कीधी होय, आवता तीन वार निसही न कीधी होय, थोडी जायगा पुंजी होय, घणी जायगा न पूजी होय, काजो परठीने तीन वार वोसिरे वोसिरे न कीधो होय, परठवतां जूमिना धणीनी आज्ञा न मागी होय, पोसहमा निद्रा विकथादिक प्रमाद सेव्यो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ १७ ॥ इति ॥

१७ बारमु अतिथि संविजागव्रत, समणे निग्गथे, फासुअ एसणिज्जेण, असण, पाणं, खाइमं, साइमेण, वछ, पडिग्गह, कवल, पायपुछणेणं, पाडिहारिय, पीढ, फलग, सिज्जासंथारएणं, उसह जेसज्जेण, पडिलाजेमाणे, विहरामि, एहवी सद्दहणा, परूपणा, फरसनायें करी शुद्ध, एहवा बारमा अतिथि

ए के०) निषेधवु ते प्रथम चार प्रकारें आहार परिहार पोसह तथा (अबम्भ पच्चरकाण के०) अब्रह्मचर्यनी वधी, ते बीजुं ब्रह्मच र्यपोसह (अमुक के०) जे आभरण सुखे उतार्यां न उतरे ते मूकीने उपरात, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमु खना आभरण राखवानी (पच्चरकाण के०) बंधी तथा (मालाव न्नग के०) गुलाबनां फूल आदिकनी मालानु अने वन्नग एटले वर्णक वस्तु ते अबीर, गुलाल, अत्तरादिक जाणवा (विलेपण्णं के०) विलेपन करवानु पच्चरकाण ते त्रीजो शरीर सत्कारपरिहार पोसह तथा (सछ के०) शस्त्र,हथीयार (मुसलादिक के०) आयु ध,लाकडी, सांबेलां वगेरे, सावद्य जोगनु पच्चरकाण एटले पापिष्ट काम करवानी बंधी, ते चोथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसह एवु व्रत (जाव अहोरत्त के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पज्जुवासामि के०) हु पर्युपासुं एटले सेवु आचरुं, डुविहं, ति विहेण, न करेमि, न कारवेमि,मणसा, वयसा, कायसा, करंतं ना णुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सद्दहणा के०) ए करवानी श्रद्धा थाय, (परूपणा करीयें के०) वात करीयें तेवारें फरसनायें करी शुद्ध एटले ते वखत शक्ति मुजब शुद्ध होजो, एहवा इग्यार मा (पडिपुन्नं के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिथी अंत पर्यंत स मताभावें संपूर्ण एवु (पोषधव्रतना के०) धर्मध्यानें तथा स वरें करी आत्माने पोषवानुं व्रत तेना, पंच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ (अप्पडिलेहियडुप्पडिलेहि यं सिज्ञा संथारए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सथा संथारानें अप्रतिलेपित एटले बरावर प्रतिलेख्यां न होय अने प्रति लेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्या एटले काइ जोयां कांइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेपितइ प्रतिलेपितसथासंथारातिचार (अप्पमज्जि य डुप्पमज्जिय सिज्ञासंथारए के०) सथा संथाराने प्रमार्ज्यो न

लोयं, (सचित्तनिक्खेवणिया के०) साधुनी गोचरीनी वेलायें, आपवा योग्य सूजती वस्तु होय तेने बीजी सचित्त वस्तुनी उपर राखी होय (सचित्तपिहणिया के०) आपवा योग्य अचित्त वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुयें करी ढांकी मूकी होय (कालाइक्कमे के०) कालातिक्रम ते साधुने वहोरवानो वखत टालीनें पठी अन्नपाननी निमत्रणा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य वस्तु पोतानी होय तेम ठता तेने न देवानी बुद्धियें पारकी कही होय, (मह्वरियाए के०) ईर्ष्याथी अनेरानुं दान देखी तेनी स्पर्द्धायें दान दीधुं होय (तस्स मिह्वामि डुक्कडं के०) तेनु लागेलुं पाप मने निष्फल थाजो॥ १ए॥ इति॥

पीठें "सलेपणा" को पाठ कहीजें, ते कहे ठे –

अपछिम मरणांतिय संलेहणा, फूसणा, आराहणा, पोषधसाला पूंजीने, उच्चार पासवण नूमिका, पडिलेहीनि, गमणागमणे पडिक्कमिने, दर्भादिक संथारो संथारीनि, दर्भादिक संथारो डुरुहिने, पूर्व तथा उत्तर दिशि, पल्यंकादिक आसणें बेसीने करयल सपरिग्गहिय, सिरसावत्तं मठए अंजली त्ति कहु, एव वयासी नमोत्थुणं, अरिहंताए, नगवताए, जावसपत्ताए, एम अनता सिद्धजीने नमस्कार करीने, जयवंता वर्त्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीनि, पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने, सर्व जीवराशि खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदस्या ठे, तेना जे अतिचार दोप लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ पडिक्क

सविनाग व्रतना, पंच अइयारा जाणियवा, न स मायरियवा, त जहा ते आलोउ, सचित्तनिखेव णिया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्कम, परोवएसे, म च्छरियाए, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ए ॥ इति ॥

अर्थ —बारमुं (अतिथि के०) जेने तिथिनु तहेवारनु कांइ मुकर नथी जे अमुक तिथियें अथवा अमुक तहेवारने दिवसें आहार लेवा आवशे, परतु अणचित्या आवे एहवा साधुने वास्ते, (संविजाग व्रत के०) पोताने मार्टे निपजावेला आहारमांथी संविनाग करवो तेनुं व्रत एटले आहार करती वखत चितवणा करवी जे (समणेनि ग्गथे के०) साधु निर्ग्रंथने, (फासुअ के०) प्रासुक एटले अ चित्त (एसणिज्जेण के०) सूजतु एटले दोष रहित साधुने कल्पे एवु (असण के०) अन्न, (पाण के०) पाणी, (खाइम के०) मेवो सुखडी प्रमुख, (साइमेण के०) स्वादिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज बीजां पण साधुने खपवायोग्य वस्तुनां नाम कहे छे (वत्र के०) वस्त्र, (पडिग्गह के०) पात्र, (कबल के०) कांबली, (पायपुछणेण के०) पगने लुछवानु पो छणुं (पाडिहारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाछी लेवाय तेवी वस्तु ते कहे छे, (पीढ के०) बाजोठ (फलग के०) पाटीयुं (सिज्जा के०) वस्ती, पाट, स्थानक (सथारएण के०) तृण प्रमु खनी पथारी, (उसह के०) एक वस्तु ते ओषध, (नेसज्जेण के०) घणी वस्तु मलवाथी थयेलां एवी गोली वगेरे ओषधो तेने (पडिलानेमाणे के०) प्रतिलाजतां थकां, आपतां थका (विहरामि के०) विचरशुं, (एहवी सद्दहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फरसनायें करी शुद्ध एहवा बारमा अतिथिसविजाग व्र तना पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आ

उगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, काम नो गासंसप्पउगे तस्स मिछामि छुकडं ॥ १० ॥ इति ॥

अर्थ –(अपछिममरणांतिय के०) अपश्चिम मरणांतिक एटले पछी कांइ नथी करवु,एवुं जे मरण ते पंमितमरण कहियें,ते पंमितमरणनी अर्तें (सलेहणा के०) सलेषणा करवी अनशन करवु आहारकषाय पातला करवा, (फूसणा के०) आत्माने फूसीने, (आराहणा के०) आराधना करीने, (पोषधसाला के०) सथारो करीयें ते स्थानकने, (पुजीने के०) पुजी पडिलेहीने, (उच्चार के०) वडीनीत, (पासवण के०) लघुनीतनी (जूमिका के०) जूमिका जे तेनें (पडिलेहीने के०) प्रतिलेखी एटले जंतुप्रमुखने नजरें जोइने, (गमणागमणे के०) जाता आवतां कोइ जीव चंपाणो होय तेने, (पडिक्कमिने के०) पडिक्कमिने (दर्नादिकसथारो के०) मान वगेरेनो सथारो, (सथारीने के०) सथारीने, (दर्नादिक सथारो के०) मानप्रमुखनी पथारी उपर, (ऊरुहिने के०) वेसीने, (पूर्वतथाउत्तरदिशि के०) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ, (पर्ल्यंकादिक के०) पलोंठी वगेरे जेवी पोतानी शक्ति हुवे तेवा, (आसणेवेसीने के०) आसने वेसीने पछी (करयल के०) वे हाथ, (सपरिग्गहियं के०) जोडीने, (सिरसावत्त के०) मस्तकें आवर्त्तन करीने, (मछए अंजली त्ति कट्टु के०) माथा उपर वे हाथ जोडेला राखी, (एव वयासी के०) एम कहे जे, (नमुत्थुण के०) नमस्कार हो, (अरिहंताण के०) श्री अरिहतने, (जगवताण के०) जगवतने, (जावसपत्ताण के०) यावत् सपत्ताण एटले मुक्तिने पाम्या त्या सुधिनो पाठ जे सामायिकने अर्तें छे तेटलो कहेवो, एम अनता सिद्धजीने नमस्कार करीने पछी पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु, साधवी,

मी, निंदी,नि शल्य थइने, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्कामि, सव्व मुसावाय पच्चक्कामि, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्कामि, सव्व मेहुण पच्चक्कामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्कामि, सव्वं कोह माणं जाव मिच्छा दंसण सल्ल, सव्व अकरणिज्जं पच्चक्कामि, जावजीवाए, तिविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, करतंपि नाणुजाणामि, मणसा, वयसा, कायसा एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्कीने, सव्व अ सण, पाणं, खाइमं, साइमं, चउव्विहंपि आहारं, पच्च क्कामि, जावजीवाए एम चारे आहार पच्चक्कीने, जं पीय, इम सरीरं इठं, कंतं, पियं, मणुन्नं, मणामं, धि ज्ज, विसासिय, समयं, अणुमय, बहुमयं, जंम्डकरम्डस माण, रयणकरंम्डगन्नूयं, माणसियं, माणं उन्हं, माणं खुहा, माण पीवासा,माणं वाला, माणं चोरा, माणं दं सा,माण मसगा,माणं वाहियं,पित्तियं,कप्फियं संभीमं, सन्निवाहिय,विवहारोगायका, परिसहा, उवसग्गा, फा सा फुसति, एवं पीयण चरिमेहिं, उस्सास निस्सासे हिं, वोसिरामि, त्ति कट्टु एम शरीर वोसिरावीने,कालं अणवकंखमाणें,विहरामि, एहवी सद्दहणा परूपणा क रिये, तिवारें फरसनायें करी शुध्द, एहवा अपच्छिम म रणातिय, सलेहणा, झूसणा, आराहणाना पंच अइ यारा, पयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ, इहलोगाससप्पउगे, परलोगाससप्प

होय तो पोतानी मरजी माफक जेह्वो करे, तेवो आगार राखे (जावजीवाए के०) ज्यां सूधी जीवुं त्यां सूधी एम चारे आहार पच्चरकीने, (ज के०) जे (पियं के०) प्रिय, हतुं एवु (इम स रीरं के०) आ मारु शरीर, (इद्वं के०) वारं वार वांछतुं हतु मार्टे इष्टकारी, (कंतं के०) कांतिवत, एटले विशिष्ट वर्णादिकें करी युक्त (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इंद्रियने हर्षनुं करणहार (मणुन्नं के०) मनोज्ञ एटले मननें गमतुं, (मणाम के०) मनने सदाइ अत्यत वल्लन, लागे मार्टे मणाम ए पांच शब्दनो अर्थ एकार्थ जाणवो, (धिज्जं के०) धीरज देणार, (विसासियं के०) विश्वा सनु उपजावनार, (सम्मयं के०) मानवा योग्य, (अणुमयं के०) विशेषें मानवा योग्य, (बहुमयं के०) घणुं वारवार मानवा योग्य, (भंमकरंमगसमाण के०) आभरणना भावला समान, व्हालु (रयणकरंमगभूयं के०) रत्नना करंमीया समान, (माणसियं के०) रखे मने शीत लागे, एटले टाढवाय, एम मानतो (माणं उन्ह के०) रखे मनें ताप लागे, एम मानतो (माणं खुहा के०) रखे मने नूख लागे, एम मानतो (माण पिवासा के०) रखें मने तृषा लागे, (माणं वाला के०) रखे मुजने व्याल एटलें सर्पादिक करडे, एम मानतो (माण चोरा के०)-रखें मने चो रनो नय उपजे, (माण दसा के०) रखे मने मांस करडे, (माणं मसगा के०) रखे मने मच्छर करडे, (माण वाह्यिं के०) रखें मने व्याधि उपजे (पित्तियं के०) रखे मने पित्त जागे, (सं नीम कप्फियं के०) रखे मने नयंकर श्लेष्म कफ उपजे, (सन्नि वाइयं के०) रखें मने सन्निपात ते त्रिदोष थाय, (विवहारोगायका के०) रखे मने विवध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा उवसग्गा के०) रखे मने बावीश जातिना परिसह तथा देवतादि कना करेला उपसर्ग उपजे, (फासा फुसंति के०) एवी रीतना

श्रावक, श्राविकारूप चारे तीर्थने खमावीने, सर्व जीवराशि खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदर्या छे,तेना जे अतिचार दोष लागा होय ते सर्व सत्तारी सत्तारीने गुर्वादिक पासें (आलोइ के०) प्रकाशी तेथी (पडिक्कमि के०) निवृत्तिने (निंदी के०) तेनी आत्मानी साखें निंदा करीने, (नि शल्लयइने के०) शल्य रहित थइने (सबं पाणाइवायं के०) सर्व प्रकारें जीव हिंसा करवानां, (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करुं छु, (सव्व मुसावायं पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनु जूठु बोलवाना पच्चक्खाणने, (सव्व अदिन्नादाणं पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनु अणदीधु लेवाना पच्चक्खाणने करुं छुं, (सव्व मेहुण पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारें मैथुन, सेववानु पच्चक्खाण करुं छु, (सव्व परिग्गह पच्चक्खामि के०) सर्वथा नवप्रकारना परिग्रह राखवाने पच्चक्खु छु, (सव्व कोहं के०) सर्व क्रोध (माण के०) सर्व मानथी मामीने (जावमिच्छा दसण सल्लं के०) यावत् मिथ्या दरिसण शल्य पर्यंत १८ पाप स्थानक (सर्व अकरणिज्जं के०) सर्व नही करवा योग्य तेने, (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खुं छु, (जावजीवाए कें०) जाव जीव सुधी, (तिविहं के०) तीन करणें करी, (तिविहेण के०) तीन जोगें करी, (न करेमि के०) हु करु नहिं (न कारवेमि के०) बीजा पासें करावुं नही, (करंतपिनाणुजाणमि के०) कोइ पाप करे तेने पण हु रुडुं जाणु नही, (मणसा के०) मनें करी (वयसा के०) वचनें करी (कायसा के०) कायायें करी एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने (सबं के०) सर्व (असण के०) अन्न (पाण के०) पाणी (खाइम के०) मेवो (साइम के०) स्वादिम मुखवास ए (चउविहंपि आहारं पच्चक्खामि के०) चार प्रकारना आहारने पच्चक्खीने इहां निरागारी एटले साधु अनशन करतो होय तो ए रीतें पाठ कहे अनें सागारी एटले श्रावक जो अनशन करतो

होय, सेवराव्यो होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें मिच्छामि डुक्कडं॥२१

अर्थ –एना अर्थमां नियम लीधेली वस्तुने फरी सेवनाना दोष चार प्रकारें ठे,ते कहे ठे १ अतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने फरी जोगववानी इच्छा करवी, २ व्यतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने लेवा मार्टे चालवु, ३ अतिचार ते नियम लीधेली वस्तु जोगववा मार्टे हाथमां लेवी,४ अनाचार ते नियम लीधेली वस्तुने जोगववी॥२१॥

एम कहीने पठी १८ पाप स्थानक कहीजें; तेनो पाठ प्रथम लखायेलो ठे, मार्टे अहीं अर्थज लखीयें ठैयें १ (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा, २ (मृषावाद के०) जूठुं बोलवुं, ३ (अदत्तादान के०) चोरी करवी, ४ (मैथुन के०) मैथुन सेववु, ५ (परिग्रह के०) परिग्रहनी वांठा, ६ (क्रोध के०) रोष, ७ (मान के०) अहंकार ८ (माया के०) कपट, ९ (लोज के० लोज, १० (राग के०) प्रीति, ११ (द्वेष के०) द्वेषजाव, १२ (कलह के०) क्लेश, १३ (अन्याख्यान के०) खोटु आल देवुं, १४ पैशुन्य के०) पारकी चाडी करवी, १५ (परपरिवाद के०) अनेराना अवगुण बोलवा, १६ (रतिअरति के०) हर्ष शोक, १७ (मायामोसो के०) कपट सहित जूठुं बोलवुं, १८ (मिथ्या दंसण सल्ल के०) आजिग्रहिक अनाजिग्रहिकादिक पांच प्रकारनां जे मिथ्यात्व ठे, तेने सेवनाना जे परिणाम ते एव अढारे पाप स्थानक सेव्या होय,सेवराव्या होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्या होय, ते अनता सिद्ध केवलीनी साखें मिच्छामि डुक्कडं ॥ २१ ॥ इति ॥

विधि – पठी "इच्छामि ठामि" नी पाटी कहीजें, आहीं सुधी जिमणो गोढो ऊचों राखीने बेसीजें, पठी जनो थइ हाथ जोडी ने "तस्स धम्मस्स" नी पाटी कहीजें, तें कहे ठे –

पूर्वोक्त स्पर्शेथी माहारा शरीरनी रक्षा करतो हतो (एवपियण के०) एवु जे माहारु प्रिय एटले वाहालु, शरीर तेने (चरमेहिं के०) छेहला, (उस्सासनिस्सासेहिं के०) स्वासोश्वास सुधि, जीवना सवध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिरावु छु, तजु हुं (त्ति कट्टु के०) एम कहीने एम शरीर वोसिरावीने ए शरीरनो सवध तजी देइने (कालं अणवकंखमाणे के०) कालने जीववानी आशा, तथा मरणनो जय अण वांछतो थको (विहरामि के०) विचरीश छे एहवी सद्दहणा परूपणा करियें, तिवारें फरशनायें करी शुद्ध एह्वा अपश्चिम मरणांतिय संलेहणा जूसणा आराहणाना पंच अश्यारा जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ (इहलोगाससप्पउंगे के०) इह लोक सवधि सुखनी वाछना करे के हु चक्रवर्त्यादिक राजा थाउं, (परलोगाससप्पउंगे के०) परलोक संबंधि सुखनी इछा करे के हुं देवता थाउं, इद थाउ, (जीवियासंसप्पउंगे के०) जीवितव्यनी इछा करे के लोको महारो घणो सत्कार करे छे, मार्टे आयु जीवुं तो सारु, (मरणाससप्पउंगे के०) मरणनी इछा करे के दुःख पामुं छुं, मार्टे तरत मरी जाउ तो दुःखमांथी छूटुं (कामजोगाससप्पउंगे के०) काम जोगनी वाछना करे जे आ तपना प्रजावें हुं रूडा रसादि सांसारिक कामजोग प्रामुं ' एवी रीतनी जे आशंसा एटले वांछारूप प्रयोग एटले जे मननो व्यापार तेने कामजोगाशसप्रयोग अतिचार कहीयें (तस्स मिछामि दुक्कड के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाउ ॥ १० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक वारव्रत संलेपणा सहित एहने विषे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणता अजाणता मन वचन कायायें करी सेव्यो

क्रोड केवली, उत्कृष्टा नव क्रोड केवली, केवल ज्ञान, केवल दर्श नना धरणहार, सर्व द्रव्य क्षेत्र काल नावना जाणणहार ॥ सवैय्या॥ नमुं सिरि अरिहंत, करमाको कियो अंत, हुवा सो केवलवंत, करुणा नमारी हे ॥ अतिसे चोतीस धार, पेंतिस वाणी उ च्चार, समजावे नर नार, पर उपगारी हे ॥ शरीर सुंदराकार, सूर ज सो कलकार, गुण हे अनंत सार, दोष परिहारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, मन वच काय करी,लली लली वारं वार, वंदणा ह मारी हे ॥ १ ॥ एसा अरिहंत नगवंत दीन दयाल महाराजको दिवस संबंधी अविनय, आशातना, कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काय संकोडी, वारं वार खमावुं बुं, मत्थएण वंदामि १००० वार नमस्कार करु बुं " तिरकुत्तो आयाहिण, पयाहिणं वंदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि " आप मांगलिक बो, उत्तम बो, हे स्वामि नाथ ! आपको इणनवें परनवें नवोनवें सदाकाल शरणो होजो ॥ २३ ॥ इति प्रथम पद संपूर्ण ॥

२ बीजे पदें श्री सिद्धनगवंत महाराज ते पन्नर नेदें अनंता सिद्ध बे, आठ कर्म खपावीने मोक्ष पहोत्ता बे, १ तीर्थ सिद्धा, २ अतीर्थ सिद्धा, ३ तीर्थंकर सिद्धा, ४ अतीर्थंकर सिद्धा, ५ स्वयं बु द्ध सिद्धा, ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धबोधित सिद्धा, ८ स्त्रीलिं ग सिद्धा, ए पुरुषलिंग सिद्धा, १० नपुंसकलिंग सिद्धा, ११ स्व लिंग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा,जिहां जन्म नही,जरा नही, मरण नहि, नय नही,रोग नही, सोग नही,दुःख नही,दारिद्र नही,कर्म नही, काया नही, मोह नही, माया नही, चाकर नही, गकर नही, नूख नही, तृषा नही, ज्योतिमें ज्योति बिराजमान, सक ल कारज सिद्ध करीने चयदे प्रकारें पन्नरे नेदें अनंता सिद्ध नग

तस्स धम्मस्स केवलिपसत्तस्स अब्भुठिउमि, आराहणाए, विरउमि विराहणाए, तिविहेण प डिक्कंतो, वदामि जिणे चउवीसं ॥ २१ ॥ इति ॥

अर्थ – (तस्स धम्मस्स केवलिपसुत्तस्स के०) ते केवलिना पित एवा श्रावक धर्मने, (आराहणाए के०)आराधवाने माटें (अब्भुठ्ठिउमि के०) हुं सारी रीतें पालन करवाने उठ्यो छु, अ ने ते धर्मनी (विराहणाए के०) विराधना करवाथकी (विरउमि के०) हुं विरम्यो छु, एटले निवर्त्यो छुं (तिविहेण के०) त्रिविधें क री, एटले मन, वचन अने कायायें करी, (पडिक्कतो) प्रतिक्रां त थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यो थको (जिणेचउवीसं के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वदामि के०) हु वांदुं छुं ॥ २१ ॥

विधि –पछी "इछामि खमासमणा" री पाटी दोय वार विधि पूर्वक कहीजें, पछी आज्ञा लहीने उकडु आसणे वेसी वेहु हाथ गोमानी वचालें राखी धरतीयें मस्तक, लगावीने "पांच पदा री वंदणा" करीयें, ते कहे छे –

इहां प्रथम नवकार कहेवो, पछी १ पहिले पदें श्रीअरिहंतजी ते जघन्यथी वीश तिर्थंकरजी, उत्कृष्टा एकसो सित्तेर देवाधिदेव जी तेमांहि वर्त्तमान कालें वीश विहरमानजी माहाविदेह क्षेत्र मांहि विचरे छे, एक हजार आठ लक्षणना धरणहार, चोत्रीस अतिशय, पेंतीस वाणीयें करी विराजमान छे, बार गुणें करी स हित, अढार दोषथकी रहित, चोसठ इन्द्रना वंदनिक पुजनिक, अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र, अनत बलवीर्य, अनं त सुख, दिव्यध्वनि, भामण्डल, स्फाटिक सिंहासन,अशोकवृक्ष,कु सुमवृष्टि, देवदुंदुभि,छत्र धराय,चामर विंजाय,पुरुषाकार पराक्रमना धरणहार, अढाइद्वीप पंदर क्षेत्रमां विचरे, तथा जघन्य तो दोय

१००८ वार तिक्खुत्ताना पाठथी मछएण वदामि एटले नमस्कार करु छु यावत् नवोनव शरणुं होजो ॥ २५॥ इति त्रीजु पद सपूर्ण ॥

४ चोथे पदें श्री उपाध्यायजी महाराज पच्चीश गुणें करी सहित छे,ते पच्चीश गुण कहे छे॰ इगियारा अंगना जणणहार ते अगीयार अग कहे छे श्री आचारगजी, सुयगडांगजी, ठाणांगजी, समवायांगजी, जगवतीजी, ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकदसांगजी, अंतगडदसांगजी, अनुत्तरोववाईजी, प्रश्नव्याकरणजी, विपाकसूत्रजी ॥ ए इग्यारा अगनो अर्थ पाठ संपूर्ण जाणे (१२ उपांग जणे,ते) उववाइजी,रायप्पसेणीजी, जिवाजिगमजी,पन्नवणाजी,जंबुद्दीपपन्नत्ती,चदपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती, निरयावलिया,कप्पविमसिया,पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वन्हिदिशा (४ मूल सूत्र) उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नदीसूत्र, अनुयोगद्वार (४ छेद ग्रंथ) दशाश्रुत स्कंध, वृहत्कल्प, व्यवहार, निशीथ अने बत्तीसमुं आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक ग्रथना जाणनार, चौद पूर्वना पाठी, सात नय,निश्चय व्यवहार,चार प्रमाणादिकें करी स्वमत तथा अन्यमतका जाण मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जेने विवादमां छलवाने समर्थ नही,जिन नही पण जिन सरिखा, केवली नही पण केवली सरिखा ॥ सवैय्या ॥ पढत इग्यारा अग,करमासुं करे जंग, पाखन्मीको मान जग, करण हुस्यारी हे ॥ चउद पूरवधार, जानत आगमसार, जविनके सुखकार, भ्रमता निवारी हे ॥ पढावे जविक जन, थिर कर देत मन, तप करी तावे तन, ममता निवारी हे ॥ केत हे तिलो करिख, ज्ञानजानु परतिस्क, एसे उपाध्याय, ताकु वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा श्री उपाध्यायजी माहाराज मिथ्यात्वरूप अंधकारना मेटणहार, समकितरूप उद्योतना करणहार, धर्मथकी जगता प्राणीने थिर करे, सारए, वारए, धारए, इत्यादिक अनेक गुण सहित छे,एहवा जे श्री उपाध्यायजी माहाराज आपकी वि

वंत हुवा, अनंत सुखमां लीन, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, क्षायिकसमकित, निराबाध, अटल अवगाहना, अमूर्त्ति, अगुरुलघु,अनतवीर्य, आठ गुणें करी सहित ॥ सवैय्या ॥ सकल करम टाल,वश कर लियो काल, मुगतिमें रह्या माल,आतमाका तारी हे ॥ देखत सकल जाव, हुवा हे जगत राव, सदाही खायिक जाव, जये अविकारी हे ॥ अचल अटल रूप, आवे न वि जवकूप, अनुप सरूप रूप, एसे सिद्धधारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, बतावो ए वास प्रच्छु, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारी हे ॥२॥ एसा सिद्ध जगवतजी माहाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाय जोडी मान मोडी काया सकोडी वार वार खमावु हु, तिरकुत्ताना पाठसुं मछएण वंदामि नमस्कार करु हु जावत् जवोजव शरणु होजो ॥ २५ ॥ इति ॥

३ त्रीजे पदें श्रीआचरजजी छत्तीस गुणें करी विराजमान, पांच माहाव्रत पाले, पांच आचार पाले, पांच इन्द्रिय जींते, चार कषाय टाले, नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्यना पालणहार, पांच समितियें समित्ता,तीन गुप्तियें गुप्ता,आठ संपदा सहित ॥ सवैय्या ॥ गुण हे छत्तीस पूर, धरत धरम ऊर, मारत करम क्रूर, सुमति विचारी हे ॥ शुद्धसों आचारवत, सुदर हे रूप कत, जणिया सबि सिद्धंत, वांचणी सुप्यारी हे ॥ अधिक मधुरवेण, कोइ नही लोपे केण, सकल जीवाका सेण, कीरत अपारी हे ॥ केत हे तिलोकरिख, हितकारी देत सीख, एसा आचारज ताकु, वदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा आचारज न्यायपक्षी, जद्रकपरिणामी,' परमपूज्य, कल्पनिक अचित्त वस्तुका ग्रहणहार, सचित्तका त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुणका अनुरागी, सोजागी, एहवा श्री आचारजजी माहाराज आपकी दिवस संवधि अविनय आशातना कीधी होय तो हाय जोडी मान मोडी काया सकोडी वारं वार खमावुं हुं

एहवा श्री मुनिराज महाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काया सकोडी, वार वार खमावु छु १००७ वार तिखुताना पाठसुं मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करुं छु जावत सदाकाल शरण होजो ॥ २७ ॥ इति पांचमुं पद संपूर्ण ॥ ५ ॥

विधि – पछी उना थइ आयरिय उवज्झाए कहीजें,ते कहे छे —

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ॥ जे मे केइ कसाया,सवे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव स्स समणसंघस्स, नगवउ अंजलिं करिय सीसे ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥२॥ स वस्स जीव रासिस्स, भावउ धम्म निहिय नियचि त्तो ॥ सवं समावइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥३॥

अर्थ–पंचाचार संपन्न अथवा छत्रीश गुणें विराजमान, अर्थ दानना दातार, तेने (आयरिय के०) आचार्य कहीयें तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना नणावनार अथवा पच्चीश गुणें करी विराजमान तेने (उवज्झाए के०) उपाध्याय कहीयें, तथा ग्रहण शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य होय,तेने (सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें करीने जे आपण सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, होय तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीयें,तथा जे एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहीयें तथा घणा आचार्यना शिष्य संतान परिवार,तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहीयें (अ के०) अकार ते वली वली कहेवाने अर्थें छे, ए सर्वनी उपर (मे के०) महारे जीवें (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय,

वसत्तवधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी, काया सकोडी, वारं वार खमावु छुं १००८ वार तिक्खुत्ता नापाठथी मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करु छुं यावत् नवो नव शरणु होजो ॥ २६ ॥ इति चोथुं पद सपूर्ण ॥ ४ ॥

(५) पांचमे पदें श्री साधुजी ते पोतारा धर्मा चार्यजी (आ ठेकाणें आप आपका गुरु माहराजको नाम लेणो) आव देश्ने जघन्य तो दोय हजार क्रोड साधु साधवी, उत्कृष्टा नव ह जार क्रोड साधु साधवी, अढाई द्वीप पन्नरे क्षेत्रमें जयवता विच रे छे, ते साधुजी केहवा छे? पांच महाव्रतका पालणहार, पांच इंद्रियोंका जितणहार, चार कषायका टालणहार, नाव सच्चे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावत, वैराग्यवत, मन समाधारणीया, वयस माधारणीया, कायसमाधारणीया, नाण सपन्ना, दंसणसंपन्ना, चारित्तसपन्ना, वेदणीसमा अहियासनिया, मरणांतिसमा अहिया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणें करी सहित, बारे नेदें तपका कर णहार, सत्तरे नेदें सयमना पालणहार, तेत्तीस आशातनाका टा लणहार, बेंर्हेंतालीश दोष टालीने आहार पाणीका लेवणहार, स तेतालीस दोष टालीने नोगवणहार, बावन अनाचीर्णके टालण हार, तेथ्या आवे नही, नेथ्या जिमे नही, सचित्तका त्यागी, अ चित्तका नोगी, बावीस परिसहके जितणहार, अनेकलब्धिका ध रणहार, लोचको करणो अणवाणेपगें चालणो, इत्यादिक काय क्लेशका करणहार, मोह ममता रहित ॥ सवैय्या ॥ आदरी सजम नार, करणि करे अपार, सुमति गुपतिधार, विकथा निवारी हे ॥ जयणा करे ठ काय, सावद्य न बोले वाय, बुफाइ कषाय लाय, किरिया नंमारी हे ॥ ज्ञान नणे आठो जाम, लेवे नगवत नाम, धरमको करे काम, ममताके मारी हे ॥ केत हे तिलोक रिस, कर माको टाले विख, एसा मुनिराज ताकु वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥

विधि – पछी "चोराशी लाख जीवा योनि" खमाववानो पाठ कहीयें पछी "खामेमि सव्व जीवेनो" पाठ कहीयें,ते लखीयें छैयें.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारंभ ॥

॥सात लाख पृथ्वीकाय,सात लाख अप्काय,सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय,दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय,चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय,बे लाख बेंद्रिय,बे लाख तेंद्रिय,बे लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता,चार लाख नारकी,चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य, एव चोराशी लाख जीवायोनिमांहे म्हारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मनें, वचनें, कायायें करी १८, २४, १२० आगरे लाख चोवीस हजार एकसोवीश प्रकारें तस्स मिछामि डुक्कड ॥ ३१ ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम छे माटें लख्यो नथी

अथ खामेमि सव्वजीवेनो पाठ प्रारंभ ॥

॥ खामेमि सव्व जीवे,सव्वे जीवा खमंतु मे॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥१॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिणे चउवीसं ॥ ३२ ॥

अर्थ –(खामेमि सव्वजीवे के०) सर्वे जीवो प्रत्यें हुं खमावुं छु एटले अनता भवने विषे पण अज्ञान मोहावृतत्वें करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावु छु अने (सव्वेजीवा के०) ते सर्व जीवोपण (मे के०) म्हारा अपराध प्रत्यें, (खमतु के०) खमो,माफ करो, ए क्षमनक्षमापनमा कारण कहे छे के (सव्वभूएसु के०)'सर्व भूतोने विषे (मे के०) म्हारे (मित्ती के०) मैत्रिभाव छे, (केणइ के०) कोइ जीवनी सार्थे (मज्झ के०) म्हारे

ए कारणें (सव्वे के०) सर्व, ते आचार्यादिक प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अनें कायायें करी (खामेमि के०) हुं खामुं बु ॥१॥ (सव्वस्ससमणसंघस्सजगवउ के०) सर्व श्रमण संघरूप जगवतना कीधा जे अपराध ते (अंजलीक रियसीसे के०) मस्तकनी उपर बे हाथ प्रत्यें करीने एटले स्थापीने नम्रीजूत थइने (सव्वखमावइत्ता कें०) ते सर्व अपराध प्रत्यें खमावीने,वली एम कहे के (खमामि सव्वस्सअहयंपि के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हु पण खमुं बु,एटले सम्यक्प्रकारें सहन करुं बु ॥२॥ (सव्वस्सजीवरासिस्स के०) एकेंडियादिक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (जावउ के०) जावथी (सव्वखमावइत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्यें खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समजाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेनें विषे (निहिय कें०) निधित कर्युं ठे एटले स्थाप्यु ठे, जावथकी आरोपण कर्यु ठे, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानुं मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) हु पण (सव्वस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्यें (खमामि के०) खमुं बुं ॥ ३ ॥ इति ॥ २७ ॥

पठी अहाइ द्वीपनो पाठ कहीजें, ते कहे ठे

अढाइ द्वीप तथा पन्नर खेत्र माहि तथा बाहेर,श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाले, तपस्या करे, जावना जावे, संवर करे, सामायिक करे, पोसह करे, पडिक्कमणा करे,तीन मनोरथ,चउदे नियम चिंतवे,एक व्रतधारी, जाव बारेव्रतधारी थका जे जगवतकी आज्ञामांहि विचरे,अमाराथकी मोटाने हाथ जोडी,पगें लागीने,खमावु बु,ठोटाने वार वार खमावु बु॥३०॥इति जापा॥

जें, सवत्सरी पडिक्कमणे (४० लोगस्स) नु ध्यान कीजें संव त्सरी सवधि चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग लख्यो छे,परंतु एमां केटला एक न्याश्यो न्यून काउस्सग्ग पण करे छे,मार्टे जेमना ध र्माचार्यना आदेश उपदेश मुजब जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परंपरा चालती आवेली होय तेमर्णे तेटला लोग स्सनो काउस्सग करवो पछी नमो अरिहंताण कही काउस्सग्ग पारीजें पछी काउस्सग्गमांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यार्यु होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यार्यु होय तस्स मिछामि डुक्कड, एम कहीजें पछी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजें पछी पूर्वली पेरें "इच्छामि खमासमणाथी मांमीने अप्पाण वोसिरामि' पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजें इति सामायिक चोविसछो, वदनक पडिक्कमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरां थयां

हवे छठा आवश्यकना कामी इम कही, पछी गुरु मुनिराज पा सें तथा वडेरा पार्से,इणारो योग न हुवे,तो आपणी मेलें पच्चरका ण धारणा प्रमार्णे करीयें, ते कहे छे –

गंठीसहि, मुठीसहि,नवकारसी, पोरिसी, साड्ढ पो रिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहपि,चउ विहपि, आहारं, असणं, पाण, खाइमं, साइम, अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधि —सामायिक, चउविसछो, वदनक, पडिक्कमणु, काउस्स ग्ग अने छठु पच्चरकाण ए छ आवश्यकमांहि जाणतां अजाण तां जे कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय,तथा पाठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींडु, पद, अक्षर अधिको ओछो हलवो न्यारी आघो पाछो

(वेर के०) वैरन्नाव (न के०) नथी ॥ १ ॥ (एव के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्यु प्रकाश कीउ (निंदिअ के०) आत्म साखें निंद्यु, (गरहिअ के०) गर्ह्यु (छुगंछिअ के०) छुगंछ्यु अत्यंत खोटुं जाएयुं, ते माटें (सम्म के०) सम्यक् प्रकारें ए सम्यक् पद सर्व पदोनी साथें पूर्वमा योजवु (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन वचन अने कायायें करीने (पडिक्कतो के०) अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांतथको, एटले पाछो फरतो थको, अर्थात् पापने पडिक्कमतो थको, एवो जे (अह के०) हुं ते (चउवीसजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वदामि के०) वांदु छुं ॥

विधि —पछी " अढारे पापस्थानक " कहीजें इति सामायिक, चउविसत्थो, वदणा, पडिक्कमणु,चार आवस्सग पूरा थयां हवे तिरकुत्ताना पाउसेंति पांचमा आवस्सगनी आज्ञा लीजें पछी " देवसिकप्रायश्चित्त " कहिजें, ते कहे छे —

दैवसिक प्रायश्चित्तविशुद्धनार्थं करेमि काउस्सग्ग ॥२३॥

अर्थ —(दैवसिक के०) दिवस सबंधि, (प्रायश्चित्त के०) प्रायश्चित्त (विशुद्धनार्थ के०) शुद्ध करवा माटें (काउस्सग्ग के०) कायोत्सर्गं एटले कायानी स्थिरता प्रत्यें (करेमि के०) हु करु छु॥२३॥

विधि —पछी "नमो अरिहंताणथी मांमी यावत् नवकारनो संपूर्ण पाठ" कहीजें, पछी " करेमि न्नते सामाइयंथी मांमी (अप्पाण वोसिरामिनो पाठ कहीजें" " पछी इछामि ठामि काउस्सग्गथी मांमीने यावत् "तस्स मिछामि डुक्कड" पर्यंत पाठ कहीजें " पछी तस्स उत्तरीकरणेण " थी मांमीने अप्पाण वोसिरामि " सुधीनो पाठ कहीने पछी काउस्सग्ग करवो, तेमा मनमा देवसि, राइसि (४ लोगस्स) नु ध्यान कीजें परकी पडिक्कमणे (१२ लोगस्स) नु ध्यान कीजें चोमासी पडिक्कमणे (२० लोगस्स) नु ध्यान की

जें, सवत्सरी पडिक्कमणे (४० लोगस्स) नु ध्यान कीजें सव त्सरी सबधि चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग लख्यो छे,परतु एमां केटला एक न्हाइयो न्यून काउस्सग्ग पण करे छे,माटें जेमना ध र्माचार्यना आदेश उपदेश मुजब जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परपरा चालती आवेली होय तेमणें तेटला लोग स्सनो काउस्सग करवो पछी नमो अरिहताण कही काउस्सग्ग पारीजें पछी काउस्सग्गमाहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायुं होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायुं होय तस्स मिछामि डुक्कड, एम कहीजें पछी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजें पछी पूर्वली पेरें "इछामि खमासमणाथी माथ्हीने अप्पाण वोसिरामि"पर्यंतनो पाठ बोय वार कहीजें इति सामायिक चोविसछो, वदनक पडिक्कमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरां थयां

हवे छठा आवश्यकना कामी इम कही, पछी गुरु मुनिराज पा सें तथा वडेरा पासें,इणारो योग न हुवे,तो आपणी मेलें पच्चक्खा ण धारणा प्रमाणें करीयें, ते कहे छे –

गंठीसहि, मुठीसहि,नवकारसी, पोरिसी, साढ्ढ पो रिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहपि,चउ विहपि, आहार, असण, पाण, खाइमं, साइम, अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधि –सामायिक, चउविसछो, वदनक, पडिक्कमणु, काउस्स ग्ग अने छठु पच्चक्खाण ए छ आवश्यकमांहि जाणतां अजाण तां जे कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय,तथा पाठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींडुं, पद, अक्षर अधिको ओछो हलवो भारी आघो पाछो

कह्यो कहेवाणो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ मिथ्यात्वनुं पडिक्कम
णु, अव्रतनु पडिक्कमणु, कषायनु पडिक्कमणु, प्रमादनु पडिक्कमणुं,
अशुन जोगनु पडिक्कमणु, ए पांच पडिक्कमणामांहेलु पडिक्कमण
नही कीनु होय, तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ गया कालनुं पडिक्कमणुं,
वर्त्तमान कालना सवर, आवता कालना पच्चरकाण, तेने विषे जे
दोष लागो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ ३५ ॥ थइ थुइ मगल ॥

हवे नीचें बीसी मावो गोडो उनो राखीने बे वार नमोत्थुण कहीजें पछी उनो थइने श्रीसीमधरस्वामीजी प्रत्यें पाचे अंग न मावीने तिरकुत्ताना पाठथी १००८ वार वदना करु छुं एम कहीने नमस्कार करवो पछी पोताना धर्माचार्यजीने तिरकुत्ताना पाठथी वदना करीने उपाश्रयमां जो कोइ मुनिराज होय तो तेमने पण तिरकुत्ताना पाठथी वदना करीने खमाववुं पछी तिहांज रहेला साधर्मिभाइओ माहेला जे तपस्या करनार होय तेमने सुख शाता पूछीने खमत खामणां करवा अने अन्य साधर्मिभाइओ सार्थे पण अविनय आशातना सबधि खमत खामणा करवां बे वसिपडिक्कमणामांहे मिच्छामि डुक्कडं आवे तिहां दिवस संबंधि मिच्छामि डुक्कडं दीजें राइसीमें राइसी संबधि, पक्खीमें देवसी पक्खी सबधि, चोमासीमें, देवसी चोमासी सबधि, सवच्छरीमें सवत्सरी संबधि, मिच्छामि डुक्कड इम कहीजें ॥ ए पडिक्कमणविधि कह्यो, बीजो अंतर विधि वडेराथी जाणवो ॥

॥इति प्रतिक्रमण अर्थविधि सपूर्ण॥

॥ अथ अर्थ सहित दश पच्चक्काण प्रारंभ ॥

॥ तिहा प्रथम नमुक्कारसहिअनु पच्चक्काण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअ पच्चक्कामि चउविहं
पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछ
णाभोगेणं सहसागारेण वोसिरामि ॥ १ ॥

अर्थ –(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांमीने वे घडी प्र माण एटले रात्रिभोजननो दोप निवारवाने अर्थे, वे घडी पछी (नमुक्कारसहिअ के०) नवकार कहीने पारवु तिहा सुधी (पच्च क्कामि के०) पच्चक्काण छे, एटले नियम छे अहींयां नवकार क हीने पच्चक्काण पारवु छे, माटें ए पच्चक्काणनु नाम नवकारसी कहेवाय छे अहींयां गुरु, जे पच्चक्काणनो करावनार होय ते पच्च क्काइ कहे, तेवारें शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार होय ते पच्चक्का मि कहे एम सर्व पच्चक्काणोने विषे जाणी लेवु तथा संपूर्ण पच्च क्काणें गुरु, वोसिरइ कहे, अने शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार हो य ते वोसिरामि कहे ए नवकारसीनु पच्चक्काण वे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारोज होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिभोजननो नियम कर्यो हतो तेना तीरण रू प एटले शिक्षारूप ए पच्चक्काण छे ए पच्चक्काणमां वे घडी सुधी चउविहार होय, माटें वे घडी वीत्या पछी नवकार गणे, तो पहोंचे, पण वे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे, तो न पहोंचे

हवे शेनु पच्चक्काण करे ? ते कहे छे (चउव्विहंपिआहारं के०)चा रे प्रकारना जे आहार तेनु पच्चक्काण करे, ते आहारना नाम कहे छे

एक (असण के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, वटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले भात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातिना लोट, त

था मोदकादिक सर्व जातिनां पक्वान्न, तथा सूरणादिक सर्व जाति ना कंद, तथा मांमा प्रमुख सर्व जातिनी केलवेली वस्तु, ए सर्वने अशन कहियें तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ, आदें देइने वीजी पण केटलिएक वस्तुउने अशनज कहीयें

वीजुं (पाण के०) पाणी ते काजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमुखना धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयना पाणी, ए सर्वे पाणी कहीयें तथा शाकरवाणी, डाक्ष्वाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्व, यद्यपि पाणीमांहे आवे छे, तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहियें

त्रीजुं (खाइम के०) खादिम ते खारेक, वदाम, शिंगोडां, खजूर, कोपरां, डाक्ष, तथा अखोडादिक सर्व जातिनो मेवो, तथा काकडी, आंबा, फणस अने नालियेर प्रमुख सर्व जातिना फल तथा शेकेला धान्य, जेवां के धाणी, पडुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख ए सर्वने खादिम कहियें

चोथुं (साइम के०) स्वादिम ते दतकाष्ठ, छुंठ, हरडे, पींपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग, जावत्री, सोपारी, पान, बीड लवण, आजो, अजमोद, कलिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीयो, कपूर, सचल, वेहेडां, आमलां, हिंगाष्टक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बावची, बावलछाल, धवछाल, खेरछाल, खिजडाछाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरु ए जीराने केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां स्वादिम कह्युं छे, अने केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां खादिम कह्युं छे, तथा अजमाने पण केटलाएक आचार्य खादिम कहे छे तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगठी, लिंवुइपत्र, आंबागोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें ए चार प्रकारना आहार कह्या

एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो नियम लेवाय हवे नियमजग थवाना जयने लीधे अहींयां नोकारसीना पच्चरकाणने विषे बे आगार मोकला मूके ठे, ते कहे ठे

१ (अन्नत्थणाजोगेण के०) अन्यत्रानाजोगात् एटले विसरवा थकी ते अहींयां पच्चरकाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चरकाणजग न थाय, परंतु वचमा पच्चरकाण सांजरे,तेवारें तरत मुखथी त्याग करे,थूकी नाखे तो पच्चरकाण न जांगे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेठुं उतस्या पठी कालांतरें सांजरयु, अथवा तरत सांजर्युं,तो पच्चरकाण न जागे, पण शुद्धव्यवहार मार्टे फरी नि शक न थाय तेथी यथा योग्य प्रायश्चित्त लेवु, ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवु

२ (सहसागारेण के०) जे पच्चरकाण कर्युं ठे,तेनो उपयोग तो विसस्यो नथी, पण कार्य करवामा प्रवर्त्तता योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वजावेंज मुखमध्ये प्रवेश थाय, जेम दधि मथतां ठांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय, जेंश प्रमुख दोहोता थकां तथा घृतादिक मथता तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक ठांटो उडी मुखमा पडे, अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना ठांटा मुखमा पडे, तेथी पच्चरकाण जग न थाय, ए रीतें पूर्वोक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) बे घडी सुधी चारे आहारने वोसिरावु छुं,एटले अपच्चरकाणी आत्माने ठारुं ॥इति॥१॥

॥ अथ बीजु पोरिसि साड्डपोरिसिनुं मच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चरकामि चउविहंपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाजोगेण सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरामि ॥ २ ॥

एव साढपोरिसिय पच्चरकामि पण कहेवु

अर्थ –(पोरिसि के०) प्रहर दिवस सुधी अने साढपोरिसिनुं पच्चरकाण लीये तो सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चरकामि के०) नियम करु छुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी छाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेनें पोरिसि कहियें, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनु बिंब राखीने, दक्षिणायनने प्रथम दिवसें ढीचणनी छाया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय तिहासुधी पच्चरकाण करे

(असणपाणखाइमसाइम के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करु छुं

हवे आगार कहे छे, एक (अन्नछणाभोगेण के०) अनाभोगें एटले अजाणते विसरवाथकी, बीजो (सहसागारेण के०) सहसात्कारें, त्रीजो (पछन्नकालेण के०) कालनी प्रछन्नता ते मेघादि, ग्रहादि, दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढकाइ जाय, तेणें करी वखतनी वरावर खबर न पडे. एवा अजाणपणायें करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवु समजीने पच्चरकाण पारवामां आवे, तो तेथी भंग नहीं, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसियें जमवा वेग एटलामां तडको जोयो, अने जाण्यु जे हजी सवार छे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीयो होय, ते राखमां परठवीने वेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पछी जमवा वेसे, तो पच्चरकाण भांगे नहीं

चोथु (दिसामोहेण के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविपर्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणता वेहेलु पलाय तो पच्चरकाण भंग नही, अने थोडु जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामा आवे, तो मुखमानो को

लीयो थूंकी नाखे ए रीतें दिशिनो मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो वेसी रहे तो नग नहीं

पांचमु (साहुवयणेण के०) उग्घाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करी पोरिसि नणी, सांजलीने पाले, तो पञ्चरकाण नग नहीं, पछी ज्यारें जाणवामां आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसि नणे छे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज वेसी रहे, तो पञ्चरकाण नागे नहीं ए पाछला वे आगार भ्रमतानां छे

छठु (सवसमाहिवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीरमा असमाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पञ्चरकाण कस्या पछी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिकें मश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे, अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इन्द्रियोनी समाधिने अर्थें अपूर्ण पञ्चरकाणे पण पथ्य औषधादिक लेवा पडे,तो तेथी पञ्चरकाणनग न थाय, अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे इहां पण पञ्चरकाणनो आपनार,गुरु वोसिरइ कहे, अने शिष्य पञ्चरकाणनो करनार होय, ते वोसिरामि कहे

॥ अथ त्रीजुं पुरिमढनु पञ्चरस्काण ॥

उग्गए सूरे पुरिमढ्ढ पञ्चरकामि, चउविहंपि आहार असणं पाण खाइम साइम अन्नछणाभोगेण सहसा गारेण पछन्नकालेण दिसामोहेणं साहुवयणेण महत्त रागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरामि ॥ ३ ॥

अर्थ – (उग्गए सूरे के०) सूर्यना उदयथी मामीने नवकार सहित (पुरिमढ्ढ के०) पहेला वे प्रहर सुधि पुरिमार्ध कहियें एटले वे प्रहर सुधी अशनादिक चारे आहारनु पञ्चरकाण छे एना अन्नछणाभोगेण इत्यादि आगारोना अर्थ सर्व प्रथम लखाइ गया छे अने महत्तरागारेणनो अर्थ प्रथम नथी लखायो, तो तेनो

अर्थ (महत्तर के०) कोइ महोटा कार्यें एटले पच्चरकाणमां जेटलो कर्मनिर्जरानो लाज थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महोटो निर्जरानो लाज जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लानादिकना, वे यावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी पुरिमढनो वखत पूर्ण थया विना जो पालवामां आवे, तो पच्चरकाण जग न थाय अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथु विगइ निविगइनु पच्चरकाण ॥

विगइउ निविगइउं पच्चरकामि अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेण गिहछसंसठेणं उस्कित्त विवेगेण पडुच्च मस्किएण पारिठावणियागारेण मह त्तरागारेण सवसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि॥४॥

अर्थ – जोजन करतां जेथकी कामाविक उन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहीयें, ते निवीनां पच्चरकाण ग्रहीने विगयना प्रमाणनी सरव्या करे एटले दूध, दहिं, घृत, तेल,गोल प्रमुख विग इमाथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेनें विगइनुं पच्च स्काण कहियें, अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवु, तेनें (निविगइउं पच्चस्कामि के०) निविनु पच्चस्काण करु छु

हवे पच्चरकाण जगना जयथी जे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे एक अन्नछणाजोगेण, बीजु सहसागारेण ए बेना अर्थ लखाइ गया छे

त्रीजु (लेवालेवेण के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्र मुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइथी गृ हस्यनो हाथ खरडायेलो होय, पछी तेने लुछी नाख्यो होय, ते

वा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंछीने ते चाटुवाथी व होरावे अथवा पीरसे, तो पच्चरकाणभंग न थाय

चोथु (गिहत्थसंसठेण के०) गृहस्थनु जे वाटकी प्रमुख भाजन ते विगइ प्रमुखें खरड्युं होय, तेवा भाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न जमे, तो पच्चरकाण भांगे नही

पांचमुं (उक्खित्तविवेगेण के०) गाढी विगइ जे गोल प्रमुख छे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी पछी उपाडी परहा कर्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेता पण पच्चरकाण भंग न थाय

छठुं (पडुच्चमरिकएण के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुहाला राखवाने अर्थें मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाण भंग न थाय

सातमुं पारिठावणियागारेण, आठमु महत्तरागारेण, अने नवमुं सवसमाहिवत्तियागारेण, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा प्रथम लखाइ गयेला पच्चरकाणोथी जाणवो ॥४॥

॥ अथ एज चोथु निविगइनु एकासण सहित पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे निविगइ एकासण पच्चक्खामि तिविहंपि आहार असण खाइमं साइम अन्नछणाभोगेण सहसागारेण लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेण उक्खित्त विवेगेण पडुच्चमक्खिएण पारिठावणियागारेण महत्तरागारेण सवसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि॥४॥

अर्थ —एमा कहेला आगरादिकोनो अर्थ सर्व आगलना पच्चरकाणोमा लखाइ गयो छे इहा निवीना पच्चरकाणमां जो पिंडविगइ अने द्रव्यविगइ, ए बेहु विगइनु पच्चरकाण करे, तो तेणें एमा कहेला नवे आगार कहेवा, अने जे एकली द्रव्यविगइ मा

त्रनो नियम करे तेणें चरिकत्तविवेगेण ए आगार मूकीने बाकीनां आठ आगार कहेवां ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमुं एकासणांवियासणांनु पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासण पच्चक्खामि, डुविहं ति विहंपि आहार असणं खाइमं साइम अन्नत्थणाभो गेण सहसागारेण सागारिआगारेणं आउट्टण पसा रेण गुरुअब्भुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरा गारेणं सवसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थ – उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चक्खाणोमां लखाइ गयो छे, ज्यां एक वार (असण के०) भोजन करवु तेने एकासणु कहीयें अथवा ज्या एकज आसन छे, ते एकासण कहे वाय छे, अने बेवार भोजन करवु तेने बि आसणु कहीयें,तेनुं (प च्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करु छु एकासणु अथवा बियासणु करवा पछी जो स्वादिम अने पाणीयें बे आहार लेवा होय तो डुविहं पि आहारं कहे एटले अशन अने खादिम ए बे आहारनु पच्च क्खाण करे अने जो एकासणु करी रह्या पछी एकज पाणी मोक लु राखे तो तिविहंपि आहार एटले अशन, खादिम अने स्वादि म, ए त्रणे आहारनु पच्चक्खाण करे, अने जम्या पछी एक पाणी मोकलु राखे, तेवारें असण खाइम साइमनो पाठ कहियें हवे एना आगार कहे छे त्यां एक अन्नत्थणाभोगेण अने बीजो सह सागारेण, एना अर्थ लखाइ गया छे

त्रीजु (सागारिआगारेण के०) साधु जमवा बेठा पछी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, बेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहे तो जाणे, अने गृहस्थनी नजर पडे,तो साधु त्यांथी उठीने बीजें

स्थानकें जइ आहार लीये केम के गृहस्थनी देखता जमे तो प्र वचनोपघातादिक माहादोष सिद्धांतमा कह्या छे,ते लागे ए साधु आश्री कह्यु, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा वेठा पछी जेनी दृष्टि पडता अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, वदीवान आवी उनो रहे,अ कस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मामे, तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने वीजे स्थानकें जइ एकासणु करता पच्चरकाण जागे नहीं

चोथुं (आउट्टणपसारेण के०) जमवा वेठा पछी हाथ पग जघादिक अगोपाग पसारतां तथा सकोचतां काइ आसन चलाय मान थाय तो पच्चरकाण जग न थाय पाचमुं (गुरुअभुठाणेण के०) पच्चरकाणें जमवा वेठां छता गुरु जे आचार्य उपाध्याय तथा साधु आवे, तेमना विनय साचवाने अर्थें वे पगने ठामें रा खी उठवु पडे, तो पच्चरकाण जग न थाय

छठु (पारिठावणियागारेण के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलु अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें भ कह्या थकां कांहि उगखु एवु पारिष्ठापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे छे,एवु जाणीने तेवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणा दिकथी मांमीने उपवास पर्यंत पच्चरकाणवालाने वधेला आहार ने जमतां पच्चरकाण जग न थाय, ए आगार यतिने होय, पण श्रावकने न होय,तथापि आलावो त्रूटे माटें गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी

सातमुं महत्तरागारेण, अने आठमुं सव्वसमाहिवत्तियागारे णना अर्थ लखाइ गया छे (वोसिरामि के०) वोसिरावु छु ॥५॥

त्रनो नियम
आठ आगार

॥ अ
उग्गए
विहपि
गेण स
रेण गु
गारेणं
अर्थ -
लखाइ गर
एकासणु
थाय छे,
चरकामि
पछी जो
पि आहा
वो(
अर्थ
छु तेना

दशपच्चरकाण अर्थसहित.

॥ अथ बेतु एकलठाणनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे एगलठाण पच्चरकामि ॥ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं, अन्नठणाजोगेण सहसागारेणं सागारियागारेण गुरुअब्भुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥६॥

अर्थ -एकलठाणानुं पच्चरकाण पण एकासणा प्रमाणेज छे, परंतु एमां हाथ पगादिकनो सकोच विकोच थाय माटे सात आगार छे, तेथी एक आउंटणपसारेण ए आगार न कहेवुं ॥६॥

॥ अथ सातमुं आंबिलनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे आयंबिल पच्चरकामि तिविहंपि आहार असणं, खाइम साइम, अन्नठणाजोगेणं सहसागारेण लेवालेवेण गिहत्थससठेण उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा ॥७॥

...आंबिलनु पच्चरकाण करुं, एक अन्नत्थणाजोगेण अने बीजु सहसागारेण ए बे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया छे. त्रीजु (लेवालेवेण के०) जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेह लें आंगली तथा भाजनादिक खरड्या होय, तेने लेप कहियें, प छी तेनेज घणी सारी रीतें लुंछी नाखीने जेमां ... वयव काइ पण देखाय नहीं एवु कर्यु होय ... विकना अ... एवा लेपअलेपवालां भाजन होय, अथवा ...

होय, एवा कोइ लेप अलेपवाला नाजनें तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चरकाण नंग न थाय एने लेपालेप आगार कहियें

चोथु (गिहब्रससठेण के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंबिल नग न थाय

पांचमु (वक्खित्तविवेगेण के०) गाढी विगय जे गोल प्रमुख छे तेने रोटली उपर मूकीने फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आबिलमा लेता पच्चरकाण नग न थाय

छठु (पारिठावणिआगारेण के०) परठवतो आहार लेता एटले कोइ साधुयें अधिक वहोरयु होय, पछी ते तेने परठववानु होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनु पोताने पच्चरकाण पण होय, अथवा पोतें आयंबिल तप कखु होय, तेम छता पण, गुरुनी आज्ञायें तेवा आहारने लेवा थकी पण पच्चरकाण नग न थाय

सातमु (महत्तरागारेण के०) महोटी निर्जराने लाभे पच्चरकाण भागे नही आठमु (सबसमाहिवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें पच्चरकाण भागे नहीं, वोसिरामि एनो अर्थ सुलभ छे तथा उष्ण पाणी वावरवा माटें पाणस्स एटले पाणीना लेप अलेपादिक छ आगार कह्या छे, तेनो अर्थ आगल तिविहार उपवासना पच्चरकाणमा आवशे ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमु चउविहार उपवासनु पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तठ पच्चरकामि चउविहंपि आहार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नळणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

अर्थ —सूर्यना उदयथी मांमीने (अनत्तठ के०) अनकार्थ एटले नात पाणी खावा नहीं तेने अर्थे (चउविहंपिआहारं के०) चारे आहारनो (पच्चरकामि के०) नियम करु छुं ते चार आहारनां नाम कहे छे एक अशन, बीजुं पान, त्रीजु खादिम, अने चोथुं स्वादिम, हवे एनां आगार कहे छे एक अन्नछणाभोगेण, बीजु सहसागारेण, त्रीजु पारिठावणिआगारेण, चोथु महत्तरागारेण, अने पांचमुं सबसमाहिवत्तिआगारेण, एनो अर्थ लखाइ गयो छे तथापि पारिठावणिआगारेणना अर्थमा विशेष एटलु छे के,पाणी अने आहार ए बे वाना कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के ? चउविहारमां पाणीनो नियम छे, अने पाणी विना मुख शुद्द न थाय माटें पाणी अने आहार ए बे वाना परठवतो होय तो चउविहार उपवासमां ली धा कल्पे, अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलु छे, माटें एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी अज्ञायें लीधो कल्पे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमु तिविहार उपवासनु पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे अनत्तठं पच्चरकामि तिविहंपि आहार असण खाइमं साइम अन्नछणाभोगेण सहसागारेण पारिठावणि आगारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेण पाणहा र पोरिसिं पच्चरकामि ॥ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेण पच्च न्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेणं सबस माहिवत्तियागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा,ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरामि१८

अर्थ –(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंभीने (अभत्तठं के०) अभक्तार्थ एटले उपवासनुं (पञ्चक्खामि के०) पञ्चक्खाण करुं छुं, ए त्रिविहारमां एक पाणीनो आहार मोकलो राखीने बाकीना (असण के०) अशन अने (खाइम के०) खादिम, तथा (साइम के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहार के०) त्रण आहार तेनो नियम करु छु हवे एनां आगार कहे छे

एक अन्नत्थणाभोगेणं, बीजु सहसागारेणं, त्रीजु पारिठावणिआगारेणं, चोथु महत्तरागारेणं, पांचमु सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एना अर्थ सर्व प्रथमना पञ्चक्खाणोमां लखाणा छे

ए पञ्चक्खाणमां पोरिसी साढ्ढपोरिसी अथवा पुरिमार्द्ध पछी (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे तेना आगार कहे छे

(पाणस्स के०) पाणी पीवानां छ आगार छे, ते कहे छे, (लेवेणवा के०) लेपजल ते खजूरनु तथा आछण, बीजु (अलेवेणवा के०) अलेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजु (अच्छेण वा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथु (बहुलेवेण वा के०) मोलुं तांदूलनु धोयण प्रमुख, पाचमु (ससित्थेण वा के०) सीथ सहित पीछनु धोअण, छट्ठु (असित्थेण वा के०) सीथ रहित फासु जल, एटला टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावु छु

॥अथ दशमुं रातें चउविहार करवो,तेनु पञ्चरकाण तथा भवचरिमनु॥

दिवसचरिम पञ्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ए॥

अर्थ – (दिवसचरिम के०) दिवसना छेहडाथी मांडीने एटले सध्या समयथी मांडीने ज्यां लगें नवो सूर्य उगे नहीं त्यां सुधी पञ्चरकाण जाणवु अने जे जावजीव पर्यंत संथारो करवानी

अर्थ —सूर्यना उदयथी मांमीने (अन्नत्तठ के०) अनकार्थ एटले जात पाणी खावा नहीं तेने अर्थें (चठविहंपिआहारं के०) चारे आहारनो (पच्चक्कामि के०) नियम करु छु ते चार आहारनां नाम कहे छे एक अशन, बीजुं पान, त्रीजु खादिम, अने चोथुं स्वादिम, हवे एनां आगार कहे छे एक अन्नछणाभोगेण, बीजु सहसागारेण, त्रीजु पारिठावणिआगारेण, चोथु महत्तरागारेण, अने पांचमु सवसमाहिवत्तिआगारेण, एनो अर्थ लखाइ गयो छे

तथापि पारिठावणिआगारेणना अर्थमां विशेष एटलु छे के,पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के ? चठविहारमां पाणीनो नियम छे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय मार्टे पाणी अने आहार ए बे वाना परठवतो होय तो चठविहार उपवासमां ली धा कल्पे, अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलु छे, मार्टे एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञायें लीधो कल्पे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमु तिविहार उपवासनु पच्चक्काण ॥

उग्गए सूरे अन्नत्तठं पच्चक्कामि तिविहंपि आहारं असण खाइम साइम अन्नछणाभोगेणं सहसागारेण पारिठावणि आगारेण महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेण पाणहा र पोरिसिं पच्चक्कामि ॥ अन्नछणाभोगेण सहसागारेणं पच्छ न्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेणं महत्तरागारेण सवस माहिवत्तियागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा,ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरामि१ए

॥ अथ श्रावकने चार शरणां लेवानो पाठ प्रारंभ ॥

॥ चत्तारि सरण पडिवज्जामि, अरिहंता सरण पडिवज्जामि, सिद्धा सरण पडिवज्जामि, साहू सरण पडिवज्जामि, केवलिप न्नत्त धम्म सरण पडिवज्जामि ॥ पहिलु सरणु श्री अरिहंत भगवतजीनु उत्पन्न विमल केवलनाणें करी, सूर्यनी परें प्रकाशना करणहार, मिथ्यात्वरूप तिमिर अंधकारना मेटणहार, समकित शुद्धधर्मना दयणहार छे, अनत ज्ञानी छे, अनतचारित्र, अनतलोचन, अनतगुण, अनतजीवना रक्षपाल, जगगुरु, जगत्जीवन, जगत्लोचन,परमआल्हादक, हर्षआनदना उपजावणहार, मोक्षमारगना देखाडणहार, अभयदानना दयणहार, शरणना दयणहार,सयम जीवितव्यना दयणहार, जगत्ना मित्र,जगदीश्वर, जे समोसरणमा विराजमान थइने पुष्करावर्त्त मेघनी पेठें धर्मना वचनोने वरसावीने भविक जीवोना सदेहने भांजता थका विचरे छे एवा निर्विकारी जेमनी शातमुद्रा जोवाथी काम, क्रोध लोभ अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अतरमा सवरनी शैली प्रगटे, सर्व समकेती जीवना प्राणाधारक, सकलमुनि मनमोहन एवा श्रीअरिहंत भगवत पाच भरत पाच ऐरवत, पांच माहाविदेह क्षेत्रनेविषे अनते कालें अनता अरिहंत भगवत थया अने हमणा माहाविदेह क्षेत्रने विषे सख्याता अरिहंत भगवत केवली घणा भव्यजीवोने तारता विचरे छे एहवा श्री अरिहंत भगवतजीनु पहिलुसरणु पडिवज्जु ॥ इति प्रथम शरण ॥१॥

॥ अथ द्वितीय शरणु श्रीसिद्ध भगवतजीनु प्रारंभ ॥

सिद्ध भगवतजी इकतीस गुणें करी शाश्वत शोभे छे, ते गुण कहे छे,पाच भेदें ज्ञानावरणीय कर्मने क्षयना करणहार,नव भेदें दर्शनावरणीय कर्मने क्षयना करणहार, बे भेदें वेदनीय कर्म ते

वेलायें चार आहारनुं पच्चरकाण करे, तेने नवचरिम एवो पाठ कहीयें शेष " चउविहपि " इत्यादिनो अर्थ सुगम छे ॥ १० ॥

॥ अथ गंठसहियं मुठसहियादि अभिग्रहोनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए गंठसहिअं मुठसहिअं पच्चरकामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ इति ॥

अर्थ —गांठ सहित पच्चरकाण ते कोइ दोरा प्रमुखनी गांठ बांधी राखे तिहां सुधी पच्चरकाण करु छु, गांठ छोड्या पछी मोकलो एमज मूठ बांधी राखे ते मुठसहियं तथा मुखवस्त्रे अंगुठो राखे, ते अंगुठ सहियं इत्यादि अभिग्रह जाणवा पाछलो अर्थ सुगम छे ॥ ११ ॥

॥ अथ चउदनियमधारनारने देसावगासिक अभिग्रहनु पच्चरकाण ॥

देसावगासिअं उवभोग परिभोग पच्चरकामि अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण, महत्तरागारेण वोसिरामि ॥ इति ॥ ॥ ॥

अर्थ – (देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनु व्रत अथवा वछा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे तेने देशावकाशिक व्रत कहियें एटले इहां कोइ एकली दिशिनुज पच्चरकाण करे, तेवारें उपभोग परिभोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पच्चरकाइज कहियें हवे (उवभोग के०) जे वस्तु एकवार भोगवीयें एवा आहार तथा विलेपनादिकनुं परिमाण करे, तेने उपभोग कहियें अने (परिभोग के०) वारंवार भोगवियें एवी वस्तु जे आभरण, स्त्री, वस्त्रादिक तेनु परिमाण करे, एटले जे चौद नियम संभारे, तेने ए उपभोग परिभोगनो पाठ कहियें, एना आगारनो अर्थ आगल लखाइ गयो छे ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकने चार शरणां लेवानो पाठ प्रारम्भ ॥

॥ चत्तारि सरण पडिवज्जामि, अरिहंता सरण पडिवज्जामि, सिद्धा सरण पडिवज्जामि, साहू सरण पडिवज्जामि, केवलिप न्नत्त धम्म सरणं पडिवज्जामि ॥ पहिलुं सरणुं श्री अरिहंत भगवतजीनु उत्पन्न विमल केवलनाणें करी, सूर्यनी परें प्रकाशना करणहार, मिथ्यात्वरूप तिमिर अंधकारना मेटणहार, समकित शुद्धधर्मना देयणहार छे, अनंत ज्ञानी छे, अनंतचारित्र, अनंतलोचन, अनंतगुण, अनंतजीवना रक्षपाल, जगद्गुरु, जगत्जीवन, जगत्लोचन,परमआल्हादक, हर्षआनंदना उपजावणहार, मोक्षमारगना देखाडणहार, अभयदानना देयणहार, शरणना देयणहार,संयम जीवितव्यना देयणहार, जगत्ना मित्र,जगदीश्वर, जे समोसरणमा बिराजमान थइने पुष्करावर्त्त मेघनी पेठें धर्मना वचनोने वरसावीने भविक जीवोना संदेहने भांजता थका विचरे छे एवा निर्विकारी जेमनी शांतमुद्रा जोवाथी काम, क्रोध लोभ अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अंतरमां संवरनी शैली प्रगटे, सर्व समकेती जीवना प्राणाधारक, सकलमुनिमनमोहन एवा श्रीअरिहंत भगवंत पांच भरत पांच ऐरवत, पांच महाविदेह क्षेत्रनेविषे अनंते कालें अनंता अरिहंत भगवंत थया अने हमणा महाविदेह क्षेत्रने विषे संख्याता अरिहंत भगवंत केवली घणा भव्यजीवोने तारता विचरे छे एहवा श्री अरिहंत भगवंतजीनु पहिलुंसरणुं पडिवज्जुं छुं ॥ इति प्रथम शरण ॥१॥

॥ अथ द्वितीय शरणुं श्रीसिद्ध भगवतजीनु प्रारम्भ ॥

सिद्ध भगवतजी इकतीस गुणें करी शाश्वत शोभे छे, ते गुण कहे छे,पांच भेदें ज्ञानावरणीय कर्मने क्षयना करणहार,नव भेदें दर्शनावरणीय कर्मने क्षयना करणहार, बे भेदें वेदनीय कर्म ते

ने क्षयना करणहार, बेढु नेदें मोहनीय कर्म तेना क्षयना कर णहार, चार नेदें आयु कर्म तेना क्षयना करणहार, बे नेदें नाम कर्मतेना क्षयना करणहार,बेढु नेदेंगोत्रकर्मना क्षयना करणहार, पांच नेदें अतराय कर्मना क्षयना करणहार,वली घणा अतिशयें करी विराजमान ते अतिशय कहीयें ठेयें ण दीहे,ण हस्से,ण वहे, ण तंसे,ण चउरंसे,ण परिमम्ले, ण किह्ने,ण निह्ने,ण लोहिए,ण हली हे,ण सुकिले,ण सुरह्गिधे, ण उरह्गिधे,ण तित्ते,ण कडुवे,ण कसाये ले,ण अबिले,ण मदुरे,ण कक्कडे,ण मउए,ण गुरुए,ण लहुए,ण सीए, ण उह्णे, ण सनिद्धे,ण लुरके,ण काउ,ण रूवे,ण सगेहणे,ण इत्थी,ण पुं रिसे,ण नपुंसगे,ण मोहे एहवा चवदे नेदें पनरे प्रकारें करी सिद्ध न गवत केवलज्ञान, केवलदरिसण, क्षायिक समकितना धरणहार, अनत अतिशयें करी विराजमान, सिद्धे, बुद्धे, परपारगते, अजर, अमर, अरकय, अव्याबाध, नि कलक, निराकार, निरंजन, अशरी री, जीवस्वरूपी, जिहां एकसिद्ध, तिहां अनता सिद्ध, लोकाग्र नागने विषे विराजी रह्या ठे, सर्व कर्म चकचूर करी खपावीने ज्ञानानदें करी नरपूर थका मोक्षनगरनु राज्य नोगवे ठे अनतें कालें अनता मोक्ष पहूता हवडा वर्त्तमान कालें संख्याता मोक्ष पहूचे ठे, आगामिककालें, अणता मोक्ष पहूचशे एहवा अतींदि य, अविनाशी,अनुपाधि, अवधी, अक्लेशी, अमूर्त्ति, शुद्धचैतन्य,ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनतगुण नाजन, सच्चिदानद स्वरूपी एवा अन ता सिद्ध नगवतनु शरणु पडिवर्ज्जु ढु ॥ इति बीजु शरणु समाप्त ॥

हवे त्रीजु शरणु साधु नगवतजीनु कहे ठे साधु नगवतजी केहवा ठे? अनत ज्ञानी अनतदरसी जघन्य दोय क्रोड उत्कृष्टा, नव क्रोड केवली वली गणधर, आचार्य,उपाध्याय बहुश्रुत, द्वाद शागीना नणणहार, रूजुमति,विपुलमति, अवधिज्ञानी, वैक्रिय ल ब्धिना धणी, तपस्वी, महोटा माहानुनाव,ज्ञानवत, दरिसणवत,

चारित्रवत, ज्ञानदरिसणना धरणहार, बारे नेदें तप करी कर्मना क्षयना करणहार, इरियासमिया, नासासमिया, एसणासमिया, आयाणनमत्त निरकेवणासमिया, उच्चारपासवण खेलसिंधाण जलपारिठावणियासमिया, मणगुत्ता, वयगुत्ता, कायगुत्ता, गुत्ता, गुत्तेंदिया, गुत्तबन्नयारी, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जिय लोहा, जियनिदा, जियपरिसहा, जियइंदिया, जीवियमरण नय विमुक्का, अमम्मा, अकचणा, आमोसहिपत्ता, खेलोसहिपत्ता, जलोसहिपत्ता, सवोसहिपत्ता, बीजबुद्धि, कोठबुद्धि, पदानुसारि णी, मणबलीया, वयबलीया, कायबलीया, नाणबलीया, दसणब लीया, चारित्रबलीया, खीरोसवा, मद्धुसवा, सप्पिसवा, अरिक णमाणसिया, चारणविजाहारा, चउछनत्तिया, छठ नत्तिया, अ ठम नत्तिया, दसमनत्तिया, डुवालस नत्तिया, चउदस नत्तिया, अद्धमासिया, मासिया, डुमासिया,तिमासिया, चउम्मासिया, पंच मासिया, छमासिया, अत चरगा, पंत चरगा, लुह चरगा, सम दाण चरगा, अतआहारी पंतआहारी, अरसआहारी, विरस आहारी, लुह आहारी, तुछ आहारी, अतजीवी, प्रातजीवी, लू हजीवी, तुछजीवी, उवसतजीवी, पसतजीवी,आयबीलीया, पुरि मढीया, एगासणीया, नीविगईया, अमग्ग जमग सासीणो, णो णीगामरसनोइ, एहवा मूल उत्तरगुणना सेवनारा, मोक्षमार्गना साधनारा, नावनिर्ग्रंथ, समतारूपी शुनध्यानाग्निवडे कर्मरूपी का ष्ठने बालता,अनादि परिचितविनाव परिणतिने वमता, जेने नहीं माया नहीं ममता, नवी नवी तपक्रियाना करनार, चारित्र पाल नरूपप्रवहणें करी ससार समुड्ने तरता,शत्रु मित्र समचित्त दृष्टि, एवा साधु नगवतजीनु त्रीजु शरणु पडिवज्जु छुं ॥ इति त्रीजु शरणु॥

हवे चोथु शरणु श्री केवलिनाषित दया धर्मनुं जेमां प्रधान नावदया छे, त्रस, थावर, सूक्ष्म,बादर अपर्याप्ता, पर्याप्ता, पृथ्वी,

अप्, तेउ, वाऊ, वनस्पति, बेइंडी, तेंडी, चौरिंडी, पंचेंडी, ए सर्व जीव लोकने विषे राखवा पण काई जीव विराधवो नही, ए हवो श्रीकेवलिनाषित दया धर्म सत्य नित्य शाश्वतो सर्वेहरहित छे, ससार समुद्रमां पडता जीवने द्वीप समान छे, प्रवहण समान छे, तारण शरण गतप्रति आधार छे, जीवादिक पदार्थ राखवा नणी दीपक समान छे, एहिज कल्याणक छे, एहिज मांगलिक छे धर्म ते किछ्यु कहियें? जे डुर्गति पडता जीवने धरे, तेनें धर्म कहियें, जे धर्म,पापरूप जलमाथी तारवाने नाव समान छे, जेने परमेश्वरें परमसुखनो हेतु कह्यो छे एह धर्म अतीतकालें अनता तीर्थकरें कह्यो, वर्त्तमान कालें सख्याता कहे छे, आगामिक कालें अनता तीर्थकर कहेशे एहवो श्रीजिनधर्म अतीतकालें विराधीने अनताजीव नमता हुवा, वर्त्तमान कालें सख्याता नमे छे, आगामिककालें अनता जीव नमशे, एहवो श्री तीर्थकरजीनो मार्ग आराधीने गये कालें अनता जीव तस्या, वर्त्तमान कालें सख्याता तरे छे, आगामिक कालें अनता जीव आराधीने तरशे एहवा श्री केवलिप्ररूपित दयाधर्मनु शरण पडि वज्जु छुं ॥ इति चार शरण सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक नीचें लखेला त्रण मनोरथनें चितवतो थको माहा ॥ महोटी निर्ज्जरा करे, ससारनो अत करे, ते लखियें छेयें ॥

॥ तिहा पहेलो मनोरथ कहे छे श्रमणोपासक श्रावक एम चितवे जे केवारें हु, बाह्य तथा अन्यतर एवो आरंन अने परिग्रह थोडो ने घणो,न्हानो अने महोटो, सचित्त, अचित अने मिश्र, हलवो ने नारी, जे महापापनु मूल, डुर्गतिने वधारनारो, महा काम, क्रोध, मान, माया, लोन, विषय अने कषायनो स्वामी, माहाडुखनु कारण, महा अनर्थकारी, महा डुर्गतिनी

शिला, माठी लेश्याना अध्यवसायनो परिणामी, माहा अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनु मूल, दशविध यतिधर्मरूपकल्प वृक्ष तद्रूप वननो दावानल, ज्ञान, क्रिया,क्षमा, दया,सत्य, सतो पनो नाश करनारो, तथा बोधबीजरूप समकितनो नाश करना रो, सयम व्रत अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, माहा कुमति तथा कुबुद्धिरूप दुःख दारिद्रनो देवावालो, सुमति अने सुबुद्धि रूप सुख सौभाग्यनो नाश करनारो, महा तप सयम रूप धनने लूटनारो, महा लोभ क्लेशरूप समुद्रनो वधारनारो, महा ज न्म जरा अने मरण भयनो देवावालो, महा माया एटले कप टनो भंडार, मिथ्यात्व दर्शनरूप शल्यें भरेलो, महा मोक्षमार्ग नो विघ्नकारी, महा कडवा कर्मविपाक फलनो देवावालो, अन त ससारनो वधारनारो, महा पापी, पाच इन्द्रियना विषयरूप वै रीनी पुष्टिनो करनारो, महोटी चिता शोक गारव अने खेदनो करनारो, महा समाररूप अगाध वल्लिनो सिचवावालो, महा कूड कपटनुं आगर, महा बध परम क्लेशनो आगर, मोहोटा गारव खेद अने कर्म बंधना मदिरनो करावनारो, महा मदबुद्धिनो आ दयो, उत्तम पुरुष साधु निर्ग्रथोयें जेनें निद्यो छे, अने सर्व लोक मा सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करना र, महापापी, पाच आश्रवनुं आगर, महा अनत दारुण कर्कश कठोर अछता एवा दुःख अने भयनो देवावालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादाननो करावनारो,माहा अध्रुव, अनि त्य अशाश्वतो, असार, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंभ अने परिग्रह तेने हु केवारें छांडीश! जे दिवसें छांडीश,ते दिवस महा रो धन्य छे! एवी रीतें प्रथम मनोरथ श्रावक करे ॥ १ ॥

२ हवे दुजा मनोरथमा श्रमणोपासक श्रावक एम चितवे

जे केवारें हुं मुण्ड थइने दश प्रकारें यतिधर्म धारी, नववाडें वि शुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्यपरिहारी, अणगारना सत्तावीश गुण धारी, पांच समिति त्रण गुप्तियें विशुद्धविहारी, महोटा अनिग्र हनो धारी, बेतालीश दोषरहित विशुद्ध आहारी, सत्तर भेदें सयमधारी, बार भेदें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुक्क आहारी, तुच्छ आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजीवी, विरसजीवी, लुक्कजीवी, तुच्छ जीवी, सर्वरसत्यागी, छक्कायनो दयाल, निर्लोभी, निःस्वादी कुक्षीसबल, पखी तुल्य, वायरानी पेरें अप्रतिबधविहारी, वीत रागनी आज्ञासहित, एहवा गुणोनो धारक, जे अणगार ते हुं के वारें थईश ! जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते दिवस धन्य छे ! ए रीतें बीजो मनोरथ श्रावक करे ॥

३ त्रीजा मनोरथमां श्रमणोपासक श्रावक एम चितवे जे केवारें हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निंदी, निःशल्य थइ, सर्व जीव राशि खमावीने, सर्व व्रत सभारीनें, अढार पापस्थानकथी त्रि विधें त्रिविधें करी वोसिरीनें, चारे आहार पच्चरकीने, आ इठ्ठं, कांतं, पीयं, माणं, मणाणं, धीजियं, वेसासियं, समयं, अणुमयं, बहु मयं, भण्डकरण्डगसमाणं, रयणकरण्डगभूयं, माणंसिया, माणं वल्हा, माणं खुआ, माणं पीवासा, माणं वाला, माणं चोरा, माणं दसमसगा, माणं वाइयं, पित्तियं, सबेसन्निवाइय, विविहारोगायंका, परिसहा उवसग्गा, फासा फुसंति एहवुं महारुं शरीर छे तेने, छे हेलें श्वासोश्वासें वोसिरावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मांगलिकरूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व ससारने पूठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु अने चोथो केवलिप्ररूपितदयाधर्म, तेना ध्यानने ध्यावतो थको शरी रनी ममता रहित थयो थको, पादोपगमन संथारा सहित,

पंमित मरणना पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांछतो थको,एहवु पमित मरण अंतकालें मुऊने होजो ॥ एत्रीजो मनोरथ॥

ए त्रण मनोरथने समणोपासक श्रावक, मन, वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको पमि जागरणमाणे करतो थको सर्व कर्मनी निर्झरा करीने ससारनो अत करे मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे ॥ इति तीन मनोरथ सपूर्ण ॥

॥ अथ आनदमंदिरनाम मंगल स्तवनछंद प्रारंभ ॥

॥ सफल ससार अवतार ए हुं गणु ॥ ए देशी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो श्री अरिहंत ए, टालो सकट सहु शत्रु डुर्दंत ए ॥ घनघातिक चउ कर्म कियो अत ए, ध्याइयो शुकल ध्यान महमंत ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सही, द्वादश पर्षदा वदवा आव ही ॥ करुणाके सिंधु उपदेश फरमावहीं, सुणत नवि प्राणी मन तन हुलसावहीं ॥ २ ॥ अथिर जग जाणके सजम आदरे, केइ वा रात्रत निर्मल उच्चरे ॥ केइ विशुद्ध समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध सघ स्थापन करे ॥ ३ ॥ विचरे नूममलें नविकजन तारवा,जन्म जरा मरणना सकट वारवा ॥ प्रथम मगल इम नित प्रतें वदियें, नवनव डुरुत दूर निकदियें ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्ध ऊर्ध्वराजके, सिद्ध करो सर्व मनोवछित काजकें ॥ अजर अमर अविनाशी अविकारय, सुख अनत अनत गुण धारय ॥ ५ ॥ राग रंगित नही कर्म सगत नही, निर्भय स्थान अवगाहन अटल लही ॥ अखम अमम प्रभु जगत शिरोमणि, अमग धर्म फुमं में वडु त्रिजगधणी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सव साधु उमायकें, तारे नव प्राणी उपदेश बतायकें ॥ नोग किंपाकसा जाण के त्यागीया, धन्य जे सत गुणवत सोनागिया ॥ ७ ॥ ॐ नमो जिन अवधि परमावधि, ॐ नमो केवली उग्र तपस्यानिधि ॥ ॐ नमो कोठ

नमो विज बुद्धिया नणी, पदानुसारी संभिन्न सोया मुनि ॥ ८ ॥ वंदू रिजु मति विपुल मत्तिके, पूर्व दिशि चतुर्दश अष्ट नैमतिके ॥ वैक्रिय लब्धि धरा जंघा विद्याचरा ॥ प्रश्न श्रमण वली गगन गामीधरा ॥ ९ ॥ उग्र तप घोर तप दीप्त तपस्याधरा, घोर पराक्रमी शीलवता ग्वरा ॥ रीश आणे नही करत कोइ निंदणा, हर ख आणे नही जो करे वंदणा ॥ १० ॥ अनशन तप कोइ करत ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप रस त्याग जिक्षाचरी ॥ काय किलेश संलीनता आदरे, प्रायश्चित्त विनय वेयावच्च मनशुं करे ॥ ११ ॥ सझाय ध्यान काउस्सग्ग जावहीं, कंचन कंकर एक सम जावहीं ॥ जघन्य पृथकत्वशय सहस्र कोडी जती, उत्कृष्ट पर्वे रिख वंदू में शुजमति ॥ १२ ॥ ॐ नमो धर्म श्री जैन जिन जाखियो, दुर्गति पडत जवजव थिर राखियो ॥ दया जगवती सब शास्त्रमें वरणवी, हिरदे अणुकंपा सो दाख्यो जिनजी जवि ॥ १३ ॥ निज आतम सम जाण सब प्राणीने, पालो दया अणुकंपा चित्त आणीने ॥ जीव अनंत तस्या ईण प्रजावथी, जेम उदधितणो पार लहे नावथी ॥ १४ ॥ हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोथु मंगल एह धरमन्न धारजो ॥ तन धन जोवन अथिर करि जाणजो, चारुहिं मंगल उत्तम मानजो ॥ १५ ॥ चारेनु शरण नित्य लीजो थें पल पलें, एह प्रजावथी सर्व संकट टलें ॥ दुशमन चोर धूरत कोई नहि जले, सिंह सर्पादिक देखि दूरा टलें ॥ १६ ॥ गड गुंवड रोग महा कष्ट असाध्य सो, एह सरणाथकी लहे समाधसो ॥ ताव ते जारी त्रूटे इण ध्यावता, विघन व्यापे नही पंथमें जावता ॥ १७ ॥ जूत झोटिंग अरु ड़कणी शकणी, विघन करे नही देवी विहकणी ॥ नरेंद्र सुरेंद्र फणिंद्रादिक देवता, सकल वश थाये चउ सरण शुद्ध सेवता ॥ १८ ॥ अहि जिम गरुडना शब्दथी थरहरे, तेम चउ सरणथी पाप आघो मरे ॥ ईणमाही शंका रति मत आणजो, सत्तु

ऽ कहेण प्रमाण पीछाणजो ॥१९॥ रिख तिलोक हे धोऊ चरस
रणने, आरोग्य समकित अरु नवजलतरणने ॥ नणशे गुणशे ए
ह स्तवन नावें करी, सोहि नवि जीव लेहेशे अविचल सिरी ॥२०॥
॥ कलश ॥ हरिगीत छंद ॥ अरिहत सिद्ध, महाराज साधु, धरम
केवली, जाणीयें ॥ ए चारु मगल, चारु उत्तम, चारु सरणा, मानी
यें ॥ इह लोक संपत्ति, सुख बहुला, आगें सुख, श्रीकार हे ॥ तिलो
क रिख, कहे सुणो सरधे, होय सदा, जयकार हे ॥ २१ ॥ इति
आणद मदिरनामा मगलछदएकविशी सपूर्णा ॥

॥ अथ मंगल स्तवन छद प्रारंभ ॥

॥ देशी मगलकी ॥ ढाल ॥ जे जे अरिहत जिणदा, मुख पूनम पूर
णचदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रभु नविजनके सुखकदा ॥१॥
त्रूटक ॥ हरिगीत छंद ॥ सुख कद साहिब नए सबके, तप महा
डुक्कर कीया ॥ धनघातिके सब कर्म हण कर, ज्ञान केवल पा
इया ॥ चोतिस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रति
हार अष्ट विशेष जिनके, सघ चउ स्थापन करे प्रभुस० ॥२॥ ढाल॥
जग गुरु जग नायक सामी, जगतारक अतरजामी ॥ प्रभु
मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमु शिर नामी ॥ ३ ॥ त्रू
टक ॥ शिर नामि प्रणमु करुणासिधु, जघन वीश जिनेश्वरु ॥ उ
त्कृष्ट एक शत सित्तर जामें, होय तस बदण करु ॥ उपगारी इण
सम नहीं जगमें, मन वचन तन ध्याइयें ॥ होय सपति विपत्त
नासे, प्रथम मगल गाइयें ॥नित्य०॥४॥ ढाल॥ जे जे सिद्ध सदा
सुख कारी, अष्ट कर्म किया सब छारी ॥ प्रभु तीनुही जोग निवारी,
पाय शिवपुरके सुख नारी ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सुख नारी जिनके
हे अनुपम, आतमिक अविचल सदा ॥ निरंजन निराकार जि
नके, दुःख नहि व्यापे कदा ॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अ

टल अवगाहन धणी ॥ अविकार करुणावत वंडु, सकल लोक शिरोमणि ॥ ६ ॥ ढाल ॥ त्रसनालीके उपर जाणो, जहां मुक्ति शिला सुवखाणो ॥ चेतु छत्र शशीने लगाणो, पैंतालिश लक्ष योजन परमाणो ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ परमाण दलमें अष्ट यो जन, अधिक पतली अतसों ॥ तिण उपरें पंच दश नेवें, सीधा सिद्ध अनतसो ॥ सकल कारज सिद्ध जिनके, नाव नक्ति सराइ यें ॥ पाइयें सिद्ध पद जिणसुं,सिद्ध मगल गाइयें ॥नित्य०॥२॥ए॥ ढाल ॥ जे जे सव साधु सोनागी, आरन्न परिग्रहके त्यागी ॥ तप जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता मुगतिसु लागी ॥ ए ॥ त्रू० ॥ लागि सुरता शिववधूसु, असजम सेवे नही ॥ माहाव्रत पाले इ डी जीते, कषाय चारु हणावहीं ॥ वैराग नावें अधिक क्षम्या, जोग तीनु सम करे ॥ ज्ञान दरिसण चरण पूरण,रोग मरणसु नही मरे ॥ मुनि रो०॥१०॥ ढाल ॥ केइ चउदे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अंग नम्मारी ॥ केइ अवधि मन पर्यवज्ञानी, तेजोलेश्या लब्धि करी ठानी ॥११॥त्रू०॥ करी ठानी,लब्धि वैक्रिय आहारक,ध्यान शुकल ज ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी,ज्ञान केवल पाइया ॥ एष क्रकोडी सहस्र मुनिवर,उत्कृष्ट जघन्य मनाइयें ॥ वदियें शुद्ध ना व नविका, साधु मगल गाइयें ॥३॥१२॥ ढाल ॥ जे जे जैन धर्म जयकारी, केवलि प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें जीवदया अगवा नी, यातो सर्व सिद्धातें वखानी ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ वखाणी सर्व सिद्धातमाही, शका नहीं इणमें रति ॥ निज प्राण सम सव प्रा णी जाणो, सोचो इम निर्मलमती ॥ शाश्वतो त्रिहु कालमांही, सकल जिन दाख्यो सही ॥ ए शुद्ध शरधा धारिया विण, करणी लेखामें नही ॥ १४ ॥ ढाल ॥ जाके जीव दयारुचि जागी, सो जाणो हलुकर्मी सोनागी ॥ निरवद्य शुद्ध करणीधारी, इणसु त रिया अनत ससारी ॥ १५ ॥ त्रू०॥ ससारी तरिया अनत इणसु,

आदरो इम जाणीने ॥ लहो अविचल सुरक सपत, डु ख द्यो मत प्राणीने ॥ ज्ञान दरिसण चरणमांही, धर्म हिरदे लाइयें ॥ सरव आगम सार चउथो, धर्म मगल गाइयें ॥नित्य धर्म०॥४॥१६॥ढाल॥ अरिहत सिद्ध साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शर णागत ए चउमानो, इणमें शका मत आणो ॥१७॥ त्रू०॥ मत आणो शंका शरण लेतां, डु ख नहीं व्यापे कदा ॥ चोर डुशमन रोग नासे, लहो अविचल सपदा ॥ कहे रिक तिलोक मुझने, स रण होजो सर्वेही ॥ सुणो सरहे तेहि जनने, होशे सुख शाता स ही ॥ सदा होशे० ॥ १८ ॥ इति चार मगल स्तवन सपूर्ण ॥

॥ अथ परमेष्ठिपरमानंदस्तव छंद प्रारम्भ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो अरिहताण,इम पाचु पदमाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रौं स्वाहा,जपतां ह्रीं श्रीं थाय ॥१०८॥१॥ अ० सि० आ० उ० सा०॥

॥ छद त्रिजगी ॥

॥ प्रणमु सरसती, होय वरमति, चित्त हुलसे अति, गुण थु णवा ॥ गुरुनावें ध्यावे, सो सुख पावे,एकचित्त चावे,यश सुणवा ॥ जयजय परमेष्ठी,जगमें श्रेष्ठी,दे पद ज्येष्ठी,जगधार ॥ त्रीजग मझार, नाम उदार,जयसुखकारं,नवकारं ॥१॥ ए टेक ॥ वारे गुणवता,श्रीअ रिहंता, लोग महता,गुणगहेरा ॥ घनघातिक कर्म,मिथ्याजर्म,त्याग अधर्म, विप लहेरा ॥ शुकल मन धाया, केवल पाया,इदर आया, तिणवारं ॥ त्रि० ॥ २ ॥ वर प्रपदा वारे, हर्ष अपारे, सुणि अव धारे, जिनवाणी ॥ अमृतसु प्यारी, जगहितकारी, सुर नर नारी, पहेचाणी ॥ केइ सजम धारे, केइ व्रत वारे, कर्म विदारे, शिव त्यारी ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ डुतिय पद ध्यावो, सिद्धगुण गावो, फिर नहीं आवो, जिहां जाइ ॥ जे अलख निरजन, जविमन रंजन,

कर्मके भजन, शिव सांइ ॥ पुद्गलदा फंदा, दुर निकंदा, परमान दा, अविकार ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठगुणके धारे, जगत निहारे, का ल न मारे, वनतांइ ॥ जिहां सुख अनता, केवलवता, गुण अव रंता, छे नाई ॥ निजवास वताइ,द्यो मुज तांइ, तुमसा नांइ, दा तारं ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजें, सेवा कीजें, हर्ष धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिम माले, शूर हरी ॥ पांचु वश करते, पंच उच्चरते, पांचुइ हरते, दुःखकारं ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ शीतल जिम चदा, अचल गिरिंदा, गनपति इदा, शिरदा र ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान लहेरा, मिथ्या अंधेरा, परिहारं ॥ सपद वसु पावे, न्याय वढावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि० ॥७॥ गुरुसेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधि, ज्ञान भणे ॥ बा रे अग वाणी, पेटी समाणी, पूरव नाणी, सहोहणे ॥ निरवद्य सत भाखे, शास्तर साखे, गुण अभिलाखे, निजसार ॥ त्रि० ॥८॥ उवझाया स्वामी, अतर जामी, शिवगतिगामी, हितकारी ॥ शीख णने आवे, जोग शिखावे, न्याय बतावे, उपगारी ॥ दुर्गतिमां पडतो, कादव गडतो, चित करे चडतो, तिण वारं ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ कचुक अहि त्यागे, दूरे भागे, तिम वेरागें, पाप हरे ॥ जुगपर छदा, मोहनी फदा, प्रभुका बंदा, जोग धरे ॥ सव माल खजीना, त्यागन कीना, माहाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी, आपद हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले स तवाणी, गुप्ति ठाणी, जगका प्राणी,सम्म लखे ॥ शिव मारग ध्या वे, पाप हठावे, धर्म वधावे, सत सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावें, विघन हठावे, अरि हरि जावे, दूर सही ॥ जे तपतेजारी, दुःख विमारी, सोग सवारी, आत नही ॥ ग्रहपीडा भागे, दृष्टि न लागे, शत्रु न जागे, लीगार ॥ त्रि०॥ १२ ॥ एह मतर नीको, तारक जीको, त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मत्र करारी, महिमा

नारी, लहे नर नारी, सुख शाता ॥ सरजी वनवेली, दे धन ठेली, नवनव केली, यह सार ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रग नि हाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक पर्यंपे,भावसु जपे,रुध्द सिध्द सपे, जेह धरे ॥ एह छद त्रिभगी,गावे उमगी,नवनवसगी, जयकारं ॥ त्रि० १४ ॥ इति परमेष्ठिपद आराधनस्तवनं ॥ २ ॥

॥ अथ भयभजण अरिहतजिको स्तवन छद प्रारभ ॥

॥ चोपाइ ॥ जे जे विश्वनाथ जसवत, प्रणमुं श्री अरिहत महत ॥ कुशलवेलि जलपुष्कर धार, डुरित तिमिर भानु ससार ॥ १ ॥ चित्रवेल चितामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पूरण आश ॥ आरत हरण करण सुखसत, चरण सरण धारो मनखत ॥ २ ॥ क्रोध मान छल लोभ निवार, भए केवल पद तुम ससार ॥ इध्द नरिंद सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥ ३ ॥ लिपटे सर्व चदनतरु भाल,गरुडशब्द सुणि नासत व्याल ॥ जतुवृक्ष कर्म अहि जाण, तुम समरणतें होत प्रयाण ॥ ४ ॥ कोटि वृंद नारी जणे पुत्त,तुमसो अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चउदिशि माय, दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥ ५ ॥ तुम निर्मल गुण आ गर देव, क्षमासागर आप अछेव ॥ धर्मधुरधर सारथवाह, धर्मच क्री प्रभु त्रिजगनाह ॥ ६ ॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्भय करण परमसुखभूप ॥ जगगुरु जगबधव जगईश, त्रिकरण शुध्द नमाउ शीश ॥ ७ ॥ जनम जरा मरण डुःख सोग, एह अनादि लग्यो भवरोग, तुम सुमरण उषध जो लेत, भवभय व्याधि रंच न रेत ॥ ८ ॥ तुम जग वछल करुणावत, शातिकारक श्री भग वत ॥ में मतिहीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसें वरणवु शोध ॥ ए ॥ केइक हरि हर जपत महेश, केइक सरस्वति गौरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नव ग्रह देव, केइक जल थल अगनी

सेव ॥ १० ॥ केइक
में मन निर्श्रं
॥ ११ ॥
इ
जे
दूध
पुण्य
जूठ त
घाती क
सुखकार,
प्यासा नीर,
तिम तुम ना
देत, हंस सरोव
कोयल चकवी अ
कर मालति अधिक
समरु प्रभु आप ॥
अह क्रोध अनाद ॥ मा
प्रसिद्ध ॥ १९ ॥ आल
नगपूर ॥ विषयकषाय रत
जाण ॥ २० ॥ कपट स … ध्या मत क
रणी आल्हाद ॥ करण कराव … द, पाप अढारा धर्म
विरोध ॥ २१ ॥ इणविध करि करम करूर, यह तो नरक
समां दुःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास, नही मानी किंचित अ
रदास ॥ २२ ॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जगम थावर पडियो
कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महंत, जनम मरण दुःख सह्यां अनंत
॥२३॥ नर भव नीच जाति कुल कीन, दुःखी दरिद्र भयो अति

हीन ॥ जन जन आगें जोड्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल नात ॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, नयो में करी सुरनी सेव ॥ पाड्यां नाटक तोडी तान, करम उदे में नयो हेरान ॥ २५ ॥ चउगतिभ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विण नव नव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, नरियो दु अवगुण भंमार ॥ २६ ॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म नमें जंजाल ॥ सर्प अधारे जेवडी जेम, ठीपखंभ रूपु ग्रहे तेम ॥ २७ ॥ मृगमरीचिका जाणत तोय, प्यास बुजावण हिरणां सोय ॥ धावत धावत छोडे प्राण, तेसे में नमियो अन्नाण ॥ २८ ॥ जेसें ज्वर तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहि व्यापे सोय ॥ तेसें कुकर्म उदय गत जीव, धर्म रुचि नहि आवत ईव ॥ २९ ॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार, तब सोइ वछ्या करत आहार ॥ अशुन कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम सरण ग्रहे नवियाण ॥ ॥ ३० ॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नही मुक शुद्ध पवित्र ॥३१॥ पण एक चरण शरणकी आश, धारी में अब हीये विमास ॥ आश निराश करण नही रीत, तुमसु लागी पूरण प्रीत ॥ ३२ ॥ तुम सम उर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन नविक सुखदाय ॥ ॥ ३३ ॥ गज मदवत माहा विकराल, सन्मुख आवे न नरकू चाल ॥ मारण आवे नरतो फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥ ३४ ॥ कलपंत काल समीर अदम्भ, जले दावानल धूम्र प्रबंध ॥ एसे कष्ट नजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय ॥३५ ॥ श्याम रंग रुगलाल कराल, क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही व्याल ॥३६॥ नूपसु नूप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण गाम ॥ एसें संकट

सेव ॥ १० ॥ केइक ईसा पेगवर पीर, केइक देवी नैरव वीर ॥
में मन निर्श्चे कियो निरधार, तुम सम उंर न को संसार
॥ ११ ॥ कियां सरशव किहां मेरु उत्तग, किहां केशरी बलवत
कुरंग ॥ राधामणि वैमूर्य फेर, जेसें अमृत अतर जहेर ॥ १२ ॥
जेसें वसतर कवल हीर, निशिदन अतर कायर वीर, आक
दूध किहा धेनु खीर, खीरसागर किहा खारुं नीर ॥ १३ ॥
पुण्य पाप फल रक ने राय, परगट इव्य सुपनकी माय ॥ सत्य
जूठ तस्कर साहुकार,आगियातेज रविफलकार ॥ १४ ॥ जेसें कर्म
घाती कर्मवत, प्रत्यक्ष अतर जासे अनत ॥ विश्व विख्यात सदा
सुखकार, ज्यु उदधिमें द्वीप आधार ॥ ६ ॥ नूख्या ॥ नोजन
प्यासा नीर,रोगी औषधथि मन धीर ॥ पंखी नन नट वश विचार,
तिम तुम नाम तणो आधार ॥ १६ ॥ बालक जननी गय वछ
देत, हस सरोवर आशरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कल्लवन प्रीत,अंब
कोयल चकवी आदीत ॥ १७ ॥ सति नरतार बपैया मेह, मधु
कर मालति अधिक सनेह ॥ जोनी मनमें धनको जाप, तेसें है
समरु प्रभु आप ॥ १८ ॥ हिंसा जूठ चोरी उन्माद, सेव्यो परि
ग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया प्रसना अति कीध,राग द्वेषने क्लेश
प्रसिद्ध ॥ १९ ॥ आल दीया करि चाडी कूड, परअपवाद किया
नरपूर ॥ विषयकपाय रतारत आण, बांध्या निकाचित कर्म अ
जाण ॥ २० ॥ कपट सहित कही मरपावाद, मिथ्या मत क
रणी आल्हाद ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अढारा धर्म
विरोध ॥ २१ ॥ इणविध करियां करम करूर, यह तो नरक
समां उःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास,नही मानी किंचित अ
रदास ॥ २२ ॥ तिर्यंच वेदन सागर रूप, जगम थावर पडियो
कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महंत, जनम मरण उःख सह्यां अनत
॥२३॥ नर नव नीच जाति कुल कीन, उःखी इरिद्रि नयो अति

दीन ॥ जन जन आगें जोड्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल
जात ॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, नयो में करी सुरनी
सेव ॥ पाड्या नाटक तोडी तान, करम उदे में जयो हेरान
॥ २५ ॥ चउगतिभ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विण जव
जव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, जरियो दुःअवगुण जंजार
॥ २६ ॥ खोय दियो में निरथैक काल, मोहनी कर्म जमे जंजा
ल ॥ सर्प अंधारे जेवडी जेम, दीपखम रूपु ग्रहे तेम ॥ २७ ॥
मृगमरीचिका जाणत तोय, प्यास बुजावण हिरणां सोय ॥ धावत
धावत छोडे प्राण, तेसे में जमियो अज्ञाण ॥ २८ ॥ जेसें ज्वर
तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहिं व्यापे सोय ॥ तेसें कुकर्म उदय
गत जीव, धर्म रुचि नहि आवत ईव ॥ २९ ॥ जब तन ज्व
रको मिटत विकार, तब सोइ वछ्या करत आहार ॥ अशुभ
कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम सरण ग्रहे जवियाण ॥
॥ ३० ॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार
॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नही मुज शुद्ध पवित्र ॥३१॥
पण एक चरण शरणकी आश, धारी में अब हीये विमास ॥
आश निराश करण नही रीत, तुमसु लागी पूरण प्रीत ॥ ३२ ॥
तुम सम उर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तु
म विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन जविक सुखदाय ॥
॥ ३३ ॥ गज मदवत माहा विकराल, सन्मुख आवे न नरकू
जाल ॥ मारण आवे जरतो फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल
॥ ३४ ॥ कलपंत काल समीर अदम, जले दावानल धूम्र
प्रचम ॥ एसे कष्ट जजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय
॥३५ ॥ श्याम रंग दृगलाल कराल, क्रोध उछत ध्यावे विकराल ॥
नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही व्याल ॥३६॥
नृपसु नृप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण गाम ॥ एसें सकट

ध्यावे आप,लहे रण विजय टले संताप ॥३७॥ अथाग जल वहे वाय कुवाय, उठे किल्लोल वाहण कपाय ॥ एसी विपत ध्यान करनार, सो सहि पावे सागर पार ॥ ३८ ॥ सास खास ज्वर गुंबड दाह, कुष्ट जगदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमे जाव निःशंक, ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥ ३९ ॥ पावन बेडी हथकडी हाथ, रोके जाखसी रुंधे जात ॥ एसी आपदा समरे आप, बंधण तूट टले संताप ॥ ४० ॥ तुम रणमोचन गरिब निवाज, बंधण तोडे श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहु लोकमें तिलक समान, तुम नामें दिन दिन कल्यान ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो नमो अरिहंत,रुध्धि सिध्धि वृध्धि सुख संत ॥ देजो दीनदयानिधि मोय, जव जव सरणो वहुं तोय ॥ ४२ ॥ हय गय रथ दल प्रबलता पूर, वेरी डुशमन नासे दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत, मिले संजोग रहे सुख अंत ॥ ॥ ४३ ॥ डुशमन बल नहिं लागे दाव, वैर मीटी होय सज्जन जाव ॥ जहां जावे तिहां आदर हो ।, मोहनी मंत्र नाम तुम जो य ॥ ४४ ॥ जड मूरख नर जे मतिहीण, पण तुम समरणमें रहे लीण ॥ बुध्धि प्रबल सो पंडित थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥ ॥ ४५ ॥ आजको कागद मशी सब नीर, लेखणी लेवे सुदर्शन गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोडि लहे नहिं पार ॥ ४६ ॥ अल्पमति डु प्रमादी जीव, केसें तुम गुण कहुं अतीव ॥ तुम वालेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणनिधि खाण ॥ ४७ ॥ तिलोक रिख करे अरदास, अंतरजामी तुम गुण रास ॥ आपके पास न मागु लेश, मोय बतावो निज प्रदेश ॥४८॥ एतिक अरजी लीजो मान, कबहु न चूकु तुम एसान ॥ नीठ नीठ जाएया तुम देव, जव जव दीजो पाहरी सेव ... सब त उंगणीशें बत्तिस मान, ज्येष्ठ कृष्ण तिथि बुज । शनी सिध्धि जोग विचार, जयजजन स्तव कियो ।

शहेर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता च उ तीर्थ हमेश ॥ नणे गणे सुणे जे नर नार,तस घर वर्ते मगल चार ॥ ५१ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश जिनस्तोत्रछंद प्रारंभ ॥

॥ छद त्रिभगी ॥ श्रीआदिजिनंदं, समरसकंदं, अजितविनद, भज प्राणी ॥ सभवजगत्राता, शिवमगराता, द्यो सुखशाता, हित आणी ॥ अभिनदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नितमेवा, रिपुघा ता ॥ चोविश जिनराया, मनवचकाया, प्रणमुं पाया, द्यो शाता ॥१॥ श्रीपद्मसुपास,शशिगुणरास, सुविधि सुवास, हितकारी ॥ श्री शीतलसामी, अतरजामी, शिवगतिगामी, उपकारी ॥ श्रेयांसदया ला, परमकृपाला, भवजनवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासु पूज्य सुकर्त, विमल अनर्त, धर्म श्रीसतं, सतकारी ॥ कुंथु अरना थ, तज जगसाथ, मल्लीसुआथ, सग धारी ॥ मुनिसुव्रत सुनमी, आतमाने दमी, कुमेतिने वमी, तप राता ॥चो०॥३॥ रिष्ट नेमि व डाई, नार न व्याही, तोरण जाइ, छटकाई ॥ नाग नागण ताई, विया वचाई, पारस साइ, सुखदायी ॥ जय जय वर्द्धमान, गुणनि धिखान, त्रिजग भान, शुद्ध आता ॥चो०॥४॥ ससारका फदा, दूर निकदा, धर्मका छदा, जिण लीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुना या, भव समझाया, मुनि कीना ॥ कहे रिख तिलोक,सदा तस धो क, द्यो सुखथोक, चित्त चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठि छद ॥

॥ अर्धनाराच छद ॥ त्रिलोक्य सत श्रेष्ठिक, नमामि पारमेष्ठि क॥ भजे भजे उवगल, भवामि सदा मगल ॥ १ ॥ सर्वाग अग सु दर, मारंत मार कुर्धर ॥ सहस्र अष्ट लछन, समस्त शुद्ध स्वछनं ॥ २ ॥ तितिक्षु जे चतुष्टक, हणत कर्म दुष्टक ॥ तपश्चर्या सपुष्टक, धरंत ध्यान सुष्टुक ॥३॥ सुज्ञान पूर्ण धारक, अज्ञान मर्म वारक॥

सुअष्ट प्रातिहारकं, सुनव्यजीव तारकं ॥ ४ ॥ प्रमादवाद खम्डितं, अनंतगुण मम्डितं ॥ अशुन्न योग दम्डितं,नमामि परम पंम्डितं ॥५॥ सुनानु कोटि नास्करं, नवाब्धि तारकं परं ॥ विकारदृष्टि मोचनं, नमामि शांतिलोचनं ॥ ६ ॥ सर्वत्र पाप खम्डनं, सुजैनधर्म मम्डनं ॥ अनंतसुख दायकं, नमामि संघनायकं ॥ ७ ॥ विशिष्टगुण अष्टकं, समस्त शत्रु नष्टकं ॥ अरूपरूप रासकं, सदैव स्थीरवासकं ॥ ८ ॥ अनंत सुख सुस्थितं, रहृत सद्मनिर्मितं ॥ नवौघसर्व वारकं, नमामि निर्विकारकं ॥ए॥ छत्रीश गुण शोन्नितं, कषाय चउ अ क्षोन्नितं ॥ सुसपदाष्ट माचकं, नमामि नित्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमाण नय सश्रुतं, पचीश गुण संयुतं ॥ सुझान अन्य दायणं, नमामि उपाध्यायणं ॥ ११ ॥ तर्जंत जगतजालकं, परप्राण रक्षपालकं ॥ वर्जंत पाप कारणं, गर्जंत धर्मधारणं ॥ १२ ॥ तर्जंत काम क्रोधकं, लर्जंत सो विरोधकं ॥ वितराग आण शोधकं,नमामि संत जोधकं ॥ १३ ॥ अझानता प्रहारणं, अखील सुखकारणं ॥ हणंत मोह फेणतं, नमामि जिनवेणतं ॥ १४ ॥ मिथ्याधकार नजणं, ददामि झान अंजणं ॥ प्रमाद दुःख चूरणं, नमामि सत्यगूरुणं ॥१५॥ तिलोकरिक सस्तवे,शरणु सदा नवोनवे ॥ कृपार्णव मया करी, सदैव द्यो ह्रिरी सिरि ॥१६॥कलश ॥ दोहो॥ जयजय श्रीपरमेष्ठिनें,जयजय श्रीजिनवेण॥ जय जय श्रीगुरुकी रहो, दियो सुमारग जेण ॥१७॥

॥ अथ अतीत अनागत वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन स्तवन छंद प्रारभ्यते ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥ प्रणमु परमेष्टीगौतमस्वाम, जिनवाणी सरस्वती सुखधाम ॥ गुरुचरणांबुज प्रणमु नाव, कहु त्रिहुकाल चोवीशी नाव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी नइ हे अनंत, ते वंदूं में शिवपुरकंत ॥ पण एक वर्त्तमानथी अतीत, नाम कहुं तस मन

धरि प्रीत ॥ १ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर तारणी जाऊ ॥ महाजस विमलजिणद सुखकार, सर्वानुभूति श्रीधर उद्धार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर जपु जिनदेव, सुतेज स्वामी हरि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमतिजिन ईश, शिवगति स्वामी नमु निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तंगजी नेमीश्वर जाण, अनल नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज, जनेश्वरजी छो गरिव निवाज ॥५॥ शुद्धमतिजी शिवकर नमुं,नव नव संचित पातक गमुं ॥ स्यंदन चदन जेम सुभाव, सम्प्रतिजी प्रणमुं चित चाव ॥ ६ ॥ अतितचोवीशी नाम ए जाण, प्रातें नित जपजो भवियाण ॥ अव कहु वर्त्तमान जिन मान, इणहिज भरत क्षेत्र भये स्वाम ॥ ७ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनद, सुमति कुमति करि दूर निकंद ॥ पदम सुपारस जिन सुखकंद, चद प्रभ पारतिख जीम चद ॥८॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर,वासुपूज्य विमल जगपीर ॥ अनत धरम शांति कुंथु दयाल, अर मल्लि मुनिसुव्रत कृपाल ॥ ए ॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, रिष्टनेमी तजि राजुल नार ॥ पार्श्वप्रभू वदू वर्द्धमान, ए वर्त्तमान चोविशी जाण ॥ १० ॥ कर्म हणी केवलपद पाय, चोविशजिन पहुता शिव माय ॥ महेर करो मुझ पर अरिहंत, रविशशिसागर उपमावत ॥ ११ ॥ तुम दरिसणकी मुझ चित चाय, पल पल वदू शीश न माय ॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहना नाम सुणो नर नार ॥१२॥ पदमनाभ सुरदेव सुपास, स्वयंप्रभ शिव करशे वास ॥ सर्वानुभूति देवश्रुत जिणेश, उदय करम नही राखशे रेस ॥ १३ ॥ पेढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण ॥ तेरमा नि कषाय खुलास,चउदमा जिणवर तो निष्पुलाक ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाधि, तरशे भवजल जेह अगाध ॥ संवर जिनेश अढारम जोय,यशोधर विजय मल्लि जिन होय॥१५॥

देव जिन अनतविरज सुचग, नहकृत इग्य नाव जत्तग ॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशे कई नवियण नर नार ॥ अतीत अ नागत ने वर्त्तमान, वहोंतेर तीर्थंकर ए प्रमाण ॥ १७ ॥ आगमग्रंथ तणे अनुसार, सवत् उगणीशें त्रीस मकार ॥ नणतां गुणतां सुखसुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥१८॥इति॥

॥ अथ अरिहंतजिनस्तवनछद प्रारंनः ॥

॥ प्रणमुं जे मुनींद्र जिनेंद्र नणी, जस सेवे नरेंद्र सुरेंद्र फणी ॥ कीर्त्ति अनत सत स्वामी तणी, त्रिहु लोकमें साहेब आप धणी ॥१॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशणी कर्मधरी॥ शुद्धनाव धमण करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥२॥ ॥ जेह दीपे अतिशय चोतिस करी,नैरोग्य महादिव्य देह धरी ॥ स घेण सगण प्रथम पावे, जलमेल कलक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनुकांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुंट आकार विसे, निघ कज्जलकुंचिय केश शिशें ॥ ४ ॥ दा डिम फूल तवणिज केशनूमी, सचित पुण्य पूरण नांही कूमी ॥ नि लाड दीपे अधचद्र टीको,बहुपति पूरण सो मुख नीको ॥ ५ ॥ प रमाणुपेत श्रवण सोहे, नमुद तणु निर्खे मन मोहे ॥ नयनाबुज विकस्वर श्वेत नला, उत्तग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुम रग दीपें,दतश्रेणी धवल शशि तेज जीपे ॥ रसनारत अमृत जल वरपे, दाडीमुठ सुदर केश इसे ॥ ७ ॥ गिरुवा खध नुज जस पुष्ट वली, फणीजिम प्रभुबाहा दीसे नली ॥ अहिद्र सकोमल नुन पाणी, पुष्टागुलि ताम्र रग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशीविक रें खा करमाही, सव एक सहस अठ दरसाई ॥ उतरता पासा उस उदरी,गगावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिहकटि वृत्ताकार स

ही, छठादंम अरुपिमी शोन रही ॥ कूरम सम पृष्ट चरण दोइ, अं
गुली नखमें कबु खोड नही ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सो
हे,प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगें तेज मद दिनकरका,
मर्यादिक केश नख जिनवरका ॥११॥ लोहि मांस उजल गउ खीर
करी, केतकी जिम स्वासा सुगध नरी ॥ आहार निहार अदृष्ट स
दा, नही देख सके चर्म दृष्टि कदा ॥१२॥ धर्मचक्र त्रिहु छत्र आका
श चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन
नलमांही,सो रतन फिटक वर छवि छाई ॥१३॥ सहस्रध्वजा परिवार
करी,सो इन्द्रध्वजा लहकंत खरी॥ छय रुतु अशोक तरु सम वरते,
अंधकार नामंडल नीवरते ॥ १४ ॥ सम नूम हुवे प्रभु जिहा वि
चरें,कटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लगे छ रुतु सुखकारी,
अचेत वायुरज परिहारि ॥१५॥ बरसे जलमंडल रजसमे, बरसे
फुलकापुज अनेक गमे ॥ डुर्गंध टले शुन वास रमे, अर्धमागधी
नापा लोक गमे ॥ १६ ॥ बारे प्रषदा मध धर्म कहे, निज निज ना
पा सब अर्थ गहे ॥ वैरनाव न जागत सिंह अजा, वादी जन वा
द करत नजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नहीसो कोश लगे, मरि मारीसो
सब दूर नगे ॥ स्वपरचक्री डुख देत नही, सो कोश डुष्काल न
आवे कही ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नही बरसे,थोडो पण न
ही ज्यु जन तरसे॥ १९ ॥ आतंक जिरण सब टल जावे, नूतन
वेदन नहि सतावे ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी छाजे,वाणी पेंतिस
जिम घनगाजे ॥२०॥ चोसठइन्द्रो जिनन्नक्ति करे,सुर नर सेवा मन
हरप धरे ॥ पारखमत खमण मान नणी, त्रिगडो रचे करवामहि
मा घणी॥ २१ ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कचन कोसीसा
पीत नणी ॥ तोरण मणि रत्नमें चग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्र
माण लह्यो ॥ २२ ॥ डुजो गढ सोवनके माहि, रतन कोशीसा
छवि छाही ॥ रतनगढ त्रीजो प्रवर घणो, कोशीसा मणीकें मा

ही नणो ॥ २३ ॥ पावडीया चारुहि पोजतणी, पांच पांच हजार रसाल बणी ॥ नितिया तिन्नुही कोटिगणी, अर्द्धसहस्त्र धनुष उत्तंग नणी ॥२४॥ धनुष तेत्रीश बतीस अगुली, उपर वली मंथाका खुली ॥ पावडीया उचा चोडापणे, एक रयणीके परमाण बने ॥२५॥ लबां तो धनुष पंचाशी सही, पीठकामध्य नागे शोन रही ॥ आयाम विष्कन छविश तणी, दोयशें वली धनुष उचाई नणी ॥२६॥ कोट कोटको अतर सो तेरे, जोजन मम्फल परकाश करे ॥ पीठिका पर स्फाटिकरतन केरो, सिंहासण सोहे अधकेरो ॥२७॥ तिण उपर बिराजी धर्मकहे, बारे पर्षदाकी बेठक कहे ॥ श्रावक श्राविका देश विरितिधणी, कल्पवासिक देव इशाण श्रणी ॥ २८ ॥ विमाणिक सुरि साधु समणी, ए तीनुंही अगनिकूण नणी ॥ विंतर ज्योतिषी अरु नवणपति, नैरीत कूण बेठत देव अति ॥२९॥ देवीवली तीनुही देवतणी, वाव्य कुणमें बेठत सेव नणी ॥ ३० ॥ इणविध बेठी उपदेश सुणे, शुद्धनावथकी अघमेल धुणे ॥ एक जोजन लगे अमृतधारा, वैरागपणे अदेव्रत सारा ॥ ३१ ॥ ग्रहगण ठगे नित दिशचारी, एकविश प्रगटे रवि हद धारी ॥ प्रसवे नवन केई जग नारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥ ३१ ॥ जे रवि शशी मेरु उपमा सिंधु, गुणकहि न शकू मुफमति बिंदु ॥ जिनगुण महिमा पार न पावे, सुरगुरु सरस्वति स्वयगुण गावे ॥ ३३ ॥ प्रभु समरण जो करे नाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जलण जलोदर रोग हठे, वध वधण परवश दुःख कटे ॥ ३४॥ रीद्धिसिद्धि नरपूर नमार घणो, परताप ते प्रभुजी नाम तणो ॥ प्रथमपद मगल अतिचारी, तिलोक कहे सेवाद्यो चरणारी ॥ ३५ ॥ सवत् उंगणीशें सवत्सर त्रिशें, ए छद स्तवना करी जगीशें ॥ शुद्धनावें नणे गुणे नर नारी, ते पावे नवजल निधि पारी ॥ ३६ ॥ कलश ॥ इमदेव अरिहत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावछ ॥ तरियें न

वजल ड खसागर,वेठ कर जिमनावसुं॥तुम नाम मगल टले चदंगल, करुणा मुजपर कीजीयें चरणसरणकी सेव साहेव, अचल पद वी दीजियें, प्रनु अव तो महेर करिजीयें ॥१॥ इति अर्हतस्तोत्र॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनछद प्रारन ॥

॥ त्रिनगीछंद ॥ जिनसासन स्वामी, अतरजामी, शिवगतगामी, सुखकारी ॥ जगमें जसवता, श्रीनगवता, सुगुण अनता, उपगारी ॥ सिद्धार्थकुल आया, जगत सुहाया, शुनपल जाया, गुणधारी ॥ धन त्रिसलानदन, कुलध्वज स्यंदन, जिनचरननकी वलिहारी ॥ १ ॥ आसण कपाया, सुरपति आया, सीस नमाया, छु ननावें ॥ वैक्रियकी पासें, मेलि हुलासें, ले जिन तासें,गिरि आवे ॥ तीहां प्रनुजीनो, महोछव कीनो, फिर मुक दीनो, ज्यां महतारी ॥ ध० ॥ २ ॥ मुगवदणा करकें, निद्रा हरकें, स्तवन उच्चरकें, घर जावे ॥ नइ रवि उगाइ, नूधव ताइ, दासी वधाइ, दरसावे ॥ नृप मोछव कीयो, दानज दीयो, हर्पत हीयो, नीहारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ यौवन वयमाही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे, तपस्या तन तावे,शम दम नावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रनु क्षमासागर, ज्ञान उजागर, गुणरत्नाकर, अघवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुद्धसजम पाले, दूपण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोन हगाया, मोह नगाया, अरिघाता ॥ शुकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिण वारी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ वडाइ, मन अकडाइ, आया चलाइ,प्रनु पासें ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रनु नर्म मिटाया, जिनमग आया, सजम गया, तिण सारी ॥ ध०॥ ६ ॥ परथम इन्द्रनूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदी सगुति, फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम नीना, तन ताया ॥ चुमा

ही जणो ॥ २३ ॥ पावडीया चारुहि पोजतणी, पांच पांच हजा
र रसाल वणी ॥ जितियां तिनुही कोटिगणी, अर्द्धसहस्र धनुष उ
त्तंग जणी ॥२४॥ धनुष तेत्रीश वतीस अगुली, उपर वली मंथाका
खुली ॥ पावडीया उचां चोडापणे, एक रयणीके परमाण बने
॥२५॥ लवा तो धनुष पंचाशी सही, पीठकामध्य जागे शोज रही ॥
आयाम विष्कन्न छविश तणी, दोयशें वली धनुंष छंचाई जणी ॥२६॥
कोट कोटको अतर सो तेरे, जोजन मम्ल परकाश करे ॥ पीठिका
पर स्फाटिकरतन केरो, सिहासण सोहे अधकेरो ॥२७॥ तिण उप
र विराजी धर्मकहे, वारे पर्षदाकी वेठक कहे ॥ श्रावक श्राविका
देश विरितिधणी, कल्पवासिक देव इशाण अणी ॥ २८ ॥ विमाणि
क सुरि साधु समणी, ए तीनुही अगनिकूण जणी ॥ विंतर ज्योतिषी
अरु जवणपति, नैरीत कूण वेठत देव अति ॥२९॥ देवीवली तीनु
ही देवतणी, वाव्य कुणमें वेठत सेव जणी ॥ ३० ॥ इणविध बे
ठी उपदेश सुणे, शुद्धजावथकी अघमेल धुणे ॥ एक जोजन लगे
अमृतधारा, वैरागपणे महेव्रत सारा ॥ ३१ ॥ अहगण लगे नित
दिशचारी, एकविश प्रगटे रवि हद धारी ॥ प्रसवे नवन केई जग
नारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥ ३२ ॥ जे रवि शशी मेरु
उपमा सिंधु, गुणकहि न शकू सुजमति बिंदु ॥ जिनगुण महिमा
पार न पावे, सुरगुरु सरस्वति स्वयगुण गावे ॥ ३३ ॥ प्रज्ञु समरण
जो करे नाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जल
ण जलोदर रोग हरे, वध वधण परवश दुख कटे ॥ ३४॥ रीद्धिसि
द्धि नरपूर जमार घणो, परताप ते प्रज्ञुजी नाम तणो ॥ प्रथमपद
मगल अतिजारी, तिलोक कहे सेवाद्यो चरणारी ॥ ३५ ॥ सवत्
उगणीशें सवत्सर त्रिशें, ए छद स्तवना करी जगीशें ॥ शुद्धना
वें जणे गुणे नर नारी, ते पावे जवजल निधि पारी ॥ ३६ ॥ कलश ॥
इमदेव अरिहत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावस्र ॥ तरियें ज

वजल ड खसागर,वेठ कर जिमनावसुं॥तुम नाम मंगल टले वदंगल, करुणा मुजपर कीजीयें चरणसरणकी सेव साहेब, अचल पद वी दीजिये, प्रभु अब तो महेर करिजीयें ॥१॥ इति अर्हतस्तोत्र॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनछंद प्रारंभ ॥

॥ त्रिभंगीछंद ॥ जिनसासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगतगामी, सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्रीभगवंता, सुगुण अनंता, उपगारी ॥ सिद्धार्थकुल आया, जगत सुहाया, शुभपल जाया, गुणधारी ॥ धन त्रिसलानंदन, कुलध्वज स्यंदन, जिनचरननकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसण कपाया, सुरपति आया, सीस नमाया, भु भनावें ॥ वेक्रियकी पासें, मेलि हुलासें, ले जिन तासें,गिरि आवे ॥ तीहां प्रभुजीनो, महोछव कीनो, फिर मुक दीनो, ज्यां महतारी ॥ ध० ॥ २ ॥ युगवदणा करकें, निद्रा हरकें, स्तवन उच्चरकें, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, नृधव ताइ, दासी बधाइ, दरसावे ॥ नृप मोछव कीयो, दानज दीयो, हर्षित हीयो, नीहारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ यौवन वयमांही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे, तपस्या तन तावे,शम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमासागर, ज्ञान उजागर, गुणरत्नाकर, अघवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुद्धसंजम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोभ हगाया, मोह भगाया, अरिघाता ॥ शूकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिण वारी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ वडाइ, मन अकडाइ, आया चलाइ,प्रभु पासें ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भर्म मिटाया, जिनमग आया, संजम गाया, तिण सारी ॥ ध०॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदी सयुति, फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना, तन ताया ॥ क्षुमा

तीर्थें तारा, गणधर प्यारा, नय अणगारा, व्रतधारी ॥ ध० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्पां, पाप उथाप्पां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केई स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्रीजिनराया, हितकारी ॥ सेले शी नावें, प्रभुशिव पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ ध० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भवदुःख भंजन, भवजन रंजण, कृपाला ॥ जे गुरुमन ध्यावे, दुःख पलावे, सुख उपावे, प्रतिपाला ॥ कहे री ख तिलोका, नीरत धोका, दिजो शिवथोका, भव पारी ॥ध०॥९॥

अथ अरिहतस्तोत्र छंद प्रारम्भ ॥

॥ मोतीदाम छंद ॥ सदा जगनायक स्हायक हंस, सुकायकवा यक लायक वंस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ठ कहंत, अहो अरिहंत करो सुखसंत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात, सुगात सुवात सुपा त सुआत् ॥ लछन सुअष्ट सहस्र कहंत ॥ अहो० ॥ २ ॥ विशाल सुभाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सु लाल भवीक इछंत ॥ अहो० ॥ ३ ॥ अखम्भ अमम्भ अचम्भ अतंम्भ, अगम्भ अवम्भ असम्भ सुसम्भ ॥ अफम्भण छम्भ भये गुणवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ माहावीर गंभीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगी र ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहंत ॥ अहो० ॥ ५ ॥ अरीश विरीश शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेद अछेद अभेद रहंत ॥ अहो० ॥ ६ ॥ उथापक पाप तीर्थंकर आप, जपंत जिनंद वधंत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीभगवंत ॥ अहो० ॥ ७ ॥ अभे द विभेद अगेद सुगेद, अमेद विमेद अवेद विवेद ॥ अलेप सुले प सदा दरसंत ॥ अहो० ॥ ८ ॥ न कर्म न भर्म न गर्म उछाह, अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अभोग तरंत ॥ अ हो० ॥ ९ ॥ सुग्यान अराध समाधि प्रणाम, विहार करत भवी हि तकाम ॥ भजत सुरासुर स्वामि महंत ॥ अहो० ॥ १० ॥ कहंत स

हा उपदेश रसाल, हवत मिथ्यातम वधन जाल ॥ आराधक होय तिरंत अनत ॥ अहो० ॥ ११ ॥ रटत कटत दुरीत समस्त, लह त सुखामृत वछित वस्त ॥ उद्धारक वृन्द सहित हितवत ॥ अहो० ॥१२॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक,चरणांबुज धोक, ते रिस्क ति लोक ॥ विलोक सुदेव जपोजग कत ॥ अहो० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिध्धाष्टक छंद प्रारम्भ ॥

॥ नाराच छद ॥ प्रसिध्द सिध्द शिव कंत, सत श्रेष्ठ देव हो ॥ उष्टक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो ॥ कलंक थक मक अक, रच स्व न मवरं ॥ कृपाकरो दया निधी, रिध्दि वृध्दी सिध्दी करं ॥ १ ॥ अरूप रूप स्वअनूप, नूपधू असम्म हो ॥ अफम्म नम्म मम्म गम्म, छमके प्रचम्म हो ॥ अनत ग्यान रूप तोय, पाप मेल सहरं ॥ कृपा० ॥२॥ प्रमाद क्रोध मानमाय, लोभलेशसो नही ॥ अनंत कालस्थित हे, अनत सुख रासही ॥ अष्ट माहागुण मूल, स्व सदा सुसवरं ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल,राग द्वेष सहखा॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तखा ॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं ॥कृपा०॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नाही,पाप फदवध सो॥ आहार भार हास्य त्रास,नाशकाम धध सो ॥ अभंग ज्ञान संग चंग, गुप्त ना उजागर ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र, काल भाव जाण हो॥ त्रिलोकनाथ त्रात भ्रात,मद्द चद्द भाण हो ॥ विनाश किया रोग शोग,भोग भाव भ गुर ॥ रुपा० ॥ ६ ॥ जपंत जाप आगनाग, सिद्द चोर सो हटे ॥ कटत वध द्रव्य भाव, रोग दुख जे मिटे ॥ विपय कपाय जाय जाय, आय सुख सागर ॥ कृ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिक हस्त जोड, कर्त नित्य वदना ॥ निरोगबोध लाभ चहाय, कर्मकी निकदना ॥ नहि जक्तमाहि डर, आपसो विश्वभरं ॥कृपा०॥८ ॥ नित्य मेव

ए सिद्धाष्टकं, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्तिसुखद्भ्य, नाव होत नागरं ॥ नान्यत्र देवलोक मांहि, सिद्धस्थान ऊपरं ॥ कृपा० ॥ ए ॥ दुहो ॥ अजर अमर अविकार हो, सिद्ध निरंजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो, दीजो अविचल सेव ॥ इति सिद्धाष्टकस्तोत्र छंद संपूर्ण ॥

॥ अथ आचार्यस्तोत्र छंद प्रारंभ ॥

॥ छंद मरहट्टामें ॥ जें ज्ञान महंता, समकितवंता, चारित रत पतधार ॥ उत्कृष्टी करणी, नवजल तरणी, पंचम वीर्य आचार ॥ स्वय पाले पलावे, पाप दृगवे,उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद श्री जे, नित्य नमीजें, कीजें सफल जमार ॥ १ ॥ सव हिंसा टाले, दया सो पाले,निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पंच जाम शुद्धधार ॥ श्रुरत चखुनासा, रसना फासा, इंद्रिय जितणहार ॥ गणि० ॥ २ ॥ पशु पंमग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवां वारे, आसन टारे, करे नही अधिको आहार ॥गणि०॥३॥ अगशोना टाले,वाड ए पाले,क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजंता, कपट तजता, ममतादी सब मार ॥ कपाय एह चारी, महा दुखकारी, भरमावे ससार ॥ गणि०॥ ४ ॥ कर्मनका फंदा, दूर निकंदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी,ले शुद्ध अन्न पाणी, दोप बयालीस टार ॥ जयणा करि लेवे,विधिसु परठेवे, समितिए सुखकार ॥ गणि० ॥ ५ ॥ मन वचन काया, गुप्ति त्रिहु माया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुध किरियाधारी, ज्ञान भंमारी, करता पर उपगार ॥ उपदेश सुणावे, भर्म वहावे, तारे भवि नर नार ॥गणि०॥ ६ ॥ वर रूप दीपंता, महाबलवंता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुध बोले,सातू नय खोले,मोले नही लगार ॥ विद्यानिधाना, युगप्रधाना,गुणगण रत्नाकार

। गणि० ॥ ७ ॥ कुपक्ष नही ताणे, सब मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जींपे, रवि जिम दीपे, सार्थे वहु अणगार ॥ पाखंम हठावे, जैन दिपावे, पाले संजम नार ॥ ग० ॥ ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार ॥ सुमरण सुखकारी, महिमा नारी, अरि करी जय परिहार ॥ दुख जावे दूरें, संकट चूरे, पूरण रहे नंमार ॥ ग० ॥ ए ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे, रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समजाया, तिलोक करे नमस्कार ॥ ग० ॥ १० ॥ संवत् कगणीशें, वर्षे चोतीशें, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे नावें, सोही सुख पावे, छंद भरहणधार ॥ प्रातें उठ वदे, दुरित निकंदे, रिध सिध जय जय कार ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥ १४३ ॥

॥ अथ उपाध्यायछंद प्रारंन ॥

॥ हाटकीछंद ॥ संसारसागर, दुखआगर, जाणे नागर, धीर ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर नागे, शूर सागे, वीर ए ॥ मुनिराज पासें, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथे पद उवजाय सुखकर, कीजें नित्यप्रत्यें जाप ए ॥ १ ॥ आचारग चग, अग सुयंगड, गणायंग, सुखकार ए ॥ चउथो समवा, यंगनीको, नगवइ ज्ञाता, सार ए ॥ उपासगअंत, गड अग अष्टम, अनुत्तरोववाई, थाप ए ॥चउ०॥२॥ प्रश्न व्याकरण, नव्यापूरण, अंगविपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेवपासें, अर्थ धाखा, चवदे दूपण, टाल ए ॥ ग्यारा अगसगो, पांग शीख्या, अति चित्त, चालए ॥ चउ० ॥ ३ ॥ उत्पातअग्नी, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त, जाणीएं ॥ आतम प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान, वखाणीयें ॥ विद्या अवध, प्रवाद पूरव, धारत तोहि, न धाप ए ॥च०॥ ४ ॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव, लोकविंड,

सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अ जिमान तज कहे, वेण चारू, नहि करत कूडी, थाप ए ॥च०॥५॥ भविकजन जो,प्रश्न पूछे,नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य खटनो, पूछे कोइ, प्रस्ताव ए ॥ तव देत उत्तर, शोध सुत्तर, दे जिना गम, छाप ए ॥ च० ॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्मराता, बोले निरवद्य, वेण ए ॥ मिथ्यातखमण, जैनममण, पाले जिनवर, केण ए ॥ गणिपदने, जोग सोहे, नामकर्म, आताप ए ॥ च०॥७॥ महाव्रत पाले, दोष टाले,चाले इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी, शत्रुघातक, परम शूरा, जोध ए ॥ मनवचन काया,करण तीनु, करत नही, सो पाप ए ॥च०॥८॥ उपाध्यायभक्ति, करतजुक्ति, ज्ञानगर, जीवत ए ॥ मिथ्यात जावे,बोध आवे, पावे शिवपुरकत ए ॥ जैनमारग, तरण तारण, अवर सब, कलाप ए ॥ च० ॥ ए ॥ जिन नही, जिनराज सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देशजिनपद, माहि विचरे, करता पर, उपगार ए ॥ मिथ्यात्वअंधा, कर्मफंदा, ज्ञान असिकर, काप ए ॥च०॥१०॥ भवप्राणी तारे, सझो टारे,बहु सूत्र, विस्तार ए ॥ उत्त राध्ययन, इगियार मांसें, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख, कर जोडि वदे, सदापुण्य प्रताप ए ॥ च० ॥ ११ ॥

॥ अथ साधुस्तोत्रछंद प्रारंभ ॥

॥ कामनी मोहनानी देशी ॥ साधु निग्रंथने वंदणा किजीयें, मानवको भव सफल करीजीयें ॥ धन जे संत गुणवंत सोभागि या, भोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥ १॥ पंच माहाव्रत सम कित पालता, चार कषाय दावानल टालता ॥ भावसचे मुनि वं दू में नित्त ए ॥ कर्णसचे जोग सचे सुकित्त ए ॥ २ ॥ धन जे क्षमा वैरागमें राचिया, द्रव्य छ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचन काया सम धारता, ज्ञानदर्शन चरण शुद्ध सारता ॥ ३ ॥ समभा

वें करी वेदनी खमता, मरण आयायकी जे करे समता ॥ गुण सत्तावीश सजम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित् नहि करे ॥४॥ तिनहिं शल्यसों मूल निकंदिया, मोहनी कर्मसू ते नही फंदिया ॥ नही करे विकथा धर्म सुध्यावता, शुक्लध्यान धरकर्म खपावता ॥ ५ ॥ दया छक्कायकी पालता जे मुनि, क्रियाभेद मद सो नही करे महागुणी ॥ नववाड मुनिधर्म पाले अखम्ड ए, सकल मिथ्या तको छम्डयोथ्य फन्द ए ॥ ६ ॥ बावीस परिसह जिंतिया ते सही, बावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ बावन अन्ना चीरण टालता, चोराशी उपमा युक्त वे चालता ॥ ७ ॥ एक एक चउथादि षष्ट मासी करे, एकावली रतनावली आदरे ॥ गुणरतन सवछ धारता, प्रतिमादिक सलेषणा उद्धारता ॥ ८ ॥ तप ऊणोदरी छे अति मोटको, भिक्षाचरी रस त्याग नही छोटको ॥ काय किलेशने पिंमसलीनता ॥ षष्ट तप धारके तन करे क्षीणता ॥ ९ ॥ प्राश्चित्त विनय वैयावच्च जें करे, सज्झाय ध्यान काउसग्ग आदरे ॥ प्रछन्न खट तप साधे अणगार ए, टाले सहीजिके कर्मको खार ए ॥ १० ॥ चन्द्र ज्यू सोमदृष्टें करी दीपता,तप तेजें रवि किरणने जीपता ॥ सागर जेम गम्भीर कहीजीए, कुंजर जेम धीरजता लीजीए ॥ ११ ॥ लब्धि पाया भली प्रगट तपस्या फली, खेलोसही जलोसही प्रसिद्ध प्रगटी भली ॥ वप्पोसही केही आम्मोसही पत्तिया, सव्वोसही कोठबुधि केइ मत्तिया ॥ १२ ॥ बिजबुद्धी वली पदानुसारिया, एकेक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विद्याहरा मुंनिराजिया, ऋजुविपुलमति सशय भांजिया ॥ १३ ॥ एकेक मति श्रुति अवधि धणी, मन पर्यव केवल शोभा घणी ॥ केवली दोय क्रोडी सुखकार ए, नवकोडी उत्कृष्ट विचार ए ॥ १४ ॥ जघन्य दोय सहस्र कोडी जती, सहस्र प्रत्येक उत्कृष्ट पर्वे सजती ॥ आज्ञा जिणदकी पालता जे सदा, धन जे जगतमें सकल छोडे अदा

॥ १५ ॥ दुरित टले मुनि नावञ्चुं जपता, तम दलित होवे जिम रवि तपतां ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकंदना, रिख तिलोकजी करे तस वंदना ॥१६॥ संवत् उंगणीशें तीस मझारए,ज्येष्ठ आदि छठ सूरज वार ए ॥ कामनीमोहना छंदमें जाणी ए, सुखवेली ज ले पुष्कर मानीयें ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्धि वृद्धि, समृद्धि कां रण, जपो मुनिवर,नावञ्चुं ॥ धर्मदेव, मर्हत प्रणमुं, शूल्या सुगुरु, पसावस्रू ॥ एम जाणी, सेवो प्राणी,सुसाधू, मनरखंत ए ॥ ते लहे शिवपद, रूप निश्चे, निर्नेयशिव सुख, संत ए ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिननामनमोत्थुणं युक्त स्तवन छंद प्रारंभ ॥

॥ जय जय आदीश्वरजी अजित नणी, संनव अनिनंदण मोक्ष धणी ॥ सुमति पद्म सुपासमणी, चंदाप्रनकी जग महिम घणी ॥ १ ॥ पुष्पदंत शीतल हण्या कर्म अरी, श्रेयांस वासुपूज्य आर्तिहरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्मजितकरी, शांतिनाथ प्रभु हण्यो रोग मरी ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि जिनसुखदाता, मुनिसुव्रत नमीश्वर जगताता, रिष्टनेमी करुणारस माता, पारस पारस सम विख्याता ॥ ३॥ वर्द्धमान जिणंद सासणराया, अतिक्षमा कर केवल पाया ॥ चोविश जिनेश्वर मन नाया, प्रणमु वंदू मन वच काया ॥४ ॥ अरिहंत धर्म आदितिर्थंकरें, स्वयमेव बोध शुद्ध ध्यान धरे ॥ पुरपोत्तम हरी जिम नांहि मरे, पुरपोत्तम पुंमरीक पंकतिरे ॥ ५ ॥ पुरुपोतम प्रभूगधहस्ति नलें, जिन विचरें जहां पारमनी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यों मिथ्या तम सर्व दले ॥ ६ ॥ उद्योत करे नविलोक हिये,अनयज्ञानरूपी प्रभु नेत्र दिये ॥ शुद्धमारग नूले जग जे प्राणी, मोक्षपंथ बतावे सुखदाणी ॥ ७ ॥ कर्मशत्रुथु त्रास्या नव आवे, तिनकू जिणस

रणागत थावे ॥ संयमजित वदायक स्वामी, वोध वीजदाता नमुं शिर नामी ॥ ८ ॥ धर्मदायक देशक नायगाण, धम्मसारही जिन चक्रवर्त्ती जाण ॥ अरिहत अपडिहय वरनाण,दसणधरा वियट्टछउ माण ॥ ९ ॥ रागद्वेष जिन्नाण जावयाण, नवउघ तिन्नाण तार याण ॥ धन जिन बुद्धाण वोधकाण, अठकर्म मुत्ताण मोयगाण ॥ १० ॥ सव नाणदसणशिव अचल थया, आरोग अणत अखय अवाध रह्या ॥ आवे नहि फिर इण जगमाई, सिद्धगति नामधेयं कहाई ॥११॥ जिण थानक प्रभु सप्राप्त थया,निजगुण सपूरण आ व कया,असुर सुर गरुड भुयंग देवा,इद चद करे प्रभुकी सेवा ॥१२॥ कल्पवृक्ष चितामणिथी न्यारी,जिनवर महिमा अपरमपारी ॥ नरक निगोद गतिका ताला,जिननामथकी मगलमाला ॥१३॥ करि केस री सावज दुष्ट जिके,वली उदक अगनि नय डु ख तिके॥दुर्जन छल बल नहिं चालि शके,जो प्रभु समरण करे नाव पके ॥१४ ॥ वध वंधण परवश डु ख कटे, वली चोर चरड नय दूर हटे ॥ गड गुवड ज्वरादिक रोग मिटे,जो एक चित्त जिन नाम रटे ॥१५॥ ऋद्धि सिद्धि परिवार नंमार अति,तस आदर दे सुरराज पती ॥ जिन समरण थी प्रशस्त मती, दिन दिन वधे महिमा पुण्यरती ॥ १६ ॥ आन्न कागद लेखिणी मेरु तणी,उदधि जल जेति मसी आणी ॥ सुर गुरु गुण गावे प्रेम नणी,अनत गुणातम त्रिजग धणी ॥ १७ ॥ तिलोक रिख कहे शिर नामी, मुज दरिसण द्यो अतरजामी ॥ नव नव सरणं आप तणु, जब लग नहिं द्यो मुज सिद्धपणु ॥ १८ ॥ सवत् उंगणीशें वर्षे त्रिशें, जिनस्तवन कियो चित्त जगीशें ॥ पढे सुणे जो नर नारी, तस घर वरते मगल चारी ॥१९॥ इति ॥

॥ अथ जिनवाणिस्तवन छद ॥

॥ त्रिनंगी छद ॥ जय जय जिनराया,सूत्र सुणाया,धर्म बता या, हितकारी ॥ गणधरजी जीली, सधि सुमेली, नयरस केली,

विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंग, नंग तरंग, ध्रुव अनग, अतिनारी ॥ धन धन प्रभुवाणी,सब सुखदानी, नवजन प्राणी, उर धारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ यहां नहि तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधिमुनिवर, मनज्ञानी ॥ जघाविद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, माहा ध्यानी ॥ नहि गगणगमणी, पद अनुसरणी,वैक्रिय करणी, परिहारी ॥ध०॥२॥ देवर्द्धि खमासमण, तारण नवियण,उद्यम लेखण, जिण कीनो ॥ इणहिन आधारें, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥ आलंबण महोटो,सूत्रको उंटो, रच न खोटो,हितकारी ॥ ध०॥३॥ शुद्ध सम्यक्तरुवर, अतिहढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण,हिंसा वारण,शिवसुख कारण,नवप्पारी ॥ ए बुद्धि वढावे, नर्म कढावे, पाप छुडावे, शुनचारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जे चिंता उच्चाटण, मोहणी दाटण, त्रिशल्यकाटण, कातरणी ॥ अरिकंद कुदाली, वधण पाली, सुरतरु माली, सुत जरणी ॥ नवोदधिके माई, जाफ कहाई, वेगो जाइ, नर नारी ॥ ध०॥ ५ ॥ सशय विपर्याय, अने अध्यवसाय, तिहुअणमांय, होय नही ॥ त्रिदोष रहितं, त्रिगुणसहितं, त्रिपदीरीतं, नेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी, शिववधू साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ ध० ॥ ६ ॥ या विराधन करकें,यहासें मरकें, उपज्या नरकें, दुःख पाया ॥ वलि गर्नमें लटक्या, चौगति नटक्या, जक्रमें अटक्या, नय नारी ॥ध०॥ ७ ॥ जिण हितकर जाणी, श्रीजिनवाणी, सो नवि प्राणी,सुख पाया ॥ समकित शुंध करणे, मिथ्या हरणे, नवजल तरणे, शिव पाया ॥ तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ध० ॥ ८ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार हे, अनुनवरसको सार ॥ नय प्रमाण विचारजो,पक्षपात परिहार ॥ ए ॥ शम दम उपशम नावशुं,जे साधे नर नार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा,प्रणमे वारं वार ॥ १० ॥ इति जिनवाणीस्तवनछंद सपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ चोवीश तीर्थंकरका लेखाकी चोवीशी प्रारंभ ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पच्चीश बोल सख्याकी गाथा ॥ श्री वीर जिणंद सासण धनी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमु निरंतर नित्य, जिनचोविशी वर्त्तमानो ॥ नाम १ बोध नव सख्या, २ द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पहिचानो ॥ विजय ६ पूर्वभवनाम ७, पदवी ८ तिहां ज्ञान ए जणावं ॥ सेव्या स्थानक सख्या १०,सर्ग गति ११ तिथि बताव ॥ च्यवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे ए १४, सुंपन १५सख्या १६विचार १७ ॥ जनमतिथि १८वेला भली १ए,उंगणीश बोल विचार ॥ १ ॥ विशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२ पिता २३ गति २४।२५ ॥ दिशा कुमारी २६ इद्र संख्या २७,गोत्र२८ वशकी रीती २ए ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लछन ३२ दाखु ॥ वर्ण ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उछेद आत्मांगुल ३६ भाखु ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहनो ३८ ए,लोकांतिक३ए दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिबिका नाम विचार ४३ ॥ २ ॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४ए तरु ५० दीक्षा समय,५१ लोच मुष्टि परमाणो ५२ ॥ सजम ज्ञान ५३ द्रव्यमोल ५४, थिति ५५ वलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काल ५७ पुर नाम, ५८ वली परथम दातारो ५ए ॥ दातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१ हुय, वसुधारा सख्या ६२ जाण ॥ विहार भूमि ६३ तपस्या ६४ परम, पंसठमो अभिग्रह परिमाण ६५ ॥ ३ ॥ उपसर्ग ६६ प्रमादको काल ६७, छद्मस्थको काल ६८ जे आणु ॥ गुणसित्तेरमे केवल, तिथि ६ए केवल पुर ७० वन वखाणु ७१ ॥ केवल तप ७२ वृक्ष नाम ७३ मान,७४ वेला ७५ तीरथ ७६ तीर्थविछेदो ७७॥

वर्जित दोष ७८ अतिशय ७९ वाणी, ८० प्रातिहार्य ८१ सुर सेव८२ जमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ ए,नक्तिवत नृप नाम ८५ ॥ सासणाधिष्ठ जक्ष ८६ जक्षणी, ८७ गणधर ८८ संख्याजिराम ॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० श्रावक, ९१ श्राविका ९२ केवल ज्ञानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व धारक ९६ पड्डिवानी ॥ वैक्रियवत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९ प्रकीर्ण सख्या १०० परिमाणो ॥ माहाव्रत १०१ सजम १०२ श्रावसग्ग, १०३ सर्व श्रायु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष श्रासण १०८ तप धार १०९ ॥ मोक्षवेला ११० परिवार तस, १११ युगांतकृत जूमि ११२ विचार ॥ ५ ॥ पर्यायांतकृत जूमि,११३ मुनि प्रकृति ११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र ११८ श्रावक व्रत गणो ११९ ॥ श्राचार १२० श्रारो उत्पत्ति, १२१ धर्म जेद १२२ सजम गुण १२३ श्रणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोथा श्रगथी ए, केइक ग्रंथ विचार ॥ श्रोता ते श्रवधारजो, जिम टले कर्म विकार ॥ वरते मगल चार ॥ ६ ॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमांथी प्रथम बोलें चोवीशे जिनना नाम कहे छे ॥

॥ जय जय श्रादि जिणंद, श्रजित सजव सुखकारी ॥ श्री श्रजिनंदन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चंदप्रज श्रीसुविधि, शीतल श्रेयांस दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, श्रनंत जिन धर्म रूपाला ॥ शांति कुंथु श्रर मल्ली नमु ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥,

॥ हवे समकित प्राप्त थया पछी चोविशे जिननी भवसंख्या कहे छे

॥ रिखभ जिणद भव तेरा, चद प्रभु सात लहीजें ॥ दुवादश शांति जिणद, मुनि सुव्रत नव लीजें ॥ रिष्टनेमि नव पार्श्व, नाथ दश भव अधिकारो ॥ सत्तावीस वर्द्धमान, महोटा भवतणो वि स्तारो ॥ शेष जिन त्रिहु त्रिहुं भणो ए, ग्रथमाहे अधिकार ॥ समकित पाया तिहांथकी, भव सख्या सुविचार ॥ ८ ॥२॥

॥ हवे चोविश तीर्थंकरना पुर्वभव द्वीपना नाम कहे छे ॥

॥ प्रथम चार वली सोलमासु, चरम जिनवर लग जाणो ॥ जंबुद्वीपके मांय, तीर्थंकर गोत्र बधाणो ॥ नवमासुं वारमा जाण, अर्ध पुष्करके मांही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खम लहाई ॥ तृतीय बोल इम द्वीपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा ज न हिय धारजो, अनुंभव दृष्टि विचार ॥ ए ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां जन्मक्षेत्रना नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासु वारमा सुधी, पूर्व विदेह क्षेत्र कहीजें ॥ विमल धर्मजिन भरत, धातकी खम महीजें ॥ जंबु पूर्व विदेह क्षेत्र, शांति कुंथु अर जाणु ॥ जंबु पश्चिम विदेह, मल्लि जिनराज बखाणु ॥ अनत ऐरवय धातकी ए, जंबु भरत मझार ॥ विशमासु छेला लगें, सईहो क्षेत्र सुमार ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पुर्वोक्त क्षेत्रमा चोवीश तीर्थंकरनी जन्म दिशा कहे छे ॥

॥रिखभ सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितांबु उत्तर मल्लि, सितोदा दक्षिण पाया ॥ विमल धर्म विशमाथी, छेला मेरु दक्षिण माई ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनतजिन कुक्षि उपाई ॥ शे ष दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दक्षिण माय ॥ वर करणी पर भावथी, गोत्र तीर्थंकर पाय ॥ ११ ॥ ५ ॥

वर्जित दोष ७८ अतिशय ७९ वाणी, ८० प्रातिहार्य ८१ सुर सेव८२ बमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ ए,जक्तिवत नृप नाम ८५ ॥ सासणाधिष्ठ जक्ष ८६ जक्षणी, ८७ गणधर ८८ संख्यानिराम ॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० श्रावक, ९१ श्राविका ९२ केवल ज्ञानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व धारक ९६ पड्गिनी ॥ वैक्रियवत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९ प्रकीर्ण सख्या १०० परिमाणो ॥ माहाव्रत १०१ सजम १०२ आवसग्ग, १०३ सर्व आयु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष आसण १०८ तप धार १०९ ॥ मोक्षवेला ११० परिवार तस, १११ युगांतकृत जूमि ११२ विचार ॥ ५ ॥ पर्यायांतकृत जूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र११८ श्रावक व्रत गणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१ धर्म नेद १२२ सजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोया अगथी ए, केइक ग्रथ विचार ॥ श्रोता ते अवधारजो, जिम टले कर्म विकार ॥ वरते मगल चार ॥ ६ ॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमाथी प्रथम बोलें चोवीशे जिनना नाम कहे ठे ॥

॥ जय जय आदि जिणद, अजित सजव सुखकारी ॥ श्री अजिनवन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चदप्रज श्रीसुविधि, शीतल श्रेयास दयाला ॥ वासुपुज्य धन विमल, अनत जिन धर्म रूपाला ॥ शाति कुंथु अर मल्ली नमु ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ अच्चु ११ प्राण १२ सहस्रार १३,प्राणत १४ वलि विजय १५ वि
माणो ॥ शांति १६ कुंथु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध,१ए मल्ली जयंत
प्रमाणो ॥ अपराजित२०प्राणत वली २१ए,अपराजित२२रिठ नेम
॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुरें,२४ उत्कृष्टस्थिति सुख खेम ॥१५॥११

हवे चोवीशे तीर्थंकरनी च्यवन कल्याणतिथि कहे छे

॥आषाढमास वदि चोथ१, वैशाख शुद्ध तेरश जाणो २ ॥ फा
गुण आठम शुक्ल,३ वैशाख शुद्ध चोथ प्रमाणो४॥ श्रावण उजली
बीज,५ माघ वदि छठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी नादव कृष्ण,७ कृष्णचै
त्र पंचमी लीजें ८ ॥ वदि फागुन नौमी तिथि ए ए, वदि छठ वै
शाख१०तिम ज्येष्ठ११॥ वासुपूज्य च्यवण कल्याणसों,ज्येष्ठ शुदि
नवमी विशिष्ट ॥१२॥१६॥ उजली बारस वैशाख,१३ श्रावण वदि
सातम १४ आई ॥ वैशाख शुदि १५ नाद्रवकृष्ण,१६ दोईमें तिथि
सातम गाई ॥ नौमी श्रावण कृष्ण,१७ फागुण शुदि बीज उजाली
१८॥ फागण श्रावण १ए शुदि,चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चउ
दश उज्जल आसोज नी २१ए,कात्तिक वदि बारस २२जाण ॥ चौथ
चैत्र वदि२३अशाढशुदि,छठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥१७॥१२॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन नक्षत्रना नाम कहे छे

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २,मृगशीर ३ पुनर्वसु ४ आ
यो ॥ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा, ७ अनुराधा ८ मूल ए बतायो॥
पूर्वाषाढा १० श्रवण ११, शतभिषा १२ नाद्रपद उत्तरा १३ ॥
अनत रेवती १४ पुष्य, १५ नरणी १६ शांति जिनें कहि सुतरा ॥
कृत्तिका १७ रेवती १८ अश्विनी १ए ए,श्रवण २० अश्विनी २१
धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्ष
त्र विचार ॥ १८ ॥ १३ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामा पण चोवीश तीर्थंकरना जन्म संबंधि विजयनां नाम कहे छे

पुखलावती वछा रमणिजा, मगलावती बिचारो ॥ पंचमाशुं आठमा सुधि,चार एहि नाम उच्चारो ॥ वली चारे एही रीत, नव मासु बारमा धारो ॥ माहापुरी रिठा नहिल,पुन्डरिक गणि खगपुरी सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चपापुरि ए, कोसबी राजगृही जाण ॥ अयोध्या अहिछत्ता चर्मे जिन,विजयपुरी नाम प्रमाण ॥१२॥६॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोना पूर्व नवना नाम कहे छे.

॥वज्रनाभ १ विमलवाहन,२ विपुलबल ३ माहाबल ४नामें॥ अतिबल ५ अपराजित, ६ नदि ७ पदम ८ गुणधामो ॥ महापद्म ए पद्म, १० नलिणी गुल्म ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३ पद्मरथ, १४ दढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिंहावह १७ धनपति १८ वेश्रमणजी १ए ए, श्रीवर्मे २० सिद्धारथ २१ सुप्रतिष्ठ २२ ॥आनद २३ नदन २४ नामथी,करणी कीनी विशिष्ट ॥१३॥७॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी पूर्वेभव पदवी तथा पूर्वेभव ज्ञान तथा विशस्थानकर्मे कितरा सेवन कीनां ? ते कहे छे

॥पूरव भव जिनरिखभ,एकछत्र पदवी पाया॥ भणीया चउदे पूर्व, करणी करि मन वच काया ॥ शेष तेवीश मन्डलीक,भण्या सहु अग इग्यारा ॥ पेला छेला प्रभु वीश, थोल सेवन किया सारा ॥ बावीश जिन एक दोय त्रिहु ए, सेव्या स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थंकर बाधियु, धन धन रूपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ए ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थंकरनी सर्गगति कहे छे

॥सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ ग्रैवेयक,३ जयत ४ अभिनदन ५ सुमति ॥ नमो छठो६ ग्रैवेयक,७ विजय ८ आण ए अच्चुत१०उत्पत्ती॥

अ प्रसिद्धो १५ ॥ शांति १६ कुंथु १७ अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल ॥ २२ ॥ २० ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहे छे.

॥ इक्षागनूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४ कहीयें ॥ कंचनपुर ५ कोसंबी, ६ वणारसी ७ चंदपुरी ८ लहीयें ॥ काकन्दी ९ नद्दिलपुर १०, सिंहपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कंपिलपुर १३ अयोध्या १४, रत्नपुर १५ नाम वखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजगृहि २० गाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर २२ वाराणसी, २३ कुंमलपुर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानां नाम कहे छे ॥

॥ मरुदेवी १ विजया २ सेना, ३ सिद्धार्थी ४ नामें देवी ॥ मंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवी, ७ लखमणा ८ रामा ९ केवी ॥ नंदा १० विष्णु ११ जया, १२ श्यामा १३ सुजसा १४ जाणी ॥ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्रीनाम, १७ देवी माता १८ गुणखाणी॥ प्रभावती १९ पद्मावती २० ए, वप्रा २१ शिवा २२ सुखकार ॥ वामा २३ त्रिशला २४ जाणीयें, प्रभु जननी सुविचार ॥ २४ ॥ २२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पिताना नाम कहेछे

॥ नाभि १ जितशत्रु २ जितारि, ३ संवर ४ मेघ ५ श्रीधर ६ राया ॥ प्रतिष्ठ ७ महासेन ८ सुग्रीव ९, दृढरथ १० विष्णु ११ कहाया ॥ वासुपूज्य १२ कृतवर्म, १३ सिंहसेन १४ भानु कहीयें॥ १५ ॥ विश्वसेन १६ सुरराय १७ सुदर्शन १८ कुंभसु लहीयें १९॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न सख्या तथा स्वप्न संबंधि विचार केने पूछ्यो ? ते कहे छे

॥ सहु जिनवरनु च्यवन,थयुं आधीनिशि विरियां ॥ सहु दिनां चउदे स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चरियां ॥ निजपतिसु कह्यां स्वपन, नाभि कह्यो इइनी आगें ॥ स्वपन पाठकसुं तेवीस, नृप परसन विधि घागे ॥ दान मान देई जेजिया ए, आनद अग अपार ॥ पुण्य दशा परभावथी, सुखें रह्या गर्भमझार ॥१०॥१४॥१५॥१६॥१७॥

॥ चोवीश तीर्थंकरनी जन्म तिथि तथा जन्मवेळा कहे छे

॥ चैत्र वदि १ मद्दा शुद्द, २ दोईमें अष्टमी सारो ॥ मद्दा शुद्द चउदश ३ दूज, ४ मास पक्ष सोहि विचारो ॥ अष्टमी शु कल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ बारस धारो ॥ बारस उजाळी ज्येष्ट, ७ पोष वदि बारसज द्दारो ८ ॥ मगशिर ए माह्दा वदि १० पंचमी बारस ए, बारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्द त्रीज माद्दा,१३ वैशाख वदि तेरश१४ प्र माण ॥ २० ॥ त्रीज मद्दा शुद्द १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दर साई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुद्द दशमी १८ ठाई ॥ मृगशिर शुद्द इग्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी ठायो २० ॥ अ ष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्द पंचमी २२ जाणो ॥ पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रवदि तेरश मांय २४, अर्धरात ढळीया सहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना जन्मदेशना नाम कहे छे

॥ पहेलाथी पंचमा लगे, देश कोशल। १। २। ३। ४। ५। वत्स ६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ए, मलय १० वळीअ प्रसिद्ध ११ विमासी ॥ अगदेश १२ पाचाल १३, कोशल १४ धर्मजिन

खन्न कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्नमांय जिनराय, पा सा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत विचार,अजित जिन नाम पहि छानी ॥ प्रजुजी गर्नमें आविया ए,डुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धा न्यसन्नव थयो ते नणी, सन्नव नाम उदार ॥ २ए ॥ गर्नमांय जिण वार, इंड जयकार उच्चास्यो ॥ वपनो आनद ताम, नाम अनिनदन धास्यो ॥ सुमति वपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी नो ॥ जाणी गर्ने प्रन्नाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रनुजी तणु, थयुं प्रसिद्ध जगमाय ॥ ३० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां गर्ने प्रनावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चंड पिवण उमावे ॥ चंडलंबन चंडवर्ण, चंडप्रन्न नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स देर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ नूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए,नाम दियो हित धार ॥ इव्य नाव शीतल प्रनु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ कू रदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिहां खेलण ॥ जावतां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व सण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्यां सो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई॥ तन मति विमल थई मातनी ए,दियो विमल सुत नाम॥ मात देखी अनतमणिमालथी, अनत अनत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म श्वा गर्नपरनाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शाति करी पुर मांय, शांति प्रनु नामज दीधो ॥ अरि थया कंथुआ जेम, कुंथु प्रनु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता नावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रु न माठया सर्व, नमी जगमाहीं कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज,माता निज हाथे

सुमित्र१० विजय नरपति ११ कह्या ए,समुद्रविजय १२सुविख्यात ॥ अश्वसेन १३ सिद्धारथ जी,१४ ए चोविश जिन तात ॥ २५ ॥२३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानी गति कहे छे

॥ रिखभ जिनेश्वर तात, नागकुमारनी मांई ॥ ईशान कल्पनी मांय, दुजाथी आठमा तांई ॥ नवमाथी सोलमा जाण, गया कल्प सनत्कुमारो ॥ सतरमाथी तेवीसमा तणा, गया महेंद्र मझारो ॥ सिद्धारथ सर्गे बारमा ए, रिखभदत्त शिववास ॥ अजर अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य उल्लास ॥ २६ ॥ २४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानी गति कहे छे ॥

॥ प्रथमथी अष्टमा लगें, वरजिन नदा माई ॥ पहोती मुक्ति मझार, नवमाथी सोलमा ताइ ॥ पहोती सनत्कुमार, त्रिशला अच्यु सर्गमझारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनदजननी सुविचारो ॥ महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मझार ॥ २७ ॥ २५ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना जन्म कल्याणकमा दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीशे तीर्थंकरना गोत्र, अने वंश कहे छे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म,छपन्न कुमारी आई ॥ सहुना चोसठ इंद्र, मोछव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनि सुव्रत रिष्ट नेमि, गोत्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगभाण ॥२८॥ २६ ॥ २७ ॥२८॥२९॥

हवे चोवीश जिनना यथागुण विशेषनाम कहे छे

॥ प्रथम वृषभनुं स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रि

वन्न कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्जमांय जिनराय, पा सा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत विचार,अजित जिन नाम पदि ठानी ॥ प्रजुजी गर्जमें आविया ए,डुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धा न्यसन्नव थयो ते जणी, सन्नव नाम उदार ॥ २ए ॥ गर्जमांय जिण वार, इड् जयकार उच्चास्यो ॥ वपनो आनद ताम, नाम अजिनदन धास्यो ॥ सुमति वपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी नो ॥ जाणी गर्ज प्रजाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रजुजी तणु, थयुं प्रसिद्ध जगमांय ॥ ३० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां गर्ज प्रजावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चड् पिवण उमावे ॥ चड्लंबन चड्वर्ण, चंड्प्रज नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स देर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ जूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए,नाम दियो हित धार ॥ ड्व्य जाव शीतल प्रजु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ कु रदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिहां खेलण ॥ जावतां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व सण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्यां सो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए,दियो विमल सुत नाम ॥ मात देखी अनतमणिमालथी, अनत अनत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म श्ड़ा गर्जपरजाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर माय, शांति प्रजु नामज दीधो ॥ अरि थया कणुआ जेम, कुंथु प्रजु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता जावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रु न माहथा सर्व, नमी जगमाहीं कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ रुम सर्प चिंटी सेज,माता निज हाथे

सुमित्र २० विजय नरपति २१ कह्या ए,समुद्रविजय २२सुविख्यात ॥ अश्वसेन २३ सिद्धारथ जी,२४ ए चोविश जिन तात ॥ २५ ॥२३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानी गति कहे छे

॥ रिखभ जिनेश्वर तात, नागकुमारनी मांई ॥ ईशान कल्पनी मांय, दुजासू आठमा तांई ॥ नवमासु सोलमा जाण, गया कल्प सनत्कुमारो ॥ सतरमासुं तेवीसमा तणा, गया महेंद्र म झारो ॥ सिद्धारथ सर्गे बारमा ए, रिखभदत्त शिववास ॥ अजर अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य उल्लास ॥ २६ ॥ २४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानी गति कहे छे ॥

॥ प्रथमसुं अष्टमा लगें, वरजिन नवा माई ॥ पहोती मुक्ति म झार, नवमासु सोलमा ताइ ॥ पहोती सनत्कुमार, त्रिशला अचु सर्गमझारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनदजननी सुविचारो ॥ महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मझार ॥ २७ ॥ २५ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना जन्म कल्याणकमा दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीशे तीर्थंकरनां गोत्र, अने वंश कहे छे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म,छपन्न कुमारी आई ॥ सहुना चोसठ इंद्र, मोछव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनि सुव्रत रिष्ट नेमि, गोत्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगनाण ॥२८॥ २६ ॥ २७ ॥२८॥२९॥

हवे चोवीशे जिनना यथागुण विशेषनाम कहे छे

॥ प्रथम वृषभनु स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रि

खत्र कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्नमांय जिनराय, पा सा रमता राय राणी ॥ राणी जीत विचार,अजित जिन नाम पहि ठानी ॥ प्रज्जुजी गर्नमें आविया ए,डुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धा न्यसन्नव थयो ते नणी, सन्नव नाम उदार ॥ १ए ॥ गर्नमांय जिण वार, इड् जयकार उच्चाख्यो ॥ उपनो आनद ताम, नाम अन्निनदन धाख्यो ॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी नो ॥ जाणी गर्न प्रन्नाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रज्जुजी तणु, थयुं प्रसिद्ध जगमांय ॥ ३० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां गर्न प्रनावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चड् पिवण ठमावे ॥ चड्लछन चड्वर्ण, चड्प्रन्न नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स हेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ नूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए,नाम दियो हित धार ॥ ऽव्य नाव शीतल प्रज्जु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ क्रू रदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिहां खेलण ॥ जावतां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व सण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्या सो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई॥ तन मति विमल थई मातनी ए,दियो विमल सुत नाम॥ मात देखी अनतमणिमालथी, अनत अनंत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म इछा गर्नपरन्नाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर माय, शांति प्रज्जु नामल दीधो ॥ अरि थया कंथुआ जेम, कुंथु प्रज्जु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता नावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रु न माडघा सर्व, नमी जगमाहीं कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज,माता निज हाथें

हगाया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसादाणी,प्रसिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि थई ऋद्धि सपदा ए, तिण कारण वर्धमान ॥ इद्र दियो महावीर, जय जय जय जगन्नान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना चिन्ह तथा लछन कहे छे

॥ वृषभ १ गज २ हय३कपी४, न्नारंमर्पखी ५ चिन्ह सोहे॥ पद्म ६ साथीयो ७ चंद्र ८, मकर ९ श्रीवछ १० मन मोहे ॥ गेंमो ११ महिष १२ वाराह,१३ सिचाणो १४ वज्र १५ कहीजें॥ हरिण १६ बकरो १७ नदावर्त्त, १८ कलश १९ काछबो २० सुम हीजें ॥ नीलोत्पल २१ शख२२सर्प २३ए,सिंह २४ चिन्हथी उंल खाए ॥ एक सहस्र अष्ट लछन न्नलां,सह्रु जिनन्नु परिमाए ॥२५॥

हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे छे ॥

॥ चद्रप्रन्नजी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्र न्न वासुपूज्य, वेहश्रुति रक्त कहावे ॥ मल्लिनाथ श्रीपार्श्व, नीलव र्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत रिष्ठ श्याम, रंगें अधिक सुहाया ॥ शेष शोल जिनवर सह्रु ए,कचन वर्ण शरीर ॥ अनतबल सह्रु जिन तणु, धन धन साहस धीर ॥ २६ ॥३३॥ ३४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी अवगाहना उछेदाग़ुल तथा आत्मागुलें कहे छे

॥धनुष पांचसे १ उछेदागुल,साढी चारसो २ जाणो ॥ चारसें ३ साढीतिनसें,४ तिनसें ५ अढिसें ६वखानो ॥ दोयसें ७ देढसें ८ सोय ए, नेव एशी कह्या ईसो ॥ सित्तेर साठ पचास, पेंतालीस चालीस पेंतीसो ॥ तिस पच्चीस विस पंनरा दश ए,हस्त नव सा त विचार ॥ एकसो वीश आत्मागुलें, जाणो जग किरतार ॥२७॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने आहार, तथा विवाह, तथा लोकांतिके देवोनी स्तुति तथा दान दीधुं, ते कहे छे.

॥ प्रथम कल्पतरु आहार, शेष विशिष्टज लीनो ॥ मल्ली रिष्ट नेमि वर्जि, शेष सहु व्याहज कीनो ॥ सहुने लोकातिक देव, कह्यु प्रभु नविजन तारो ॥ जाण्यो सजम समय,प्रभु दियो दान उदारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए,तिनसें अठ्यासी कोड ॥ एंशी लाख उपर वली, एक सवछर जोड ॥३८॥३७॥३८॥ ३९॥४०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी कुमारस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव विश लख १ अढार २,पनरा ३ साडीबारा ४ दशो ५ ॥ साडिसात ६ पंच ७अढी ८, पूरव सहस्र पच्चासो ९ ॥ पूर्वसहस्र पच्चीस १०, वर्ष एकविश ११ लक्ख जाणो ॥ अठारे १२ पनरा १३ साडी सात १४, अढीलक्ख १५ धर्म वखाणो ॥ सहस पचीश १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साडि सात २० हजार ॥ अढाई सहस्र २१ तीनसें २२ त्रीश २३ त्रीश २४, वरस रहिया स्वामि कुमार ॥ ३९ ॥ ४१ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी राजस्थिति कहे छे

॥पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साडी छत्रीशो ४॥ गुणतिस५ साडी एकवीश ६ चउदे ७,खट ८ एक ९ एक १०जगीशो ॥ पूरव पचास हजार ११ घरस, बयालीस लाखो १२ ॥ वासुपूज्य वर्जित त्रिश १३,वीश१४ पन्न१५पंच१६ दाखो ॥ पचास सहस्र १७ साडिसहेंतालीस १८, बश्यालीस ९ १९, मुनिसुव्रत पंन्रा हजार २० ॥ नमी पंच २१ शेष तिहु मेली २२ २३ २४, राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी शिबिकानां नाम कहे छे ॥

॥ सुदंसणा १ सुप्रजा,२ सिद्धार्थो ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें ॥ अजयंकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८ ॥ सुरप्रजा ए शुक्रप्रजा १०, विमल प्रजा ११ नाम वखानी ॥ पृथि विनाथा १२ देवदिन्ना १३,सागरदत्ता १४ नागदत्ता १५ जाणी ॥ सर्वार्थो १६ विजया १७ विजयंतीका ए १८, जयंती १ए अपरा जिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाला २३ सु चञ्प्रजा २४ शिबिका सार ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी दीक्षातिथिना ताम कहे छे ॥

॥ चैत्र वदि आठम १ नोम, महा २ पूनम मार्गशिरकी ३ ॥ महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध, वैशाख नोमी ५ जिनवरकी ॥ कार्त्तिक वदि ६ जेठ शुदि ७ पोष वदि ८,त्रिहू तेरश तिथि जाणो॥ मार्गशिर वदि तिथि छठ,माघ ए वदि वारस १० गणो ॥ फागण वदि तेरश तिथि ए ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ माघ शुक्ल तिथि चतुरथी १३, विमल जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४२ ॥ वैशाख कृष्ण चउदश १४, माघ शुद्ध तेरश धारो १५ ॥ ज्येष्ठ वदि चउदश १६,वैशाख शुद्ध पंचमी १७ सारो ॥ इग्यारस १८ शुद्ध माघ, १ए मल्लिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुदि द्वादशी, २० आषाढ वदि नोमी २१ कहाई ॥ श्रावणशुद्ध छठ २२ नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण ॥ मार्गशिर वदि दशमी २४ इम, जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वय तथा दीक्षा तप कहे छे ॥

॥ वासुपूज्य मल्लि नमी, नेमी पारस वर्धमानो ॥ प्रथमवय ली दीक्षा, शेष जिन अत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोथ, अ

छम तप मल्लि जिन पासो ॥ सुमति जिन कर आहार, दीक्षा लिनी सुवल्हासो ॥ शेष वीश जिनेश्वरू ए, छठ तप सजम धार ॥ दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार ॥ ४४॥४५॥४६॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनो परिवार कहे छे ॥

॥ चार सहस्र नर साथ, रिखभ प्रभु दीक्षा धारी ॥ छशें श्री वासुपूज्य, मल्लि तिनशें परिवारी ॥ तिनशें पारस नाथ, चरम जिन एकलविहारी ॥ शेष उंगणीश जिनराज, एक एक सहस्र व धारी ॥ इणविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप जप करी जिण शिव वरी, प्रणमुं वारं वार ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना दीक्षापुर दीक्षावन कहे छे ॥

॥ रिखभ अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पुरमें धारी ॥ आदि जिनद सिद्धार्थ, वनमें भये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें, सहस्राम्र वन विचारी ॥ विहार गृह दोय सहस्राम्रवप्र, शातिथी मल्लि उच्चारी ॥ ए चिहू सहसावन कह्यां ए, नील गुहान सहसावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खम्डमें, दीक्षावन पहिचान ॥४८॥

॥ हवे चोवीश जिनना दीक्षातरु, तथा दीक्षावेला. दीक्षा लेती वखत कया तीर्थंकरें केटली मुष्टिनो लोच कर्यो ते, तथा तेमनु सयमज्ञान, प्रुष्पमोल, प्रुष्पस्थिति कहे छे ॥

॥ सर्व अशोक तरुतलें, संयम समे ज्ञानज चारो ॥ रिखभ जिनद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उच्चारो ॥ सुमति श्रेयांस नेमी पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पश्चिमान्ह समे, दीक्षा लीनी उजमालो ॥ प्रथमसु त्रेविशमा लगें ए, देव प्रुष्य सदा जाण ॥ वर्ष जाजेरो वीरने, लेखामें परिमाण ॥४७॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरें शेनो दिव्य आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखन्न जिनदे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जिनदने खीर तणो, नोजनवर लीयो ॥ रिखन्न जिनदनो पारणो,आयो वारे मासी ॥ शेष जिनदनो पारणो, आयो डुजे दिन विमासी ॥ धन धन दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपशम सागरू,वदू में निश दीश ॥ प्रणमु मेंo ॥ ४८॥५६॥५४॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणानां नगर कहे बे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावछि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थर्ले ६ पाम्हली ७, पद्म खम्म ८ श्वेतपुर ए कीनो ॥ रिष्ट १०लिधछ ११ महापुर, १२ धनक १३वर्धमान पुरमांइ १४ ॥ सोमणस१५ग्राममदिर १६,चक्रराज१७पुरगाई१८ ॥ मिथिला१एराजगृहि २०वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणा पुर धाम ॥४ए॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे बे

॥ सिद्धास १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंद्रदत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ए पुनर्वसु १० नद ११, सुनद १२ जय १३ जसधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६,व्याघ्रसिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १ए ए,ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरदिन्न २२ धन २३ बहुल २४ कह्या,प्रथम दान दातार॥५०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा पचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे बे ॥

॥ पहेलाछ आठमा तणा दातार, तिणनव शिव पाई ॥ नव

मासुं ठेला लगें, मुक्ति त्रीजा भव मांइ ॥ पंच दिव्य सहुने जाण, साडी बारा कोडी वसुधारो ॥ रिखभ ठेला जिन तीन, आर्जे अ नार्ज विहारो ॥ शेष वीश जिन राजजी ए, आरज देश मकार ॥ विचख्या दीनदयाल जी, करवा पर उपगार ॥ ५१॥ ६० थी ६३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना, उत्कृष्ट तप, तथा अभिग्रह, उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनद शासन उत्कृष्ट, तप बारें मासी ॥ बिजासुं त्रे विशमा लगें, तप अठमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व, अभिग्रह इत्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सहुने परि हारो ॥ प्रमाद काल श्रीरिखभने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अं तर मुहूर्त्त श्रीवीरने, शेप सहुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनो ठद्मस्थकाल कहे छे ॥

॥ सहस्र वर्ष १ बारा २ चउदा, ३ अढारा ४ वीश विवेको ५ ॥ मास ६ ठ ७ नव ८ चार ९ तीन, १० दोईने ११ एक १२ एको १३ ॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मल्ली जिनने एक १९ पहेरो ॥ इग्यारा मास २० नव जाण, २१ चोपन दिन नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि च्याशी पारस प्रभु २३ ए, साडीबारा वर स विचार ॥ उपर पंदरा दिन चरम २४, ठद्मस्थकाल सुमार ॥५३॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे छे

॥ फागण वदि १ पोष शुद्, तिथि इग्यारस २ आइ ॥ पंचमी कार्त्तिक कृष्ण ३, पोष शुदि चौदश ४ गाई ॥ चैत्र शुद् इग्यारस, ५ चैत्रकी पूनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि ठठ सातम ७।८, कार्त्ति क शुद् तीज सुगहियें ९ ॥ पोष वदी चउदश १० माघ अमावास ११ ए, बिज माघ शुकल वखाण १२ ॥ शुद् पोष ठठ १३ श्रीविम

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरें शेनो दिव्य आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखन्न जिनदे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जिनदने खीर तणो, नोजनवर लीयो ॥ रिखन्न जिनदनो पारणो,आयो वारे मासी ॥ शेष जिनदनो पारणो, आयो डुजे दिन विमासी ॥ धन धन दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपशम सागरू,वंदू में निश दीश ॥ प्रणमुं में० ॥ ४८॥५६॥५७॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणाना नगर कहे छे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावछि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पाम्ली ७, पद्म खंम ८ श्वेतपुर ए कीनो ॥ रिष्ठ १०सिधञ ११ महापुर, १२ धनक १३वर्धमान पुरमांइ १४ ॥ सोमणस१५मामम दिर १६,चक्रराज१७पुरठाई१८ ॥ मिथिला१एराजगृहि २०वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणा पुर धाम ॥४ए॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे छे

॥ सिक्कांस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंद्रदत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ए पुनर्वसु १० नंद ११, सुनंद १२ जय १३ जसधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६,व्याघ्रसिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १ए ए,ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरदिन्न २२ धन २३ बहुल २४ कह्या,प्रथम दान दातार॥५०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा पंचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे छे ॥

॥ पहेलासु आठमा तणा दातार, तिणन्नव शिव पाई ॥ नव

कहावे ॥ पाफल १२ जबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि १६ निलककी गया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चपक २०, वकुल २१ वेडस तलें आया २२ ॥ धातकी २३ शाली २४ ऊंच पणे ए, देहथी बार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने, एक विश धनुष्य प्रमाण ॥ ५८ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी वेला, तथा प्रथम समवसरणमे तीर्थ स्थापन तथा जिनातरें तीर्थविछेद कहे छे

॥ रिखब जिनवर्से पार्श्व लगें, केवल पूर्वान्हें ॥ महावीर गुण धीर, केवलवेला पश्चिमान्हें ॥ प्रथम समोसरण मांय, तीरथ थाप्यां तेवीशो ॥ छेला दूजा मांय, तीर्थ थाप्या जगदीशो ॥ नव मासुं सोलमा विचें ए, सात अतरा मांय ॥ तीर्थविछेद थयो तिहा, नांख्यो श्रीजिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने दोष वर्जितपणु तथा अतिशय तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे छे

॥ अढरा दोष वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोत्रीश अतिशयधार, पेंतिस वाणी सुविख्याता ॥ सहुने प्रातिहार्य आठ, ठाठ माहा पुण्यसें पाया ॥ एक कोटी सहुनें देव, सेव करे तनमन उलसाया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनत गुणातम देव ॥ मन वच काय करी सदा, द्यो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ थी ८२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम गणधर कहे छे ॥

॥ पुण्डरिक १ सिहसेन २, चारु ३ वज्रनाभ ४ कहीजें ॥ वरम ५ प्रद्योतन ६ विदर्भ ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजें ॥ नद १० कछप ११ सुभूम १२, मदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवता ॥ चक्रायुध १६ साब १७ कुंभ १८, अनिरुद्ध १९ मल्लि २० म

लजिन, जाणो सुकेवल कल्याण ॥ ५४ ॥ वैशाख वदि चवदशी १४, पौष शुद्ध पूनम १५ सारो ॥ पौष १६ चैत्र शुद्ध नोमी १७, तेज अनुकमैं विचारो १८ ॥ कार्त्तिक शुद्ध द्वादशी १९, माघ शुद्ध ग्यारस धारो २० ॥ फागण द्वादशी कृष्ण २१, माघ शुद्ध इग्यारस जहारो ॥ अमावास आसोजनी ए २२, चैत्र चोथ वदि २३ गण ॥ वीर वैशाख शुद्ध दशमी २४, जाणो केवल कल्याण ॥५५॥६९॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना केवलज्ञानना नगर कहे छे ॥

॥ पुरिमताल १ अयोध्या २ सावथी ३, दोय वलि अयोध्या स्थानो ४।५ ॥ कोसंबी ६ वाणारसी, ७ चंद्रपुरी ८ कांतिपुर ९ मानो ॥ नहिल १० सिंहपुर ११ चंपा, १२ कपिलपुर १३ अयोध्या गणो १४ ॥ रतनपुर१५शाति १६ कुंथु१७,अरह १८ गजपुर पहिचानो ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० मिथिला ए२१,रेवतकाचल२२ जाण ॥ वाणारसी २३ जंभिक ग्राममें २४,पाया केवल नाण ॥५६॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां केवलज्ञान पामवाना स्थान तथा केटले तपें केवलज्ञान उत्पन्न थयु ? ते कहे छे ॥

॥ आदि जिनद शकट मुख, उजास्तु इग्यारमा ताई ॥ सहस्राम्र विहारगृह जाण, विमलजीसें पार्श्व लहाइ ॥ आश्रम पद कहुं स्थान, सलीला रजु वालुका आइ ॥ केवल वन विचार, रिखन तप अष्टम मांइ ॥ वासुपूज्य मल्ली नेमजी ए,पार्श्व चोथ तप मांय॥ शेष उगणीश छठ तपविषे,ज्ञान केवल प्रगटाय ॥५७॥ ७१ ॥७२॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरोने जे वृक्षनी नीचें केवलज्ञान उपनुं ते वृक्षना नाम, तथा आशोक वृक्षोनी उचाइ कहे छे ॥

॥ वड १ सप्तवण २ शाली, ३ राजादनी ४ प्रियंगु सुहावे ५ ॥ छत्ताह्ना ६ सरस ७ नाग ८, मल्लिका ९ ।बल्व १० विंडुक ११

में ए, सासणाधिष्ठ यक्ष जाण ॥ प्रभु समरण करे जावश्चं, हरे सकट दित आण ॥ ६४ ॥ ७६ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी अधिष्ठायिका यक्षणी कहे छे

॥ चक्केसरी १ अजितबला २, डुरितारि ३ कालिका देवी ४ ॥ माहाकाली ५ श्यामा ६ शांति, ७ नृकुटी ८ सुतारिका ए लेवी ॥ अशोका १० मानवी ११ चम्मा १२, विदिता १३ अंकुशा १४ जक्षणी ॥ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ वला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १ए प्रभु यक्षणी ॥ नरदत्ता २० गधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ नाम ॥ सासणाधिष्ठ ए जक्षणी, सारे वछित काम ॥ ६५ ॥

॥ हवे चोवीशतीर्थंकरना गणधरनी संख्या कहे छे ॥

॥ चोरासी १ पचाण्यू २ जाण, एकसो दोय ३ सुज्ञानी ॥ एकसो ईग्यारा ४ सोय, ५ एकसो सात ६ पिछानी ॥ पचाणुं ७ त्राणु ८ गिणत, अठ्याशी ए बैयासी १० सामी ॥ सचोतेर ११ गुण सित्तेर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सो ते नमु शिर नामी ॥ त्रेंताळीस १५ छत्तीस १६ पेंतीस १७ वली ए, तेंतिस १८ अठाविश १ए अढार २० ॥ सतरे २१ इग्यारे २२ दृश २३ इग्यारे २४ ते, प्रणमुं प्रभु गुणधार ॥ ६६ ॥ ७८ ॥

॥ हवे तीर्थंकरना साधुनी सख्या कहे छे

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तिनलक्ष ४ विचारो ॥ तिनलख पर सहस्र वीश ५, तीनलक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष तिन ७ अढी ८ दोय ए एक १०, चौरासी सहस्र ११ अणगारो ॥ वहोंत्तर १२ अडसठ १३ छासठ १४, चोसठ १५ बासठ १६ रिख धारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १ए वली ए, त्रीश २०

हता ॥ छुन्न २१ वरदत्त २२ आर्यदिन्न २३ ए, इन्द्रनूति २४ गण धार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमुं नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी प्रथम साधवी कहे छे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा, ३ अजिता ४ काश्यपी ५ जाणो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना, ८ वारुणी ए सुजसा १० वखाणो ॥ वारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ संती ॥ सूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता, १८ वंडु बधुमती १९, पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जक्षदिन्ना २२ पुष्फचुला २३ ए, चदन वाला २४ नाम ॥ ए चोविश वडि समणीने, नित नित होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ८४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना नक्तिवत राजा कहे छे ॥

॥ नरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवर्य नृप ४ सारो ॥ शतवीर्य ५ अजितसेन, ६ दानवीर्य ७ मघवा ८ धारो ॥ बुद्धिवीर्य ए सिमधर १०, त्रिपृष्ट ११ द्विपृष्ठ १२ नृप जाणो ॥ स्वयंनु १३ पुरुषोत्तम नाम १४, पुरुषसिंह १५ कोणाल १६ वखाणो ॥ कुबेर १७ सून्नूमजी १८ जित १९ विजय २० ए, हरिषेण २१ कृष्ण २२ उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, नक्तिवता नृप धार ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना शासनना यक्ष कहे छे ॥

॥ गोमुख १ महायक्ष, २ त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहियें ॥ तुंबुरु ५ कुसुम ६ मातंग ७, विजय ८ जित ए ब्रह्मा १० लहीयें ॥ जक्षट ११ कुमार १२ षण्मुख, १३ पाताल १४ किंनर १५ गरुड १६ धारो ॥ गधर्व १७ यक्षट १८ कुबेर, १९ वरुण यक्ष २० नृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातंग २४ ना

लीश, छतीस चोविस चउदे विमासी ॥ तेरे त्राणुं इग्यासी व होत्तेर ए,सित्तेर पचास अडतालीश ॥ छत्रीस गुणचालीस अगरा, सहस्र, श्राविका कहि जगदीश ॥ ७० ॥ए२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने केवलीनो परिवार कहे छे

॥ सहस्र वीस १ वावीस,२पंदरा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ वारे ६ इग्यारे ७ दश,८ सहस्र साडीसात ए नलेरा ॥ सात १०साडी छ ११ खट १२,साडीपंच १३ पच १४ साडीचारो १५ ॥ त्रेतालीशें १६ बत्तिशें १७, अठाविशशें १८ वावीसशें १ए धारो ॥ अगारासें २० सोलासें २१ पंदरासें ए २२, पारस एक हजार २३ ॥ सातशें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ७१ ॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरना मन पर्यव ज्ञानीनी संख्या कहे छे

॥ पुनि तेरा १ हजार वार २ सहस्र, पर पाचशें पचासो ॥ वारा ३ सहस्र पर मेढसो, इग्यारा ४ सहस्र साडी छशें विमासो ॥ दश ५ सहस्र साडी चारशें, सहस्र दश ६ तिनशें उपर ॥ एकाणुसें ७ पचास, एसीसें ८ शत पंचोत्तर ए ॥ पिचत्तर १० साठ ११ पेंसठ १२ वली ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचास १४ पेंतालीस १५ सेंकडा, मुनि मन परजव नाण ॥ ७२ ॥ शांति जिनद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसें चालीस १७ उपर ॥ पचीसशें एकावन, १८ साडीसत्तरशें १ए मुनिवर ॥ पंदरासें २० साडीवारासें २१, नेमि प्रभु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रभुके जाण, साडी सातशें अणगारो २३ ॥ वर्धमानजीके पाचशें २४ ए,अढाई दीप मझार ॥ जाणे सहु मन वारता, प्रणमू ते अणगार ॥ ७३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना अवधिज्ञानी साधु कहे छे

॥ सेंकडा नेउ १ चोराणु२,छन्नु ३ अठाणु ४ जाणी ॥ सहस्र

वीश २१ अगार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्र सब, वंदूं प्रजु अणगार ॥ ६७ ॥ ८९ ॥

हवे तीर्थंकरनी साधवीनी संख्या कहे छे ॥

॥ तिन १ लक्ष तिन २ तिन ३ खट ४ पाच ५, चउ ६ चउ ७ तिन ८ एक ९ एक १० एको ११ ॥ इहांसु ग्यारमा लगें, सहस्र अनुक्रमें विवेको ॥ त्रीश २ छत्रीश ३ त्रीश ४ त्रीश ५, वीश ६ त्रीश ७ अशी ८ वीशो ॥ ए खट १० तिन ११ सहस्र एक लाख १२, एकलख १३ आठसें श्रमणीसो ॥ बासठ १४ बासठ सहस्रपरचारसें ए १५, इगसठ १६ सठ १७ छठसें धार ॥ साठ १८ पचावन १९ पचास, २० इगतालीश २१ चालीस २२ कही, अडतिस २३ छत्तीस २४ धार ॥ प्रजु श्रमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ९०

हवे चोवीश तीर्थंकरना श्रावकोनी संख्या कहे छे

॥ आदिनाथ तिन लाख, इहांसु पंदरमा ताई ॥ श्रावक दोय दोय लाख, (१६ मासु २४ मा लगें एक लाख छे) उपर एक एक लाख कहाई ॥ सहस्र पञ्चाश अठाणु, त्राणु अठयाशी इक्याशी ॥ छिहतर सतावन पचास, गुनतिश नेव्याशी छगण्यासी ॥ पन्नर आठ छ चार नेउ ए, नेव्याशी चोरासी धार ॥ त्र्यासी बहोत्तर सित्तर गुणसितरा, चोसठ गुणसठ सार ॥ समजो उपर हजार ॥ ६९ ॥ ९१

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी श्राविकानो परिवार कहे छे ॥

॥ लक्ष पंच पंच छ पंच, पंच पंच उपरंत चारो ॥ (सोल मासु २४ मा ताई त्रण लाख उपरात हजार छे) सोलमाई तिन तिन लक्ष, उपरंत सख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस छत्तिस सत्तावीस, सोला पच त्राणु नेव्याशी ॥ एकोतेर अगवन अडता

हवे चोवीश तीर्थंकरना वादी मुनिनी संख्या कहे छे ॥

॥ बारा सहस्र साढीछसें, चार सत बारा हजारो ॥ बारा इग्या रा सहस्र दश, उपर शत चारो ॥ छनु शत चोराशी,छहोंत्तर साठ अठावन ॥ पचास सेंतालीश छत्तीश, बतिश अठविश चोवीश न न ॥ विश सोला चउदा बारे दश ए, आठसें छसें सत चार ॥ शें कडा सख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ७८ ॥९८॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रत्येक बुधमुनि, तथा प्रकीर्ण, तथा माहाव्रत,तथा चारित्र, तथा पडिक्कमण कहे छे

॥ साधुसख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण विचारो ॥ आदि अंत पच जाम, शेष माहाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पच,चारित्र करे अगीकारो ॥ दूजो त्रीजो चारित्रसो, मध्यजिनने परिहारो ॥ प्रथम चरम जिनसासणें ए,पडिकमणु उनयकाल ॥ शेष बावीश प्रायश्चित समे, करे आवश्यक उजमाल ॥ ७९ ॥ ९९ थी १०३

हवे चोवीश तीर्थंकरनु सर्वायु कहे छे

॥ पूर्वचोराशी १ लाख,बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालि श ५ तिश ६ विश ७ दश,८दोय९एक१०पूर्व विमासो ॥ वर्ष चौ राशी ११ लाख, बहोंत्तर १२ साठ १३ वलि त्रीशो १४ ॥ दश१५ एक १६ लक्ष कुछु, पचाणु १७ सहस्र गहीसो ॥ चोराशी १८ पचावन १९ तिश २० वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥ सो २३ वली बहोत्तर २४ वर्षनु, प्रभु आउखु सुविचार ॥ ८० ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनी निर्वाण तिथि कहे छे

॥ माघ वदि तेरश १ चैत्र,उन्ने शुद्ध २ पंचमी ३ आई ॥ शुद्ध अ ष्टमी वैशाख ४,शुक्ल चैत्र नोमी ५ कहाई ॥ ईग्यारस मार्गशिर्षवदि, ६ फागण वदि सातम ७ गई ॥ नाद्रवा वदि सातम, ८ नोम

इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेंकडा चोराशीए वोहोंतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अडतालीसो १३ ॥ बेतालीश १४ छत्तीस १५ तीस १६, वली पच्चीश १७ छवीशो १८ ॥ बावीस १९ अगारा २० पोडश ए २१, पन्नरा २२ दश २३ सत सात २४ ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वढू छति परजात ॥ ७४ ॥ ९५ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वधरोनी सख्या कहे छे.

॥ छेंतालीसशें पचास १, सेंतिससें वीश २ विचारो ॥ इक विशशें पचास ३, पंदरेसें ४ चोविशशें ५ धारो ॥ तेविशशें ६ विशशें परत्रीश ७, चदा प्रभु दोय हजारो ८ ॥ सेंकडा पन्नरा ए चउदा १०, तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३ ॥ दश १४ नव १५ आठ १६ छशें सित्तर १७ ए, छशें दश १८ छशें अडसठ १९ ॥ पाचशें २० साढी चार २१ चारशें, २२ साढी तिनशें २३ तिनशें विशिष्ट २४ ॥ पूरव धारक श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ ९६ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना वैक्रिय लब्धिवंत मुनि कहे छे.

॥ छशें वीश सहस्र, चारशें वीश हजारो ॥ उगणीश सहस्र श त आठ, उगणीश सहस्र वैक्रिय धारो ॥ अगारा सहस्र सत चार, सोला सहस्र एक शत आठो ॥ पंदरा सहस्र शत तीन, सहस्र चवदा तेरे पाठो ॥ बारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात जाण ॥ खट सहस्र एकावनशें, वैक्रियधारी प्रमाण ॥ ७६ त्रहोंतरशें गुणतिससें, सहस्र दो पच विचारो ॥ पंदराशें इग्यारासें जाण, सातशें वीर प्रभु धारो ॥ महा तपस्या परभाव, वैक्रिय लब्धि जिण पाइ ॥ गोपवी राखी तेह लोकने खबर न काइ ॥ इम मुनि चोवीश जिन तणा ए, सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमु मन तन कामसुं, नित्यप्रत्यें वारं वार ॥ ७७ ॥ ९७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे

॥ रिखभ जिणंद रिष्ट नेमि,चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पल्यंक आसण संथारो, शेष काउसगमें करंदा ॥ त्रीजा छठा नवमा वारमा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगन्नाण ॥ ७५ ॥ १०७ ॥ ११०॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र,पद्म प्रभु तिनशें आठे ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठे ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु सार्थे अणसण धार ॥ प्रणमु ते वारं वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायांतकृत भूमि कहे छे ॥

॥रिखभ जिनंद असंख्यात,पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व,चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनंद संख्यात,युगांतर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि,अंतरमुहूरत लगें लहीयें॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए,वर्द्धमान वर्ष चार॥ शेष एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥७७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनामुनियोनी केवी प्रकृति,तथा वस्त्र रंग,तेमज जन्म नक्षत्र,दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र तथा केटलाश्रावक व्रत,पंचाचार,ते सर्व कहे छे

॥ आदिजिणंद मुनिराज,प्रकृति रूजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

जाड्वा शुद्द ए मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज श्रा वण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्द चउदश १२ बारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥ ७१ ॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ शुद्द पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख वदि पडिवा १७ ठानी ॥ मागसिर फागुण शुद्द, दशमी १८ बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु ग्रहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्द अष्टमी ए, नेमी पार्श्व २२।२३ जिन जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४, पाया पद निर्वाण ॥७२॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे

॥ अनिजित १ मृगशिर २ आर्दरा ३, पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्ठा ११ उत्तराजाड्, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ जरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ जरणी १९ ॥ खाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु खसार ॥ प्रणमु वार वार ॥ ७३ ॥ १०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे

॥ रिखव अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चंपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अ णसण लीना ॥ ठ दिन रिखव जिणंद, वीर छठ्म तप चीना ॥ शेष जिनंद एकमासनो ए, गयो अणसण सार ॥ होय अजोगी मुक्ति गया, प्रणमू वार वार ॥ जय जय परम दातार ॥७४॥१०७॥१०८॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे

॥ रिखज जिणद रिष्ट नेमि,चोविशमा वीर जिनदा ॥ पल्यंक आसण सथारो, शेप काउसगर्मे करंदा ॥ त्रीजा छठा नवमा वारमा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रज्ञु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेप आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगज्ञाण ॥ ७५ ॥ १०७ ॥ ११०॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र,पञ्च प्रज्ञु तिनशें आठे ॥ पांचशें सुपारस सग, वासुपूज्य छशें पाठे ॥ विमलसगें खट सहस्र, अनतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रज्ञु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रज्ञु साथे अणसण धार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी युगांतकृत जूमि तथा पर्यायांतकृत जूमि कहे छे ॥

॥रिखज जिनद असख्यात,पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व,चरम जिन तीन बताया ॥ शेप जिनद सख्यात,युगांतर जूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि,अतरमुहूरत लगें लहीयें॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहू ए,वर्द्धमान वर्ष चार॥ शेप एक दिनातरें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वार वार ॥७७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनामुनियोनी केवी प्रकृति,तथा वस्त्र रग,तेमज जन्म नक्षत्र,दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र तथा केटलाश्रावक व्रत,पचाचार,ते सर्व कहे छे

॥ आदिजिणद मुनिराज,प्रकृति रक्षु जड जाणो ॥ चरम प्रज्ञुका

जाद्वा शुद्ध ए मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज भा वण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा,वासी ति थि निर्वाण ॥ ८१ ॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख वदि पडिवा १७ वानी ॥ मागसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु गहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व२२।२३ जिन जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥८२॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे

॥ अभिजित १ मृगशिर २ आर्दरा३,पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ए पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्ठा ११ उत्तराजाद्र, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ जरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ जरणी १९ ॥ खाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु-खसार ॥ प्रणमु वार वार ॥ ८३ ॥ १०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे

॥ रिखव अष्टापद शिखर,वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर,गीरि पर अ णसण लीना ॥ ७ दिन रिखव जिणद,वीर छठ्ठम तप चीना ॥ शेष जिनद एकमासनो ए,गयो अणसण सार ॥ होय अजोगी मुक्ति गया,प्रणमू वार वार ॥ जय जय परम दातार ॥८४॥१०७॥१०८॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे

॥ रिखभ जिणंद रिष्ट नेमि,चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पर्ल्यंक आसण सधारो, शेष काउसगमें करदा ॥ त्रीजा छठा नवमा वारमा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे आठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगनाण ॥ ७५ ॥ १०७ ॥ ११०॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्त्र,पद्म प्रभु तिनशें आठे ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठे ॥ विमलसंगें खट सहस्त्र, अनंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ महावीर एका एकी, शेष सहस्त्र परिवार ॥ प्रभु सार्थे अणसण धार ॥ प्रणमुं ते वार वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायातकृत भूमि कहे छे ॥

॥रिखभ जिनंद असंख्यात,पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व,चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनंद संख्यात,युगातर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि,अतरमुहूरत लगें लहीयें॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहू ए,वर्द्धमान वर्ष चार॥ शेष एक दिनातरें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वार वार ॥७७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनासुनियोनी केवी प्रकृति,तथा वस्त्र रग,तेमज जन्म नक्षत्र,दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र तथा केटलाश्रावक व्रत,पचाचार,ते सर्व कहे छे

॥ आदिजिणंद मुनिराज,प्रकृति रुजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

जाइवा शुद्ध ए मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज श्रा वण वदि११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा,दाखी ति थि निर्वाण ॥ ८१ ॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ शुद्ध पचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख वदि पढिवा १७ वानी ॥ मागसिर फागुण शुद्ध,दशमी१८बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु गहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व२२।२३ जिन जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥८२॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना निर्वाण नक्षत्र कहे छे

॥ अनिजित १ मृगशिर २ आर्दरा३,पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आयो॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्ठा ११ उत्तरानाड, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ नरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ नरणी १९ व खाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु खसार ॥ प्रणमु वार वार ॥ ८३ ॥ १०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे

॥ रिखन्न अष्टापद शिखर,वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर,गीरि पर अ णसण लीना॥ ७ दिन रिखन्न जिणद,वीर छठम तप चीना ॥ शेष जिनद एकमासनो ए,गयो अणसण सार ॥ होय अजोगी मुक्ति गया,प्रणमू वार वार ॥ जय जय परम दातार ॥८४॥१०७॥१०८॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे

॥ रिखभ जिणंद रिष्ट नेमि,चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पर्ल्यंक आसण सथारो, शेष काउसगमें करंदा ॥ त्रीजा छठा नवमा वारमा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे आठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगभाण ॥ ७५ ॥ १०९ ॥ ११०॥

हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र,पद्म प्रभु तिनशें आठ ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठ ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ महावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु सार्थे अणसण धार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायातकृत भूमि कहे छे ॥

॥रिखभ जिनंद असख्यात,पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व,चरम जिन तीन बताया ॥ शेप जिनद सख्यात,युगांतर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि,अतरमुहूरत लगें लहीयें॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहू ए,वर्द्धमान वर्ष चार॥ शेप एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥७७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनामुनियोनी केवी प्रकृति,तथा वस्त्र रग,तेमज जन्म नक्षत्र,दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र तथा केटलाश्रावक व्रत,पचाचार,ते सर्व कहे छे

॥ आदिजिणद मुनिराज,प्रकृति रुजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

वक्रजड, शेष रुजु सरल वखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेष पचरंगा गणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह,तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ सहुने श्रावक व्रत छुवादश ए,सहुने पच आचार ॥ जे पाली शिवपुर गया, प्रणमुं ते वार वार ॥ ७७ ॥ ११४ थी १२०

हवे चोवीश तीर्थंकरनी उत्पत्तिना आरानो समय,धर्म भेद तथा संयमभेद अने मुनिउना गुण कहे छे.

॥ त्रीजा आरानी अतें,रिखव जिनवर प्रगटाया॥ चोथा आर मध्य अजित,शेष अतें दरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म,सकल द भेद बताया ॥ संजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया। गुण सत्तावीश धारणा ए, तारण तरण मुनिंद ॥ ते प्रणमुं मनव च करी,आणी अधिक आनंद ॥ ७९ ॥ १२१ थी १२४

हवे चोवीश तीर्थंकरनुं केटलो काल शासन रह्युं ते कहे छे.

॥ सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कहीयें ॥ इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सर्दहियें ॥ हजार नेउ ५ नव ६ जाण, नवशें कोडी छुपासो ७ ॥ नेवु ८ नव कोड एसागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो सागर ग्रहो ए, वर्ष ठासठ लक्ष जाण ॥ सहस्र छवीश कमती कह्यो, दशमा सासण प्रमाण ॥८०॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव १३ चउ १४ धरम तिहु सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट,शांति अर्ध पल १६ वह्नागर ॥ कुंथु जिन पाव पल,१७ कमति वर्षकोडि हजारो ॥ अरह कोडि हजार १८, चोपन लक्ष १९ मल्लि विचारो ॥ पट २० पंच २१ लक्ष पोणी २२, चोरासी सहस्रज ए, अढाईशें २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु,प्रणमु ते वार वार ॥ लिलि लिलि वार वार ॥ ८१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारंभ ॥

॥ जे जे श्री जगदीश, रोष अरु तोष मिटाई ॥ जे जे श्री जगदीश, कर्म कण पीसे साई ॥ जे जे श्री जगदीश, ध्यायो प्रज्ञु शुकल ध्यानो ॥ जे जे श्री जगदीश, पाया सब केवल ज्ञानो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, करवा पर उपगार ॥ दीधि महा धर्म देशना, तार्यां बहु नर नार ॥ए०॥ जे जे श्री जगदीश, केइ सम दृष्टि करिया ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ श्रावक उद्धरिया ॥ जे जे श्री जगदीश, केई कीना अणगारो ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, आप तस्या परतार ॥ शिव सुख अविचल सपदा, पाया पद अविकार ॥ ए३ ॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वंछित आवे ॥ जो समरे एक मन, जन तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, जाव तस निर्मल थावे ॥ जो समरे एक ध्यान, ज्ञान केवल प्रगटावे ॥ इन कारण जवियन सद्धु ए, नाम ठाम शुन काम ॥ गुणग्राम लेखा विधि, रचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ए४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति जारी ॥ श्रीगुरुने परसाद, जक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ वाल ख्याल जिम ग्रथ, निजमति लायक वणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जोहमें शब्द जो आयो ॥ मिछामि डुक्कड सव साखसु ए, श्रीजिन वाणी तेत ॥ अशुद्ध जो देखो बुधजना, शुद्ध कर लीजो सुहेत ॥ ए५ ॥ सवत उंगणीशशें चालीस, मास मधु नाम विचारो ॥ शुद्ध पक्ष पचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दक्षिण प्रसिद्ध, अहमद नगर मझारो ॥ किनो यह महास्तवन, सवाशें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमें समकित दृढ जणी ए, बोल तोल अमोल ॥ धारो जविजन जावसु, गाथा सधिसु खोल ॥ ए६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कान्हजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ दीपायो दयाधर्म, कुमतिमति दूर उथापी, तस पाटोधर पूज्य, तारा रिख जी जस धारक ॥ काला रिखजी तस शिष्य, बक रिखजी सुविचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगला ए, धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीयवताजी रिखराय ॥ तास तणोजी सुपसाय ॥ ९७ ॥ शिशु सम थो हू अज्ञानी, गुरु उपगार कीनो ॥ दीनो धर्मको बोध, शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हित निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जे न, येन भवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु भणी ए, यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही,वरते मगल चार ॥ ९८॥

॥ कलश ॥ जे जे जिनव, सुखकद साहेब, जक्तपति जग, रंजण ॥ अजर अमर,अविकार निर्भय, करम रिपुदल, गजण ॥ तिलोकरिख कहे, धर्म पति तुम, विघन सब, दूरें हरो ॥ हित सुख खेम, कल्याण शिवपद, तास मुक्ति दो, जय करो ॥ प्रभु भव भव सरणो आपरो ॥ ९९ ॥ इति चोविश जिनराज, गरीबनिवाज तरण तारण जाजको एकशो पच्चीश बोल नामादिक लेखागर्भित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ मुनिगुण मंगलमाला प्रारम्भ ॥

॥आदर जीव क्षमा गुण आदर॥अथवा धन धन सप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरू श्रीअरिहंत सिद्ध साधु, धर्मजिण आणा मझार जी ॥ चारुहि मगल उत्तम सरणो, होजो सदा सुखकार जी ॥ प्रणमू ते गुणवंत त्रिकालें, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ ऋद्धि सिद्धि सुखसपत्ति शाता, नित नित होवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ ॥२॥ अतित अनत चोवीशी वहू, केवली अनत अपार जी ॥ व

र्तमान चोविशी साहेव, नाम कहुं सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ऋषन अजित सनव अनिनंदन, सुमति पदम सुपासजी ॥ चंदा प्रज्ञुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास जी ॥ प्र० ॥४॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य वंदू, विमल अनंत धर्मदेव जी ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमी करूं सेव जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पा रस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म ख पाई केवल पाया, मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जय वंता सीमंधर स्वामी, युगमंधर सुखकार जी ॥ वाहु सुवाहु ए चउ विचरें, जंबुद्वीप मजार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयप्रन ने ऋषनानन, अनंतवीरज जगन्नाण जी ॥ सूरप्रभु विशाल वज्रधर, चंडानन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार चार जिन, धातकीखम मजार जी ॥ विचरें गाम नगर पुर पाट ण, करता पर उपगार जी ॥ प्र० ॥ ए ॥ चंड्वाहु भुजग ईश्वर जी, नेमीश्वर शिवकंत जी ॥ वीरसेनने श्रीमहानड् जी, देवजस जी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनाय क, चार चार जिन राय जी ॥ पुष्करार्धमें विचरे साहिब, नामें नवनिधि थाय जी ॥ प्र० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टे पदें एक सो सित्तेर, जघन्य केवली कोडी दोय जी ॥ उत्कृष्ट पदें पृ थकत्व कोडी तिनमें, वर्त्तमान जे होय जी ॥ प्र० ॥ १२ ॥ अष्ट गुणातम पंदरा नेदें, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अलख निरं जन नवडुःख नंजण, समरता सुखकार जी ॥ प्र० ॥१३॥ आचा रज अष्ट संपदा धारक, वारक मिथ्या नर्म जी ॥ गुण छत्रिश ईश चउ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंड्नूति अग्नि नूति वंदू, वायुनूति गुणवंत जी ॥ चोथा व्यक्त सुधर्मा स्वामी, मंमि तजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १५॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचल जी, मे तारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परनासजी वंदू, चुम्मालिशशें परि

वारजी ॥ प्र० ॥ १६ ॥ चोविश जिनना गणधर वंदुं, चउदशें बा
वन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक सारा, पहूता सहु निर्वाण
जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ ऋषन्न सेनादिक सहस्र चोराशी, मुनिवर गु
ण नमार जी ॥ धीर वीर गंनीर गुणातम,नमता जयजयकार जी
॥ प्र० ॥ १८ ॥ अरिसानवनमें श्रीनरतेश्वर, पाया केवल ज्ञान
जी ॥ अनुक्रमें आठ पट्टोधर इणविध, पाया पद निर्वाण जी
॥ प्र० ॥ १९ ॥ बाहुबल मुनिवर महा बलीया, बार मासी तप
ध्यान जी ॥ मान मेलिने पग उगयो, पाया केवल ज्ञान जी ॥
प्र० ॥ २० ॥ जूऊ करतां पुत्र अठाणुं, श्रीआदीश्वर स्वामि जी ॥
समजाई दियो सजम तेहने, पहोता ते शिवधाम जी ॥प्र०॥२१॥
सागर मघवा खट खम्म त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप देखवा
सुर उल कीधो, लीधो सजम नार जी ॥ प्र० ॥ २२ ॥ पदम हरी
खेण जयनामें रिख, चक्री दश ऋद्धि ठोड जी ॥ शम दम उपश
म धीर गुणागर, कर्मबधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥२३॥ अचल
विजय नइरिख वंदू,सुनइमुनी रिखि राय जी ॥ सुदर्शन आनंदन
नंदन, राम गया शिवमाय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर बलिनइ
जी पहोता, पंचम सर्ग मऊार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी,
वली कहु अगनुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार माहाबुद्धि
वंता, जीत्या महा पचवाद जी ॥ सयम पाली शिवपद पाया,
जिन आणा मरजाद जी ॥ प्र० ॥२६॥ उदय पेढालपुत्रें करी च
र्चा, गौतमस्वामीसु जाय जी ॥ कुमारपुत्तिया नाम लेइने, सूत्र
सुयगडागनीमाय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशाग त्रीजे अग मा
ल्या, कह्या तिहां मुनिवर नाम जी ॥ ते सहु शिवगामी गुणधा
मी, कीना उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायाग मां
ही प्रकाश्या, नाम केई प्रसिद्ध जी ॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्वे
धर, नाम लिया ऋद्धिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम

निर्यंठें पूछ्या, प्रश्न पंच रसाल जी ॥ खधक सन्यासी सुणिके तत क्षण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ सशय निवर्त्या सजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग वार मे, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर तात वखाणु, रिखभदत्त गुणधार जी ॥ शेठ सुदर्शन राज ऋपीश्वर, धन गगियो अणगार जी ॥ ३२ ॥ ए चारे ऋपि मुगतें पहोता, धन धन नगवत मात जी ॥ देवानदा धन सति जयवती, पूछ्या प्रश्न विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नदिनी वदू, सती सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाई पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पंचमी पडिमा कार्त्तिक शेठें, धारी तिण सो वार जी ॥ तापस खीर जम्यो मोरा पर, जाण्यो अथिर ससार जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सहस्र अष्टोत्तर गुमास्ता सार्थे, आदर्यो स जमनार जी ॥ शेठ थया शक्रेंद्र सौधर्मैं, जाशे मोक्ष मझार जी ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ शोला देश तजि सजम लीयो, दियो नाणेजने राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, सार्यां आतम काज जी ॥ प्र० ॥ ३७ ॥ गगदत्त आणंद कोसल रिखरोहा, सुनक्षत्र नाम अणगार जी ॥ श्रवणनूति आराधक थईने, पहोता स्वर्ग मझार जी ॥ प्र० ॥३८॥ तिहांथी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अण गार जी ॥ नाम गाम तप जपको वर्णव, विवहारपन्नत्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीसुत श्रेणिक नृपनदन, धन धन मेघ कुमार जी ॥ आठ अतेउर छिनमें छोडी, त्याग दियो ससार जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन निखु पडिमा तप, अतें अणसण कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय विराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ वत्रीश नार तजी रंगासी, धन थावच्चा कुमार जी ॥ नेम प्रभुयें सजम लीधो, सहस्र पुरुप परिवार जी ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिसू चर्चा कीनी, शुकदेव सन्यासी

जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य सार्थे संजम, लीधो गुणनिधि खा
ण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचशें, श्रेणिक राय
नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुंमरीकगिरि सिद्धा ॥ धन जिणरा
अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रतनद्वी
पसू आय जी ॥ संजम लीनो चंपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी
॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नायें धास्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास
जी ॥ तीनु परथम स्वर्गे सिधाया,माहाविदेह शिववास जी ॥ प्र०
॥४६ ॥ उए मित्र मल्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवंत जी ॥
गणधर पद ग्रही मुक्ति विराज्या, थया सिद्ध जगवंत जी ॥ प्र० ॥
॥ ४७ ॥ सुबुधि प्रधानजीयें जलि विधें, पाणी परचो बताय जी ॥
जितशत्रु नृपको जर्म मिटायो, दोइ गया शिवमांय जी ॥ प्र०
॥ ४८ ॥ तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिबोध
जी ॥ केवल पामी मुक्ति विराज्या, तजियो सकल विरोध जी
॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिर अर्जुन अने जीमजी, सहदेव नकुल अ
णगार जी ॥ मास मास तप अजिग्रह कीनो, नेम वंदण सुविचा
र जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां, नेम तणु नि
र्वाण जी ॥ सुणिने पामव पांच शत्रुंजे, संथारो लियो जाण जी
॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास संलेषणा सिद्धा, श्रमणी डौपदी सो
य जी ॥ संजम पाली स्वर्ग पंचमे, एकावतारी होय जी ॥ प्र०
॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, कीड्यां पर करुणा आण
जी ॥ कडवा तुंबानो आहारज कीधो, खीर खांम सम जाण जी
॥ प्र० ॥५३॥ क्षण अंतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार
जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय विराज्या, च्यवि गया मुक्ति मकार जी
॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुंमरिक जाईने जगियो जाणी, पुंमरिक संजम धा
र जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार
जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतियो, पाली प्रभु

नी आण जी ॥ ते वर्णन भिन्न भिन्न करि देखो, ज्ञाता अग प्र
माण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गम्भीर, थि
मितने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोभ प्रश्नसेन ने विष्णु,
अक्षोभ सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवत
नामें, अचलधरण गुणवत जी ॥ पूरण अभिचद्र एह अगरा,भ्रा
ता जाणो सहु सत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अधक वृष्णिसुत धार
णी अगज, आठ अतेउर मेल जी ॥ नेम समीपें लीनो सजम,
करि मुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवसुत देवकी जाया,
अणियसेण अनतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामें, देव
सेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाघर वधिया छे वधव,
बत्रीश बत्रीश नारि जी ॥ तजिने नेम प्रभुपें सजम, छेइने छठ
छठ धार जी ॥ प्र० ॥ ६१ ॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मो
क्ष मझार जी ॥ वसुदेवसुत धारणी अगज, सारण थया अवि
कार जी ॥ ६२ ॥ गजतालव जिम कोमल काया, धन धन गज
सुकुमाल जी ॥ वसुदेवसुत देवकी अगज, छोड्यो जग जजाल
जी ॥ प्र०॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उभा ध्यान लगाय
जी ॥ ससरो देखी रीषें भराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र०
॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या शिरने शीश जी ॥
महावेदना सहि सम परिणामें, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र०
॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुवर, दारुण अनाधिष्ठ जा
ण जी ॥ जाली मयाली उवयाली ऋषि, पुरुषसेन वखाण जी ॥
॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि सब, अनिरुद्ध वैदर्भिनद
जी ॥ सत्यनेमी दृढनेमी ए सव, पाम्या शिवसुखकद जी ॥ प्र०
॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गाधारी, लखमणा सुसमा नार जी ॥
जांबुवती सत्यभामा रुक्मिणी, कृष्णरामा सुविचार जी ॥ प्र०
॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सावकुमरनी नार जी ॥

ए दशे संजम केवल लेई, पहोती मुक्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ६८॥
मक्काई किंकम रिख महोटा, धन अर्जुन अणगार जी ॥ संजम
लेइ क्षमा दृढधारी, छठ छठ तप लियु धार जी ॥ प्र० ॥ ७० ॥
छ मासामें कर्म खपाई, मुक्ति गया गुणवत जी ॥ कासव क्षेम
धितिधर हितकर, कैलास हरिचंद सत जी ॥ प्र० ॥ ७१ ॥ वा
रत सुदसण पूरणभद्दर, सुमनभद्द सुप्रतिष्ठ जी ॥ मेघ ऐमता अ
लख एशोला, पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ प्र० ॥ ७२ ॥ नंदादिक
तेरे पट्टराणी, वीर जिनंद उपदेश जी ॥ केवल पाई मुक्ति सिधा
इ, पाई अविचल यश जी ॥ प्र० ॥७३॥ कालीयादिक दश श्रेणि
क राणी, सुणियो पुत्र विजोग जी ॥ माहातपधारी कर्म निवारी,
मेट दिया सब रोग जी ॥ प्र० ॥ ७४ ॥ ए नेयुं सहु अतगड सि
ध्दा, अतसमे केवल पाय जी ॥ अतगडसूत्रमें वर्णव जाणो,
जपता सुरक सवाय जी ॥ प्र० ॥ ७५ ॥ श्रेणिकसुत धन जाली
मयाली, उवयाली पुरुषसेन जी ॥ वारीसेण दीर्घसेण लठ्ठदंत जी,
गूढदत सव जगसेन जी ॥ प्र० ॥ ७६॥ विहल कुमर अनयादिक
त्रेविश, श्रेणिकसुत गुणधाम जी ॥ अनुत्तर विमान गया सहु
रिखजी, चवि जाशे शिवगाम जी ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ बत्रीश रंना
तजि धन कोडी, धन धन्नो अणगार जी ॥ छठ छठ तप निरंतर
करणी, आयबिल उज्झित आहार जी ॥ प्र० ॥ ७८ ॥ चौद सह
स्र मुनीश्वरमाही, श्रेणिक आगें, स्वाम जी ॥ कहे दुक्कर दुक्कर
तप धारी, शम दम उपशम धाम जी ॥ प्र० ॥ ७९ ॥ सुनक्षत्र
इसीदासजी पेढग, रामपुत चंदिमा नाम जी ॥ मूढमाई पेढाल
पुतर रिख, पोटिल विहल अभिराम जी ॥ प्र० ॥ ८०॥ धन्नानी
रीतें ए नवही, करि करणी श्रीकार जी ॥ अनुत्तरोववाई सूत्रकें
माही, दाख्यो छे विस्तार जी ॥ प्र० ॥८१॥ धन सुबाहु भद्द नंदी
रिख,सुजात सुवासव धीर जी ॥ जिनदास धनपति माहाबल जी,

नद्दनदी गन्नीर जी ॥ प्र० ॥ ए२ ॥ मह्चद वरदत्त ए दश मु निवर, पूरव दान प्रन्नाव जी ॥ रुद्धि सपत्ति पाया अति सुदर, संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ए३ ॥ केइक तिण नव मुग ति सिधाया,केइ पंद्रा नव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरशे वडन्नागी, सुखविपाक अधिकार जी ॥ ए४ ॥ पद्ममादिक दश श्रेणिक पौत्रा, वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामशे अ विचल वास जी ॥ प्र० ॥ ए५ ॥ निखडादिक बलन्नद्रजीका नद न, बारादी गुणवत जी ॥ पाच पाचर्से त्यागि अतेउर, सर्वार्थसि द्ध पोहत जी ॥ प्र० ॥ ए६ ॥ सूत्र निरावलियानीमांही, न्नाख्या न्नाव जिनद जी ॥ एकावतारी बे रिख सारा, टालशे न्नवडु ख फद जी ॥ प्र० ॥ ए७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इष्ठा, आई तृष्णा अ पार जी ॥ समताथी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥ ॥ प्र० ॥ ए८ ॥ धन वलि नेमी राजरुपीश्वर, त्यागी रमणी हजा र जी ॥ इदरसु प्रति उत्तर कीना, पाया न्नवजल पार जी ॥ प्र० ॥ ए९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुणसागर, सजयति रुपिराय जी ॥ गर्दन्नाली क्षत्री राजरुपि धन, दशारण न्नद्र कहाय जी ॥ ए० ॥ करकंडू डुमुह नमी राजा,निग्गाई एह चार जी ॥ एक समय चउ सयम धाख्यो,एक समे न्नवपार जी ॥ए१॥ माहाबल मृगापुत्र मुनी श्वर,मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल दयानिधि,रहे नेमी उजमाल जी ॥प्र०॥ए२॥ केशी गौतम चर्चा कीनी,जय वि जय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययनें,मेख्यो शिष्य जंजाल जी ॥ प्र० ॥ए३॥ धन्ना शालिन्नद्र रिख जोडी, तडके तोड्यो नेह जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र० ए४॥ आठ अतेउर रातें परण्या,सोनैया नन्याव कोड जी ॥ दिन उगा लियो सजम न्नावें,पाचशें सत्यावीश जोड जी ॥ प्र० ॥ए५॥ ढढणरुपि लियो अन्निमह डु कर, चूर्खां कर्म करूर जी ॥ खधक

रूपिनी खाल उतारी, क्षमा करी जरपूर जी ॥ प्र० ॥ ए६ ॥ खं धक रुपिना शिष्य पांचशें, पील्या घाणी मांय जी ॥ क्षमा करि केवल पद पाया, मुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ए७ ॥ भूलि नइ श्ररणिक सिद्धानव, श्रीजिन आज्ञा मांय जी ॥ वरत्या वरते ते सहु मुनिवर, सूणतां पातक जाय जी ॥ प्र० ॥ ए८ ॥ मरुदे वी गज होदे पाम्यां, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुंदरी चं दनवाला, ध्यायु शुकल ध्यान जी ॥ प्र० ॥एए॥ राजिमती द्रौप दी सुनन्दा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अंजना मृग लेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सु ज्येष्ठा शिवा कुंती, मयणरेहादिक जेह जी ॥ संकट पडिया शी लज राख्यु, आण्यो संजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चो वीशी माही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अठाविस उ पर जाणो, अडतालीश हजार जी ॥ प्र० ॥ १०२ ॥ श्रीजिनवर ना शासनमांही, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया असंख्या, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥१०३॥ जघन्यपदें दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोड जी ॥ वर्त्तमान जे वर्ते मुनिवर, जग भाया सब ठोड जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पंच भरत पं च ऐरवय जाणो, पंच महाविदेह मझार जी ॥ अढाइ द्वीपके मां ही वरते, सत्ताविश गुण धार जी ॥ प्र० ॥१०५॥ तप जप साधे धर्म आराधे, बालक वलि वृद्ध संत जी ॥ ममता टाले समता आ ले, पाले संजम खंत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे संपत आवे, कटे कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी नवियण नित न एजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ उंगणीशें सेंतीस माहावदि आ ठम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधि को उंगो जो जोडाणो,मिछामि डुक्कड मोय जी ॥ पंच परमेष्ठी स

रणो मुजने, मनवछित फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०ए ॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रुत रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी लब्धि धारक, चारित्र पंच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वत्त्यीं वर्त्ते, वदू वारं वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ ॥ इति तिलोकरिखजी कृत मुनि गुण मगलमाला सपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इन्द्रभूतिजीको रास प्रारम्भ ॥

॥ सिद्धचक्रजीनें पूजो रे जविका ॥ ए देशी ॥ प्रणमूं श्रीवर्धमान सुहकर, सतगुरु शीश नमाउ ॥ ज्येष्ठ शिष्य श्रीगौतम स्वामी, शुधनावें गुण गाउ रे ॥ जविका, गोयम गुणधर वदो, जव जव उःख निकदो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १ ॥ गोवर गाम आराम मनोहर, वसुनूति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण,शीलगुणें मृड वाणो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २ ॥ एकदिन सुखसिद्यामांहे सूती, इन्द्रनवन ऊलकतो ॥ दीठो स्वप्न हरष अति पामी, कतसु कह्यो विरतंतो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥३॥ सवा नवमास पूरण थया जनम्या, दान मान वहु कीनो ॥ इन्द्रनुवन देख्यो तिण कारण, इन्द्रनूति नाम दीनो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ४ ॥ रूप अनुपम कनकसी काया, ऊलक ऊलक तन दमके ॥ पच धावें करि वध्या दिन दिन सो, डुशमन देखीने चमके रे ॥ ज० ॥ गो० ॥५॥ चार वेद ठ शास्त्र सो जणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चउदे विद्या निधान सो पंमित, विस्तरी महिमा सो जारी रे ॥ ज० ॥ गो० ॥६॥ मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निनूति वायुनूति सगें, अति आमंबरें आया रे ॥ ज० ॥गो० ॥७ ॥ विद्या पात्र ठात्र नर सगें, एक एकने लारें ॥ पाच पांचसें आया विचक्षण, यज्ञ मामयो तिणवारें रे ॥ ज०॥ गो०॥८॥ श्री म

हावीर अति धीर गुणातम, तप कियो ऊ कर कारी ॥ रुजुवालु
का नदि तीर ठठ तपस्या, गोडुज आसण करारी रे ॥ न०॥गो०
॥ए॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो,ध्यान शुकल मन ध्यायो ॥
परम नरम पणे करम जरमकू,टालि केवल पद पायो रे ॥ न०॥
गो०॥१०॥ मध्य पापापुरि बाहिर पधाख्या,केवल महोत्सव काजें॥
इंद्र चोसठ मिल आया उमगसू, त्रिगडा तणी विधि साजे रे ॥न०
॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर चार जातिना आवे, देव देवी केई
कोडी ॥ अमर विमाणसू अंबर ठायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥
न० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई देवता जावे, इंद्रनूति तब
बोले ॥ यज्ञ लगें आई किहा जावे, किणे पाख्या सुर नोले रे ॥
न० ॥ गो० ॥ १३ ॥ एटले कोई कहे पुर वारे, आया ठे दीनद
याला ॥ त्रिसलानंद जिनंद दिवाकर, खटकाया प्रतिपाला रे ॥
न० ॥ गो० ॥ १४ ॥ तेहना दरिसण काजें असुर सुर, आया ठे
इहां चलाई ॥ इंद्रनूति इम सुणि जन वाणी,आणे मान अकडाई
रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुफसू कवण अधिक जगमांई, विद्या
गुण बलधारी ॥ इंद्रजालसू सुर वश कीधा, आमवर रच्यो नारी
रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुफ आगल सो कवि नही ठेरे, इम
सोची तिण वारें ॥ वेगं पालखी मान धरीने, पांचशे ठात्र प
रिवारें रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना,
मनमांही ताम विचारे ॥ ए सकलाइ नहि मुफमाहि, वश किम
आवशे म्हारे रे ॥ न० ॥ गो० ॥ १७ ॥ पाठो फिरू तो निंदना
थावे, पगपग शोच घणेरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसू, वि
स्मय पया बहुतेरा रे ॥ न० ॥ गो० ॥१ए॥ हरि हर ब्रह्मा नहि
रवि इंदर, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसू विवाद करी नहि जीतू,
नाहक में चल आयो रे ॥ न०॥गो०॥२०॥ साहामा कना अण
बोला रह्या तब, श्रीजगदीश उच्चारे ॥ इंद्रनूति सुखे आया चला

ई, तव मनमें सो विचारे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २१ ॥ दिनकरनें सब जाणे जगतमें, तिम मुझ नाम ए जाणे ॥ पण मुझ मन शंका जो निवारे, तो सवि भाव पिछाणे रे ॥ ज० ॥ गो०॥२२॥ परमेश्वर कहे तुझ चित्त शंका, वेदमें तीन दकारो ॥ दया दान दमणो इंद्रिय मन, तत्त्व शुन एह विचारो रे ॥ ज०॥ गो०॥२३॥ जीव ठे निश्चे ए त्रिहु पदसें, वेद साक्षी इण न्यावे ॥ इम सुणी पंचसयां परिवारें, संजमको पद गवे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २४ ॥ अग्निनूति वायुनूति पण आया, संजम लियो त्रिहु नाई ॥ त्रिपदी ज्ञान लब्धि थइ परगट, गुणधर पदवी पाई रे ॥ ज०॥ गो०॥ २५ ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, वरणवी सूत्र मझारो ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, उकडु आसण धारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २६॥ रात दिवस प्रजु सेवना कीधी, पूछया प्रश्न अपारो ॥ चर्चा वाद विषे अति करडा, कीनो अति उपगारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २७ ॥ एक दिवस श्री गोयम शोचे, प्रथम में दीक्षा धारी ॥ मुझने केवल ज्ञान न उपनो, थया चितातुर जारी रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २८ ॥ वीर प्रजु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या नेला ॥ लडुड वडाईकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे ॥ज०॥ २९॥ अब इण नवके आंतरे आपण, थास्यां बरोबरी कोई ॥ मोहनी किह्नो जित लेवो थें, कमी रहे नहि कोइ रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३० ॥ एम सुणी हिय हर्ष घणेरो, इंद्रनूति मन आयो ॥ धन धन अंतरजामी दयानिधि, मुझ पर प्रेम सवायो रे ॥ज० ॥ गो० ॥ ३१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥ त्रीस वरस छद्मस्थपणामें, प्रजु सेव्या उह्लासो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३२ ॥ कार्तिक वदि अमावासनी रात्रे, श्री जिन मुक्ति सीधाया ॥ गौतमस्वामीनें केवल उपनो, इंद्र मोछव जणी आया रे ज० ॥ गो० ॥३३ ॥ बारा वरष केवल पदमांही, श्री जिनधर्म

दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मगल पद पायो रे ॥ न० ॥ गो० ॥ ३४ ॥ वाएं वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्ति सवाई ॥ गौतमनामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कवाइ रे ॥ न० ॥ गो० ॥ ३५ ॥ वधबंधन उच्चाटए कामए, जंत्र मत्र नही चाले ॥ अरि करि हरि नय नागे नामथी, डुशमनको गर्व गाले रे ॥ न० ॥ गो०॥ ३६ ॥ गौतम नामसू विघन विनासे, चोर चरड नहि गजे ॥ गौतमनामसुं ताव तेजारी, डुख बिमारी सो नजे रे ॥ न० ॥ गो० ॥३७ ॥ गौतम नामसु हिरि सिरि सपति, रिद्ध सिद्ध वद्ध आवें ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समरे शुद्ध नावें रे ॥ न० ॥ गो० ॥ ३८ ॥ गग्गा गो कामधेनु सुखदायी, तत्ता सुरतरु जाणो ॥ मम्मा मणि चितामणिसेंती, गोतम नाम वखाणो रे ॥ न० ॥ गो० ॥ ३९ ॥ उगणीशें अडतिश मृगशिर शुद्धकी, पंचमी तिथि रविवारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्र भुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ न० ॥ ४० ॥ इति गोतम स्वामिको रास सपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जीनवरका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ राग प्रनाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको,समरण कीजें नाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखन्न अजित सनव अनिनदन, सुमति कुमति सव दूर हरी ॥ पद्म सुपास चदा प्रन्नु ध्यावो, पुष्पदत हएया कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनत धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो नव उंध तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निश्चे मनमाहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिश्री दो प्रन्नु महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पदं ॥ राग प्रभाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ,अजितनाथ भारी ॥ संभव नाथ जगत तात, चरण बलिहारि ॥ उठि प्रभात समरु नाथ, वंदणा नित म्हारी ॥ बोधबीज आप साथ, सेवा दिजो थारी ॥ उ०॥ स० ॥ १ ॥ अभिनंदन दुःख निकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चदा प्रभु, आशा पूरो सारी ॥ उ० ॥स०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ,वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुंथु अरह मल्लि नाथ, कर्म किया ठारी ॥ मुनिसुव्रत वीशमा प्रभु, करुणाके भण्डारी ॥ उ० ॥ स०॥४॥ एकविशमा नमिनाथ वदू,सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज,तजी राजुल नारी ॥उ०॥स०॥५॥ बचाया नाग नागिणी प्रभु, परमेष्ठी उच्चारी ॥ परचा पूरण पारस नाथ, परऊपगारी ॥ उ०॥स०॥६॥ महावीर धीर धार,कर्मकू विदारी ॥ केवल ज्ञान भान भया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥उ०॥स०॥७॥ तारि भव्यजीव गया, मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु, वीनती ल्यो धारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंभ ॥

॥गौतम समुद्र,सागर सुगम्भीर ॥ए देशी॥ श्री आदिआदीश्वरू, परम परमेश्वरू, नमत सुरेश्वरू,हित धरी ए॥ अजित रिपुजित ए, जगत आदित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त्ति, शिववधु वरी ए ॥ १ ॥ श्री सभव साम ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमुं शिर नाम, सेवा करू ए॥ अभिनंदन ईश ए,जय जगदीश ए,रिपुदल पीस,केवलवरू ए ॥२॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुरुत भरो, तुम तणो आशरो, मुझ भणी ए ॥ पद्म प्रभु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म,प्रभु शिवधणी ए ॥ ३ ॥ वदू सुपास ए, अनतगुणरास ए, पूरो प्रभु

आश, सेवक तणी ए ॥ चंदप्रभु वंदियें, छुरुत निकंदियें, काटिमोह फदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे सकट करे, सपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परमकृपाल ए, नक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मगलकारणा, नविक उद्धारणा, डुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसपति, परम पती जती, गुण घणा ए ॥ अनतजिनद ए, अनतगुण कद ए, टाले नव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरंधरा, राजराजेश्वरा, मेटो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शाति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥८॥ कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरू ए ॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए ॥ ए ॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, नक्तसुख कारणा, स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणानंडार ए, अमर अविकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उद्धारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, परमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पारस खारस क्षय, ना वारस वारसनय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो नवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करु अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक द्यो, हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति सपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारम्न ॥

॥ राग तुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, नविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी न० ॥ १ ॥ रिखन अजित सनव अनिनदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद

त सुपास चंदा प्रभु, जगदुःखताप निवारण हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, ए कापे जीव भवारण हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुरनरपति सिरतारण हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, भविका सारी भवतारण हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस वर्द्धमानजी, दुःख कापो प्रभु धारण हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ विमल शेठ प्रभु स्तुति विरचया, अजर अमर अति कारण हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारण, तुम विना नहिं कोई भवतारण हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविसजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखव अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया भव दीधा ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, विघन टले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, तोड दिया कर्मनका ताता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथ जी, सर्वकी मेट दिवी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया त्राता ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नमी पारस वर्द्धमानजी, शासननायक जग त्राता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविस जगदीश विख्याता, शिवपुर सुखार्थ गमाय साता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो सब सेवक, अवगुण नहि किजा मनि भावता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ सवगीजी गणधारलीश पानाऋषि नगदत्त, विमलभैरव गुण किया ग्रह साता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ सावन जावत भादव जावत फागन शेषे पायो रे, सतगुरु

आश, सेवक तणी ए ॥ चदप्रभु वंदियें, दुकृत निकंदियें, काटिमोह फंदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे संकट करे, संपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परमकृपाल ए, नक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मगलका रणा, नविक उद्धारणा, दुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसपति, परम पती जती, गुण घणा ए ॥ अनतजि नद ए, अनतगुण कद ए, टाले नव फद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरधरा, राजराजेश्वरा, मेटो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शांति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥८॥ कुंथु कुथु करी, कर्म कुरग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरू ए ॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए ॥ ए ॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, नक्तसुख कारणा, स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणानंडार ए, अमर अ विकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उ द्धारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, प रमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पा रस खारस क्षय, ना वारस वारसनय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो नवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ दु प्रभुदास ए, करु अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुद्दष्टिविलोक ए, अविचल थोक द्यो, हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति सपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभ ॥

॥ राग ठुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, नविजन ज नम सुधारक हे ॥ वारी न० ॥ १ ॥ रिखन अजित सनव अनि नदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद

म सुपास चंदा प्रभु, नवदु खताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, धर्मको मार्ग उद्धारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, दृढ क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अविकारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहि कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभ ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया मोह नीका ताता ॥प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, विघन टले ज्यारा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छोड दिया कुटुंबका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनत धर्म शातिनाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, शासननायक जग त्राता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाय माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसु, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीसें उगणचालीश पोसवुदि चवदश, दियावडीमें गुण किया उल साता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभ ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु

समझायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित वंदु नित वंदु चोविश जिन देवा रे,चाहु चरणकी सेवा ॥नि०॥ ए टेक ॥ रिखज्ज अजित संजव सुखकारी, अजिनंदनजी जसधारी रे ॥ प्रजु परम दयाला, काट्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस जसवंता, चन्द्रवर्ण चंदाप्रजु सोहंता रे ॥ जवतापनिवारी, सब शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिनंदा, वासुपूज्य मेट्या जवफंदा रे ॥ जगजीवन सामी, प्रजु अंतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ जया परम सोजागी, चक्रीपद रुद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुंथु अरह मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रतजी व्रत गाया रे ॥ जविजन समझाया, त्रिजकका राया, अविचलपद पाया ॥नि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पतिगनी रे ॥ दृढ क्षमा प्रजुधारी, घातिककर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरजि कृपावंता रे ॥ तुम सरण न आयो, तिणथी दुःख पायो, जयो में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरथे काल अनंत गमायो, अब हुं तुम शरणें आयो रे॥ सुधन्याए पिछाणी, जगतारक जाणी, हढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजी कहे तिलोकरूपद दिजो, सेवकपर महेर करीजो रे॥ निज वरुदविचारो, सुनजर निहालो, जवपार उतारो ॥ नित० ॥ ए॥ इति संपूर्ण ॥६॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारंज ॥

॥ ठाकुर जले विराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिमा ठे ॥ साहिब जलें विराज्या जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें जलें विराज्या जी ॥ ए टेक ॥ रिखज्ज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम

सुपास ॥ चदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास ॥ सा० ॥ १ ॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवत ॥ अनतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीसत ॥ सा० ॥ २ ॥ कुथुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाउ शीश ॥ सा०॥ ३ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिरया प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सरिखा प्रभु, निरवारसका नाथ ॥ वर्द्धमान सासणका सामी, प्रणमू जोडी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम विन पाये दुःख अनता, जनम मरण जजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने, तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति सपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारभ ॥

॥ राग वसत ॥ शाति चरणारी जाउ वलिहारी ॥शा०॥ ए देशी ॥ झेलो वदणा नाथ हमारी,तुमारे चरणकी वलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी,प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ झे०॥१॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,विमल अनत धर्म धारी ॥ शातिजिनद सुख कद जगतमें, मेट दीनी सव मारी,हरो मेरी विपत विमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथू अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडिकें राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ वेवारसके वारस पारस, पचपरमेष्ठी वडारी ॥ नागनागिणी जलत वचाया, कीना सुर अवतारी, महिमा जगमें अति भारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हवक्षमाप्रभुधारी ॥ केवल ले प्रभु धर्म वतायो, सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभुजोग त्याग कर, पहूता हे मुक्तिमझारी

॥ अनत सुखमांही जाय विराज्यातो, नीरंजननीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ जे० ॥६॥ मोहमायामांहि उलज रह्यो में, पायो दु ड ख अपारी ॥ तुम शरणाविन चउगति नटक्यो,धर्मकी बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ जे० ॥७॥ अष्टकर्म कबु दूर नयासू, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण विरु द सुणिने, सरणो लियो सुविचारी,सार करजो प्रभु म्हारी ॥ जे० ॥ ८ ॥ मुक सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि नवपार उतारो, या मांगु रिकवारी,अरज लीजो अवधारी ॥ जे० ॥ ए ॥ उंगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें,जोड करी हित कारी, तिलोख रिख कहे सुविचारी ॥ जे० ॥ १० ॥ इति ॥ ए॥

॥ अथ चोविशतिर्थंकर स्तवन प्रारंन ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखनजिन स्तवन प्रारंन ॥

॥ इण सरवरियारी पाल,उनी दोय नागरी॥ मारा लाल॥उनी दोयनागरी ॥ए देशी॥ श्री सतगुरु सुपसाय,जाण्या शिवपुर धणी मा राराज ॥ जाण्या० ॥ श्री मरुदेवीना नद, नानि कुल गुणमणी ॥ मा०॥ ना० ॥ त्रिभुवन नायक देव, पायकनी वीनती ॥ मा० ॥ पा०॥ मोह रिपु नय आण,सरण ग्रह्यो शुनमति ॥ मा० ॥स०॥ ॥१॥ तार तार मुक तात, वात कहु मनतणी ॥मा०॥वा०॥ जनम मरण जजाल, आवे गनरामणी ॥ मा० ॥आ०॥ ताख्या जीव अनत, शांति सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ शां० ॥ उद्धरिया अपराधि, माहा अवगुण तणा ॥ मा० ॥मा०॥२॥ तुम विरुद दीन दयाल, हु वाल दयामणो ॥ मा० ॥ हु० ॥ क्यों न करो मुक सार, विसाख्यो किम घणो ॥ मा० ॥ वि० ॥ जो तारो गुणवत, अचरिज ने नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुक सरिखो दीन, उद्धाख्या जस

सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद पडियो आज, आयो शरणें व
ही ॥ मा०॥ आ० ॥ उंर न तारणहार, ते मार्टें में कही ॥ मा०
॥ ते० ॥ मुझ सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुझ सारिखो ॥ मा० ॥
प्र० ॥ लाधें नहिं जगमाय, कियो में पारखो ॥ मा० ॥कि०॥४॥
तुहिज तारशो नेट, पहिला पाछें सही ॥ मा० ॥ प० ॥ सेवक
करे पोकार, बाहिर शोभा नहीं ॥ मा० ॥ बा० ॥ समर्थ छो तुमें
स्वामि, जगत तारण धणी ॥ मा० ॥ ज०॥ हवे मुझ वेला केम,
आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ भावे तार म तार, म
हारुं छु जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक बिरुद, किणी
विध आवशें ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशो ए छे अजाण, आवे न
हि वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखा
वे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुझ सोय, कृपा क
रि नाथ जी ॥ मा० ॥ कृ० ॥ विण मनाया नही छोडुं, तुमारो
साथ जी ॥ मा० ॥ तु०॥ करुणा करी मुझ काढ्यो, नरक निगो
दथ्थु ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप हजूर, तारो हवे मोदथ्थु ॥
मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोदे निज मात, मुगति मेली खरी ॥
मा०॥ मु० ॥ भरतने अरिसा भवनें, दीनी केवल सिरी ॥ मा०॥
दि० ॥ अठाणु निज पुत्र, जूझता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ बा
हुबल गजमान, थकी ते उत्तारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वी
तराग समभाव, छो समतासागरु ॥ मा०॥ छो० ॥ माहरो थारो
नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा०॥ता०॥ मातपिताथी जेम,
बालक आडो करे ॥ मा०॥ बा०॥ रिखभ जिनदथ्थु तेम, तिलोक
रिख उच्चरे ॥ मा० ॥ तिलो० ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ मेरी मेरी करता जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ श्री श्री अजित

अरज सुणो मेरी, टालो दुखदायक अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आं कणी ॥ जिहां जाउ तिहां सगज आवे, निज गुण संपति दूर न गावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान ग्रहू तव आलस आवे, जणीयो सो छिनमें विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ निद आवे धर्म कारजमांही, सुख दुःख वेदनासु मर पाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु शुद्ध दाय न आवे, मिथ्यामो हनी अधिक नमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य वधण छिन छिन छी जे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहांइक उच्च नाम पद आपे, किहांइक नीच नाम करि थापे ॥श्री०॥ ३ ॥ क शुन सोनाग वढावे, किहांइक अपजस नाम फेलावे ॥ श्री० ॥ अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुझने अधिकाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उच्चगोत्रमांही मेले, किहांइक नीच गोत्र विषे ठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रूप करे दूरो, कायर माय कियो नरपूरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लान अंतराय दे नारी, नो गोपनोग वीरज परिहारी ॥श्री०॥ शक्ति अनंत सो दीनी लुकाइ, दुख देवे मुझ चउगति मांई ॥ श्री० ॥ ६॥ जितशत्रुसुत विजया देके नंदा, तुम शरणे आयो गुणछंदा ॥ श्री० ॥ शत्रु सकल सो करियो निकंदा, तिलोकरिख नव नव तुम वंदा ॥ श्री०॥ ७ ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय सनवजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ श्री सीमधर पाय नमु हो प्रनु जी ॥ ए देशी ॥ सनव जिन सुणो वीनती हो प्रनुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार वें लोकमें हो ॥ प्र० ॥ सुखी किया नर नारि ॥ साहिब मानजो हो, प्रनुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप जप किया हो ॥ प्र० ॥ संजम मारग शुद्ध ॥ असनव कर्म काल शु हो ॥ प्र० ॥ सो करो सनव शुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन सनव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण उतारे पार ॥ दीनदयाल

दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम गो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शर णें आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतित उद्धारण आप ॥ जाणो घट घट वातडी हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मबंध काप ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ तु अतर धन माहिरो हो ॥ प्र० ॥ नव जल तारण ज्हा ज ॥ मुझ अवगुण मत जाखजो हो ॥ प्र० ॥ वांहे ग्रह्याकी ला ज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजा नी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरू हो ॥ प्र०॥ क्यों न करो नवपा र ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारय कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना दे वीना नद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव सुख कद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अभिनंदनजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ कौलव मारग माये धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अभिनंदन वदन नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ मरियें मिथ्या देव सक लथी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शंख चक्र धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित रहे राता रामा रमणमें, तस शरणे छुं थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दंम कमंमल धारी, निज धी सुइ घरवास हो ॥ मृगशाला माला मो जीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल व्याल भूषण युत, रुंढमाल गलमांय हो ॥ गिरिजा भोग मगन निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक महि ष अजा भख मागे, कोइक मदिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मो हमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ०॥ ५ ॥ आप तरे नहि भवसागरथी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाण नाव तरे किण विध करि, साचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ सवरराय सि द्धारथ नदन, परम अदोषी देव हो ॥ तिलोकरिखअलि गुण

रस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम सुमतिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं एसो ॥ ए देशी ॥ रेखतामें ॥ सुमति जिनराज हे प्यारा, खलकमां सुर मोहनगारा ॥ एता दिन भर्ममें भूला, चतुर्गति हिंमोलमें फूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल में बोया आम जानी, काचटुक लिया रत्न मानी ॥ जहेर के पिया अमृत जेसा, रत्नकु देखा ककर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी भर्मे बुधि रहि मेरी, प्रतित नहि रखी दिल्ल तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब खोटा, सह्या में नर्क विच सोटा ॥ स० ॥ ३ ॥ चढी मोहे बागीकी मस्ती, उस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में तस्ती, जहान मेरी लही पूर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा दिल वहोत गभराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर दे मेरी, देख तु लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी मर्ज तुम जाणो, प्रभु अब कायकू ताणो ॥ अब तो महेरवानगी करणी, मिटा दो जन्म उर मरणी ॥ सु०॥ ६ ॥ मेघरथ नूप फरजदा, मंगला मातके नदा ॥ तिलोकरिख सेव चित्त चहाता, अचल मोक्ष देना सुखशाता ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ पठ पद्मप्रभजिन स्तवन प्रारंभ ॥

पदकी राह ॥ श्री जिन मुजने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु भवजल पार उतारो, में सरणो लियो चरणारो ॥ ए टेक ॥ पद्म लछन प्रभु पगमाहि झलके, उपमा पदम उच्चारो ॥ उत्पन्न होवे पंकथकी पंकज, जलसु लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥ कामभोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मझारो ॥ कर्मजले वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थंकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनुई, छोड तोड सव बधन, वरी शिववधू सुखकारो ॥ तिम तुम किं

कर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ निवारो ॥ प०॥३॥ तुमविन कोई दूसरो जगमें, दिसे नहि तारणहारो ॥ भक्तवत्सल भगवत दयानिधि, अविनाशी अविकारो ॥ प० ॥ ४ ॥ भूख्याने भोजन जल तरस्यांने, रोगी औषध उपचारो ॥ तिम मुझ मनमां निश्चे निरतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥५॥ आशनिराश करे नहि दाता, मगण जो आवे द्वारो ॥ वछित दायक भक्तसहायक, तुम हो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम मुझने, द्यो निज पद गुण धारो ॥ प० ॥ ७ ॥ इति ॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी, नित भावना भाउ हो ॥ चरण कमल सेवा सदा, दरिसण चित चाउ हो ॥ सुपारस आश पूरो हो ॥१॥ तुम गुण जो श्रवणे सुणु, तो पण दरखाउ हो ॥ तुम भय भजन साहेबा, शरणागतमें बोलाउ हो ॥ सु० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त घन धार जू, सुखवेलि वढाउ हो ॥ मोहणी अंधकार अनादिके, रवि तेम नसाउ हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ शिवपंथ बतावन तु प्रभु, जिम नेत्र अगाउ हो ॥ कर्म सघन वन काटवा, फरशी जिम धाउं हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सकट शिला भजन भणी, जिम वज्र सराउ हो ॥ आशा पूरण सुरतरु, चितामणि जिम भाउ हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ भवजल ता रण तु प्रभु, निर्यामक नाक हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा, धनतर तिम गाउ हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ विष्णुपिता नवा मायना, अंगजने मनाऊ हो ॥ तिलोकरिख कहे इच्छा पूरजो, नित्य शिश नमाउ हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंद्रप्रभ स्तवन प्रारम्भः ॥

॥ कडखानी देशीमां ॥ वंदु जिनंद श्री चंद प्रभ भावशुं,चरण अरविंद सुख कंद सेवा ॥ गुण मकरंद मन अलि रली गहगहे,ल खमणा नंद देवाधिदेवा ॥ वं० ॥१॥ उग्र जगरंद कुधय निकंदके, तोड मोह फंद सो केवल पाया ॥ इंद्र नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक, आ नंदधर सेव करिने उमाया ॥ वं० ॥ २ ॥ चंद्रपुरी जन्म चंद लंछन चरणमें, वरण पण चंद्र उज्य भाव चंदा ॥ पूरण चंद सो वदन झगमग करे, वाणी शीतल सुख अमृत झरदा ॥ वं० ॥३॥ विषय कषायको ताप महा प्रबलता, उपशमे जो शुद्ध भाव ध्या वे ॥ उपमा देश अविशेष पक्ष शोधतां, संपूर्ण उपमा केम आवे ॥ वं० ॥ ४ ॥ चंद्र सकलंक तस राहु प्रति शत्रुसंग, दिवसें पला श दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा स क्रांति गुण विश्वावीशें ॥ वं० ॥ ५ ॥ भक्तके सहायक घायक क र्मके, त्रिभुवन नायक दुःख हरता ॥ करुणाके सागरु गुण रतना गरु, जगत उजागरु सुक्ख करता ॥ वं० ॥ ६ ॥ महासेन राजिं के नंदसूं वंदना, तिलोकरिख कहे कर जोडि दोई ॥ एक समे मात्र मुझ मया करी दर्शी द्यो, अपर नहि वाछना रच कोई ॥ वं० ॥७॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिनंद ने ध्यावो रे भविका, अजर अमर पद पावो ॥ ए आकणी ॥ क रम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खंती ॥ सयमेव बोध ते पुरुपमें उत्तम, सिंह पुंडरीक गध दंती रे ॥ भ० ॥ १ ॥ ॥ सु० ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम जा णो ॥ अभय चक्खु मारग शरण दाता, जितवबोध वखाणु रे ॥ ॥ भ० ॥ २ ॥ सु० ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नायक सार

थी सोइ ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री सम, नवोदधि दीप ज्युं जोइ रे ॥ न० ॥३॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण थिर सेरी ॥ नीवरत्या ठद्मस्थपणाथी,जींते जींतावे वैरी रे ॥न० ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समझे समझावे, पापने ठोडे ठोडावे ॥ पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ न० ॥५॥ सु० ॥ अनत अक्षय पद वाधा नहिं जिनके, वलि ससारमें नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानकें, पहूता जिहां मन चावे रे ॥ न० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुग्रीव तात रंभा देवी जाया, धन धन अतरजामी ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, वदू नित शिर नामी रे ॥ न० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ दयापर दोलत झुक रही ॥ तिजकी ए देशी ॥ शीतलजिन जी शीतल करो,तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ विपेजी कांइ, मरणकी आग यो बुझाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥ संजोगमांहे विजोगनी जी कांइ, सपदामें विपत्ति कहाय ॥स्वा०॥ सुखशातामें अशाताकी जी कांइ, अभि दियोने मिटाय ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ २ ॥ दुरख ठिकाणे शोककी जी काइ, ज्ञानके माहे अज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुधिके कुबुधितणीकी जी कांइ, शीलमें कुशील डखदान ॥ स्वा० ॥ शी०॥ ३ ॥ सजम सतरा प्रकारको जी कांइ, जिणमें असजम आग ॥ स्वा० ॥ क्षमा धरम रूइ विपे जी कांइ, मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख कारणो जी, काइ सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय हुताशनो लोकमें जी काइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा०॥ शी०॥ ५ ॥ सतोप विपे तृष्णा तणी जी काइ, दीजो हुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे नहि त्रिहु लोकमें जी कांइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥

शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन नृप नंदा मायना जी कांइ, अंगज सुणो अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुज नणी जी कांइ, दीजो शिवशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयासजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ श्रीमाहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए देशी ॥ श्रेयास जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेबा ॥ ए आंकणी ॥ जिम तुम श्रेयपद अश शुद्ध कर, श्रेय पद नाम प्रसिद्ध ॥ ते तुम रूपा नावशुजी कांइ, आपो एहज रिद्ध हो ॥ श्रे० ॥ १ ॥ तुम करुणारस सागर, गुणरतनागर ईश ॥ शु तुमने स्वामी पडे सो काइ, क्यों न करो वकसीस हो ॥ श्रे० ॥ २ ॥ चाकर चूक पडे कोइ विरियां, गिरुवा गकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमें जी काइ, गिरुवा एम सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताशुं मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेह निवाजे, तुम गुण अगम अगाध हो ॥ श्रे०॥४॥ हु निगुणो पापी निर्बुद्धि, कूड कपट नमार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, उतारो नव पार हो ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ तुम विना कोइ तारणहारो, जगमें दीसे नाहि ॥ विण तारया तुमने नहि गेडु, ए निश्चे मनमाहि हो ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ विष्णु पिता विन्दु महतारी, धन धन नंदन जेह ॥ तिलोकरिख कहे मुज गिर टीको, लागो नवल सनेह हो ॥ श्रे०॥७॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

राग ठुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरंजन, रोम रोम मेरे मन वसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल वसिया ॥ प्र०॥ ए टेक ॥ चंद चकोर उंर मोर मेघ मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म० ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति नरतार बालक चित्त जननी, कुंजर कजली वन धसीया ॥ कु० ॥ प्र० ॥ श्रव कोयल चकवी रवि चाहत,

हस सागर जल उल्लसियावारी ॥ हं० ॥ प्र० ॥ २ ॥ तिम तुमसुं मुझ प्रीति घणेरी, करम भरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर डसीया ॥ रा० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम जप गरुड शब्द जिम जाणु, मन शुद्ध नाम लेता नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानिधि, सकल जहर डरां जे चसियां ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवाधिदेव अलेव अगोचर, मिथ्या भर्म सो डरा खसिया ॥ मि० ॥ प्र० ॥ करमको खार ह्यो तप सोगसुं, भाव अगनि करी उछसिया ॥ भा० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ भवि मन रजन अलख निरजन, सिद्धिमें सिद्ध जाय वसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वभाव तुवा को तिरण पण, करम बजन बुटा वकसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मेरेसें दूर नहि प्रभु कबुही, जेसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जे० ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयादे नंदनका, तिलोकरिखजी दरिसण त्रसिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विमल जिनेसर वदो रे भविका, भव भव सरण सहाई ॥ ए टेक ॥ ज्ञान अनत पण अलोकको छेडो, कह्यो न आगम माई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि० ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कबु, निराबाध सुखमाइ ॥ त्याग नही पण आश्रव छूटो,अटल अवगहणा अकायी ॥ वि०॥२॥ आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षय साई ॥ समरे एक भाव शुद्ध करकें, सुख होवत वनताई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अतराय क्षय करीयो साहिब,नूतन लाभ न कांइ॥वीतराग दशा पावत प्रभु में, तारक बिरुद कहाइ ॥ वि० ॥ ४॥ हय गय रथ पायक नहि ममता, जगतकें नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके

रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु क रुणासिंधु, शत्रुसों दिया नगाइ ॥ कृतवर्म नूप श्यामा देवी नंद, जगमें शोना सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुज तार एमें, कायकू जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक बिरुद विधारी, मि वगढ देउ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनतनाथजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकु, वे जिन मुद्रा धारी हे ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ प्रभु नित्य नवि वदू, अनतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥ अनंत चारित्र अनत शक्तिधर, अनत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित अनत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मजारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥ अनत जीवाके प्रतिपालक साहिब, अनत वर्गणा निवारी हे ॥ द्रव्य गुण पर्याय सकलमें, निन निन करकें उचारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन नवन जस वकाल तेरो, महिमा अपरम पारी हे ॥ वदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण वलिहारी है ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुख कारी हे ॥ सब विध लायक सत सहायक, वायक सकल पियारी, हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सयम साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल प रिहारी हे ॥ अलख निरजन शत्रुके गजन, अजर अमर अवि कारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुज दाय न आवे, तुमसें प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वछित दायक, अविचल नक्ति कु मारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिद्दसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रभु महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो नव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुंदरी जी काउ, पाल्यु शियल अखम ॥

ए देशी ॥ धर्मजिनद सेव्या विनाजी कांइ, इम रूले ससार ॥ए टेक ॥ धरम धरम करतो फिर्यो जी काइ,धरम न जाणे नेद ॥ रुलियो चउगति जीवडो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥ ॥ १ ॥ वार अनती उपनो जी कांइ,नोगव्यां दुःख अनत ॥ के तो जाणे आतमा जी कांइ, के जाणे नगवत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्तमें नव कर्या जी काइ,साडी पेंसठ हजार ॥ छत्तिस अधिक निगोदमें जी काइ, काल अनत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रस थावर तिर्यचमें जी कांइ, छेदन नेदन त्रास ॥ सही तिहा परवश पणे जी कांइ, सची करमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कदि नरनव पामियो जी काइ, सपदा पायो हीन ॥ पापकर्म सचय कर्यां जी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर नयो तो चाकर पणेजी कांइ, राच्यो ख्याल विनोद ॥ मरणसमे झूर्यो घणो जी कांइ, नूल्यो सघली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुजल नाता सहु ग्रह्या जी काइ, नानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए विनती जी काइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शातिजिन स्तवन प्रारन ॥

॥ समर ले समर ले राधिका श्री हरि॥ ए देशी ॥ राग प्रनातीमें॥ ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन सपत्ति अधिक आवे ॥ सकल सकट हरे ऋद्धि वृद्धि करे, कर्मको नर्म दूरें हगावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल चद रवि किरणसा, अचिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रनु देशकी गर्नमें, शातिकुमार प्रनु नाम गवे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शातिजीको नाम सतत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा नगावे ॥ ताव तेजातरो चउथारो वेलातरो, आधि व्याधि दुःख उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वाकडो, समरता शाति सो लागे

रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु करुणासिंधु, शत्रुसों दिया नगाइ ॥ कृतवर्मे नृप श्यामा देवी नंदा, जगमें शोजा सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुफ तारणमें, कायकूं जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद विचारी, शिवगढ देउ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनंतनाथजिन स्तवन प्रारंज ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकु, वे जिन मुश धारी हे ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ प्रजु नित्य वंदि वंदू, अनंतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥ अनंत चारित्र अनंत शक्तिधर, अनंत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित अनंत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मफारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥ अनंत जीवाके प्रतिपालक साहिब, अनंत वर्गणा निवारी हे ॥ ड्व्य गुण पर्याय सकलमें, जिन जिन करके उच्चारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन जवन जस उज्ज्वल तेरो, महिमा अपरंपारी हे ॥ वंदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण वलिहारी हे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुखकारी हे ॥ सब विध लायक संत सहायक, वायक सकल पियारी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ संयम साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल परिहारी हे ॥ अलख निरंजन शत्रुके गंजन, अजर अमर अविकारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुफ दाय न आवे, तुमसुं प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वंछित दायक, अविचल जक्ति तुमारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिंहसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रजु महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो जव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंज ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुंदरी जी काइ, पाल्यु शियल अखंम ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारम्भः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ आर ति हरो रे, वीनती मुझ अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी रे, सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपूर, मुझ राखो चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर तरणो अथाह ॥ पवनने भरणो कोथले रे, इणसुई नक्कि अगाह ॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांबरी दिगवरी रे, जैनमें भेद अनेक ॥ निज निज पक्ष करे खेंचना रे, एकात नय पक्ष टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनेकात मत ताहरो रे, हेय ज्ञेय उपादेय ॥ सप्तभंगी स्याद्वाद नो रे, समजण डु कर अंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अतर तेरे प्रकारका रे, किम करि दीजें तेल ॥ कांस्यपात्र सिहणी क्षीरनें रे, किम करि राखे भेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु सजमी रे, ध रम दयामांही सार ॥ निर्वेद वाणी ताहरी रे, मानुं शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नदना रे, वदणा कीलो द याल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे हो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुण चेतन रें तुम गुणवत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तु मल्ली जिनद समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्रा म, भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमें, मथुरा नग री सोहे ॥ जहा प्रजापाल भूपाल, कुंभ मन मोहे ॥ राणी प्रभा वति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कुखें लियो अवतार, मल्लि जिन सुहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या दुःमासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो॥ भयो प्रथम वेद अवतार,प्रभुकों वखाणो ॥ दोयसें नन्याणव वर्षे, उमरमें आया ॥ ठ नृप पूरब भव मित्र,परण न कमाया ॥ सु०॥

पावे ॥ सजन सजोग विजोग डुशमन तणो, अवनिपति मान अधिको वढावे ॥ घ्या० ॥ ४ ॥ फकणी शंकणी चूत ऊोटिंग सो, समरता सकल दूरा पलावे ॥ ऊतरे जहेर भुजग विंबू तणां, अनल जिननामजलें उपशमावे ॥ घ्या० ॥ ५ ॥ वध बंधन सहु बुटे प्रभु नामथी, चोर लुटेरा ठग नागि जावे ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री शांति शांती करे, डुष्ट दमण सदा हिरदे ध्यावे ॥ घ्या० ॥ ६ ॥ इह नवें सुख परनवें शिव संपदा, देत जगदीश जो समरे नावें ॥ तिलोकरिख करे अरदास कर जोडिने, थो निज नाम गुण प्रेम नावें ॥ घ्या० ॥ ७ ॥ इति ॥१६॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुनाथजिन स्तवन प्रारंन ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासें आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम कल्याण ॥ मेरे प्रभु कुंथु नाथ मन नाया ॥ मे०॥ ए टेक ॥ संजम करणी नवजल तरणी, धारकें कर्म हगाया ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान अनुंपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अबंधव बंधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल तारक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानमें मगन हे, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अंग राचे, खट रस नोजन नाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धन सज्जन नानाविध नर, ख्याल तमासें लोनाया ॥ निज गुण भुज गे चूल होय कर, करमके फंद फंदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रभु सरणा विन तरणो न होवे, ज्युं मंदिर विन पाया ॥ अंक विना शुन्य काम न सारे, जेसें सुपनकी माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी मरण करणसुं, नव अरणव नटकाया ॥ विणजाराका वेल ज्यु जगमें, पच पच जनम गमाया ॥ मे० ॥ ६ ॥ सूरराय श्रीदेवी अंगजके, तिलोकरिख सरणे चल आया ॥ जिम तिम कर निज वास वतावो, तो में सकल नर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

वधायो, मुनिसुव्रत पद नहि जायो रे ॥ श्री०॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उ
पादेय नयरस केली, जाणी में किंचित ठेलि रे ॥ हवे मत तोडो
प्रीत ए पहेली, विनति ल्यो प्रभु केली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र
नृप पद्मावती जाया, अवके तो दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख श
रणागत आया, तार तार माहाराया रे ॥ श्री० ॥७॥ इति ॥२०॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ नहिं हे सदेह लगार निरुपम ॥ ए देशी ॥ एकविशमा न
मि नाथ निरुपम, उपमा कही नहि जावे ॥ तेज रविसम ज्यों
कहुं प्रभुने, सो पर प्रतें दझावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृ
द्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ वादलथी मद अरु
ग्रसे तस केतु, असम्भव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं च
न्द्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलकी जनावे ॥ नित नित हानि वृ
द्धि तस दीसे, रवि उदय मद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर स
म कहु जगतारक, आर पार दोइ पावे ॥ खारापणमें कवण वडा
ई, जतु अनेक रुवावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण श
कूं, लोहने हेम वणावे ॥ न करे लोहका खमने सरिखो, गज ह
रि पशुमें गिणावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहुं तो कठिन घणेरो, अ
ग्नि सो लाय लगावे ॥ सुरतरु चिंतामणि आदि पदारथ, परभवें
काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अगजने, ति
लोकरिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर
कछू नहिं चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशति रिष्टनेमि जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गाफल मत रहे रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जा
न, जपो नेमिसरजी ॥ नेमीश्वर बालब्रह्मचारी, वडाई हे ज
गमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजयशिवा देवी नंदा,

॥ २ ॥ प्रज्जु मोहन घरके मांहि, ठहु बुलवाया ॥ पूतलिको ठघा ज्यो ढक, डुर्गंधसुं गजराया ॥ तब प्रज्जुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि नमार, अंत तज जाणां ॥ सु० ॥ ३॥ ए जोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, डुख आगर हे ॥ श्रवणवश अरणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीप कमें पतंग निज अग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जमर फूल के माहि, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मछ मरे, फरसे गज जाणी ॥ एक एक इंड्रियके,वशें प्राण गमावे ॥ जे पाचुके वश होय,क वण गति पावे ॥ सु० ॥५॥ पूरव जव तप कपट,तणे परजावें ॥ तुम हम अतर जाणो, प्रज्जुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय,सक ल शिव जावे ॥ प्रज्जु तारया बहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥६॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रज्जु अधम उद्धा रण विरुद,थें अतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि,नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास,किजो शिवधामी ॥सु०॥७॥इति॥१७॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारज ॥

॥ स्वामी सुणेने सुदरी जांखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत सा हिब साचो, रोम रोम माहि राच्यो रे ॥ जवलग में तुज जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तु अविना शी गुणधनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जेसी सिद्ध अवस्था तुमारी, तेसी मुजमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वेत कल्पना ते सहु ठोडी, जर्मकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमसु जोडी, अाज में किम करि दोडी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मो हणी नाता,त्रागा निपट यह ताता रे ॥ क्षण जर छेन देत नहिं शाता, चउगतियें थकलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनत में ए म गमायो, पारो ज्यु वुटी मूर्ढायो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्मे

रग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, स
कट सह्यां प्रभु जलधरका रे ॥ न० ॥ ३ ॥ धरणिंद्र राया तव
नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन
डुरातम, तुम साहेब शिव मदिरका रे ॥ न० ॥ ४ ॥ नील वरण
तन दमकत काया, चरणमें लञ्छन फणिधरका रे ॥ विपय क
पायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मञ्छरका रे ॥ न० ॥ ५ ॥
श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥
जव जन तारण तीरथ थाप्या, उपदेश दिया हित सवरका रे ॥
न० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका
रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास वतावो प्रभु
शिवघरका रे ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ मेरी सुनीयो करुणा नाथ, नवोदधि पार कीजो जी ॥ ए
देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानंद,नवजल वेग तारो जी ॥ करुणा
कीजो ॥ ए टेक ॥ कुण्डलपुरमें लिया अवतारा,सिद्धारथ नृप कुल
सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया,जग तज सजम मारग
गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥
अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यंच परिसह खमिया, राग द्वेप मोह
मञ्छर वमिया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आ
राममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमा
या जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश
ज्यों अमृत धारा ॥ चवदा सहस्र नये अणगारा, माहा सति
याजी छत्तिस हजारा ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महा
रीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उगणसाठ हजारा, श्रा
विका तीन लक्ष सहस्र अगारा ॥ वारा व्रत धारक परकास्या,

नये जादव कुलमें चंदा, जे नविजनके सुखकंदा ॥ हरिकी शख शालामाई, मित्र संग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक श्वाससु शख वजायो, ले धनुष टकार सुणायो, हरि सुण मन अचरिज आयो ॥ जाण्या जब नेमकुवर तांई, कृष्ण मन चिंता अधिकाई ॥ ज० ॥ २ ॥ राज लेशे इम मर आयो, छल करके फाग रचायो, जिम तिम करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति की बेटी, राजुल रूप गुणोंकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसु करी हरजीयें सगाई, किनी खुब जान सजाई, जुनेगढ आया चढाई ॥ पशुपर करुणा दिल आणी, तोरणसु रथ फेरयो जाणी ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रभु वरशी दान नित दीनो, फिर सजम मारग लीनो, तप जप अति डुकर कीनो ॥ कर्म क्षयाकर केवल पाया, प्रीत धर नवजन समझाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी हे फुरणा नारी, आखर फिर समता धारी, सातशें सखी संग नई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिछेसें मुक्ति गया सांई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यू पशुपर करुणा लाया, तिम महेर करो महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणें आया ॥ प्रभु तकसिर माफ कीजो, अचल शिव नक्ति लान्न दिजो ॥ जपो० ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ पिले रे प्याला ॥ ए देशी ॥ नजले रे वाला, वामा देवी लाला, नगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक त्रस थावर का रे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरद्या मान क मठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाल्या, करुणावत साहेब परका रे ॥ न० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ठाम दिया धरणीधरका रे ॥ नागणी पद्मावती गति सुरकी, शासनाधिष्ठ श्री जिनवरका रे ॥ न० ॥ २ ॥ प्रभुजी जगमाया ठटकाई, मा

रग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, संकट सह्या प्रभु जलधरका रे ॥ न० ॥ ३ ॥ धरणिंद्र राया तव नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन धुरातम, तुम साहेब शिव मंदिरका रे ॥ न० ॥ ४ ॥ नील वरण तन दमकत काया, चरणमें लछन फणिधरका रे ॥ विषय कषायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मछरका रे ॥ न० ॥ ५ ॥ श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥ नव जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित सवरका रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु शिवघरका रे ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ मेरी सुनीयो करुणा नाथ, नवोदधि पार कीजो जी ॥ ए देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानंद,नवजल वेग तारो जी ॥ करुणा कीजो ॥ ए टेक ॥ कुण्डलपुरमें लिया अवतारा,सिद्धारथ नृप कुल सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया,जग तज संजम मारग गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥ अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यंच परिसह खमिया, राग द्वेष मोह मछर वमिया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आराममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमाया जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश ज्यों अमृत धारा ॥ चवदा सहस्र नये अणगारा, माहा सतियाजी छतिस हजारा ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महारीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उंगणसाठ हजारा, श्राविका तीन लक्ष सहस्र अगारा ॥ वारा व्रत धारक परकास्या,

आज्ञा आराधि सर्गमें वासा ॥ जाओ मोक्ष मांईजी, आतूं कर्म घाइ जी ॥ अ० ॥ ४॥ ससार सागरमें कर्मको पाणी, जोगको कर्दम महा दुखदाणी ॥ चार कपाय वडवानल जारी, राग द्वेष माहा मगर करारी ॥ जवि रहे जर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी परम अघेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर हैं, सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, सरणे आयाने पार उतारो ॥ तुम प्रभु जहाज थावो जी,सुखें सुख ठेठ पहोंचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इन्द्रजूति अनिमानज कीनो, तिणने शिष्य करि शिवपुर दीनो ॥ चन्डकोशें मक दीनो हे आई,मेल्यो तेहि स्वर्ग आठमा माइ ॥ अपराधी अनेक ताख्या जी,कुर्गति में पडता वाख्या जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको दुष्ट अधर्मी, चउगति डुख डु पायो कुकर्मी ॥ तुम विन उंर उद्धारणहारो, दीसे नही कोई इण ससारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी, जयो में पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि समयुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणजवें ह्रिरि सिरि धी निधि वृद्धि, मन इच्छा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पूरोजी, राखो नित आप हजूरो जी ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

॥ चोवीश जिनवर,परम सुखकर,जावसु, स्तवना करी ॥ उगणीशें अडतिस, ज्येष्ठ वदि पक्ष, वार रवि नव तिथि खरी ॥ माहाराज अयवता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख,विनवे सदा ॥ आरोग वोधि, समाधि शाता, दिजो ह्रीं श्रीं, सपदा ॥ प्रभु दिजो अविचल, सपदा ॥ इति चोवीश जिनस्तवनानि सपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारम्भ ॥

॥एसे जिन एसे जिन एसे जिन हे ॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय

वोलो जिनवरकी, जो हे आशा अमर शिवघरकी ॥ज०॥ ए टेक ॥
॥ १ ॥ जेसी काति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितक
रकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्यु खसवोइ अगर तगरकी, जिणसू श्वास
सुगध मनोहरकी ॥ जय० ॥३॥ जेसी मीठी मली हे सक्करकी, वा
णी अनत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनु
त्तरकी, शोजा अनुपम प्रजुजीका नुरकी ॥ जय०॥ ५ ॥ जेसी चा
ल मराल गजवरकी, तिणसु गमनगति सुदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥
चिता आणी हे जव सागरकी, सवछरी दान इछा वजागरकी ॥
॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप अरिकी, क्रियाधारी सजम सवर
की ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जव फरकी, जव त्रिगडाकी
रचना अमर की ॥ ज० ॥ ए ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी,
दी उपदेशना पापका मरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अ
थिर हे सुरकी, तिण आगें कहा ऋद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ पर
थम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज०
॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर
की ॥ १३ ॥ होड कुण करि शके उण नगरकी, गिणती सागर आ
गें क्या बिछरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी,
कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवतारिखजी
महाराज महेरकी, कीर्त्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥
तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, जाव जक्ति करे तीर्थंकरकी ॥ ज०
॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि सपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठीका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

तत्र

प्रथम श्री अरिहंत स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे नविका ॥ ए देशी॥ श्रीअरिहंतजी वंदो रे नविका, दुरूत दूर निकंदो रे ॥ न० ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा नवके मांही ॥ गोत्र तीर्थंकर बंधन कीयो, चउद सुपन दिया माई रे ॥ न० ॥ १ ॥ शुन्न विरियां मांही जन्म नयो है, इंद्र सकल हरखाया ॥ मंदर गिरिपर महोत्सव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ न० ॥ ॥ २ ॥ नोगावली कर्म नोगवियांसुं, वरसीदान दे करकें ॥ संजम ले कर कर्मक्षय कीना, केवल पद अनुसरकें रे ॥ न० ॥ ३ ॥ पैंतिस वाणी निरवद्य जाणी, नव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दियां गणी रे ॥ न० ॥ ४ ॥ प्रथम संघयण संगण प्रनुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रनुको रूप देखीने सुर नर, रोम रोम उल्हसाया रे ॥ न० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षन स्वक्षन, जहां विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो कोस न थावे, अशोक तरु करे गया रे ॥ न० ॥ ६ ॥ देवडुंदुनि बाजे गगनमें, इंद्रध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडी बिंजाय चमरनां, तीन छत्र शिर थावे रे ॥ न० ॥ ७ ॥ योजन मंगल वाय सुगंधी, अचित्तजल बरसावे ॥ कुसुम पंच वर्णी जल थल सरखा, ढग अधिक महकावे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पंथ सो पाधरो होवे, कंटक अणी अधो थावे ॥ वैरनाव नहिं जागे जोजनमें, सिंह अजा सम नावे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आन कागल लेखण बनराइ, स्याही सागर जल लावे ॥ कोडाकोडि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ न० ॥ १० ॥ अनंत गुणातम आ

तम प्रभुकी, मूलका गुण कह्या वारा ॥ तिलोकरिख अनुरागी प्रभुको, चाहे भवजलपारा रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धस्तवन प्रारंभ ॥

॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ वदू सिद्ध सदा अविकारी, पूरो प्रभु आश हमारी ॥ ए आकणी ॥ शुक्लध्यानशे लेशी परिणामें, तिनही जोग निवारी ॥ एक समयमाही जाय विराज्या तो, सिद्धक्षेत्र सुखकारी, कर्मकी लगे न कारी ॥ व० ॥ ॥ १ ॥ सर्वार्थसिद्धसुं जोजन बारा, ऊर्ध्व दिशाके मझारी ॥ लाख पेंतालीस जोजन पहोली, चिता छत्र आकारी, जोजन दल आठ उच्चारी ॥ व० ॥ २ ॥ छेहडे माखीकी पाखसु झीणी, सुहाली घगारी मगारी ॥ अरजन सुवर्णमाही मनोहर, छबि लागे अति प्यारी, दोष नहिं दीसे लगारी ॥ व० ॥ ३ ॥ जोजनको उपरलो गाउ, भाग छठो सुविचारी ॥ सहजानंद आतम अवगाहना, परमानंद पद धारी, नहिं जहां दुःख बिमारी ॥ व० ॥ ४ ॥ पंच वर्णमें वर्ण नहिं हे, वासना दोय प्रकारी ॥ पंचरस अठ फरस न जिनके, तीनही वेद विकारी, विषयकी लाय निवारी ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ पंच प्रमाद उपाधि नही हे, चार कषायके टारी ॥ अजर अमर अविनाशी अखण्डित, निरंजन निराकारी, सदातृपत निराहारी ॥ व० ॥ ६ ॥ जाणत देखत सर्व पदारथ, निराबाध सुखधारी ॥ समकित क्षायिक अटल अवगाहन, अमूर्त्तिक गुणधारी, अलख जस ज्योति अपारी ॥ व० ॥ ७ ॥ अगरुलघु परजाय सदा थिर, नहिं जिहां तात महेतारी ॥ सुत सहोदर सज्जन दुशमन, नहिं सगपण व्यवहारी, जात कुल वर्ण न चारी ॥ व० ॥ ८ ॥ शिष्य गुरु नही पायक नायक, रूप अनूपम धारी ॥ पन्नर भेदें अगम अगोचर, नहि ऊण नहि गारी, नहिं

कोई वस्ति उजारी ॥ व० ॥ ए ॥ जावे पण आवे नही पाछा, पं चमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, ए मारा रिझ थारी, वारीमें जाउ बलिहारी ॥ व० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुगुरु पिछाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमुं पद त्रीजे, अष्ट सपदाधार जी ॥ चार तीरथके दे सुख शाता, आदेय वचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पूरण पा ले, पंच सुमतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्म ल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी, जीत्या चार कषाय जी ॥ पाच इंद्रिय गणी वश करी राखे, निरव द्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे, मिथ्या खमनहार जी ॥ वादी जनसूं हार न पावे, बुद्धि प्रबल न य सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, झलके नहिं लवलेश जी ॥ भव्य जीव तारनके कारण, साचो दे उपदेस जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, देवे आप मिटाय जी ॥ सतोशे अमृतवाणीशुं, दिन दिन पुण्य सवाय जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, ध्याता निर्मल ध्यानजी ॥ नाता ताता तोड दिया सब, करताता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥ ॥ ७ ॥ पच आचार जे पाले पलावे, टाले टलावे दोष जी ॥ पर उपगारी झाझ सरीखा, नाणे राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ ति लोकरिख कहे छत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अष्टन कर्मका बंधन तूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवझाय स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुणो चदाजी, सीमधर परमातम पासें जाजो ॥ ए देशी ॥ सुणो भवियण जी, चउथे पद उवझाय नमो सुख कारणा ॥ शुद्ध

श्रद्धा जी, बोध देइनें मिथ्या भरम निवारणा ॥ ए आंकणी ॥ जे अंग इग्यारका धारक छे, चउदा पूरव सुविचारक छे, शुद्ध पाठ अर्थ उच्चारक छे ॥ सु०॥१ ॥ जे सातुइ नयका जाणक छे, निश्चय व्यवहार वखाणक छे, जे शुद्ध अशुद्ध पहिचाणक छे ॥ सु० ॥ २ ॥ जे नीति वात वतावे छे, सब मिथ्या भर्म छडावे छे, भिन्न भिन्न करकें समझावे छे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणनें आवे छे, शुद्ध पात्र देखिने पढावे छे,अज्ञानपणु तस ढावे छे ॥सु०॥ ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर छे, तप संजम गुण रतनागर छे, उत्पात माहाबुद्धि नागर छे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे छे, सत्य न्याय वताई हरावे छे, फिटा हुइ करकें जावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जे जिन जेवा छे, वाणी सत्य निरवद्य मेवा छे, हितकारी जेहनी सेवा छे ॥ ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जे गुण गावे छे, ज्ञानावरणीने खपावे छे, अनुक्रमें मुक्ति सिधावे छे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम साधु स्तवन प्रारंभः ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिनपाई,जिणरे कमी रहे नही काई ॥ ए देशी ॥ वंदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, जिणसु भवभवमें सुख शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार असार जानिकें, लीनो संजम भारो ॥ तप जपकी खप करता विचरे, निरवद्य वेण उच्चारो ॥ ॥ वं० ॥ १ ॥ एक विचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ तीनहु अराधे तीनकें साधे, त्रिहुं गाले चिहु ढाले ॥ व० ॥ २ ॥ चार करे नही चार धरे चित्त, पंच पाले पंच छोडे ॥ छ प्रतिपालन छ प्रतिपाले, छ में तीनके मोडे ॥ व० ॥ ३ ॥ छ जाणे अरु छके त्यागे, सात विशुद्धि लावे ॥ सात सातके दूर निवारे, तजे आठ आठ चावे ॥ व० ॥ ४ ॥ ॥ पाले नव टाले नव जाणे,

दमण करे दश सेवे ॥ दशसो दशसो बोले नहि मुखसें, दस बा रासो कहेवे ॥ व० ॥ ५ ॥ हत्या करण करावण कामी, फूल कहे जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, परधि प्रेमज गाणी ॥ वं० ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महामानी निर्मानी ॥ मांस नखे नित्य मास नखे नही, मद्यथी तृपति आणी ॥ व० ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सहु पासें ॥ मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य नासे ॥ व० ॥ ८॥ पर दुःख देखी शाता चावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख अनुभवरस शैली, समझ कही सुविचारी ॥ व० ॥ ए ॥ सुगुण समजी शीश नमावे, निगुणाने मन हांसी ॥ एसा मुनिवर जो कोइ सेवे, सो होशे शिववासी ॥ व० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पच नाम, नवकार जगमें, सार इण सम,को नही ॥ जे समरे नावें, सुख पावे, विघन सब, नासे सही ॥ ॐ णीशें सेंतिस,विजय दशमी,तिलोक रिख,स्तवना करी ॥ नव नव सरण, होजो मुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥प्रभु अधि० ॥ ॥ १ ॥ इति पच परमेष्टिस्तवनानि संपूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४ए ॥

॥ साधु स्तवनकी दुसरी गाथासू नवमी गाथासूधीको कठिणअर्थ होवाथी ते कहे छे

(एकविचारे के०) एकतत्त्व विचारे (एकनिवारे के०) एकदोष निवारे (दोसयमपाले के०) तप अने संजम पाले (दोटाले के०) राग अने द्वेषने टाले (तीनकेआराधे के०) ज्ञान दरिसण चारित्र ए त्रण ने आराधे (तीनकेसाधे के०) मन वचनकायाकों साधे (त्रिढुंगाले के०) तिन गर्व गाले (चिहु ढाले के०) चारकषाय गिरावे ॥ २ ॥ (चारकरेनहि के०) चार विकथा न करे (चारधरेचित्त के०) चार सरणा प्रत्यें चित्तमे धारे (पंचपाले के०) पंचमहाव्रत पाले

(पचलोडे के०) पचेंडीयने पीले (ठप्रतिपालन के०) ठव्रत पालक मुनिराज ते (ठ प्रतिपाले के०) ठ कायनी दयापाले (ठमेंतीनकुमोडे के०) ठ लेश्यामेंस्रु तीन अधर्मलेश्याने वरजे, ॥ ३ ॥ (ठजाणे के०) षट्द्रव्य नेद जाणे (अरुठकेत्यागे के०) वली ठ अव्रत त्यागे (सातविशुद्धिलावे के०) सात पिन्डेशणा विशुद्ध अहार लावे (सातसातके दूरनिवारे के०) सात नय सात व्यसन वेगलां करे (तजेआठ के०) आठ मद ठोडे (आठचावे के०) आठप्रवचन पांचसमिति तिन गुप्ति, ए आठकी वठना करे ॥ ४ ॥ (पालेनव के०) नववाड ब्रह्मचर्य पाले (टाले नव के०) नवनि याणां टाले (जाणे के०) नवतत्त्व जाणे (दमन करे दश के०) पांच इन्द्रियो, चार कषाय, एक मन ए दशने दमे (दशसेवे के०) दश प्रकारें श्रमण धर्म सेवे (दशसोदशसोबोले नहि मुखसें के०) दश प्रकारें असत्य दश प्रकारें मिश्र, ए नाषा न बोले (दशवार सोकहेवे के०) दश प्रकारें सत्य, वार प्रकारी व्यवहारी नाषा वोले ॥ ५ ॥ (हत्याकरण के०) आठ कर्म रूप शत्रुने घात करे (करावण कामीके०) कर्मरूपी शत्रुको नाश करावण कामी (कूठ कहे जे जाणी के०) जे पदार्थने मृषा जाणे तेने कूठो कहे (अदत्तहेरे परकोहित आणी के०) अपराया जीव अदत्त ग्रहण करे ते ठोडावे तथा पुजल चोरी ठे ईम ग्रहे (परधी प्रेमज गाणी के०) श्रीजिन वाणी रूप धी जे बुद्धि तेथी प्रेम आणे ॥ ६ ॥ (धन अखूट के०) तप जप रूप धन नन्डार युक्त ठे (अधर्मासाध्यानी के०) अधर्मास्तिनो गुणथिर ठे तेम तेस्थिर ध्या नना करण हार ठे (माहामानी के०) श्रीजिननी आज्ञा माने ठे (निर्मानी के०) अहंकार रहित ठे (मासनखे नित्य के०) मास तप करी शरीरको मांस निरंतर सोसे (मांसनखे नहि के०) मांसङ्गाठ निक तथा वार मास नखे नही (मद्यथी के०) आठ मद्यथकी (तृप्ति आणी के०) इष्ठा नहि ॥ ७ ॥ (हय गय रथपायकतजदीना के०)

लौकिक हाथी,घोडा,रथ,पायक,ए चार दल गोभ्यां छे जेणें एवा (लीनासोसद्वपासें के०) लोकोत्तर चार ते मनरूप घोडो धीरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, भावरूप पेदलत सदा राखे छे. (मातपिता नारी सुत त्यागी के०) सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीधो छे जेणे एवा (अनुराग नित्यभासे के०) अनुरागी ते दया रूप माता, ज्ञान रूप पिता, सुमति रूप नारी,छुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥८॥ (परडुख देइ शाता चावे के०) कर्मवर्गणा कर्मचेतना डुख देवे अने जीव चेतनाके शाता वछे, इत्यादिक गुणनाधारक छे (तिलोकरिख अनुभव रसशैलि के०) त्रिलोकरिख नामा कवि कहे छे, के अनुभवरस अतरज्ञानकी शैली जे विवेकता तेनी (समक कही सुविचारी के०) समकि बोधदृष्टिकरिने कही विचारी छे ॥९॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ राग प्रभाती ॥ श्रीअरिहंत गुण गावो रे भविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आकणी ॥ रिषभ अजित संभ व अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु ध्यावो रे ॥ श्री सुपार्श्व चंद प्रभु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुवि धि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित गावो रे ॥ अन त धर्म श्रीशाति जिनेसर, शांतिकरण जग चावो रे ॥ श्री अ० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुव्रत करण भमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी,सासणपति जिम भावो रे॥श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवीश जिन संजम धारी, दियो करमके घावो रे ॥ के वल लेईने तीरथ थाप्या, भवजल तारण नावो रे ॥श्री अ०॥४॥ होय अलोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहा आवो रे ॥ अज र अमर अविनाशी निरंजन, सकल जगतका रावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लिया सब विघन विनासे, न रहे डुखको दावो रे॥

शत्रु सो मित्री सम वरते, जो सुमरन मन ध्यावो रे ॥श्री अ०॥६॥
संवत् उगणीश आडतीस शालें, विजयदशमी दिन गावो रे ॥ दिन
दिन विजय दोय प्रभु नामें, नव नवमें सुख पावो रे ॥ श्रीअ० ॥
॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, नव नवमें सुऊ थावो रे ॥
शिवसपत अरु द्यो तुम दरिसण, नित नित मगल वधावो रे ॥ ८ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ भजो रे भविक
जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥
॥ भ० ॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव जगताता, अभिनदनजी आ
णदके दाता ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति पदम पदम रग राता, सुपा
र्श्वचदा प्रभु सवकु सुहाता ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस
जो घ्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमल
अनत धर्मधन माता, शांति जिनद करी हे सुखशाता ॥ भ०॥५॥
कुंथु अर मल्लि मलधाता, मुनिसुव्रत व्रतमें रग राता ॥भ०॥ ६ ॥
नमि नेमी पारस चित भाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ भ०
॥ ७ ॥ विहरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बधु सति माता
॥ भ० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित्त घाता, तिलोकरिख ताकुं
शीश नमाता ॥ भ० ॥ ए ॥ २ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणद
जे जिणद जे जिणद देवा, ऊठि प्रभात समर नाथ,श्रीऋषभ देवा
॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाभिराजा, जननी हे मरुदेवा ॥ देही क
चन रूपभ लछन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ जुगला
धर्म निवार कियो प्रभु, छे कुलगरकी ठेवा ॥ सजम लीधो श्री
जिन भावें, कर्म अरिने दपेवा ॥ जे० ॥२॥ केवल ले प्रभु देशना

दीधी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी,भ वजल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि सगें अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥ ७ दिन संथारे मुक्त बिराज्या, सुखि अनंत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चाकर, तु चरणारज खेवा ॥ जिम तिम करि भव पार उतारो, दिजो अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद वीजु ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीमें गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी,नयनजण जगनाण ॥ गोत्रतीर्थकर बाधिने,उपना सर्वार्थ सिद्धविमाण जी ॥ अपाढ विदि चोथ तिथि जाण जी, थयो प्रभुको चवण कल्याण जी, नाभि नामें नृपति कुज आणजी, माता मरुदेवीजी बखाणजी ॥ श्रीकृषभ जिणंद जीसु वदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्रि विदि तिथि अष्टमीजी, शुभवेला शुभ चार ॥ जनम थयो जगदीशको, उपनकुमारी आइ तिणवार जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी,आया इंद्र हरषें अपार जी, कियो मोछव मेरुमऊार जी, सर्गें गया साधि व्यवहारजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ वृषभ स्वपनलंछनथकी जी, रिषभ कुमर दीयो नाम ॥ पंचसें धनुष उचापणे प्रभु, तन कचन अभिरामजी, वि श लख पूरव कुवर पदगाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वाम जी, जुगलधर्म निवार्यो तमाम जी, वसार्या नगर पुर गाम जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ कला बहुत्तर पुरषनी जी, चोशठकला वली नार ॥ वरन चार थापन किया प्रभु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि नौमी तिथि सारजी,छठ तपस्या लिवि धार जी, चार सहस्र पुरुष परिवार जी,लीनो प्रभु सजम भार जी ॥श्री०॥ ३ ॥ बरस दिव सने पारणे जी, लियो इक्षुरस आहारजी ॥ छद्मस्थपणे परिसा सह्या प्रभु,सवछर एक हजार जी,फागुण वदी ग्यारस जहार जी,

घनघातिक हण्यां कर्म चार जी,थया प्रभु केवल धारजी,उपदेश दीयो हितकार जी ॥ श्री० ॥४॥ चार तीरथ प्रभुथापीया जी,ताख्यां बहु नर नार ॥ अष्टापद अणसण कर्यां, सार्थे दश सहस्र अणगार जी, ठ दिनको आयो सथारजी,माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु पहुता मुक्ति मझार जी, पाट असखें वरी शिवनार जी ॥ श्री० ॥५॥ गजहोदे मातेश्वरी जी,पामी मोक्ष डुवार ॥ नरत आरिसा नवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी, सहु शालि रूख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, मा हारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुझ नवोदधि पारजी ॥ श्रीरिषभजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीसुं ॥

॥ श्री वीरजिणंद सासण धणी, जिन त्रिभु वनसामी ॥ ए देशी ॥

॥प्रणमु आदिजिणद,युग्मचरणांबुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही रह्यो, गुणवास आचरणो ॥ पूरवनवें नए पाच,पूर्वेचक्रीपद त्याग कीना ॥ गोत्रतीर्थकर बांध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ अषाढवि दितिथि चोथमें ए,आधिरेण मझार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणु, नांख्युं सूत्र मझार ॥ नां०॥ १ ॥ नाभिरायकुलनद, मात मरुदेवी जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अधरयणी गनी ॥ कृष्ण अ ष्टमी चैत्र, मास शुभवेलामांई ॥ जनम्यारिषभ जिणद, छपन कु मारी आई ॥ जनमकारज तिणे सहुकियो ए, आसण चल्यो ति णवार ॥ शक्रइन्द्र चल आईया, आणी हरष अपार ॥ श०॥ २ ॥ मूकी निद्रा मातवैक्रियें,निजरूपज धरिया ॥ पच रूप करी इन्द्र प्रभु, लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरिसुदरसण जाइ,इन्द्र कर्यो मोछव हर्षे॥ प्रभुको रूप अनूप, नेत्र अनिमेषित निरखे ॥ प्रभुके मेल्या फिर

मातपें,रचि वनिता पुरसाज ॥ इह गया निजस्थानकें, करि मोछव सव साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषजवर उज्ज्व ल दीठो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीठो ॥ तिण कारण करि नाम,दियो प्रनु रिषन कुमार ॥ कचन वरण शरीर, वृ षन्न लढन पग धार ॥ पाचशें धनुष उचापणे, देह मान जिन राज ॥ वीश लाख कुवर पदें, रह्या श्री गरिव निवाज ॥ क०॥४॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, छुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण तादिक वहोंतेर,कला तस वोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस व, शिल्प कर्म सव विध स्थापी ॥ जरतादिक सो नंद, राजश्री स हुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ठ ठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम जार॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली छ ह मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें हस कुंवर, इक्षुरस वहोराया ॥ सहस्र वरस उद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चड जेमशी तल कह्या ए, सागर जेम गन्नीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि चरया श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर वाहिर, अष्टम तप करकें आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेठे विराज्या ॥ ध्यायो छ क्लज ध्यान,पाय तिजें छुन्न साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए,प्रा त समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तव उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ रिषन सेणादिक जाण, चोराशी गणधर जारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ धिकारी ॥ ब्राह्मी सुदरी धन साधवी ए, सव सतियां शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा र सहस्र साढी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज,सहस्र नव सोहत नारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ठ, शें विश सह
स्र कहीजें ॥ मन परजव वारे सहस्र, ठशें पचास लहीजें ॥ केवल
नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वदूं नित नावस्थु,
पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ए ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साढी
ठसें कहीयें ॥ नवशें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥
साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण
धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सहु नावथुं ए,जिनवर आ
ज्ञाधार॥सार्थें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ के०॥१०॥
बाराव्रतका धार, सिघसदिक श्रावक नारी ॥ पाच सहस्र तिन
लक्ष, सवे इकविशगुणधारी ॥ सुनद्रादिक पच लाख, श्राविका
चोपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि, कही गुणवती नारी ॥ क
री करणी शुद्ध नावथुं ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सख्या तीरथ
तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव
सर्व, सजम केवलपद पाली ॥ नव्य जीव उपदेश, दियो कुगति
मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ,अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्य
क आसण करि ध्यान, अणसण ठ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण ते
रश तिथि ए, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो,
जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट
केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रभुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥
श्रीनरतेश्वर नुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रभुनंद,
सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणव
त ॥ प्रणमुं आदि जिनेंद्रजी, नय नजण नगवत ॥ न० ॥ १३॥
पटदरिसण सिद्ध आदि,जिणवर सुखकारी॥ सब देवा सिरमोड,होड
कोन करे चरणारी ॥ अरि करी नय दुःख दूर,होय जिण समरथ
करता ॥ प्रभुगुण अनत अपार, पार नहि आवे उच्चरतां ॥ सुगु
रु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रनु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड साग

मातपें,रचि वनिता पुरसाज॥ इह गया निजस्थानकें, करि मोछव सव साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषजवर उज्ज्व ल दीगे ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीगे ॥ तिण कारण करि नाम,दियो प्रजु रिषज कुमार ॥ कचन वरण शरीर, वृ षन लबन पग धार ॥ पाचशें धनुप उचापणे, देह मान जिन राज ॥ वीश लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिव निवाज ॥ क०॥४॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण तादिक वहोंतेर,कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस, ठ, शिल्प कर्म सव विध स्थापी ॥ जरतादिक सो नंद, राजश्री स हुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ग ठ तप धारी निकल्या, लीनो सजम जार॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्वे, पाली ष ट् मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इक्षुरस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चह जेमशी तल कह्या ए, सागर जेम गजीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि चख्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर वाहिर, अष्टम तप करके आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेवे विराज्या ॥ ध्यायो शु क्लज ध्यान,पाय तिजें शुन साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए,प्रा त समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तव उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ रिषज सेणादिक जाण, चोराशी गणधर जारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ धिकारी ॥ ब्राह्मी सुदरी धन साधवी ए, सव सतियां शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साध्वुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा र सहस्र साढी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज,सहस्र नव सोहत नारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ठ, शें विश सह स्र कहीजें ॥ मन परजव वारे सहस्र, ठशें पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वंदू नित नावश्च, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ए ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साडी ठसें कहीयें ॥ नवशें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सहु नावश्च ए,जिनवर आ ज्ञाधार ॥ साथें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ के० ॥ १० ॥ वाराव्रतका धार, सिबसदिक श्रावक नारी ॥ पांच सहस्र तिन लक्ष, सवे इकविशगुणधारी ॥ सुनज्ञादिक पंच लाख, श्राविका चोपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि, कही गुणवती नारी ॥ क री करणी शुद्ध नावश्च ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सख्या तीरथ तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्वे, संजम केवलपद पाली ॥ नव्य जीव उपदेश, दियो कुगति मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ,अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्य क आसण करि ध्यान, अणसण ठ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण ते रश तिथि ए, प्रनु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रनुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीनरतेश्वर नुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रनुनद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणव त ॥ प्रणमु आदि जिनेंद्रजी, नय नजण नगवत ॥ न० ॥ १३॥ षटदरिसण सिद्ध आदि,जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड,होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी नय डुख दूर,होय जिण समरण करता ॥ प्रनुगुण अनत अपार, पार नहि आवे उच्चरतां ॥ सुगु रु शारदा स्वयमुखे ए, करे प्रनु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड साग

मातपें,रचि वनिता पुरसाज ॥ इड् गया निजस्थानकें, करि मोछव सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषनवर उज्ज्व ल दीठो ॥ तेह्नो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीठो ॥ तिण कारण करि नाम,दियो प्रज्ञु रिषन्न कुमार ॥ कंचन वरण शरीर, वृ षन्न लछन पग धार ॥ पांचशें धनुष उचापणे, देह मान जिन राज ॥ वीश लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिब निवाज ॥ क०॥४॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, युगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण तादिक बहोंतेर,कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस ठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ न्नरतादिक सो नंद, राजश्री स हुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ब ठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम न्नार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली शु ध मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इक्षुरस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चड् जेमशी तल कह्या ए, सागर जेम गन्नीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि चर्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेठे विराज्या ॥ ध्यायो शु क्लज ध्यान,पाय तिजें प्रुन्न साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए,प्रा त समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तब उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ रिषन्न सेणाविक जाण, चोराशी गणधर न्नारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ धिकारी ॥ ब्राह्मी सुंदरी धन साधवी ए, सब सतियां शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा र सहस्र साहे सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज,सहस्र नव सोहत नारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ठ, गें [illegible]
स्त्र कहीजें ॥ मन परजव वारे सहस्र, ठरों पचास नहींजें । [illegible]
नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वड [illegible]
पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ए ॥ चर्चावादी [illegible]
ठसें कहीयें ॥ नवठों बाविश हजार, अनुत्तर [illegible]
साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विगर्न। [illegible]
धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमु [illegible]
ज्ञाधार॥साथें रह्या जिनराजने, करता [illegible]
बाराव्रतका धार, निवसदिक श्रावक नार । [illegible] दे
लक्ष, सवे इकविशगुणधारी ॥ सुलसा [illegible] ते
चोपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि [illegible] अरु
री करणी शुद्ध जावथ्थु ए, पाई अमर [illegible] नव
तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ [illegible] सा
सर्व, सजम केवलपद पाली ॥ [illegible] ति ठ
मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि [illegible] नरायो
क आसण करि ध्यान [illegible] चा ॥
पंश तिथि ए, प्रभु पहुता नि[illegible] ॥६॥
[illegible]

र लगें, तोहि न आवेजी पार ॥तो०॥१४॥ मुजमति छे अति हीन, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कह्या गुण संमित नावें ॥ चदनवृक्ष भुजंग, जीवसग कर्मेज लागे ॥ जिनवर जप छे गरुड, करम अहि दूरा भागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध भाव ॥ भीम भवोदधि तारवा, परतख जिन जप नाव ॥ त० ॥१५॥ सवत उंगणीशेंत्रीश, मास आपाढ उजारी ॥ तिथि तेरश सोमवार, सहेरमदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण बिरुद, सुणी प्रभुसरणो लीनो ॥ जन्म मरण रोग सोग, दु ख ससार सुंविहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिने, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रभु मुज भणी, आपो अविचलगाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ केरबानी देशी ॥ जे जे रहो प्रभु ताहरी, मारी बदणां लीजो स्वीकार भलां जी ॥मारी० ॥१॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, अधम उद्धारणहार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जे० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चदा प्रभु,अष्ट कर्म किया छार ॥ भ० ॥अ० ॥जे० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ भ० ॥ ज० ॥ जे० ॥ ४ ॥ विमल अनत श्रीधर्म शांतीश्वर, शांति करि छे ससार ॥ भ०॥ शा०॥ जे०॥५॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ भ० ॥ क० ॥ जे० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस माहावीरजी, सासणका सिरदार ॥ भ० ॥ सा० ॥ जे० ॥ ७ ॥ कर्म खपाई केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ भ० ॥ शु० ॥ जे० ॥ ८ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दियो छे ससार ॥ भ० ॥ त्या० ॥ जे० ॥ ए ॥ संजम करणी भवजल तरणी, करि अति दुकरकार ॥ भ० ॥ क० ॥जे० ॥१०॥ भविजनने उपदेश सुणायो, वाणी ज्यों अमृतधार ॥ भ० ॥ वा० ॥ जे० ॥ ११ ॥

सूत्र चारित्र धर्म प्ररूप्यो, थाप्यां तीरथ चार ॥ न० ॥था०॥जे० ॥१२॥ होय अजोगी मुगति सिधाया,अजर अमर अविकार ॥न० ॥ अ०॥ जे०॥१३॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो न वजल पार ॥ नवांजी प्रभु तारो ॥न०॥ता०॥जे०॥१४॥ इति ॥१॥

॥ पद बीजु ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणां ॥ ए देशी ॥ रिषभ अजित स नव सुखकारी,अभिनंदनकी बलिहारी ॥ सुमति पदम प्रभु जग रा या, जाये आठु कर्मकू घाया ॥ १ ॥ सुपारस चंदा प्रभु देवा, चा हु नव नवमें तुम सेवा ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपू ज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनंत धर्म धन दाता, शांति नाथजी करो सुखशाता ॥ कुंथु अर मल्लिजी महाराया, प्रभु आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वंदू, नव नव दुःख दूर निकंदू ॥ नमी नेम पारस जसवंता, महावीर प्रभु सा सण कंता ॥ ४ ॥ प्रभु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रभु परमपति उ पगारी ॥ प्रभु तुम बिन अति दुःख पायो, चारुगतिमें गभरायो ॥५॥ अब जाण्या में साहिब साचा,सब देव जाण्या अन्य काचा ॥ इम जाणी तुम सरणमें आयो, तिलोक वदे मन वच कायो ॥६॥

॥ पद त्रीजु ॥

॥ मल्लिनाथ मोह्यो रे,खटराजिद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं नि त पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, भविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपार्श्व चंदा प्रभु, आठ कर्म रिपु घाया जी ॥ प्र०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, राग द्वेषकू हठाया जी ॥ प्र० ॥३॥ वि मल अनंत धर्मनाथ शांति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशे दिपाया जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेम पारस महावीर जी, सासणपति म

न नाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी थापना, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रभुकू, वदू मन वच काया जी ॥ प्र० ॥९॥ इति ॥३॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ मेरी मेरी करता जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जय जिनदा जय जय जिनदा, टाले चउगति नव नव फदा ॥ ज०॥१॥ रिषन अजित सनव सुखकारी, अनिनदण चरणन वलिहारी ॥ज०॥२॥ सुमति पदम सुपारस सामी, चदा प्रभु धन अतरजामी ॥ ज०॥ ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमु किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनत धरम धनदाता, शातिजिनद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि गुणवता, श्रीमुनि सुव्रत शिवपुर कता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन नाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग ठटकाई, लियो सजम तन मन उलसाइ ॥ ज० ॥ ८ ॥ जप तप किरिया करि अति नारी, कर्मशत्रु सव दिया निवारी ॥ ज०॥९॥ केवलज्ञान प्रगट्यो जिण वारी, दइ उपदेशना नवि हितकारी ॥ ज० ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिण वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणो तुमारो, जिम तिम करि नव पार उतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥४॥

॥ पद पांचमु ॥

॥ शांति चरणारी जाउ वलिहारी ॥ ए देशी ॥ केलो वदणा स्वामि हमारी, तुमारे चरण वलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिषन अजित सनव अनिनदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चदा प्रभु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रभुजी पूर्ण कृपगारी ॥ के० ॥१॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मधारी ॥ शाति

जिनद सुखकद जगतमें, मेट दिनी सव मारी ॥ हरो मेरी विपत्त बिमारी ॥ के० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडकें राजकुमारी ॥ नाथ तुम करुणा जंमारी ॥ के० ॥ ३ ॥ वे वारसके वारस पारस, पचपरमेष्ठी वचारी ॥ नाग नागणी जलत वचाया, किना सुर अवतारी ॥ महिमा जगमें अति थारी ॥ के० ॥ ४ ॥ शासननायक वीर जिनेश्वर, दृढ क्षमा प्रजु धारी ॥ केवल लई प्रजु धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी ॥ तीरथ थाप्यां प्रजु चारी ॥ के० ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रजु जोग त्याग कर, पहुता हे मुगति मजारी ॥ अनत सुखामांही जाइ विराज्या तो, निरंजन निराकारी ॥ रह्या लोकालोक निहारी ॥ के० ॥ ६ ॥ मोह मायामांहि उलज रह्यो में, पायो छुंडु ख अपारी ॥ तुम सरण बिन चउगति जटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी ॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥ के०॥७॥ अष्ठन करम कछु दूर जयासु, वाणी लगी प्रजु प्यारी ॥ अधम उधारण बिरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रजु म्हारी ॥ के० ॥ ८ ॥ मुऊ सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरिखो दातारी ॥ जिम तिम करि जव पार उतारो, या माग रिऊवारी ॥ अरज लीजो अवधारी ॥ के० ॥ ए ॥ उगणीशें अडतिस माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवल कोटि पेठमें, जोड करी हितकारी ॥ तिलोकरिख कहे सुविचारी ॥ के० ॥१०॥५॥

॥ पद ठठु ॥

॥पणीयारीकी देशी॥ जय जय आदि जिनेश्वरु ॥ माहाराया रे॥ जव जव डुःख निकद ॥ तार माहाराया रे ॥ अजित जीत करी कर्मसु ॥ मा० ॥ प्रजु जविजनके सुखकद ॥ ता० ॥ १ ॥ सजव स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अजिनदन हितकारीया ॥ मा० ॥ सुमति सुमति दातार ॥ ता० ॥ २॥

पदम कदमको आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवत ॥ ता० ॥ चद आनद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सुविधिनाथ बुद्धि दीजीयें ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ता०॥४॥ विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनत अनंत गुणधार ॥ ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शाति शाति दातार ॥ ता० ॥५॥ कुंथुनाथ करुणानिधि ॥मा०॥ अरनाथजी जगजाण ॥ ता० ॥ मल्लिनाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ ता० ॥ ६ ॥ नमुं नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार ॥ ता० ॥ तोरणसु पाछा फिरया ॥ मा० ॥ जाए चढ्या गिरनार ॥ ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयकार ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार ॥ ता० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम बिन नहिं को आधार ॥ ता० ॥ तिलोकरिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार तार प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ९ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ देशी वणझारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नद, प्रणमु आदि जिणदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित सभव हितकार, अभिनदन सुखकद जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपदम सुपास, चदा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयास, वासुपूज्य उपगारीया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनत धर्म नाथ, शाति जिनद शाता करो ॥ जि० ॥ जि० ॥ कुंथु अर मल्लीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी नेमी जिनराज, पारसनाथ करुणा धणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ वर्द्धमान सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥४॥ जि० ॥ घन घातिक चउ कर्म, हणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दी

नो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन कियां ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ थया निरंजन निराकार, शिवरमणी प्रभुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि कृपा करी ॥जि०॥६॥इति॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ तुं धन तुं धन तु धन तु धन,शांति जिनेसर सामी ॥ ए देशी ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भाव धरी ॥प्रा०॥ध्रु०॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन,सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदंत हण्या कर्म अरी ॥ प्रा०॥१॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य,विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर,केवल लह्यो भव उंध तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निश्चे मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ पद नवमु ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे भाइ, दिन दिन संपति पामो सवाइ ॥ भय सब जावे रे भागी, महा डुशमन होवे अनुरागी ॥श्री० ॥ १ ॥ रिखभ जिनेश्वर रे पहेला,अजित जिनंद नमु अलवेला ॥ संभव स्वामी रे गावो,अभिनंदनके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रभु रे वंदो, सुपार्श्व नाम सदा सुखकंदो ॥ चंदा प्रभु पुष्पदंत रे सामी, शीतल श्रेयांस नमु शिर नामी ॥ श्री०॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ताता,विमल अनंत धर्म शिवदाता ॥ शांति कुंथु अर मल्लि रे देवा, मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रभु तुम शिवपुर रे वसि

या, तुम दरिसण नामें निशिदिन तसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिंदेमें थाणी ॥ तिलोकरिख वदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री०॥६॥ इतिपद

॥ पद दशमुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमु आदि जिनदने जी कांइ, अजित नाथ महाराज ॥ सनवगुण सनव करोजी काइ, अनिनद न जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया,एस वतावो मुगति महेलकी॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रन जगदीश ॥ श्रीसुपास च दा प्रज्ञुकु, नित्य नमाउ शीस हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मनाथ ॥ शाति कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, वदू में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा न मिनाथ निरुपम, वाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान सासनका साहेव, हण्यां घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पाय नेजी कांइ, दाख्यो श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उ थापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति बिराज्या, अ जर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरजन नवडु स नजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो नवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमु ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ रिखन्न अजित सन्नव सुखकार, अनिनदन प्रज्ञु जग आधा र ॥ सुमति पदम प्रज्ञु तारण जहाज, प्रणमु श्रीचोवीशे जिनराज ॥१॥ सुपारस चद्रप्रन स्वाम, सुविधि शीतल जिन करू प्रणाम ॥ श्रेयास वासुपूज्य सारो काज ॥प्र०॥२॥ विमल विमलमति दाय क देव, अनत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शाति करो श्रीशांति मा हाराज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत

त्रिजग नाण ॥ नमी नेम राखो मुझ लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारस नाथ महावीर दयाल, जवडुख जजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नगरको लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम विन नहि कोई तारणहार, तिलोकरिख इम निश्चे धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥६॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ रुषज अजित सजव नमु सजव नमुं जी कांई, अजिनदन जस धार ॥ सुमति पदम प्रजु वदीयें वदीयें जी कांई, सुपारस जिन हितकार ॥ करुणा सागर तारजो तारजो जी प्रजु, जक्तवत्सल जगवत ॥ क० ॥ १ ॥ चदा प्रजु सुविधिशिरे सुविधिशिरे जी कांइ, शीतल जिन श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल नमुं विमल नमुं जी कांइ,अनतनाथ अवतंस ॥क०॥२॥ धर्म शांति कुंथु नमुं कुथु नमुं जी कांइ, अरनाथ जी जगतात ॥ मल्लिनाथ उंगणीशमा उंगणीशमा जी काइ, प्रजावतीना अगजात ॥ क० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत मुनिसुव्रत धणी जी कांइ, नमिनाथ जस धार ॥ रिष्टनेमी करुणा धणी करुणा धणी जी कांइ, पशुवाकी सुणिहे पुकार ॥क०॥४॥ पारस पारस सारीखा सारिखा जी कांइ, बलता नागिणी नाग ॥ परमेष्ठी सुणाइ सुरपद दीयो सुरपद दीयो जी काइ, कीना तिण महाजाग ॥ क० ॥ ५ ॥ महावीर शासन धणी शासन धणी जी काइ, हद क्षमा प्रजु धार ॥ केवल लेई मुगतें गया मुगतें गया जी कांइ, पाया पद अविकार ॥ क० ॥६॥ तुम शरणा विनु हुं जम्यो हुं जम्योजी कांइ, पायो डुख अपार ॥ तिलोकरिख कहे में लियो में लियो जी प्रजु,चरण शरणको आधार ॥ क०॥७॥

॥ पद तेरमु ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ रिखज अजित सजव नमु, अजिनदन श्रीकत ॥ जिनेश्वर ॥ सुमति पदम सुपास जी, कीधो करमको अत ॥जि०॥ मोय तारो किरपा करी ॥१॥ ए आं

या, तुम दरिसण नामें निशिदिन तसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिर्दैमें थाणी ॥ तिलोकरिख वदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री०॥६॥ इतिए॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमु आदि जिनदने जी कांइ, अजित नाथ महाराज ॥ सनवगुण सनव करोजी काइ, अजिनंद न जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया,एस वतावो मुगति महेलकी॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रन जगदीश ॥ श्रीसुपास चं दा प्रनुकु, नित्य नमाउं शीस हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मनाथ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, वदूं में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा न मिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान सासनका साहेब, हण्या घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पाय नेजी कांइ, दाख्यो श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उ थापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति बिराज्या, अ जर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरंजन नवडुख नजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो नवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमु ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ रिखन अजित सनव सुखकार, अनिनदन प्रनु जग आधा र ॥ सुमति पदम प्रनु तारण जहाज, प्रणमु श्रीचोवीशे जिनराज ॥१॥ सुपारस चंद्रप्रन स्वाम, सुविधि शीतल जिन करू प्रणाम ॥ श्रेयास वासुपूज्य सारो काज ॥प्र०॥२॥ विमल विमलमति दाय क देव, अनत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शाति करो श्रीसांति मा हाराज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत

श्रीश्रेयास वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवत ॥ अनत ना थ प्रभु धर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीशांति ॥ सा० ॥ २ ॥ कुंथु नाथ प्रभु करुणासागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनि सुव्रत जी, नित्य नमावु शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकवीशमा नमि नाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिरया प्रभु, शि वरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारिखा प्रभु, ना वारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका स्वामी, प्रणमु जोडी हाथ ॥सा०॥५॥ तुम विन पायो दुःख अनता, जनम मरण जंजाल ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो दीनदयाल ॥सा०॥६॥

॥ पद शोलमु ॥

॥ चूंमी रे चूख अनागणी ॥ ए देशी ॥ प्रभु समरो नित्य ना वहुं, रिषभ अजित सुखकार ॥ लाल रे ॥ सभव अभिनदन भला, नाम लिया निस्तार ॥ लाल रे ॥ प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपास जी, चदा प्रभु चद जेम ॥ला०॥ भवदुःख ताप बुझावणा, भविजनने करे खेम ॥ ला० ॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जी, वासुपूज्य शिवकत ॥ ला०॥ विमल अनत धर्म धारणा, शातिकारक श्रीशाति ॥लाल रे ॥ प्र० ॥३॥ कुंथु अर मल्ली नमुं, मुनिसुव्रत सुखदाय ॥ ला० ॥ एकवि शमा नमिनाथ जी, भक्तवत्सल जिनराय ॥ लाल रे ॥प्र०॥४॥ रिष्टने मि जिनवर जयो, पशुवाकी सुणी पुकार ॥ला०॥ तोरणसूं पाछा फिरया, शिववधूना भरतार ॥ ला०॥ प्र०॥५॥ पारस पारस सारि खा, सभलाया नवकार ॥ला०॥ वचाया नाग नागिणी, दियो सुर पद अवतार ॥ ला० ॥ प्र० ॥६॥ वर्धमान शासन धणी, दीनाना थ दयाल ॥ला०॥ केवल कमला लेइने, लीना सुख विशाल ॥ला० ॥ प्र० ॥७॥ ए चोविश जगदीश जी, परमगुरु जगनाथ ॥ ला० ॥ तिलोकरिख कहे तारजो, वीनवु जोडी हाथ ॥ ला० ॥ प्र० ॥८॥

कणी ॥ चदा प्रभु सुविधि वली,शीतल टालो सताप ॥जि०॥ श्रेयां स वासुपूज्य विमल जी,अनतजीको करो जाप ॥ जि०॥ मो०॥२॥ धर्म शाति कुंथु अर,मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥जि०॥ नमियें नमी रिठ नेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि०॥ मो०॥३॥ वर्द्धमान शास न धणी, कर्म नर्म किया बार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकरू, थाप्या तीरथ चार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार बया निधि, पहुता मुक्तिमझार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी, कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥५॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमु ॥

॥चार पहेरको दिन होवे रे॥ए देशी॥ रिषभ अजित जिन वदीयें रे,सभव जिन सुखकार हो ॥ भविक जन ॥ अभिनदन करुणानि धि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥भ०॥ वंदो चोविश जिन भावर्सु रे ॥१ ॥ पदम सुपारस चदा प्रभु रे, सुविधि शीतल कृपाल हो ॥ भ० ॥ श्रेयास वासुपूज्य ध्याइयें रे, विमल अनत सुविशाल हो ॥ भ० ॥ व० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू रे, कुंथु अर मल्ली जा ण हो ॥ भ० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिवा रे, नमी नेम गुण खा ण हो ॥ भ० ॥ व० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महावीरजी रे, शासन का शिरदार हो ॥ भ० ॥ व० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पहोता मुगति मझार हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहि वा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलोकरिख करे विनति रे, कीजो भव निस्तार हो ॥ भ० ॥ वदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पन्नरमु ॥

॥ ठाकुर भलें विराजो जी ॥ ए देशी ॥ आरतिनी देशीमा छे ॥ सा हेब भलें विराजो जी,चोवीशे महाराज,मुक्तिमें भलें विराजो जी ॥ ए टेक ॥ रिषभ अजित सभव अभिनदन, सुमति पदम सुपास ॥ चदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर,शीतल थ्यो शिववास ॥सा०॥१॥

॥ पद उगणीशमुं ॥

॥ देशी प्रभातीमें छे ॥ समर ले श्रीआदिनाथ, अजितनाथ भारी ॥ सम्भवनाथ जगत तात, चरण बलिहारी ॥स०॥१॥ उठि प्रभात समर नाथ, वंदणा नित म्हारी ॥ बोधबीज आप साथ, सेवा दीजो थारी ॥ स० ॥ २ ॥ अभिनंदन दुखनिकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पद्म सुपास चन्द्रप्रभ, आशा पूरो सारी ॥ स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य सुखारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ स० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत, कर्म कियां गारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रभु, करुणाके भंडारी ॥ स० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ वंदू, सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राजुल नारी ॥ स० ॥ ६ ॥ बचाया नागनागिणी प्रभु, परमेष्ठी उच्चारी ॥ परचापूरण पारस नाथ, पर उपगारी ॥ स० ॥ ७ ॥ महावीर धीर धार, कर्मकू विडारी ॥ केवल ज्ञानभान भया, थाप्या तीर्थ चारी ॥ स० ॥ ८ ॥ तारि भविजीव गया,मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु,विनती ल्यो धारी ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत सादेवा ॥ अथवा अजणाना रासना कडवामा॥ प्रणमु जिनेश्वर जगपति,परमदयाल करुणाना भंडार तो॥ जुगला रे धर्म निवारीया, रिषभ जिनंद नृप नाभिकुमार तो ॥प्र०॥१॥ अजित कंदर्प दल जितिया,सम्भवनाथ गुणसम्भव जाण तो॥ अभिनंदण वंदण करु भावसुं, सुमति पदम प्रभु त्रिजगभाण तो ॥ प्र० ॥ २॥ श्रीसुपारस जस घणो,चंदा प्रभुजीने सुविधि जिनंद तो ॥ शीतल श्रेयास गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाल्या भवफंद तो ॥ प्र०॥३॥ विमल विमल मति वंदियें,अनंत अनंत गुण सुखनी राश तो ॥ धर्म श्री शांति कुंथु अर, मल्ली जिनंद कियो शिववास तो ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ देशी तुमरीनी छे ॥ समर समर जिननाथ समर ले, नविजन जनम सुधारक हे वारि ॥न०॥स०॥१॥ रिषन्न अजित सन्नव अन्निनदन,कर्मरिपुके विदारक हे वारी ॥क०॥स०॥२॥ सुमति पदम सुपास चंदाप्रन्नु, नवडुख तापनिवारक हे वारी ॥ न०॥स०॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,छकायके जीवउगारक हे वारी ॥ छ०॥स०॥४॥ विमल अनत धर्म शांतिनाथजी,सुख सपति हित कारक हे वारी ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, धर्मके मार्ग उच्चारक हे वारी ॥ ध० ॥ स०॥६॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, दृढ क्षमा प्रन्नु धारक हे वारी ॥ दृ०॥ स० ॥ ७ ॥ केवल लेई प्रन्नु मुक्ति बिराज्या, अजर अमर अविकारक हे वारी ॥ अ० ॥ स० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विण नही को उवारक हे वारी ॥ तु० ॥ स० ॥ए॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पद अढारसुं ॥

॥ देशी फागनी छे ॥ प्रणमो नित नित चोविश जिन सुख दाता ॥ प्र० ॥ रिषन्न अजित सन्नव अन्निनदन, तोड दिया मोह नीका ताता ॥प्र०॥१॥ सुमति पदम सुपासचदा प्रन्नु, सिघन टब्बे ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र०॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, छोड दिया हे सब कुटुंबीका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनत धर्म शातिनाथजी, मरकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥प्र०॥ ॥५॥ नमी नेमी पारस माहावीर जी, शासन नायक जग त्राता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाई माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल नक्ति दिजो एही चाता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ उंगणिसें उंगणचालिस पोष सुद चउदश, दियावडीमें गुण किया उल्लसाता ॥प्र०॥ए॥इति॥१७॥ -

केवल लेइ थाप्यां तीरथ चारी, मुलकमें कीर्त्ति अपरम पारी ॥ ज० ॥७॥ प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया, तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में नवनव तुम वदा, मेटो मेरा जनम मरण फदा ॥ ज०॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ कुंथु जिनराज तु एसो ॥ रेखताकी देशीमें ॥ समर जिनना मकू प्यारा,मिटे सब कर्मका नारा ॥ ध्रु० ॥ रिषन्न जिननाम सुख दाता, दरिसण पटमांही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनरा ज गुणवता, सन्नव जगदीश शिवकता ॥ जे जे जे अनिनदन सा मी, सुमति पद्मप्रन्नजी अतरजामी ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जस धारी,जिनोंके चरण बलिहारी ॥ स० ॥ चदा प्रभु वदू चड्वरणा, नवो नव चरणका सरणा ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयांस जगदीशा,नमू नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ स० ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अ नंत सुख अनत नाथ दीजो ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता, शांतिप्रभु शातिके करता ॥ स०॥ कुथु अर मल्लि मल घाया, मेरे प्रभु मुनिसुव्रत नाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ ध्याउ, चरण पें शीश नमाउ ॥ बावीशमा रिष्टनेमी साई, तारिफमा सुर मुलक गाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारस नाथ सच्चा, जिनोंका प्रगट हे परचा ॥ सासणपति माहावीर बका,बजे हे आज उनका मका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जबरजस्त करणी, लीनी हे अचल शिवघरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पदवी मोय दीजो ॥ ७ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वदू चोवीश, जिनद आनदसु, तारो कृ पाल, करुणा नमारी ॥ तुम सम और नहि, गोर त्रिहु भुवनमें, जाणीने सरण, लीयो विचारी ॥ स० ॥१॥ रिषन्न अजित, सन्नव

प्र०॥४॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिंधु दातार तो ॥ पशुकी पुकार सुणी साहिबा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मझार तो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा,जगतवारस प्रभु परम दया ल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, भक्ततारक प्रभु जग प्रतिपा ल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण विरुद आपको, जाणिने श रण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारों प्रभु मुझ भणी,तिलो करिख वीनवे पूरो जगीश तो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ गांफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गां० ॥ ए देशी ॥ जपो जिन वर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमें सुखदा ता, झूठा है सब जगका नाता ॥ ज० ॥ रिषभ अजित संभव सु खकारी, अभिनंदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥ पद्मप्रभु सम अचल पाया, भया तीन भवन अचल राया ॥ ज० ॥ १ ॥ सुपास आश सब पूरो, चंदा प्रभु संकट चूरो, सुविधि शी तल मोह कियो दूरो ॥ इग्यारमा श्रेयासनाथ सामी,वासुपूज्य व दू में शिर नामी ॥ ज०॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवंता, श्रीअ नंत धर्म शिवकंता, शांति करो शांति महंता ॥ कुंथु अर कियो कर्म घाणो, केवल लेइ पाया निर्वाणो ॥ ज०॥ ३ ॥ मल्लिनाथ अ नंत बलिराया, छहूं नृपतिकूं प्रभु समझाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहा या ॥ एकविशमा नमिनाथ महोटा,नमतां मिटे जन्म मरण टोटा ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नंदा, जादव कुलदीपक चंदा, चढधा व्याहन भ्रातके छंदा ॥ पशुकी पुकार अवधारी,त्यागी प्रभु राजुलसी नारी ॥ ज०॥ ५ ॥ पारस करुणाके भंडारी, नागनागि णी जलत उगारी,परमेष्ठीको सरण उच्चारी ॥ कमठमद भंजण नि शंका, दिया प्रभु मुक्तिमांहे डंका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्द्धमान शासन पति सच्चा, जग जान लिया प्रभु कच्चा,संजम करणी मांही रच्चा ॥

पद्म सुपासजी कांइ, वंछित पूरणहार ॥ प्रा० ॥ १ ॥ चंदा प्रभु चंदवरणा हो, सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदातार ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याउ हो, मनाउ विमल जिनंद जी प्रभु, अनंत अनंत गुणधार ॥प्र०॥२॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शांति दया करु प्रभु, शांति करी संसार ॥ कुंथु अरमल्ली वंदू हो, निकंदू पातक माहेरा प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥प्र०॥३॥ नमि नेमी जिनराया हो, मनभाया पारसनाथजी, प्रभु परचा पूरणहार ॥ महावीर जग म्हाह्या हो, तजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म नमे किया छार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जव आया इंद्र उमावसु, कियो मोछव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुणयाजी, जगराया पर उपगारीया, प्रभु थाप्यां तीरथ चार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ मुगतिनगर सीधाया जी कांई, पाया शिव सुखसासता, प्रभु अजर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम बोले हो, प्रभु खोले आयो आपके, मुज द्यो अविचल सुखसार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥२५॥

॥ पद उवीशमु ॥

॥ सगुरुजी कहे जगसपना ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो नविक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ज०॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव मन भाया, अभिनंदन वंदू मनकाया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चंदा प्रभुचंद वरन सोहाया रे ॥ ज० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस अति म्हाह्या, वासुपूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन पाया, शांतिनाथ नविक समुझाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मलहगाया, मुनिसुव्रत व्रतदृढ गाया रे ॥ ज०॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे॥ ज०॥७॥ तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महाराया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ २६ ॥

अभिनंदन, सुमतिपदम, सुपार्श्व देवा ॥ चन्द्रप्रभचन्द्र, वंदंसदा प्रभु, नवभव दिजो प्रभु, अचल सेवा ॥ व० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुष्पदंत, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहाया ॥ विमल अनंत धर्म, शांतिशांति करो,भक्तनायकजग, गुरु कहाया ॥ व० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथु अर मल्लि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत करणी करी, सरल भावें ॥ नमी नेमी श्री, पार्श्वमहावीरजी, नाम लिया सकल, विघन जावे ॥ व० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जग दीश चोविस प्रभु,कर्मटाटी काटी,सविमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिखवीनती,व रिसण दीजीयें,अचलभक्ति अरु,चरण गाया ॥व०॥५॥ इति ॥२३॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ प्रभु थारा गुण अनंत अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी थारा च रणको आधार,प्रभुजी थारा धर्मको आ०॥ध्रु०॥ रिषभ अजित स भव अभिनंदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु समरो, सुचंदवदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगमें कीर्ति अपार ॥प्र०॥३॥ विमल अनंत धर्म शांतीश्वर, शांतिकरण संसार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पारस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥६॥ मुज सम दीन नहीं कोइ जगमें, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र०॥८॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजो भवजल पार ॥ प्र० ॥ ९ ॥

॥ पद पच्चीशमु ॥

॥ आज भलो दिन उगो जी ॥ भटीयाणीनी देशी ॥ प्रात उठ नित भावेंजी, प्रणमु चोविश जिनंदजी, प्रभु करजो भवजल पार ॥ ध्रु० ॥ रिषभ अजितसुखदाई हो, सभवजगमांहे दीपता प्रभु, अभिनंदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता

पाया रे ॥ व० ॥ ५ ॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, नव
दुःख नजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा ज
गका लाचा रे ॥ व० ॥६॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, दुर्ल
न दुर्लन पायारे ॥ कुदेव त्यागी तुमसरणे आया, तार तार
माहारायारे ॥ वं० ॥ ७ ॥ इति ॥ २८ ॥

अथ देवगुणस्तवन प्रारम्भ ॥

॥ देशी बाबा आदमकी॥ एसा जिन एसा जिन एसा जिन हे,
ललि ललि वड सदा निश दिन हे ॥ ए० ॥१ ॥ एक सहस्र अष्ट
लछन हे, तनकाति झलक ज्यों रतन हे ॥ ए० ॥२॥ जाके पर
थम सठाण सघयण हे, उत्कृष्ट रूप सुवरन हे ॥ए०॥३॥ जाण्यो
सब अथिर तन धन हे, कियो संजम लेवनको मन हे ॥ ए० ॥
४ ॥ एक कोड अठ लख दिन दीन हे, देई दान माहा तप कीन हे
॥ ए० ॥ ५ ॥ शुकल ध्यानविषे लय लीन हे, घनघातिक कर्म
कीने छिन हे ॥ ए० ॥६॥ केवल ज्ञान प्रगट्यो ततखिन हे, सब
द्रव्य जाणे निन निन्न हे ॥ ए० ॥ ७॥ चोतिस अतिशय पेंतिस
वचन हे, उपदेश देते नविजन हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण
त कोटीन हे, स्वामी सरिखो न उंर नवीन हे ॥ ए० ॥ ९ ॥ कर्म
बंधनकी ज्याकू घीन हे, परमपात्र परम परवीन हे ॥ ए० ॥१०॥
तीर्थ थापे कापे कर्मवन हे, प्रभु पहुचे अचल नवन हे ॥ ए० ॥
॥११॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन हे, जनम मरण किया
पर क्षीन हे ॥ए०॥१२॥ अयवता रिखजी महाराज मया कीन
हे, एसा देव जिया मेनें चिन हे ॥ए०॥१३॥ तिलोक रिख कहे
प्रभु धन धन हे, ऐसा देव वसे मेरे मेरे मन हे ॥ए०॥१४॥इति॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ देशी एहीज ॥ एसा गुरु एसा गुरु एसा गुरु हे,रहे कनक का

॥ पद सत्त्यावीशमुं ॥

॥ कपूर होवे अतिउजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं आदिजिनेश्व रू जी, नयनजण नगवत ॥ अजितनाथ जित्या अरि जी, सनव गुण अनत ॥ जिनेश्वर आपतणो ने आधार ॥ ध्रु०॥१॥ अन्नि दन आनदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पदमप्रन्नु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चदप्रन चन्द्रलछना जी, चदरवरण शरीर ॥ पुष्पदत शीतल नमू जी, श्रेयास श्रेयांस गुणधीर ॥ जि० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमु जी, अनत अनत सुखलीन ॥ धर्मनाथ शातीश्वरू जी, मरीनो रोग शातिकीन ॥ जि० ॥४॥ कुंथु अरजिनवर जयो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केव लकमला पाईया जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥५॥ नमी नेमी पारस नमुं जी,चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पाम्या अविचल थान ॥ जि० ॥६॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वदे वारम वार ॥ अरज एतिक अवधारजो जी, कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ पद अठ्ठावीशमु ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत व्रत साहिब साचो ॥ ए देशी ॥ वदू चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग उद्धारण जगरख पाला, काट्या कर्मका जाला रे ॥ व० ॥ १ ॥ रिषन्न अजित स नव सुखकारी, अन्निनदन जसधारी रे ॥ सुमति पदम प्रभुजी उ पगारी, चरणसरण वलिहारी रे ॥ व०॥ २ ॥ सुपारस चदा प्रभु सामी, सुविधिशीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयांस नमूं शिवगामी, जय जय अतरजामी रे ॥व०॥३॥ वासुपूज्य श्रीविमल मर्दता, अनत धरम शिवकता रे ॥ शांतिजिनेश्वर शाति करता, किना करम रिपुअता रे ॥ व० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मन धाया, मु निसुव्रत व्रत माया रे ॥ नमी नेमी पारस नाया, नक्तवत्सल पद

नव चरम हे ॥ ए० ॥७॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिब्रह्म हे, गुरु महेरसु हुवो महेरम हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारम्भ ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥१॥ तुम सहु जाण कहे जग माइ ॥ जीवकी आदि सो कहु न बताई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनु नहि देखो शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख दुःख जग जाणे, सुख अनत सिद्धांत वखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम वीतराग दिशा सदा पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा पर नहि द्वेष तुमारो, आज्ञा नही माने तो भमत ससारो ॥ अ० ॥ ६ ॥ पच्चख्काण तो प्रभु एक न कांइ, आश्रव नहि लागे तुम तांइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आउखा कर्मको बंधण नांइ, अनत कालकी थिरथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम खय करि शिववासो, नाम लीया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ए ॥ गोत्र करम तुमने नहि देवा, गोत्र संभालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥ अंतराय करि दुरि थां सांइ, नूंतन लाभ दिसे नहि कांइ ॥ अ० ॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर भगावो ॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहें आगम साखें ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्यागी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख लियो शरण तुमारो, अधम उद्धारण बिरुद विचारो ॥अ०॥१५॥ मुझ अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि भव पार उतारो ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलु प्रारम्भ ॥

॥ समज समज गुणवत सयाणां, कर ले सुकृत प्रभुका गुण

मिनीसे दूर हे ॥ ए० ॥१॥ ज्ञान ध्यानमें रहे नरपूर हे, वीतराग शरण सदा ऊर हे ॥ ए० ॥ २ ॥ आठुं कर्मकी फोज करूर हे, सो तप जपसें करे चक चूर हे ॥ ए० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मन रूर हे, विषय मदन किया चक चूर हे ॥ ए० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप अगारा जे कूर हे, बोले निरवद्य वचन मधूर हे ॥ ए० ॥ ५ ॥ नर पशु ऊंर सुर असुर हे, सहे परिसह सकल सबा शूर हे ॥ ए० ॥ ६ ॥ शील समकित धन नया चूर हे, दूर होत कर्मरूपी धूर हे ॥ ए० ॥ ७ ॥ सजाय रूप वजे रणतूर हे, कीर्तिरूप नोब, त रही घूर हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मचकूर हे, जे जिनागमकुं करे मजूर हे ॥ ए० ॥ए॥ संसार माने सो क्षणभंगूर हे, जाणे धर्म थिर सदा मसहूर हे ॥ ए० ॥ १० ॥ मिथ्यामत माने फितुर हे, नय तत्त्व पेबाने चतुर हे ॥ ए० ॥ ११ ॥ नवि जन मन नावे जरूर हे,नहि वदे सोई वे सहूर हे ॥ ए० ॥१२॥ अयवतारिखजी महाराज हजूर हे, मेनें जाण्यो धर्मको अंकूर हे ॥ ए० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे सतगुरु हे, सदा वदणा ऊगतां सूर हे ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा धर्म एसा धर्म ऐसा धर्म हे, जिणसें मिटत सकल नयनर्म हे ॥ ए० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शाता प रम हे, नहि दे परकु परिश्रम हे ॥ ए० ॥ २ ॥ नहिं नाखे मृषा कोमरस हे, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म हे ॥ ए० ॥ ३ ॥ टाले म मता ठल रहे नरम हे, नही राग द्वेष नहिं गरम हे ॥ ए० ॥४॥ कलहो कलक चाडी सुवधे कर्म हे, परिहरे सुगुणी राखे सरम हे ॥ ए० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आग्याके मांही धर्म हे, कोइ बुध जनकु महेरम हे ॥ ए० ॥६॥ पालें धर्म होवे अकरम हे,केवल लेई नया

मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट भूतल धसि जावे, जहां पण जम आयकें गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नर राया, जमकी त्रासर्से सब गभराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर हय गय लक्ष चोराशी, वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ छपन कोडिके नाथ कहाया, पाणी विना वनमें मरण पाया ॥ ९ ॥ ग० ॥ काहेकुं तुं करता अकडाइ, देख तु दादा वडदादाके तांइ ॥ १० ॥ ग० ॥ केइ चल्या केइ चालणहारा, क्यु न हुशियार होवे तुं गमारा ॥ ११ ॥ ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक झपट ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दोलत उंर माल खजाना, छेवट छोड अकेला सिधाणा ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमायो सो पाछला खावे, कर्ममें कोय न पांति पडावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो तो जमाइने खाया, केदखानामें मोदी दुःख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो कोसाके आतरे जावे, तो पण खरची साथ ले सिधावे ॥ १६ ॥ ग० ॥ परभव तो निश्चें तुझ जाणो, क्यु नहिं लेवे तुं धर्मको नाणो ॥ १७ ॥ ग० ॥ सद्गुरु चोकीदार चेतावे, सुकृतसोदा तेरे सग आवे ॥ १८ ॥ ग० ॥ उंगणीशें गुणचालिस मझारो, मगशिर शुदि अष्टमी चंद्वारो ॥ १९ ॥ ग० ॥ शहेर सतारो दक्षिणमाई, तिलोकरिख कहे चेतजो भाई ॥ २० ॥ ग० ॥

॥ अथ उपदेशीफटको स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ चाल एहीज ॥ धिक तेरा जीवडा, न करता धरमकु ॥ धिक तेरा तन मन, धिक हे जनमकु ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचितामणि जन्म जो नरको, खोय दियो जेसें भव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥ नीचकु देखिकें शिश नमावे, सतकु देखि अधिक अकडावे ॥ धि० ॥ ३ ॥ धर्मकथा कबु दाय न आवे, जो सुणे तो फुकफुक झोला खावे

गाणा ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनंत जम्यो चउ गतिमें, राच्यो नहिं तुं श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्भवासमें बहुत दुःख पायो, नवमासा तुं उंधो लटकायो ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ जन्म जयो विसर्यो दुःख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बालपणुं हसि खेल गमायो,धर्म ध्यान कबु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥ जोबन वयमांहि पाप कमायो, जोग विलासविषे ललचायो ॥ स० ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देवे घणि फेरी ॥ स० ॥ ७ ॥ जूलो कहे माया मेरी या मेरी, तेरे कहे कबु होत न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये डम्मी,किसविध आश करे तु घमम्मी ॥ स० ॥ ए ॥ मुठि बांधके जन्म तुं पायो, हाथ पसारके आगें सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धधा धन जोडे, धर्मकरणीसु प्रीति क्युं तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान सझाका उजासा, बादल गाय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥ देहसु ममत करे तु घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ढेरी ॥ स० ॥ ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासु नरकमें फेरो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन जक्ति करीजें, गुरु निर्ग्रंथके नित्य नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयामें दे सुखदानी, ए तिन तत्त्व लो न्याय पीछाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या जर्म कर्म सब डंमो,ब काय जीव जणी मत दमो ॥ स० ॥ १७॥ तिलोकरिख कहे सुणो नर नारी, इण जव जस आगें सुख जारी ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद वीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमें मत रहे रे दिवाना, जीव चिडा जमराज सिचाना ॥ १ ॥ ग० ॥ रात दिवस करता नित धधा, जाणके होय रह्या केसें अधा ॥ २ ॥ ग० ॥ जेसें तित्तरकुं बाज झपटे, मुसककों ज्यों मांजार गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरंगको सिंह ज्यों पकड बिदारे, तेसेंही प्राणीकुं काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥

धाया, धिक जननी जिणें गोद खिलाया ॥ धि० ॥ २६ ॥ उंग णिशें अढतिस माहावदि जाणो,चोथ तिथि रवि वार वखाणो ॥ धि० ॥२७॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी मांइ, इम सुणी करजो थें धर्म कमाई ॥ धि० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ पद वीजुं ॥

॥ उपदेशमें सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवडा, नित करता धरमकु ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकुं ॥ १ ॥ रत्न चितामणि नरजव पाई, धर्मचितामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी नरकु नहि सरसावे, धर्मीकुं देख अधिक हरखावे ॥ ३ ॥ धर्मकथा सुणवा चित्त चहावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥४॥ तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुजल पर कछु ममता न आणी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमें कबहूं न जावे, मुनि दरिसण आलस नहिं आवे ॥ ६ ॥ प्रनुगुण गावता अधिक गुंजावे,क्रोध कलेश थकी शरमावे ॥ ७ ॥ दान देवे नित उलट परिणामें, घर घर धूजे सो हिसाके कामें ॥ ८ ॥ पापका काममें म्नर अति आणे, धर्मको काम सदा जलो जाणे ॥ ए ॥ क्रोध मान तृष्णा छल त्यागे, दान शीयल तप जावमें आगें ॥ १० ॥ पापका काम में निर्वल अगें, धर्मका काममें शूरपणु रगें ॥ ११ ॥ सत्यपक्षकी प्रतीतजो आणे, फूठको पक्ष रति नहीं ताणे ॥ १२ ॥ जीव दया धन खरचण जाणे, लाज अनत हिये इम गणे ॥ १३ ॥ न करे निंदा विकथा सुणे नाई, गुणिजनना गुण सुणि उल्ल साई ॥ १४ ॥ कर्मवधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी विचारे ॥ १५ ॥ पापीसु प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकु आदर दे अधिकाई ॥ १६ ॥ धरमसु परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाछो सो तप जप शूरो ॥१७॥ पर दुख देखि अणुकपा घणेरी,मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥१८॥ आमके वोय आम फल चहावे,

॥ धि० ॥४॥ इनकका ख्याल राग अनुरागें, धका खाय तोहि चले आगें ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उना रहे रात सारी, मुनिवरितण आलस अति नारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप वातमें पट नट आवे, खाणेमें लोटी लेई ऊट जावे ॥ धि० ॥७ ॥ स्तवन सभाम क हेतां शरमावे, लडता तो कबु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देता थरथर कर ध्रूजे, हिंसा करणमें कर अति जूजे ॥ धि० ॥ए॥ लोन कारण करे अति नरमाई, साह्मधर्मीसुं करे गुमराइ ॥ धि० ॥ १० ॥ पापकरणीमें मन उल्लसावे, धर्मक्रियामें न चित्त लगावे ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान तृष्णा उल नारी, दान शील तप नाव विसारी ॥ धि० ॥ १२ ॥ पाप करणमें जोर जणावे, धर्म उद्यममाहि कायर थावे ॥ धि० ॥ १३ ॥ परख नहिं देव गुरु धर्म केरी, विणजमें दृष्टि पहोंचावे घणेरी ॥ धि० ॥ १४ ॥ जीवदयामें खरचता रोवे, जस शोनामें निर्थक धन खोवे ॥ धि० ॥ १५ ॥ निंदा विकथामें निशिदिन रातो, गुणिजनका गुण सुणी अकलातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मबंधनकी शिख सुणि राजी, धर्मशिक्षा सुणि अधिक ना राजी ॥ धि०॥ १७ ॥ पापीकुं आदर देकें त्रिगवे, धर्मीकु देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पाप थी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पाछो कर्ममांही शूरो ॥ धि० ॥ ॥ १ए ॥ परदुख देखीने अति हरखावे, निज सपत्तसें अधिक पोमावे ॥ धि० ॥२० ॥ बबुल बोय आमफल चहावे, विष नक्षण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खोय दीयो नव सारो, तेलीका बेल ज्युं हाखो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ निशदिन हाय हाय धन धनकी, लाज नहीं परनव गुरुजनकी ॥ धि० ॥ २३ ॥ धोबीका श्वान ज्युं कहे धन मेरो, सोचे न ठेवट नरकमें मेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहा अपजस आगें जस नारी, धर्म विना नव नवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जैसा जाया तैसा सि'

या तब होत निराशा ॥ ७ ॥ ए० ॥ मात पिता सुत बधव नारी, रुदन करे मतलब परिवारी ॥ ८ ॥ ए० ॥ गहेणां आनूषण लेवे उतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ९ ॥ ए० ॥ आठ हाथ को कपडो मगाई, उंढाय सिढीमें दे पधराई ॥ १० ॥ ए० ॥ चार जणा लेवे खांधे उगाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ ११ ॥ ए० ॥ पलंग उपर जे सोते सवाई, उनकुं लकड चुण देवे जलाई ॥ १२ ॥ ए० ॥ हाड लकडकें सज्यो घास पूलो, होवे नस्म तुं कहियें जूलो ॥ १३ ॥ ए० ॥ स्नान करी सब घर चल आवे, कोई कीसीके संग न जावे ॥ १४ ॥ ए० ॥ दो दिन याद करे उस नरकें, वरस ठ मासमें जाय विसरकें ॥ १५ ॥ ए० ॥ पाती करकें सजन धन खावे, पाप कमाया तेरे सग आवे ॥ १६ ॥ ए० ॥ ए जगका सब जूवा हे नाता, क्युं तुं कमावत कर्मका खाता ॥ १७ ॥ ए० ॥ जो इस जगमें देहज धारी, ठेवट जल वल होवेगा ढारी ॥ १८ ॥ ए० ॥ उंगणिसें गुणचालिश मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ १९ ॥ ए० ॥ तिलोकरिख कहे सतारा मझारो, करी उपदेशी नविक हित कारो ॥ २० ॥ ए० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पाचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दुकृत नेद न जाना, जीव अजीव कछु न पिछाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव स वर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खबर नहिं कछु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कोन हे साधु असाधु है कैसा, इह नव परनव नहिं को अंदेसा ॥५॥ निशि दिन पाप करे नि शका, साधुकु देख होवे वडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो

ऐसें गुणीसों कदि न लगावे ॥ १९ ॥ निशिदिन बळना धर्म मरम की, लाज घणी परजव गुरुजनकी ॥ २० ॥ धन कुटुंब तन म हीं जाणे मेरो, जाणे जैनधर्म सहायक तेरो ॥ २१ ॥ इणजव शोजा आगें सुख जारी, कर्मशत्रु हणि वरे शिवनारी ॥२२॥ नर जव पायकें धर्म कमाया,धन जननी जिणें गोद खिलाया ॥२३॥ तिलोकरिख कहे हित उपदेशो,इम सुणि करजो थें धर्म हमेशो ॥२४

॥ पद त्रीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ देखि वदन गोरा,क्यों तु झुलाना,रंग पतंग जिम सफा फुलानां ॥दे०॥१॥ हाडका पिंजर चाम मढाना, जितर ऊंधका जरा है खजाना ॥ दे० ॥२॥ कच्चा घडामांहि पानी जराना, टुटे अचानक पींपल पाना ॥ दे० ॥ ३ ॥ तैसा वदन तेरा है रे दिवाना, देत दगो यह क्यों तुं लुजाणा ॥ दे० ॥ ४ ॥ निशिदिन मागे यह खानांहि खाना, देत नहि तव करत हेराना ॥ दे० ॥ ५ ॥ तेने तो इस्कुं मेरा करी माना, कर कर हिंसा तुं देत है खानां ॥ ६ ॥ ए दगादार महा ऽ खदाना,छेवट निकाले अकेला ही जानां ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे समज सयाणा, तप जप करकें लहे निर्वाणां ॥ दे० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद चोथु ॥

॥ देशी एहीज ॥ एक दिन एसा बितेगा सकलमें,कर ले सुकृत तु सोच अकलमें ॥ १ ॥ ए० ॥ ककर चुन चुन महेल बनाया, उनका मसाणमें वास वसाया ॥ २ ॥ ए० ॥ जिणके धन होतो केई कोडी, उनके संग गइ नहीं एक कोडी ॥३॥ ए० ॥ केइ कोडी दल लाखोंही हाथी, वे पण नगे गये नहिं साथी ॥ ४ ॥ ए० ॥ हरि हलधर चक्री नर राशी, छेवट सबहीं मसाणके वासी ॥ ५ ॥ ए० ॥ जमका लश्कर जब चढि आवे,ततक्षण दस कूच कर जावें ॥ ६ ॥ ए० ॥ सास रहे जबहीं लग आशा, सास ग

या तव होत निराशा ॥ ७ ॥ ए० ॥ मात पिता सुत बधव नारी, रुदन करे मतलब परिवारी ॥ ८ ॥ ए० ॥ गहेणां आभूषण लेवे उतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ए ॥ ए० ॥ आठ हाथ को कपडो मगाई, उंढाय सिढीमें दे पधराई ॥ १० ॥ ए० ॥ चार जणा लेवे खांधे उगाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ ११ ॥ ए० ॥ पलग उपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड चुण देवे जलाई ॥ १२ ॥ ए० ॥ हाड लकडकें सज्यो घास पूलो, होवे जस्म तुं कहिपें जूलो ॥ १३ ॥ ए० ॥ स्नान करी सब घर चल आवे, कोई कीसीके सग न जावे ॥ १४ ॥ ए० ॥ दो दिन याद करे उस नरकें, वरस ब मासमें जाय विसरकें ॥ १५ ॥ ए० ॥ पाती करकें सजन धन खावे, पाप कमाया तेरे सग आवे ॥ १६ ॥ ए० ॥ ए जगका सब जूठ हे नाता, क्यु तुं कमावत कर्मका खाता ॥ १७ ॥ ए० ॥ जो इस जगमें देहज धारी, ठेवट जल वल होवेगा ढारी ॥ १८ ॥ ए० ॥ उगणिशें गुणचालिश मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ १ए ॥ ए० ॥ तिलोकरिख कहे सतारा मऊारो, करी उपदेशी जविक हित कारो ॥ २० ॥ ए० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पाचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दुकृत जेद न जाना, जीव अजीव कछु न पिगना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कोई, आश्रव स वर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खवर नहिं कछु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कोन हे साधु असाधु है कैसा, इह जव परजव नहिं को अदेसा ॥५॥ निशि दिन पाप करे नि शका, साधुकु देख होवे वडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो

दरसावे, हडक्या श्वान ज्युं काटण धावे ॥७॥ आप बडाई निंदा करे परकी, देखे नही करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी जन्म गमावे, करकें कुकर्म नहि पस्तावे ॥ ९ ॥ ममत करे तन स ज्ञान धनकी, खबर नहिं कछु अपने बलनकी ॥१०॥ शिंग पुछकी रहि हिणताई, माढी मूछकी नइ अधिकाई ॥ ११ ॥ नरजव पा यकें दान न दीनो, तप जपको कछु काम न कीनो ॥१२॥ सतर्क देखिकें शिश न नमाया, जिनसु प्रभुका गुण नहिं गाया ॥ १३ ॥ कानसु सूत्रकी सुणि नहिं वाणी, नेत्रसु मुनिदरिसण नहि जा णी ॥ १४ ॥ धरणीके जारें मारी अधिकाई, फिट फिट जननीकी कूख लजाई ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चउगतिमांहे जटकें, बडवायु ल कथे सुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दुःख अनत अपारा, बांध लिया सग पापका जारा ॥ १७ ॥ तिलोकरिखजी सताराके मांही, धर्म किया होवे सुख सदाई ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ वालुवध विसर गई कगनां ॥ ए देशी ॥ नमो नमो रे जवि क प्रभुचरणा, मिट जावें सकल दुःख मरणा रे॥ न० ॥ १ ॥ आ दि अजित संजव हित करणा, अजिनदन सुमति सुख धरणां रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी वच्चरणां, चंद्रप्रजजी लछन च द्रवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अतीव दुःख हरणा, श्रे यास वासुपूज्य शरणा रे ॥न०॥४॥ होय विमल जपत जय टरणां, अनत धरम मेटे जवफिरणां रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु अर किया न्याय निरणा, मल्ली मुनिसुव्रतजी स्मरणा रे ॥न०॥६॥ न मि नेमि पारस करि अहि करुणा, माहावीरजी चरणे शिश धर णा रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुःख हरणां, तो सम रो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवन ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ नमो नमो रें देव अरिहंता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे ॥ न० ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हंता, सब जाणत केवल वंता रे ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशयचोतिस सोहंता, प्रभु तीन भुवनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरता, चार तीरथ थापना करंता रें ॥ न०॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें नमता, सेवा दीजो सदाई भगवता रे ॥ न० ॥ ५ ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे भैया, जे भवजल पार करैया रे ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी हे नाव खेवैया, परने तारत आप तेरे या रे ॥ स० ॥ २॥ गुण सत्याविशके धरैया,सत्यमधुर वाणीके उच्चरैया रे ॥ स० ॥ ३ ॥ विषय कषायकी अगन बुझैया, वे तो ज्ञानको जल वरसैया रें ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनत शिव लेया, सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहिवैयां, सो तो अविचल वास वसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ धर्मरूपी धणाय लो भैया,मानो मानो रे शीख मेरी भैया रे ॥ ध० ॥१॥ संतोषका पाटिया जमैया,क्षमाकी मेख लगैया रे ॥ ध०॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वार बुरैयां, करो चाढुवैराग सोहैया रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी हे चतुर खेलैया,पर तारे उर आप तैरैया रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोदधिसू तरणकी जो चैयां, तिलोकरिख कहे धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसु मिटत अज्ञानको कालो रे ॥ क० ॥ १ ॥ पेहेली उघ आलसकु टालो, गेहो विकथा

रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ २ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सूत्रसधि सु खोल देवे तालो रे ॥ क०॥ ३ ॥ कुमति कलेश कषायकुं थें टा लो, जाणपणा बिना किरिया वेपालो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे ज्ञान गुणिजालो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥क०॥

॥ अथ सम्यक्त्व आश्रयी पद प्रारम्भः ॥

॥ शुद्ध सम्यक्त व्रत रस राचो,जैन येन विना केन सब काचो रे ॥ शु० ॥१॥ सच्चा देव गुरु धर्म परख जाचो,खोटो पक्ष सो म त खाचो रे ॥ शु०॥२॥ नित्यप्रतें जैन शास्त्रकुं बाचो, बली सुणके लगावो तन आचो रे ॥शु०॥३॥ इणसुं सिवीजें कालको माचो, छूटे अनत भव सरधा साचो रे ॥ शुं० ॥ ४॥ इण बिना चारी ग तिमें नाचो, नहीं छुटो कर्मको लाचो रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ तिलोक रिख कहे समकित माचो,कुमति लता जड टांचो रे ॥ शु० ॥६॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ पालो पालो रें सजमकी करिया, जिणथी जीव अनतहि तरिया रे ॥ पा० ॥ १ ॥ पच माहाव्रत भावें उच्चरिया, रहो पाप कर्मसू टरिया रे ॥ पा० ॥ २ ॥ पंच आश्रवद्वारकु छुरियां, राग द्वे-ष शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो संजम करणीथकी फरि या, सो तो चार गतिमांहे फरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ एसो जाण के सजम आदरिया, सो तो अनत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसु मिलि एह त्रि रिया रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ तुम तपस्या करो भव प्राणी,शम दम उपशम चित्त आणी रे ॥ १ ॥ तु० ॥ कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अटवीके आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहंकार पर्वत ड खखाणी, तप

स्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥३॥ भव ताप बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मेटो मेटो रे भविक जन लाली, जिणसुं रहोगे सदाइ खुशियाली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पेली देवें निज अत्मा वाली, पिछें दूजाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ यातो धर्मतरु छेदन वाली, जगमें रीश वडी हे जजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ एसी जाणकें देवणी नहिं गाली, क्षमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥४॥ तिलोकरिख कहे क्षमा धर्म झाली, गया शिवमदिर सुविशाली रे ॥मे०॥५॥

॥ अथ मानआश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ मत करो रे चतुर अभिमाना, अत आवे तो परभव जानां रे ॥म०॥१॥ फूल फूले सो देख कुमलाना, जो बध्या सो तो विखराना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नहिं इद चद रवि भाना, थिर नही हे जगमें राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एसी समजकें दिल नरमाना, नित गुणिजनके गुण गानां रे ॥म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे सुणजो शाहाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ छोडो छोडो रे कपटकी कतरणी, या तो धर्म झेराकी छिन करणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो धुर्त लोकोंके घर घरणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ या तो अंतरका शल्य जेसी वरणी, या तो देवे भवोभव दुःख अरणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ या तो दुःख देवावे वेतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कपट न करणी, जो पावे शिव वधु वरणी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहां लगे तेरी रे ॥ म० ॥ १ ॥ जब वित जावे पुण्यकी लहेरी, तब राखि रहेगी नहि तेरी रे ॥ म० ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं छे किण केरी, भाग्य बिना मिले नहि हेरी रे ॥ म० ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी गहेरी, छेवट रयण अंधेरी रे ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्युं ज्युं नेलि होवे गहेरी, त्युं त्युं तृष्णा वधे बहु तेरी रे ॥म०॥ ५ ॥ जाणो नरक निगोदकी या सेरी, एसी जाणकें ल्यो तृष्णा थें केरी रे ॥ म० ॥६॥ तिलोकरिख कहे उपदेश किया नेरी, इसकी सगत जा शिवशेरी रे॥७॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, जिणसें पावोगा अमर सुखचेना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाणे सब फेना, खोल देखो थें अंतर नेनां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो छकाय जीवकी जयणा, बोलो मधुरता निरवद्य वेणां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ बिनदिया किसीका नहि लेणा रे, परत्रिया गिणो माई बेना रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि चुगली आल नहिं देणां रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ सजम आदरकें परिसह सहेणां, तिलोकरिख कहे प्रभु सरण रहेणा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद बीजुं ॥

॥ नोर नइ रे बटाउ जागो जागो, थाने जाणो देशावर आघो रे ॥ नो० ॥ १ ॥ चले सग चतुरको सागो, जिणसु रहे मति पाछो आघो रे ॥ ना० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगें नहिं थागो, जिणसें लागे नहि डु खदाघो रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ पंच उगणि सुमति करे रागो, वश पडियासु करदेशी नागो रे ॥ नो० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे मोहनिद त्यागो, छवट छोडकें शिवपंथ लागो रे॥ना०॥५॥

॥ उपदेशी पद त्रीजु ॥

॥ चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, करो धर्मध्यान फल महोटा रे ॥ चे० ॥ १ ॥ धर्म विना भमेगा बहि दोटा, सहेगा नरक विषे जम सोटा रे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहि मिले पापीने पूरा रोटा, पाणी पिवणका मिले नहिं लोटा रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ भेलो करे नर धन केइ कोटा, तोइ तृष्णावत मन टोटा रे ॥ ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे छे जो धर्म उंटा, तो मिट जावेगा जमचोटा रे ॥चे०॥५ ॥ इति ॥

॥ अथ काल आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ काटो काटो रे कालकी फांसी, रहो रहो जगतसें उदासी रे ॥ १ ॥ का० ॥ काल रिपु तुझ पर चढ आसी, एसी ठोर नहिं जहां लुक जासी रे ॥ २ ॥ का० ॥ इद चद असुर सुरराशि, जो उपजे सो सकल विनाशी रे ॥३॥ का० ॥ तु तो चार दिवसकोहे वासी, कर्म करेगा जैसी गति पासी रे ॥४॥का०॥ भय मरणको मनमें विमासी, करो सुकृत सोदा उल्लासी रे ॥ ५ ॥ का० ॥ जो मोहनी कर्म खपासी, तिलोकरिख कहे काल नहिं खासी रे ॥का०॥६॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ रहो रहो रे धरम धन तसीया, ज्यो थें शिवरमणीका रसिया रे ॥ र० ॥ १ ॥ राखजो थें मन तनके कसिया, शुद्ध समकितव्रतमें वसिया रे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन फसिया, भविजन सो तो दूर नसिया रे ॥ र० ॥ ३ ॥ काम क्रोध ठगोमें जे फसिया, सो तो अचल झकानसु चसिया रे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसेजमें उल्लसिया रे ॥ र०॥५॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुंबके विगारी, जाणो मतलबकी जग यारी रे ॥ १ ॥ चे० ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, तुं जाणी रह्यो दि

ल म्हारी रे ॥ २ ॥ चे० ॥ कुटुंबी है कपटके जमारी, करे खुशा मत उपरसु थारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ ज्यों पंखी बेठे तरु डारी,मन माहि सो गरज विचारी रे ॥ ४ ॥ चे० ॥ तिलोकरिख कहे ज्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहो जवपारी रे ॥ ५ ॥ चे० ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थें करमका करजी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मत डुखाना किसीकी मरजी, होणहार टले नहिं जो सरजी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ कुसंगतिकों देयो तुम वरजी, पाप त्यागो सयाणें चित्त लरजी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ मत होना छुवेगारका थे वरजी, विषय कषायकुं देयो तुम तरजी रे ॥ ४ ॥ मा०॥तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी,करे प्रभुजीसु शिव अरजी रे५

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो मुगतिकी शेरी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मात पिता कुटुंब सब वैरी, जिणसु ममता करणा डुख केरी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तु ममता वहु तेरी रे ॥ ३ ॥मा०॥ काचा कुंज जैसी कायाकी देहरी, ठेवटमें होवेगा राख ढेरी रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ राग द्वेष सर्प माहा जहेरी, ले उपशमकी जडी ठेरी रे ॥ ५ ॥ मा० ॥ तिलोकरिख कहे शिख हेरी, पियासुअमृत शिव नेरी रे॥ ६॥मा०॥इति॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी जटके रे ॥ १ ॥ म० ॥ नित अनक्ष आहारके गटके, वार वार तोय ज्ञानी गुरु हटके रे ॥ २ ॥ म० ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन जटके, धरमके काममें दूरो ठटके रे ॥ ३ ॥ म० ॥ वे तो नरककुंममाही लटकें, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ ४ ॥ म० ॥ तिलोकरिख

कह् कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥५॥म०॥

॥ अथ जोवन आश्चर्यी पद वीजु ॥

॥ क्यों चूल्यो रे जोवनमें अकडी, नवमासा लटक्यो सेरी सकडी रे ॥ १ ॥ क्यों० ॥ वालपणामें रम्यो ख्याल खखडी, रह्यो जोवनवयमें फकडी रे ॥ २ ॥ क्यों० ॥ आयो वुढापो सुझत नहिं अखडी,जोर पडियासुं पकडी लकडी रे ॥३॥क्यों०॥ तिलोकरिख कहे धर्म लेवो पकडी, तो पावोगा सुगति फुल परवडी रे ॥ ४ ॥क्यों०॥

॥ अथ ससार आश्चर्यी पद प्रारंभ.

॥ सतगुरुजी कहे जग सपनां,करो धर्मध्यान सोहि अपनां रे ॥ ॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपनां, पाप करतां तो दिलमांहे कपनां रे ॥ स० ॥ २ ॥ दान देनां शीलपाल तप तपनां, शुभभावनामें दिल थपनां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहिं हे कोइ अपनां, आखर तो जरूर लुक खपना रे ॥स०॥४॥ सुगुरु सेवा करत नहिं छिपनां, तिलोकरिख कहे प्रभु जपनां रे ॥स०॥५॥

॥ अथ शिक्षा आश्चर्यी पद प्रारंभ ॥

॥ वार वार सतगुरु समजावे, क्यों तुं कर्म वंध उपावे रे ॥ ॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसता हसता जमावे, छोडंतां अति मुशकिल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ जो तु आक धतुरा वावे, तो तुं आंव कहांसु खावे ॥ वा० ॥ ३ ॥ झहेर खायकें जिवणो उमावे, तिम पाप करिने सुख चावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जैसा वाध्या तेसा उदय आवे, चारु गतिमांहि सो दुःख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म उडावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्चर्यी पद प्रारंभ ॥

॥ कर्मगति हे अजव जगमाहे, इण सम शत्रु कोइ नाइ रे ॥ ॥ क० ॥ १ ॥ कुमरिक तप करियो अलसाइ, मर गयो नरक सात

ल म्हारी रे ॥ २ ॥ चे० ॥ कुटुंबी है कपटके नमारी, करे खुशा मत उपरसु थारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ ज्यों पंखी बेठे तरु मारी,मन मांहि सो गरज विचारी रे ॥ ४ ॥ चे० ॥ तिलोकरिख कहे ल्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहो नवपारी रे ॥ ५ ॥ चे० ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थें करमका करजी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मत दुखाना किसीकी मरजी, होणहार टले नहि जो सरजी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ कुसगतिकों देयो तुम वरजी, पाप त्यागो सयार्णे चित्त लरजी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ मत होना अवेगारका थें दरजी, विषय कपायकुं देयो तुम तरजी रे ॥ ४ ॥ मा०॥तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी,करे प्रभुजीसुं शिव अरजी रे५

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो मुगतिकी शेरी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मात पिता कुटुंब सब वैरी, जिणसु ममता कथा दुखकेरी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तु ममता बहु तेरी रे ॥ ३ ॥मा०॥ काचा कुम्भ जैसी कायाकी देहरी, छेवटमें होवेगा राख ढेरी रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ राग द्वेष सर्प माहा जहेरी, ले उपशमकी जडी छेरी रे ॥ ५ ॥ मा० ॥ तिलोकरिख कहे शिख हेरी, पियासुअमृत शिव नेरी रे ॥ ६॥मा०॥इति॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी नटके रे ॥ १ ॥ म० ॥ नित अनक्ष आहारके गटके, वार वार तोय ज्ञानी गुरु हटके रे ॥ २ ॥ म० ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन नटके, धरमके कामें दूरो ठटके रे ॥ ३ ॥ म० ॥ वे तो नरककुंभमाही लटकें, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ ४ ॥ म० ॥ तिलोकरिख

जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ बोलो शुद्ध सत्य मती गाणी, जिणकी कीर्त्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥५॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर नाइ, जिणसु कमी रहे नहिं कांइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कबु फिकर नहिं उ णतांइ रें ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, सतोष समान सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर जावे सुरगतके मांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे दत्तव्रत की वडाइ, जिनशास्त्रमें प्रभु फरमाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सदा पालो रे शियल सुखदाइ, होइ नवमें कीर्त्ति सवाइ रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरमाइ, शीलवतने नमे सुर आ इ रे ॥ स० ॥ २ ॥ सूत्रप्रश्न व्याकरणके मांइ, वत्तिस उपमा प्रभु फ रमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला उपमा मोटी बताइ, ए अद्भुत व्रत अधिकाइ रे ॥ स० ॥४॥ विण मनसुद्धि पाले इणतांइ,चोसठ सह स्त्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे धन उणतांइ, शिल पाले सदा उलसाइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह दुखदाइ, ए तो जगतपति फरमाई रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ सतोषको सुख अधिकाई, देवे तृष्णाकी लाय बुझाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमाही जे रह्या मूर्छाइ, सो तो संचे अति कर्म कमाई रे ॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोभ गिणे नहिं सयण सगाइ, देखो भरत बाहुबल भाई रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन प्रभुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाई रे ॥त्या०॥५॥ एसी समझ

मी माइ रे ॥ क० ॥ २ ॥ अढीदिन सजम पद पाइ, पुण्डरीक स र्वार्थसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥३॥ प्रनुजी कीकिनी अधिक बुराइ, गो सालक पायो सुर प्रनुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीरका ज माइ, करमासु खोटी सरधा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख क हे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलाजो नांइ रे ॥ क०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारम्न ॥

॥ करो करो करमसें दगा,जिणसु पावोगा सुख वत्तगा रे ॥ क० ॥ १ ॥ वश कर लो मनकी तरगा, बोडो विषय कषाय प्रसगा रे ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गगा, बोडो पंच प्रमाद अन्नगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चगा, मेटो कर्म ब धणकी वन्नगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल सगा,तरो नवोदधि तरग अथगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्रयी पद प्रारंन ॥

॥ पालो पालो रे नविक दया माता, इणसु पाउगा अचल सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, छु ख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥२॥ एसें जाणकें होवो थें अ नयदाता, कोइ जीवकु न देणी अशाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले न रकनिगोदका खाता, जो रहे दयारस रगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ साठ नाम बताया जगत्राता, ज्यों आराधे सो शिवसुख पाता रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाता, कोइ हलुकर्मी चि त चाता रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्रयी पद प्रारम्न ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे नविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख दाणी रे ॥ स० ॥ १॥ सत्य असत्यको नेद पिछाणी, पिछें बोलो वचन शुद्ध ठाणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृडु अमृतसी वाणी,

रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसमें कछु हासा, ये आसा है जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले सझाका उजासा, पच्या पाणीके बीच पतासा रे ॥ द०॥३॥ जैसा जल मोतीका उकासा, तैसा है इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु चुणे उंचा उंचा आवासा, एक दिन होयगा जंगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहिं विसवासा, एकदिन देगा सब पर फांसा रे ॥ द० ॥ ६॥ तजो क्रोध मानका पासा,जिणसु बजत सुजसका त्रासा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसु नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उल्लासा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारम्भ ॥

॥ सुण चेतन रे,तुम गुणवत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा रे,तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ ध्रु०॥ यो नरभव लीनो जीव,आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सद्गुरुको मिल्यो जोग,सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधानें ॥ सु० ॥१॥ या देह औदारिक जाण, उपरसें चंगी॥ या पलमें सुदराकार, पलमें विरगी ॥ या माया है बादलछाय, सुपन जो जाणो ॥ या जोबन नदीपूर, गरब मत आणो ॥ सु० ॥२॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुब उर नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरज की यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो ॥ जावे चउ दिशी बिखर, दिवस उजासो ॥ सु० ॥ ३ ॥ केइ बाजीगर ज्यों बाद, मचावे जाई ॥ रुम रुमीको सुण शब्द, खलक जुड आइ॥ होय तमासो बध, सबि भग जावे ॥ बाजीगर निज गाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारु महारु कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥

के टाले मूर्च्छातांई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाई रे ॥ त्या० ॥ ६ ॥

॥ अथ रात्रिभोजनव्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत करोरे भोजन निशिमाहि, द्रव्यभावे अणुकंपा जाइ रे ॥ ॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमाहे पडे आइ, सुझे नहिं कछु अधाराके मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जूभक्षणें जलोदर थाइ, विंछुथी कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी भक्षण वमण दरसाइ, इत्यादिक दुःख इण भवमांइ रे ॥ म० ॥ ४॥ जो त्यागे निशिभोजन तांइ, संवत्सरमें छमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे त्यागो भाइ बाइ, द्रव्यभावें फल अति सुख दाइ रे ॥म०॥६॥

॥ अथ दुःकृत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ छोडो छोडो रे दुःकृत दुःखदानी, इस्कुं कुमति रूप पट्टराणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सेज बिछाणी, जिहा न मिले अन्न उर पाणी रे ॥ छो० ॥ २॥ करे सुख सपत्ति जस हाणी, जम देवे अति त्रास पिले घाणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ दुःख पावे चारी गतमे प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे न्याय पिछाणी, सो तो भविजनके मन मानी रे॥ छो०॥ ५ ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ चित्त चचल चपल थिर करणां, नित धरम शुक्ल ध्यान धरणा रे ॥ चि० ॥ १ ॥ तिन दम तिन शल्य परिहरनां, पंचपरमेष्ठीका गुण सो उच्चरना रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पंच आश्रव पापसेंती डरणा, आठ कर्मशत्रुसेंती लरना रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ महो मुनिधर्मे दश चछ सरणा, बार भावना तप अनुसरणा रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे भवोदधि तरणा, धारो सुगुरु सुदेवका चरणा रे॥५॥

॥ अथ आउखा आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ दम जमका नहि विसवासा, क्यों करे मेरी तेरी धन आशा

रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसमें कछु हासा, ये आसा हे जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले सफाका उजासा, पच्या पाणीके बीच पतासा रे ॥ द०॥३॥ जैसा जल मोतीका उकासा, तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु चुणे उंचा उंचा आवासा, एक दिन होयगा जगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहिं विसवासा, एकदिन देगा सब पर फासा रे ॥ द० ॥ ६॥ तजो क्रोध मानका पासा,जिणछु वजत सुजसका त्रासा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणछु नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा अभ्रासा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सुण चेतन रे,तुम गुणवत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा रे,तुम धर्म ध्यान नित कर जो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ भु०॥ यो नरभव लीनो नीठ,आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सद्गुरुको मिल्यो जोग,सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधानें ॥ सु० ॥१॥ या देह औदारिक जाण, उपरसें चंगी॥ या पलमें उदराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया हे वादलछाय, सुपन जो जाणो ॥ या जोवन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥२॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुंब उर नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरजकी यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो ॥ जावे चउ दिशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु० ॥ ३ ॥ केइ वाजीगर ज्यों वाद, मचावे जाई ॥ रुम रुमीको सुण शब्द, खलक छुट आइ॥ होय तमासो बध, सबि भग जावे ॥ वाजीगर निज गाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारुं महारु कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥

पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट, ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चे तो चतुर,मानो प्रभु वाणी ॥सु० ॥ ५ ॥ उंगणीसें अडतीस जेठ, शुद्ध छठ जाणो ॥ ए रत्तापुरके माय, कियो वखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेते, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, मुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारंभ ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हांरे मतराचे रे ॥ संसार हे सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडकाको पिंजरो ने चामडासु मढियो, काचाकुंभ जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन सपदा रे पायो, विणस जाय जैसी वादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोवन रंग पतंग नदीपुरसों, ढलती जाणजो दूपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥ आयो वुढापो कुडापो रे आयो, सामा बोलण लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिहु लो कमें, इन्द्र चन्द्र सव थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी दुखी बाल जुवान वृद्धनरने,छोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत वधव, आदर देवे मतलव आया ॥ म० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहि पूछे, मूरखपणे क्यों तु ललचाया ॥ म० ॥ ८ ॥ अकेलो तु आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ म० ॥ ए ॥ धर्म विना तु भटक्यो चारु गतिमें, जनम मरण बहु दुख पाया ॥ म० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बीजु ॥

॥देशी एहीज ॥ मानो मानो रे,हारे ॥मा०॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन ग्रहो सु

खदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप कर जो, आठ करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अहंकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणातिपात कूठ चोरी नहि करियें, पालो शील संजम समता आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ छिन छिनमांहे थारो छीजे रे आउखो, खूट जाय जैसो अजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन थिर मत जाणजो, मोह ममता कष्या दुखखाणी ॥ मा० ॥ ६ ॥ उगणिशें सेंतिस माघसुदि तेरश, तिलोकरिख कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकु, हांरे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, सगें को ही नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश पर देशमें, पुण्यविना आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसुं तो माया करे एकठी, जिणमांहि सातपांती पडे सुगुणा ॥ क० ॥ ३ ॥ पाप कमाइने जावे मरी एकिलो, धनको मालक उर होवे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमाहे प्राणी दुख सहे एकिलो, कुटुंबी सो आफा नहिं आवे सुगुणा ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे हाय लाय छोड दो, समतासु शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ देशी एहीज ॥ जागो जागो रे,हारे ॥जा०॥ विदेशी थाने दूरो जाणो ॥ जा० ॥ काल अनतको तु सुतो मोहनिदमें, कायासा नगरमाहि वस्यो राणो ॥१॥जा०॥ कामक्रोध मद ठग लारें पडिया, तपसजमको लूटे छे नाणो ॥२॥ जा०॥ चार तीरथको सागर मोटको, धर्मरूपि मोटी झहाज माणो ॥३॥जा०॥ ज्ञान दरिसण चा

पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट, ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चेतो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥सु० ॥ ५ ॥ उगणीशें अडतीस जेठ, सुध छठ जाणो ॥ ए रत्नपुरके माय, कियो वखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेते, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, सुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारम्भ ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हांरे मतराचे रे ॥ ससार हे सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडकाको पिंजरो ने चामडासु मढियो, काचाकुम्भ जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन सपदा रे पायो, विणस जाय जैसी वादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोवन रंग पतंग नदीपुरसो, ढलती जाणजो दूपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥ आयो बुढापो कुढापो रे आयो, सामा बोलण लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिह्नु लो कर्में, इद चद सब थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी दुखी बाल जुवान वृद्धनरने, छोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत बधव, आदर देवे मतलब आया ॥ म० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहिं पूछे, मूरखपणे क्यों तु ललचाया ॥ म० ॥ ८ ॥ अकेलो तु आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ म० ॥ ए ॥ धर्म विना तु भटक्यो चारु गतिमें, जनम मरण बहु दुख पाया ॥ म० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बीजु ॥

॥देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हारे ॥मा०॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन महो सु

की सरधा, जैन धरम सत्य मन लायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ वाटी सार्टें नरजव मतिहारो, वासी टुकडामें क्यु तुं ललचायो ॥ चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोवन कुटुंब कबीलो, अथिर सकल प्रभु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल वेरी थारी लारा रे पडियो, सकल लोक इणसुं थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान सुकृत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख होव चहायो ॥ चे० ॥ ॥ १९ ॥ उगणिशें सेंतिश माघशुदि तेरश, तिलोकरिख यों उपदेश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमाननी लावणी ॥

॥ दीनदयाल कृपाल, करुणा नमारी ॥ क० ॥ जय विहरमान जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमधर स्वामि,सदा सुखकारी ॥स०॥ जय युग्मधर जसवत,चरण बलिहारी ॥ बाहुजिणंद कृपाल, करुणा नमारी ॥ क० ॥ श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीया गरी ॥ क० ॥ स्वयंप्रभ वीतराग,ममता विमारी ॥ रिखनानन आनद, करे नर नारी ॥ क०॥ जय विहरमान माहाराज,धर्मअधिकारी ॥१॥ अनत वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥त०॥ श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाल,त्रिजगके त्राता ॥त्रि०॥ श्रीवज्रधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चंद्रानन सुखकद, दर्शे चित्त चाता ॥दर्शी०॥ चंद्रबाहु कर्मराहु,हगया खाता ॥ कियो कर्मसें जग, नुजग प्रभु नारी ॥सु०॥ज०॥२॥ ईश्वर त्रिजग ईश, मेरे मन नावे ॥मे०॥ श्री नेमीश्वरजिन ध्यान,करतां दुःख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहाभद्र करे नद्र,विघनकुं हगावे ॥ देवजसा करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज निजपद, देत नज नावें ॥ जघन्यपदें वर्तमान, जिनद उपगारी ॥

रित्र तप जपको, नर लो-दरखस्तु करियाणो ॥ ४ ॥ जा० ॥ सत गुरु खेवटीया मांहि जाणजो, जला परिणामको पवन आणो ॥ ५ ॥ जा० ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसुं सिधावणो, सिद्धवे पारी ज्याको सदा थाणो ॥ ६ ॥ जा० ॥ तिलोकरिख कहे मा ल खप जावसी, कर लो हुशियारी पद निर्वाणो ॥ ७ ॥ जा० ॥

॥ अथ नरकदुःख वर्णन पद प्रारंभ ॥

॥ चेतो चेतो रे, हां रे चेतो चेतो रे, धरमविना दुःख पायो ॥ चेतो० ॥ पाप करीने जीवनरकमांही उपज्यो, अनत दुःख वेख्यो गजरायो ॥ चे०॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लेइ तर वार तिहां झटकायो ॥चे०॥ २ ॥ जूख लागी जद तिणनांही त नको, मास काट काट कर खवायो ॥ चे० ॥३॥ तृपा लागी जद जम देव आयने, तांबो उकाल कर पाणी पायो ॥ चे० ॥ ४ ॥ गरमि लागी जव लवरीसु पकडी, कूड सामली तलें लटकायो ॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पडे रे पानडां, टुक टुक हुवो अ ति गजरायो ॥चे०॥६ ॥ पाय पकडकें उछाल्यो रे गगनमें, झेल्यो त्रिशूल माहा दुःख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमांहि घणो रे नावतो, नदी वेतरणीमाही छटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥ पराइ तिरियाने प्यारी करि मानतो, लालथंजो करी चपकायो ॥ चे० ॥ ९ ॥ दारु मास विना घडि नहिं चालतो, अगनिका कुम्भमाहि रुधकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमाहि दुःख सह्यां रे अनत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहांथी म रीने तिरजच गति उपज्यो, जन्म मरण जयो दुःख कायो ॥ चे० ॥ १२ ॥ नीट नीट कर नर जव पायो, देश आरज उच कुलें जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आउखो ने पूरण इंद्री, काया निरो गी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिल्यो सूत्र

जगतारक अणसण गया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ठ मास में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरजन, दुखनंजन वि दें आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुझकुं, अर्ज करुं नित शिर नामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहीज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोक्कु, ध्यान धरे हे साधु सती ॥ जग उद्धारण समरो साहिब, महावीर त्रिजगतपति ॥ ए टेक ॥ वीतनय पाटणके अदर, नाम उदायिन था राजा ॥ शूरवीर माहाधीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट बंध दश राजा जिनकी, सेवा करता हर्ष धरी ॥ पद्मावती नामें पट्ट राणी, शील रूप गुण प्रेम नरी ॥ परजाकु फरजदसी पाले, दिन दिन चढती पुण्यरति ॥ ज० ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधारे, वद न गये राजा चलिकें ॥ धर्मकथा प्रभुजी फरमाइ, दूनीमें मम त छलके ॥ विन मतलवसें कोइ न किस्का, जग माया हे स्वप्ने ज्यों ॥ इस्कों छोड कर धर्म आराधो, सुणकें लागा नृप कपनें ज्यों ॥ प्रभुसु कहे में सजम लउंगा, पुत्रकु दे कें राज क्षिति ॥ जग० ॥ २ ॥ पीछें जोंग में लउगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राज में जाता सोचे दिलमें, एकी पुत्र मुझ अति प्यारा ॥ राज करेगा नरक पडेगा, दुख पावेगा वोत सही ॥ इसी सवव नाणेज रा ज दउ, सला दिलमें यो राजा ठही ॥ केशी नाम नाणेज राज दे, नूप नया निर्ग्रंथ जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अद र, मेरेमें क्यों एव नरी ॥ क्यु नहि दिया राजछत्र मुझ, दिलमें चिंता वहुत करी ॥ रोप नराकें गया सो चपा, मासी भ्रातके पास चली ॥ वारा व्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर द्वेष वली ॥ अव सुण जो मुनिवरकी किरिया, तप सजममें अधिक रति ॥ ज०

जि०॥ ज०॥३॥ धनुष्यपांचशें प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चोराशी पूरव, आयु फरमाया ॥ थाप्यो हे तीरथ चार, भविक मन जाया ॥ ज० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया॥ में अधम उद्धारण बिरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ 'तिलोकरिख यों जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भवपार, अरज अव धारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥इति ॥

॥ अथ शांतिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडद अगडद ॥ ए देशी ॥ प्रभु तुम विण में भम्यो जगतमें, अव द्यो सुख सपति स्वामी ॥ शांति जिनेश्वर शांति करो मोय, विघन हरण अतरजामी ॥ पाल्यो पारेवो मेघरथ नृपभव, गोत्र तीर्थंकर बाध्यो जिहा ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये सयम लेकर, स्थिति तेत्रिश सागरकी तिहां ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अचिरा कूखे जन्म लियो ॥ वे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रभु दूर कियो ॥ जस फेल्यो तव सारे देशमें, परजा पण शाता पामी ॥ शां० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्ष लग, कुंअर राज चकरवर्ती ॥ एक हजार पुरुष सगें प्रभु, सजम लीनो शुभ मती ॥ एक वरस छद्मस्थ पणामें, सह्या परिसह जिनराया ॥ घनघातिक चउ कर्म काटके, श्रीजिनवर केवल पाया ॥ दियो उपदेश भविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शां० ॥२॥ पचीस सहस्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ छत्तिस गणधर हुवे नायके, वासठ सहस्र भये मुनिराई ॥ एकशठ हजार उंर छर्गे आर्जिका, एक लक्ष नेवु हजारा ॥ भये श्रावक एकविश गुण पूरण, बाराव्रत धारणहारा ॥ तिन लक्ष त्र्याणु सहस श्राविका, करणीमें कुछ नहि खामी ॥ शा० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्व आयु खो, जिन मारग हद दीपाया ॥ समेतशिखर पर्वत पर चढके,

रेश्वर, चोत्तिस अतिशय करि राजे ॥ सकल कर्म नय नर्म मिटा या,वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखमी वंम अफम करे नहिं, नगे शीयाल ज्यों सिह देखी ॥ अपरपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी नवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजग्र हीकुं आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जाऊ सम, सब मुनिवरमें सर साया ॥ध०॥१॥ बागवान दिल हरख आनकें,कहेता श्रेणिक राज नके ॥ पुण्य उदय प्रज्ञु बागमें आये, सग बहुत मुनि हे उनके ॥ विदा दे कें चले सज असवारी, वदना कर बेठे सामे ॥ प्रजुजी दे उपदेश सजामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुऊ दीनदयाल रूपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र मुनि सग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेतज हे कोन इनोमें,करणीमें ड करकारा ॥ प्रजुजी कहे सब मोतीमाल सम, स जम करणी हुशियारा ॥ ड कर ड कर कार सकलमें,धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम गाम करणीका परसन, पूछे श्रेणिक कमाया ॥ ध० ॥ ३ ॥ काकदी नगरीके अंदर,गाथा पतणी नद्रा नामें ॥ ध न्नो सुत गुणवत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ बत्तिस ल डकी नूपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायजे, सब एक सो बाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलमें, नोग नोगवे मन चाया ॥ध०॥४॥ एक दिन त्रिशलानंद दिवाकर, काकदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन दरिसणकुं धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट धर,वदणा कर बेठे आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी सपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥ तन धन जोबन सर्व अथिर हे, पुजल शोजा हे सारी ॥ मात पिता उर कुटुंब कबीला, मतलबकी जगमें यारी ॥ त्रा ण शरण नहि मरण रोगमें, इस्में कुछ नहिं हे शका ॥ काच

॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरंतर, अरस निरस तुछ आहार करे ॥ अग्यारा अंग कंठाग्र कर कें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करतां सो आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम नया ॥ ढ्थाइ फेराइ पुरमें साधुकु, उतरने मत देनां यहा ॥ जो उतारेगा इनकु घर अंदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंनकार एक था नवि प्राणी,दिल अंदर विचार कीया ॥ राजा रूठा लेगा गव्हा,नामा राखका ढग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी,क्या कर छे राजा मेरा ॥ एसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर जहां ठहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अछी नहिं कछु जिनस ठती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसु राजा कहे तुम, जहेर देनां औषध माइ ॥ दवा लगे नहिं फिर जीवणकी, ऐसा काम करो ना इ ॥ एसा हुकुम उन मान लिया उंर,साधुकु दिया जहेर माहा ॥ दवा लेतेही नइ रिख दीकत,रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर समता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥ ७ ॥ लहेने वाला माग लहेनां,आनाकानी काम नहीं ॥ हे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुकल ध्यान सही ॥ पाय केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमें म्का दिया ॥ जय जय बोलो उनकी नइया, शमद म रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख अनत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥ ८ ॥ समकेती सुर दिल घुसे न राणे, विन तक्सीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल, प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दट्टण पट्टण,बदी कीया दुख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख दरसावत हे ॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ए ॥ इति उदायिन राजाकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ सोल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सु

रेश्वर, चोत्तिस अतिशय करि गाजे ॥ सकल कर्म नय नर्म मिटा या,वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखमी वंम्न अफंम्न करे नहिं, नगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी नवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृ हीकुं आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जाऊ सम, सब मुनिवरमें सर साया ॥ध०॥१॥ वागवान दिल हरख आनकें,कहेता श्रेणिक राज नके ॥ पुण्य उदय प्रन्नु वागमें आये, सग बहुत मुनि हे उनके ॥ विदा दे कें चले सज असवारी, वदना कर वेठे सामे ॥ प्रन्नुजी दे उपदेश सन्नामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुऊ दीनदयाल रुपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र मुनि सग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेतज हे कोन इनोमें,करणीमें ऊ करकारा ॥ प्रन्नुजी कहे सब मोतीमाल सम, सं जम करणी हुशियारा ॥ ऊ कर ऊ कर कार सकलमें,धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम गाम करणीका परसन, पूछे श्रेणिक कमाया ॥ ध० ॥ ३ ॥ काकदी नगरीके अंदर,गाथा पतणी नद्रा नामें ॥ ध न्नो सुत गुणवत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ बत्तिस ल डकी नूपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायजे, सब एक सो बाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलमें, नोग नोगवे मन चाया ॥ध०॥४॥ एक दिन त्रिशलानद दिवाकर, काकदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन दरिसणकुं धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट धर,वदणा कर वेठे आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी सपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन सर्व अथिर हे, पुग्गल शोना हे सारी ॥ मात पिता उर कुटुंब कवीला, मतलबकी जगमें यारी ॥ त्रा ण शरण नहि मरण रोगमें, इस्में कुछ नहिं हे शका ॥ काच

॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरतर, अरस निरस तुछ आहार करे ॥ अग्यारा अग कगाग्र कर कें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करतां सो आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम नया ॥ उआइ फेराइ पुरमें साधुकु, उतरने मत देनां यहा ॥ जो उतारेगा इनकु घर अदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुनकार एक था नवि प्राणी,दिल अदर विचार कीया ॥ राजा रूग लेगा गद्धा,नामा राखका ढग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी,क्या कर ले राजा मेरा ॥ एसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर जहां ठहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अभी नहिं कछु जिन स गती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसु राजा कहे तुम, जहेर देनां औपध माइ ॥ दवा लगे नहिंफिर जीवणकी,ऐसा काम करो जा इ ॥ एसा हुक्कम उन मान लिया उंर,साधुकु दिया जहेर माहा ॥ दवा लेतेही नइ रिख दीकत,रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर स मता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥ ७ ॥ लहेने वाला माग लहेनां,आनाकानी काम नहीं ॥ हे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुकल ध्यान सही ॥ पाय केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमें मका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी नइया, शमद म रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख अनत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥ ८ ॥ समकेती सुर दिल घुसे न राणे, विन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल, प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृपा करी दट्टण पट्टण,वदी की या दुःख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख दरसावत हे ॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ए ॥ इति उदायिन राजाकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ सोल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सु

पण निर्बल नर उर, इण नवकी चाहत शाता ॥ परनवकी नहि चाहत जिसके, सो सजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकु सहज हे सयम, जगका जूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायक ने दरसाया ॥ ध० ॥१२॥ सवाल जवाव नये मा बेटाके, अधिक थकी आज्ञा दीनी ॥ वहुत मोछव उर वलट नावसें, धन्नाने दी क्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रजुजीसुं, जावजीव छठ तप धा रुं ॥ पारणे आंबिल आहार नाखतो, मिले तो लउं पारणा सा रु ॥ नगवत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय माह्या ॥ ध०॥१३॥ चढते नाव उर सम परिणामें, तप धार्यो डुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकु, कोई दिन नहिं मिलता वा री ॥ सूका लूखा तन नया नूखसें, लोही मास सब सूकाणो ॥ काचा तुवा सो सीस मुनिकों, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ उमा क डेला सो पेट ज्यु दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥ अवपेसी ज्यु नासिका रिखकी, काचरी गल ज्युं कान कया ॥ ढीं क परवी ज्यु जघा दरसे, सूका सरप ज्यों वदन नया ॥ काक पाव ज्यु पावकी पिंमी, आगली सूकी ज्यों मुगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड दीसे सब, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरमें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलाति क उर एरम लकडको, चलतो गाडो वजे जैसें ॥ उठतां वेठतां हालतां चलतां, मुनिके हाड वजे तैसें ॥ तप तेजसें पुष्ट नया मु नि, निर्बल वहुत नये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुण ते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, नाव सजम निश्चल गाया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रश्न कु वदे शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास जायकें, कहे तुम धन अं तर जामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुछ न हि खामी ॥ छता नोग छटकाय दिया सब, डुकर तप किरिया

की शीशी फूटे पलकमें, मत मगरूर करे अंगका ॥ धरम ध्या न दोइ हे तुझ संगी, जग सब सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ५ ॥ काम क्रोध मद राग द्वेष छल, सकल करमके बंधन हे ॥ चेतन कु बेहाल करे हे, चार गति दुःख फंदन हे ॥ जबलों जरा व्याधि नहि आवे, इंद्रियका बल घटे तेरा ॥ जिस पेहले हुशियार होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय तुमारे, ए कहेणी मानो जाया ॥ ध० ॥७॥ धन्नो शेठ वैराग आणदिल, कहे साहिबसु शिर नामी ॥ आप कही सो हे सब सच्ची, में संजम लेवणकामी ॥ जननीकी आज्ञा ले आउ, प्रभु कहे सुख तुम तांइ ॥ जेज करो मत धर्म काममें, गइ पलसो आवे नांही ॥ वंदणा कर चल आया मातपें, आज्ञा मागे हुलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा, मूर्छा खाय पडी धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आंखो सुं दनसें झरती ॥ कहे पुत्रकु संजम किरिया, दुर्लभ हे तुझकुं नाइ ॥ बत्तिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत छटकाइ ॥ मेरे पीछें तुझ वृद्ध वय आयां, फिर संजम लीजें जाया ॥ ध० ॥ ए ॥ खड्ग धार उर छुरी पान पर, चलणा दुष्कर अधिकाइ ॥ लोह चणा मोम दांतें चावणा, वेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसुं कोथलो भरणो जैसें, मेरु तोलणो कठिणाइ ॥ गंगा नदीकी धार पकड कर, चढना जेसें गगनमाइ ॥ एसे संजम दुःकर दुःकर, तेरी हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर, धन्नो कहे सुणरी माइ ॥ नारी क्यारी नरक कुंभकी, फल किंपाकसी दरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमे, छोडे नही ए किस तांइ ॥ कोण वखत उर कवण योगसें, पहेला पीछें खबर नांइ ॥ मेरेंत झट दे दे आज्ञा, जनम मरणसें गभराया ॥ ध० ॥ ११ ॥ संजम मारग दुःकर दुःकर, इसमें फरक नहि माता ॥ कायर कु

पण निर्बल नर डर, इण नवकी चाहत शाता ॥ परनवकी नहि चाहत जिसके, सो सजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकुं सहज हे संयम, जगका जूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायक ने दरसाया ॥ ध० ॥ १२ ॥ सवाल जवाब नये मा बेटाके, अधिक थकी आज्ञा दीनी ॥ बहुत मोछवे डर उलट नावसें, धन्नाने दीक्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रनुजीसुं, जावजीव छठ तप धारु ॥ पारणे आविल आहार नाखतो, मिले तो लव पारणा सारु ॥ नगवत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय माह्या ॥ ध० ॥ १३ ॥ चढते नाव डर सम परिणामें, तप धाख्यो डुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकु, कोई दिन नहिं मिलता वारी ॥ सूका लूखा तन नया नूखसें, लोही मांस सब सूकाणो ॥ काचा तुबा सो सीस मुनिकों, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ ऊंमा कढेला सो पेट ज्युं दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥ अबपेसी ज्यु नासिका रिखकी, काचरी गल ज्युं कान कया ॥ ढींक पंखी ज्यु जघा दरसे, सूका सरप ज्यों वदन नया ॥ काक पाव ज्यु पावकी पिंमी, आगली सूकी ज्यों मुंगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड दीसे सब, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरमें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलातिक डर एरम लकडको, चलतो गाडो वजे जैसें ॥ ऊठतां बेठतां हालतां चलतां, मुनिके हाड वजे तैसें ॥ तप तेजसें पुष्ट नया मुनि, निर्बल बहुत नये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुणते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, नाव सजम निश्चल गाया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रभुकु वदे शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास जायकें, कहे तुम धन अंतर जामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुछ नहि खामी ॥ छता नोग छटकाय दिया सब, डुकर तप किरिया

कामी ॥ तुम हो गरिबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुज मन नाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम नृपति, प्रभु प्रण मी गये निज ठामें ॥ दिन केता रहि विहार कीयो प्रभु, विचरे पु र पाटण ग्रामें ॥ कोइ दिन राजगृही नगरमें, समोसस्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामे मुनि चितो,शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ध०॥१८॥ विपुलगिरि पर्वत पर चढकें, पादोपगम अणसण कीना ॥ एक मास सथारो आराधि,रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे अग अग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अंत चढते परि णामे, बहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमति आ उखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तिन पंच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तिनसें जाणो ॥ मास नवका सास बताया,सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी के ऊपर,लाख सत्ताणु पल कहीयें ॥ सहस्र अट्ठाणु नवसें ठघु, त्रीजो भाग अ धिक लहीयें ॥ एक एक दम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिद्धमें सु ख पाया ॥ ध० ॥ २० ॥ सवत उंगणीशें आडतीस शाले, चैत्र शु कल ग्यारश आइ ॥ वार चद दिन पेठ आंबोरी, ठाइ देश दक्षिण माइ ॥ माहाराज अयवता रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख लावणी गाइ ॥ गुणी जनकी तारीफ करी पद, अष्ठन कर्मके क्षय ताइ ॥ एसी समज सब गाना गुणी गुण,काम सिद्धि सुख सवाया ॥ध०॥ २१ ॥ इति धन्नाकाकदीजीकी लावणी सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेत सयाणा, दुर्लभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह नि रोगी धार ॥ आछखो इंद्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रकी

सरधा, धारो हिरदा मझार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ ज्ञान दर्शन चारितर करणी, तप बारा परकार ॥ धारकें तरे अनत नर नार ॥ झेलो ॥ एसो जाणके धरम करीजें, करम बधणसें अधिक डरीजें ॥ मिथ्या भर्मकुं दूर हरीजें, जप तप सजममे चित्तदीजें, ॥ज०॥ निश्चल समकित धार ॥ होय तेरी आतमको उद्धार ॥ चेत० ॥१॥ मात पिता तिरिया सुत बधव, सजन स्नेही परिवार ॥ एतो सब हेगा मतलब यार ॥ बिन मतलब सब हे दुखदाइ, नहिं तुझ तारणहार ॥ इसमें शका नहि हे लगार ॥ पुत्र अंगकु भग किया नृप, कनक रथ दुखकार ॥ जिनोंका छेदे अंग विस्तार ॥ चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकु, लाखका महेल मझार ॥ बालबाकियो अगन परिचार ॥ झेलो ॥ सुरिकांता पति झहेर खवायो, श्रेणिकके सुत पिंजरे गयो ॥ भरत बाहुबलि हाथ उगायो ॥ भ० ॥ दुर्योधन महा जंग मचायो ॥ कीयो कुलको सहार ॥ चे० ॥ २ ॥ काचा कुभ जेसी काया रे तेरी, छिनमें होय विनास ॥ इसीका जूठा हे विश्वास ॥ खावणा पीणा भोग इडीका, ए सब हे दुखरास ॥ भोगसें होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहां सहे, परवश जमकी त्रास, शाता नहिं हे क्षण नरकी तास ॥ वीते काल असख्य जहा नहि, सुख रंच एक सास ॥ बध रह्यो अष्ट कर्मकी फास ॥ झेलो ॥ भोग हलाहल झहेरसा जाणो, उपमा फल किंपाक बखाणो ॥ अनित्य जाण जगके छिटकाणो, ले लो खरची धर्मको नाणो ॥ ले० ॥ करे सतगुरु हुशियार ॥ अवसर एसा नहि हे वार वार ॥ चे०॥ ३ ॥ धन सपत सब कारमी जाणो, ज्यों वीजलि झबकार ॥ कवडी नहिं चलेगा तेरी लार ॥ छिन छिनमा हे छिजे आउखो, ज्यों अजलीको वार ॥ जोरावर काल लग्यो हे तेरी लार ॥ देव दाणव हरि हर उर चक्री, इड चड अवतार ॥ छोडे नहिं किस्कु काल करार ॥ वखत वार नहि देखे जोगणी, बाल त

रुण वयधार ॥ देखे नही सुखी दुःखी नर नार ॥ फेलो ॥ दान शील तप भावना भावो, धरम ध्यानको लीजें लावो ॥ धन सपत में मत अकडावो, साधु सतकु शीश नमावो ॥सा०॥ जो चाहो निस्तार ॥ माया तजि आदरो सजमभार ॥ चे०॥ ४ ॥ निज आतम सम जीव छकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया विन करणी सब वेगार ॥ सत्य वचन निरवद्यसो बोलो, चोरी सर्वे निवार ॥ शील नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो, लोभ कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल सहार ॥ कलह आल पर चुगली निंदा, रत आरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज दुःखकार ॥ फेलो ॥ नरक गति दुःखकार ए जाणी, छोडो इनकुं भव्य जन प्राणी ॥ इण भव जस परभव सुखदाणी, लावणी श्रीगुंदा में जोडाणी ॥ ला० ॥ उगणीशें तीस मकार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, श्रावक करणी धार ॥ तोही पण उतरोगे भवपार ॥ देव नमो अरिहंत भावसु, गुरु गिरुवा गुण धार ॥ जिनोंकी सेव किर्यां निस्तार ॥ धर्म केवली आज्ञामें सहीं, जीव दयानंत सार ॥ सकल शास्त्रमें है अधिकार ॥ त्रस थावर दो भेद प्ररूप्या, न निभे सर्व प्रकार ॥ तोहि पण तरस जीवें उगार ॥ फेलो ॥ जाणी देखी निरअपराधी, अथवा तनकु दे न उपाधि ॥ हणवाकी बुद्धि दिलसु साधी, हणो मत जिन आज्ञा आराधी ॥ ह० ॥ निर्दय हुइ मत मार, शक्तिसु अधिक भरो मत भार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाढो बंधण अग छेदना, वध करो मत आहार ॥ अणुकपा निशदिन दिलमें धार ॥ वापरणो नही अणछाण्यो जल, निरर्थक मत करो खुवार ॥ पुजे अग्नि मत दो नर नार ,

॥ वासी लीपण लीपणो टालो, जू मांकड मत मार ॥ मछरकुं हण न कुंथुवो निवार ॥ अनंतगुणा पुनि थावरसूं त्रस, पाप तणो नहि पार ॥ निजात्मसम सब जीव उगार ॥ फेलो ॥ तडको न देणो सब्यां धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहि पाप मानके, जीव उगारो दया आनके ॥ ज० ॥ तरस त्रास डुखकार, दानमें अनय दान श्रीकार ॥ च० ॥ १ ॥ कन्या पछु उंर धरती कारण, जुठ करो परिहार ॥ थापण पर उलवणी नहिं यार ॥ लाच लेइ कूडी साख नरो मत, मत करो मर्म जहार ॥ जुगा खत मांमो मत कुविचार ॥ विना विचारे बोलणो नहि कुठ, सत्य वडो संसार ॥ सत्यसूं कदी न होवे हार ॥ खातर खणी धाडा मत पाडो, पडकूची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु द्यो टार ॥ फेलो ॥ राज दमे सो काम न कीजें, चोखी बताइ खोटी न दीजें ॥ चोरीकी वस्तु माल न लीजें, कूडां तोला मापां परहरीजें ॥ कू० ॥ चोरी हे डुखकार, समज कर त्यागो सब नर नार ॥ च० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप बोत हे, खट मतमें विस्तार ॥ समफ कर ममता दिलकी मार ॥ शील वरत सुखदाइ हे सबकु, वंछित पूरणहार ॥ उपमा बत्रीश सूत्र मफार ॥ अल्पवयें अणसा खी पंचकी, सो बरजो निज नार ॥ तिव्र अभिलापाको अतिचार ॥ धन मरजादा करी हे तिणसु, अधकी ममत निवार ॥ परधन देखी मत मुरफो लगार ॥ फेलो ॥ पुण्य विना दोलत नही पावे, निरर्थक मनमें क्यों मुरफावे ॥ धन सपत छिनमें विरलावे, एकलो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसें आश फले संसार ॥ च० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरछी दिश जावण, मरजादा लो धार, टले ज्यू आश्रव पंच प्रकार ॥ छविश बोल मरजादा कर लो, कंद मूल तुछ आहार ॥ कर्मादान पंद्र तज महा नार ॥ तज प्रमाद उंर निरर्थक आरत, हिंसा दान निवार ॥ खो

टो उपदेश न दिजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहि कीजें, पाप श्र स्व परिहार ॥ एसा है श्रावकका आचार ॥ जेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, बत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समभाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिस्को नफो है अपरम पार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावकाशिक नेम चितारो, खट पोषध व्रत धार ॥ जिस्में वर्जो दोष अढार ॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणा चार ॥ भावछ प्रतिजा भो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका, सो लीजो हिरदे धार ॥ होय ज्यु आतमको उद्धार ॥ सवत् उंगणीशें शाल सेंतिशका, श्री गुदाके मझार ॥ पोष शुदि अष्टमी शुक्करवार ॥ जेलो ॥ श्रावक करणी करजो भाइ, नरभव चिंतामणि अधिकाइ ॥ वार वार ए अवसर नाइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारंभ ॥

॥ धन्नाशेठ भवमाय, दान दियो भावे ॥ दा० ॥ जिहां बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, ऋषभजिन थावे ॥ खट वरिसण परसिद्ध, ऋद्धि अति पावे ॥ ऋ० ॥ प्रभु पाप्या तीरथ चार, अचल गति जावे ॥ अजर अमर अविकार, कमी नही काइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पाचशें मुनिकु, करयो भावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, भरत नृप थावे ॥ छपाधिपरव कीयो राज, छ खमके साइ ॥ छ० ॥ भवन आरिसाके राधी भा भाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ ॥ उत्त० भावें, बाहुबलि राया ॥ अपर वली जगमांहि, भरते अणुकपार० ॥ २ ॥ मेघरथ नृप भवमाय, दया दिल आणी निरथीक मशरेचो सरण, धूजतो प्राणी ॥ धदनको मां

स दियो काट, छियो बचाइ ॥ दि० ॥ सर्वार्थसिद्धके मांइ, उत्कृष्ट स्थिति पाइ ॥ शांति जिनद सुख कद, चक्रिपद पाया ॥ च०॥ दी पायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आठु कर्म घाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो ऊखको पाणी, राजा उर राणी ॥ रा० ॥ हर्ष नाव शखराय, कपट नहिं आणी ॥ बांध्यु तीर्थंक र गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजीका नद, जगत मन नाया ॥ तोरणसे फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्र तु तज कर राजुल नार, संजम पद ठाणी ॥ जिनकी कीर्त्ति जग मांहि, सदा हे सवाइ ॥ स०॥ तु०॥४॥ धर्म रुचि मुनिराज, मास तप ठाया ॥ मा० ॥ वे चपानगरी बीच, विचरता आया ॥ नाग सिरी घर गया, तुंबो बोहोरायो ॥तुं०॥ गुरु आज्ञाथी जाय, विड परठायो ॥ मरती किडियां देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि जहेर हलाहल पियो, खीर सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सा गर अमर, मुगति पुरी पाइ ॥ मु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको दान, संगम नव मांइ ॥ स० ॥ शालिनद्र सौनागी, महा रिद्धि पाइ ॥ सुवाहुदिक दश कुमर, दान पग्नावें ॥ दा० ॥ पंदर नव के मांय, मुगति सब पावे ॥ कृष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म द लाली ॥ ध० ॥ जिणें बांध्यु तीर्थंकर गोत्र, सूत्रमें चाली ॥ करी क्षमा परदेशी, पाप छिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शी ल तप नाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनंत, छोडे उपाधी ॥ एसो जाण सुकृत करो, थें नर नारी ॥ थे० ॥ छोडो पाप प्रमाद, महा डुखकारी ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य, जिससें सुख पा वे ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे सत्य, सूत्रके न्यावें ॥ सहेर पुना की मांइ, लावणी बणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरतरु, जयजजण जगवत ॥ त्रिश

टो उपदेश न दिजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहि कीजें, पाप स ख परिहार ॥ एसा हे श्रावकका आचार ॥ झेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, वत्तीस दूपण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समजाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिस्को नफो हे अपरम पार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावकाशि क नेम चितारो, खट पौपध व्रत धार ॥ जिस्में वर्जो दोष अढार ॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणां चार ॥ जावश्रुं प्रतिजा जो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका, सो लीजो हिरदे धार ॥ होय ज्यु आतमको उद्धार ॥ सवत् उगणीशें शाल सेंतिसका, श्री गुवाके मझार ॥ पोष सुदि अष्टमी शुक्रवार ॥ झेलो ॥ श्रावक क रणी करजो जाइ, नरजव चितामणि अधिकाइ ॥ वार वार ए अ वसर नाइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारज ॥

॥ धन्नाशेठ भवमाय, दान दियो जावे ॥ दा० ॥ जिहां वाध्युं तीर्थंकर गोत्र, रुपजजिन थावे ॥ खट दरिसण परसिद्ध, रूद्धि अति पावे ॥ रु० ॥ प्रज्ञु थाप्या तीरथ चार, अचल गति जावे ॥ अजर अमर अविकार, कमी नही काइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पाचशें मुनिकुं, क र्यो जावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, जरत नृप थावें ॥ उ वपाधिपुरव कीधो राज, उ खमके साइ ॥ उ० ॥ जवन आरिसाके आराधी जा जाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ जार ॥ उत्त० जावें, वाहुवलि राया ॥ अपर वली जगमाहि, जरते हार ॥ अणुकपार०॥२॥ मेघरथ नृप जवमाय, दया दिल आणी ण्यो जन्न, निरर्थक मरतो सरण, भूजतो प्राणी ॥ बदनको मा

विकसा कमल उकरडी उपर, जिस्का नेद सुनो नाइ ॥ चार वर्णमें माहाजनके घर, धरम रहेगा अधिकाइ ॥ सास्तरकी रुचि रहेगी थोडी, सुणतां निड़ा लेवेगा ॥ स्तवन सजाय उर ढाल चो पाइ,जिस्में वहुत खुश रहेवेगा ॥ प्रतिवोध पण इस्में पा कें,होवेगा सजमधारी ॥न०॥५॥ आशाका चमत्कार आठमें,नेद सुणो इस्का नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, वाकी मिथ्यातम हे फीका ॥ समुदर सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश मोलो पाणी ॥ दक्षिण दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पंचकल्याणिक नये जिणपुरमें, धरम हानि जहा उचारी ॥ न० ॥ ६ ॥ दशमें सोनेकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता ॥ उत्तमकुलकी दोलत हे सो, जावेगी मध्यम हाता ॥ नट खट सौदा चोर ठगा रा, धूरत होयगा धनवाला ॥ साहुकार सो फुरेगा दिलमें, कहे न शके मनकी ज्वाला ॥ धन सपत सज्जनकी हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ न० ॥ ७ ॥ हस्तीके पर ग्यारमे स्वपने, देखा वंदरकु वेठ ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेठ ॥ वारमे स्वपने देखा तुमने, दरिये मरजादा छोडी ॥ वेटा वेटी मात पिताकी, मरजादा राखे थोडी ॥ वहू सासुका न करे गी कहेणा, उलटी डुख देगी नारी ॥ न० ॥ ८ ॥ लाच ग्राही सो क्षत्री होयगा,वचन देकें नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाति नर, सच्चे नरकु ठगवेगा ॥ नला सक्सका आदर कमती, पापी आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीकी चेला चेली,सेवा नक्ति कम चहावे गा ॥ अपनी वडाइ करेगा मुखसें, गुरुकु होयगा डुखकारी ॥ न० ॥ ए ॥ जोत्या देखी स्वपने तेरमें, वाछरुके महारथमाही ॥ नादान उमरके धरम करेगा,सजम लेगा उलसाइ ॥ लज्जासु तप सजम पाली, तप जपमें चित्त देवेगा ॥ वूढा धिठ होयगा धर्ममें, आलस अधिको रहेवेगा ॥ सरखा नहिं सव लडका वूढा,समुचय

जानद दिनद सम, प्रणमुं मन धरि खत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौत म गुरु, तप सजम दातार ॥ तास प्रसादें वर्णवु, सुपन सोले अ धिकार ॥ २ ॥ पाम्लिपुर नगरविषे, चन्द्रगुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत धारक गुणी, परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध, नद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसस्या उद्यानमें,तारण तरण जिहाज ॥ ॥ ४ ॥ परकी पोसाने विषे, देख्या स्वपनां सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम बजे चोघडा ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी,अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होइगा को इ, सजम वो नहि लेनेका ॥ दुजे अस्त नया सूर्य अकालें,नेद सु णो अब इस्का सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया हे,उनकु केवल ज्ञा न नहीं ॥ नहिं मनपरजव अवधि पूरण, ए अंधकार नया ना री ॥ नद्रबाहु मुनि कहे नूपसु, पंचमो आरो दुखकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जेसा,तिसरे सपनाके माइ ॥ अलग अ लग समाचारी होयगी,बोल फरक कुछ दरसाइ ॥ नूत नूतणी न चते दिल मिल, देखा चोथे सुपनमाइ ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिन कु, लोक मानेगा अधिकाइ ॥ दया धर्मपर वहोत जलेंगे, थोडे जेनधरमधारी ॥ न० ॥ २ ॥ पाचमे देखा सर्प नयकर, बारे फ णकर फुकारे ॥ कितेक साल पिछें काल पडेगा, बारे बरस लग नयकारे ॥ उत्तम साधु कर सथारा, आतमकारज सारेगा ॥ का यर साधू सो ढीले पडेंगे,हिंसाधर्म विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश लोकोकु, होवेगा केइ घरबारी ॥ न० ॥ ३ ॥ छठे स्वपने देवविमा णकु, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिल अदर आणी थिरता ॥ जघाचारण लब्धि धारक, और वि द्याचारण जाणो ॥ ए दो लब्धिके हे धारक,एसे मुनिवरकी हाणो ॥ वैक्रिय और आहारिककी लब्धि, ए भी विछेदेगा सारी ॥न०॥४॥

उंसबुंदपाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे ॥ कर लो हुसियारी, धर्म तैयारी मरजो कालसु ॥१॥ जोवन जातां जेज न लागे, ज्युं नदीको पूर ॥ नदी किनारे तरुवर जैसें, कोई दिन जाये जरूर हो ॥ कर लो हुसियारी ॥ ध० ॥ २ ॥ वाल तरुण वृद्ध सुखी डुखी उंर, राय रक नर नार ॥ हरि हर इइ नरेंड सुरासुर, गेडे न काल करार रे ॥ करलो हु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वैधरत व्यतिपात जोगिणी,कालवास दिशाशूल ॥ काल न देखे वखत वारने, छिनमें करेगे चूल हो ॥ कर लो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूतां जागतां खातां पीतां, करता वात विचार ॥ नहिं जरोंसो कालदूतको, जवरदस्त ससार हो ॥ कर लो० ॥ध०॥५॥ जाड पहाड उजाडगाममें, नदी खाल नवाण ॥ खवर नहि किण गामके उपर, काल ले जावे ताण रे ॥ कर लो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ जल अग्नि और जहेर सुजगम, सिंह रीछ पशु व्याल ॥ खवर नहि रोग सोग उपातवकी, आसीकिण जोगें काल रे ॥ कर लो०॥ध०॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुमलाय ॥ वधा सो विखरे इण जगमें, वेम नहि इणमाय रे ॥ कर लो० ॥ ध० ॥ ८ ॥ जो क्षण जावे सो नहिं आवे, करतां कोडि उपाय ॥ आउखुं समोलक पायकें चेतन, खोवे मत फोकमांय रे ॥ कर लो० ॥ ध० ॥ ए ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, करजो सुगुणा लोक ॥ परजव खरची साथी जीवने, लीजो नाणो रोक रे ॥ कर लो० ॥ध०॥ १० ॥ ए ससार असार वासले, ममता मोह निवार ॥ कालको मर जो मेटणो तुजने, कर ले सेवा पार रे ॥ कर लो०॥ ध०॥ ११ ॥ उंगणीसें अडतीस जेठ कृष्ण पख, तीज तिथि शशिवार ॥ ठेवटाकलीमें तिलोकरिख कहे, धर्मसु जयजयकार रे ॥ कर लो० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पाचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरस हो गइ,पाणी कम वरसे ॥ पा० ॥ कबही धा

भाव कह्या जह्यारी ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मवी देखी, च
उदमा स्वपनामें जाणो ॥ भरतक्षेत्रका सत साधके, हेत इकलास
थोडो मानो ॥ क्रोधी क्लेषी अरु अभिमानी,अपनी बात जमावेगा॥
भली सीख जो देगा कोइ, उस्का उगुण बतावेगा ॥ अलपद्दोयगा
सजमवता, होयगा बहोतसा लिंगधारी ॥भइ०॥११॥ राजकुंअर
सो चढ्या पोठिपर,देखा स्वपने पहरमें ॥ राजा जैनधरम तज दे
गा, राचेगा मिथ्याकरमें ॥ बात करे जो सद्भावटकी,उस्की थोडा
मानेगा ॥ जूठेकी परतीत करेगा, खोटेका पक्ष तानेगा ॥ धर्मीपुरु
षका करेगा ठठा, पापीका आदर भारी ॥भ०॥१२॥ लडते हस्ती देखे
सोलमे,विन मावत आपस मांहि ॥ वार वार दुष्काल पडेगा, म
न चहाया वर्षेगा नाहिं॥ मात पिता गुरु बातके करता,बिच बिच
बात करेगा छोटा ॥ भाइ भाइमें सपत उठी, बोलेगा निर्थक
खोटा ॥ पिता पक्षको आदर उठो, त्रियापक्षसु करेगा यारी ॥
भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा
होवेगा ॥ झगडा टटा निरर्थक करकें, राजमाही धन खोवेगा ॥
केण न माने भला सक्सकी, फिर पाछे पस्तावेगा ॥ एकविश ह
जार वरस लग राजिद, एसी रीत कर जावेगा ॥ अरथ सुणी
सोले स्वपनाका, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ संव
त उगणीशे शाल सैंतिसका, फागण वदि ग्यारस आई ॥ तिलो
करिख कहे स्वपन लावणी, गाम कहामें बणाई ॥ पचम आरो दु
खम नामें, दु ख है इणमें अधिकाई ॥ धरम ध्यान उर समता रा
खे, उनकु सुख समजो भाइ॥ एसो जाणकें करजो सुरुत,उतरो
गे भवजल पारी ॥भश्वाहु०॥१५॥ इति शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥साखी॥छिन छिनमाहे छीज आउखो, ज्यू अजलिजल जाण॥

फक्त परख, राजि आमत्ररसुं ॥ अल्प संपदामांहे, करे मगरूरी ॥
नरपची, शेठ
गाश्री ॥
जावे ॥ न
छोटे वडेकी
अकडाइ ॥
वचन दे कें
उससें दिल
॥ पक्षु न
के मांहे, ख
न खोवे ॥
तलमें अण
री ॥ पा०॥
ाता लाज,
होटि,दाम
। परमदेवा
त, पीर म
लोभी व
लगे खा
नहिं राखे
रे सायदी
रलापी ॥
सास्तर
नहि प्या
स्के देणे
॥ किस्के
का दुख,

न्य गल जाए, कबहीं जन तरसे ॥ कबहींक उंगी थंभ, लोक चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कबहींक पडती बहोत, नाज जल जावे ॥ कबहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कबहीं धर्म पडे बहोत, आलम गभरावे ॥ करो धर्म ध्यान सतोष, सदा सुख कारी ॥ स० ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुसियारी ॥ ए टेक ॥१॥ वस्ती कजड वोत, नहि धनवाला ॥ न० ॥ जो किस्के मिले धन्न, नहीं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन ला वे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दुःख, झगडा केइ लावे ॥ झ० ॥ कोइके कुव्यसनी होय, गती दझावे ॥ कुलमें लगावे दाघ, लजावे नारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ वोले घापके सामे, देवे हुंकारो ॥ दे० ॥ सारीमें नाठी अकल, माने कुण धारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, माहे नहिं रेवे ॥ मा० ॥ सासूकु हुकममें राखे, वहू दुःख देवे ॥ वेटा हो वे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ करे पितासु जोरो, माया स व म्हारी ॥ झगडे राजके माय, वोले कुविचारी ॥ वो० ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइके पूत सपूत, नारी दुःखकारी ॥ ना० ॥ दुःख देवे दिन रात, माहा कलहकारी ॥ ठेठी लंकाकी लाय, शरम नहिं त नमें ॥ श० ॥ नांखे लोकके वीच, कत दुःखी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, भ्रात सतावे ॥ भ्रा० ॥ वे झगडा टटा करकें, राजमें जावे ॥ वात वातमें द्वेप, करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥४॥ जो होवे वहोत कुटुंब, विटव रहे नारी ॥ वि० ॥ घरमें धन हो य अल्प, खरच दुःख त्यारी ॥ दास सम सव कुटुंब, काम करे सारा ॥का०॥ तो पण न भरे पेट, सदा दुःखियारा ॥ कोइ रुसे कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, काल जो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुंब, तोहि दुःखियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाइ गोत्रीमें वेर, हेत करे परसु ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं

कबु परख, राजि श्रामंत्ररसुं ॥ अल्प संपदामांहे, करे मगरूरी ॥ क० ॥ धर्मी नरपें द्वेष, निंदा करे कूरी ॥ गुमास्ता परपची, शेठ धन खावे ॥ शे० ॥ शेठको काढी दीवालो, आप नग जावे ॥ भ ली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे०॥ सु० ॥६॥ छोटे बडेकी रीत, कायदो नांही ॥ का० ॥ मनका ठाकर बणे, करे अकडाइ ॥ वीच बीचमें करे वात, जाणे में श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे कें फिर जाय, ज्यौं तेली घाणो ॥ मुख मीठो चित धिठ्ठो, उससें दिल राजी ॥ उ०॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पक्ष सु न हि हेत, नारी पक्ष थारी ॥ ना०॥सु०॥७॥ दया दानके माहे, ख रचतां रोवे ॥ ख० ॥ ख्याल गोठके माही, वृथा धन खोवे ॥ साधु संतके पास, जातां दिल सरमे ॥ जा० ॥ मिजलसमें अण तेड्यो, जाय कुकर्मे ॥ धर्म काममें पाछे, पाप अगवानी ॥ पा०॥ खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ त०॥ प्रभु गुण गाता लाज, ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ म ... करके कन्या महोटि, दाम लिया चढावे ॥दा०... ...ति जिमावे ॥ परमदेवा ...

...भवानी भूत, पीर म ... ॥ दा० ॥ लोनी ठ ... ख, अखि लगे खा ... दिलमें नहिं राखे ... ॥ भरे सायदी ... ेत परलापी ॥ ... कहे सास्तर ... वात, लगे नहिं प्या ... किस्के लेणेका दुःख, किस्के देणे ... किस्के गेणेका सोच, किस्के रेणेका ॥ किस्के ... दुःख, किस्के दाणेका ॥ कि० ॥ किस्के जाणेका दुःख,

न्य गल जाए, कबहीं जन तरसे ॥ कबहींक उंठी यंम, लोक चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कबहींक पडती वहोत, नाज जल जावे ॥ कबहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कबहीं धर्म पडे वहोत, आलम गभरावे ॥ करो धर्म ध्यान सतोष, सदा सुख कारी ॥ स० ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुसियारी ॥ ए टेक ॥१॥ वस्ती ऊजड वोत, नहि धनवाला ॥ न० ॥ जो किस्के मिले धन्न, नहीं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन लावे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दुख, झगडा केइ लावे ॥ झ० ॥ कोइके कुव्यसनी होय, गती दझावे ॥ कुलमें लगावे दाघ, लजावे नारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ वोले बापके सामे, देवे टुकारो ॥ दे० ॥ साठीमें नाठी अकल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, माहे नहिं रेवे ॥ मा० ॥ सासुकु हुकममें राखे, वहू दुख देवे ॥ बेटा हो वे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ करे पितासु जोरो, माया स व म्हारी ॥ झगडे राजके माय, वोले कुविचारी ॥ वो० ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइके पूत सपूत, नारी दुखकारी ॥ ना० ॥ दुख देवे दिन रात, महा कलहकारी ॥ छेडी लकाकी लाय, शरम नहिं त नमें ॥ श० ॥ नाम्हे लोकके वीच, कत दुखी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, भ्रात सतावे ॥ भ्रा० ॥ वे झगडा टटा करकें, राजमें जावे ॥ वात वातमें द्वेष, करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥४॥ जो होवे वहोत कुटुंव, विटव रहे नारी ॥ वि० ॥ घरमें धन हो य अल्प, खरच दुख त्यारी ॥ दास सम सव कुटुंव, काम करे सारा ॥का०॥ तो पण न भरे पेट, सदा दुखियारा ॥ कोइ रुसे कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, काल जो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुंव, तोहि दुखियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाइ गोत्रीमें वेर, हेत करे परसु ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं

गतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्देइ,वणा है जदारी ॥व०॥ आठु कर्म मुद्दाल, कपट जमारी ॥ धीरजका श्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सज्झाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥तुम० ॥ १ ॥ में जाता शिवपंथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, लुटा सब मेरा ॥ ल क्ष चोरासीके वीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ वध, मोकु वधवाया ॥ में पाया डु ख अनत, जेद नहि जाणा ॥जे० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ए टटा हे वेपार, वोत हे जूना ॥ वो० ॥ में रहा जोलपके मांहि, माफि करो गुना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सच्चे का नूना ॥ स० ॥ ए झघडा वढा वहोत, दिने दिन दूना ॥ में तो न या वलहीण, वढे कर्म दाणा ॥व०॥तु०॥३॥ अव खुली कछु तकदीर, पुण्य परजावें ॥ पु० ॥ जाणा में हुं सच्च, हारु नहि न्योवें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, वहोत मजमूना ॥ में किया जाके मिलाप, वहुत हरखाणा ॥व०॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, जेद वताया ॥ जे० ॥ में जाना कर्मोका जुल्म, मसोदा वनवाया ॥ तुम विन करे कुण न्याय, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ए आठ, गवा बुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उस्कु बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अम अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रज्ञु ज्ञान चपडासी जेज, मुद्दाल बुलवाया ॥ सो वोले हम सग, कछु नहि दावा ॥ क० ॥ चेतन फगडे जूठ, खलकमे गावा ॥ पच प्रमाद विखवाद, गवा संग आणा ॥ ग०॥तु०॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाइ ॥उप०॥ खाया हे कर्जा वहोत, हममे उमाइ ॥ राचा जोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मगण गये, तवे गजराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाइ, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ त

किस्के लाणेका ॥ किस्के पिताका दुःख, किस्के माईका ॥ कि० ॥ किस्के बहेन सुत दुःख, किस्के भाईका ॥ किस्के धनकी फिकर, किस्के बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइके शत्रुका सोच, कोइके साजनका ॥ को० ॥ कोइके परचक्री दुःख, कोइके राजनका ॥ किस्के खेतीका दुःख, कोइके वतनका ॥ को० ॥ कोइके चोर हाकम, थाह अगनका ॥ कोइके पडोशी दुःख,दुष्ट जन जनका ॥ दु० ॥ कोइके अकलका दुःख, कोइके दल बलका ॥ नहिं सपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥सु० ॥१२॥ जो कोइ माने सुख,सकल मुझ मांइ ॥ स० ॥ सांज तलक कोइ दुःख, आवे बलताइ ॥ जो नहिं मानो बात, देखो अजमाइ ॥ दे० ॥ ए सास्तरकी बात, विचारो भाइ ॥ पंचम कालका हाल,बडा है बंका ॥ ब० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इस्में नहिं शका ॥ कलिजुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरु शासन स्वामिकु, त्रिकरण शीश नमाय ॥ झगडो चेतनकर्मको, न्याव कहु चित्त चहाय ॥१॥ अथ धोसो ॥ समरु गुणधर सतपति, जैन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पुण्यकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चाहु नगति, अनत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ धन ॥ धर्मकी बनी कचेरी नारी, सिहासन धीर्ज रुप धारी ॥ बेठे प्रभु जिस पर हुसियारी, सभामें झुडे तीर्थ चारी ॥ अदालत करे सत्त अहारी, खोटेकी नाहि है कछु यारी ॥ दगा जीव चेतनका है बंका, न्याव तुम सुण लो निःशंका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दोलत्त जमीन, अचल दिलराणा ॥ अचल दिलराणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, ज

गतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्देइ,वणा हे जहारी ॥व०॥ आतु कर्म मुद्दाल, कपट नमारी ॥ धीरजका श्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सझाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥ तुम० ॥ १ ॥ में जाता शिवपथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिल्ले संग, लुटा सव मेरा ॥ ल क्ष चोरासीके वीच, मोकु अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेप दृढ वध, मोकु वधवाया ॥ में पाया डुख अनत, नेद नहि जाणा ॥ ने० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ए टंटा हे वेपार, वोत हे जूना ॥ वो० ॥ में रहा नोलपके मांहि, माफि करो गूना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सच्चे का नूना ॥ स० ॥ ए झघडा वढा वहोत, दिने दिन दूना ॥ में तो न या वलहीण, वढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अव खुली कबु तकदीर, पुण्य परनावें ॥ पु० ॥ जाणा में हुं सच्च, हारु नहिं न्योवें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, वहोत मर्जमूना ॥ में किया जाकें मिलाप, वहुत हरखाणा ॥ व० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, नेद वताया ॥ ने० ॥ में जाना कर्मोका झुल्म, मसोदा वनवाया ॥ तुम विन करें कुण न्याय, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ए आठ, गवा बुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उस्कु बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अव अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रनु ज्ञान चपडासी नेज, मुद्दाल बुलवाया ॥ सो वोले हम सग, कबु नहिं दावा ॥ क० ॥ चेतन झगडे जूठ, खलकमे ठावा ॥ पंच प्रमाद विखवाद, गवा सग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाइ ॥ उप० ॥ खाया हे कर्जा वहोत, हमसे उमाइ ॥ राचा नोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घटा नफा नहि जाना, कर्जा चढाया ॥ जव हम मगण गये, तवे गनराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाइ, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ त

किस्के लाऐका ॥ किस्के पिताका डुःख, किस्के माईका ॥ कि० ॥ किस्के वहेन सुत डुःख, किस्के नाईका ॥ किस्के धनकी फिकर, किस्के बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइके शत्रुका सोच, कोइके साजनका ॥ को० ॥ कोइके परचक्री डुःख, कोइके राजनका ॥ किस्के खेतीका डुःख, कोइके वतनका ॥ को० ॥ कोइके चोर हाकम, धाड अगनका ॥ कोइके पडोशी डुःख,डुष्ट जनजनका ॥ डु० ॥ कोइके अकलका डुःख, कोइके दल बलका ॥ नहि संपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥सु० ॥१२॥ जो कोइ माने सुख,सकल मुऊ मांइ ॥ स० ॥ साज तलक कोइ डुःख, आवे उसताइ ॥ जो नहि मानो बात, देखो अजमाइ ॥ दे० ॥ ए सास्तरकी बात, विचारो नाइ॥ पंचम कालका हाल,वडा हे बंका ॥ व० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इस्में नहिं शका ॥ कलिजुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरु शासन स्वामिकु, त्रिकरण शीश नमाय ॥ ऊगडो चेतनकर्मको, न्याव कहु चित्त चहाय ॥१॥ अथ धोसो ॥ समरु गुणधर संघपति, जेन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पुण्यकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चाहु नगति, अनत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ घन ॥ धर्मकी बनी कचेरी नारी, सिंहासन धींजे रूप धारी ॥ बेठे प्रभु जिस पर हुसियारी, सनामें ऊडे तीर्थ चारी ॥ अदालत करे सत्त जहारी, खोटेकी नहि हे कछु यारी ॥ दगा जीव चेतनका हे धका, न्याव तुम सुण लो निःशका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दोलत्त जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, ज

अहार पाया ॥ वर्धमान प्रभु कर्म जोगसुं, ब्राह्मणीकुखे आया ॥
वातया इंदर जव जानी ॥ वा० ॥ हरण कराये मेल्या खत्री कुलमें,
त्रसलादि राणी ॥ नयो ए अचरिज जगमांइ रे ॥ न०॥क०॥१॥
वारा वरस ठ मास सजममें,करि डुकर करणी ॥ नर सुर तिरजच दि
या परीसा, वेदना हद वरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥उ०॥ लो
हीगाण ठ मास प्रभुके, केवलमाहे रीया ॥ खुलासा सूतर केमांइ
रे ॥खु०॥क०॥२॥ कपट प्रभावें मल्लिजिनेश्वर, वेद धस्यो नारी ॥
॥ सागरचक्रीकें साठ सहस्र सुत, गगा लावण धारी ॥ काठा
देवीने तोड नास्यो रे ॥ का० ॥ सवही मरण पाया इक सार्थे,
वाकी नहि राख्यो ॥ नृप सुणचिता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क०
॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमें, रगतपीती ठाइ ॥ सजम
ले कियो मास मास तप, सातसें वर्ष तांइ ॥ आठमो चक्री मा
न लायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खंम साधवा चढियो, करम उदय
आयो ॥ मस्यो सो सागरमें जाइ रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम ल
छमण सीता सतिसगें, विपत सही वनमें ॥ सबूक सूर्ज हस खड्ग
साध्यो, मास्यो गयो छिनमें ॥ वाप चढ आयो हरि सामे रे ॥वा०
खर दूपण त्रिशिर रण लडता, तिनू मरण पामे ॥ कुमतमति ए
सी वण आइ रे ॥कु०॥क०॥५॥ साहसक तारासु सुरछी,विद्या मो
त लीवी॥ लकपति महाबककर्मसें,सीताहरण कीवी ॥ रामजी लंका
चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महावलवता, दश मस्तक घा
या ॥ विभीपण राजगादि पाइ रे ॥ वि० ॥ क० ॥६॥ श्रीमुनि सुव्र
त शिष्य आग्या विन,खधकादिक जाणी ॥ पाचसें रिख गया दंम
क देशमें, पीलाणा घाणी ॥ खधकजीके आयो क्रोध भारी रे ॥
ख० ॥ दंमकी देशके वाल्यो असुर भव, विराधिक पद धारी ॥ वा
रमो चक्री नरक जाइ रे ॥बा० ॥ क० ॥ ७ ॥ पामव पाच महा
वलवता, हारी द्रौपदी नारी ॥ वारे वरस लग वन वन भटक्या,

विपता सहि नारी ॥ किचकको कीचो कर नाख्यो रे ॥ कि० ॥ कौरवसुं कियो जुध्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ द्रौपदी ले गयो सुर आइ रे ॥ द्रौ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पांडव कृष्ण गया खंडधातकी, पद्मोत्तर आयो सामें ॥ कर्मजोग पांडव महाबलिया, रणमें हार पामे ॥ नृसिंह रूप धाख्यो गिरिधारी रे ॥ नृ० ॥ द्रौपदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या हे मुरारी ॥ दिसोटो दियो पांडव ताइ रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ए ॥ कैदकेमाही जाया कृष्णजी, वध्या गोकुलगामें ॥ कंस पछाड सोरिपुर छोडी, रह्या द्वारकाग में ॥ जरासंध माख्या हे महावंका रे ॥ ज० ॥ तिन खंडमें आण मनाइ, दिया जीतडंका ॥ द्विपायण रीसज नराइ रे ॥ द्वि० ॥ क० ॥ १० ॥ द्वारकानगरीमें दाहज दीनो, मात पिता ताइ ॥ रथमें वेठाय चल्या हरि हलधर,द्वार पड्यो आइ ॥ गया चल कर तुवी वन दोइ ॥ ग० ॥ मृगजरोसें जरा कुमरकें, बाण माख्यो जोइ ॥ पानी विन हरि मृत्यु पाइ रे ॥पा०॥क०॥११॥ नल राजा दमयती राणी, पाइ दुःख नारी ॥ हरिचंदराय तारादे नीच घर,माथे नख्यो वारी ॥ कुकडो चंदराजा कियो ॥कु०॥ रायचंद फिर वीरमती को,रणमें प्राण लियो ॥ करणी फल छुटे नहि काइ रे ॥क०॥क० ॥ १२ ॥ नागसीरी धर्मरुचि मुनिकु, कडवो तुंवो दीयो ॥ हुइ फजीति नरक सिधाइ, अनंत दुःख लियो ॥ नइ सुकुमालिका सा नारी रे ॥ न० ॥ पंच नरतारी हुई कर्मसु, लियो अपजस नारी ॥ समझो ए मतलब मनमाइ रे ॥स०॥ क०॥१३॥ कांचराकी खाल उतारी पूरंदजन, हर्ष धख्यो मनमें ॥ तेरे क्रोड नव पाठे खधक जीकी,खाल उतारी घनमें ॥ पुंडरिक शेष वर्ष संजम पाली रे ॥पु०॥ डगीयो तीन दिवसमें मर कर, नरक गयो चाली ॥ कर्मको ख्याल अजब नाईरे ॥ क० ॥ १४ ॥ महापातकी राय प्रदेशी, सज्या नरक खाता ॥ केशी मुनि उपदेश सुणीने,श्रावक व्रत राता ॥ त

पस्या वेलें वेलें किवी रे कीवी ॥ दिन गुणचालीस मांही सुकृत कर, सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्मीकी गाई ॥ वि० ॥ क० ॥१५॥ वीरप्रभुको कुशिष्य कहियें, गोसालक जाणो ॥ अष्टांग निमित्त ते बोल प्ररूप्या, जिन ज्यौं सो युं जाणो ॥ वडाई करी मुखसें न्हारी रे ॥ व० ॥ मरणसमे जिण कर्मजोगसु, आतमा धिक्कारी ॥ बारमे सर्गे उपज्यो जाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १६ ॥ महावैराग्य परिणामें सजम, लीधो उलसाई ॥ क्षत्री राजकुमर जमाली, वीरजीको जमाई ॥ करम वस कुसरधा राच्यो रे ॥ क० ॥ श्रीजिनवचन उथापन कर कें, खोटो मत खांच्यो ॥ समजायो समज्यो कछु नांई रे ॥स०॥क०॥१७॥ वसुदेवसरखे जो पिता और, देवकी जेसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजसुनिवरके, हरि हलधर भ्राता ॥ देख सुसराकु रीश आई रे ॥ दे० ॥ सिरपर बाधी पाल माटीकी, खीरा दिया ठाई ॥ भुक्त्या विन छूटे कछु नाई रे ॥भु०॥क० ॥ १८ ॥ चदनराय मलयगिरि राणी, सायर नीर न्हाई ॥ चोर ज्यौं ठाने निकल्या घरसें, दौलत बहु पाई ॥ कर्मवस चारूही बिछडीया रे ॥ क० ॥ रातें चोर आय धन हरियो, वन वन रडवडिया ॥ वणजारो ले गयो माइ रे ॥ व० ॥ क० ॥ १९ ॥ जातिमदसु मदत्तरके घर, जन्म लियो जाइ ॥ पुत्रपणे रह्या साहुकार घेर, आठ कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिककी बेटी रे ॥ प० ॥ सुनार घरे मेंतारज रिख शिर, वाध बांधी सेठी ॥ वेदना पाई अधिकाई रे ॥ वे० ॥ क० ॥ २०॥ मयणरेहा वश मोह्यो मणिरथ, ठलपणो विचार्यो ॥ रण जीती आयो सुण पापी, जुगबाहु मार्यो ॥ आधिनिश निकल्यो मर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प डश्यो मरियो वनमांहि, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा वनमें पुत्र जाइ रे ॥म०॥क०॥२१॥ भगवत भगत श्रेणिके कूणिक, पिंजरामें दीयो ॥ तीलपूट खाईने मरिया, नरकवास कीयो ॥ कुणिक लेवें हार

हाथी तांई ॥क०॥ एक क्रोड ने एंसी लाख नर, मरिया रणमाइ ॥ सार पण निकल्यो कछु नांइ रे ॥ सा०॥क०॥ २२॥ मृगापुत्र सगड अर्जुन सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ दुःख अनता पाया कर्मसुं, सूत्रमें वखाण्यो ॥ केइ तो कथामांहे जहारी रे ॥ के०॥ जिनचक्री हरि हर इश दिक, कोइसुं नहि यारी ॥ गेटा तो को सी गिणत मांइ रे ॥ गे० ॥ क० ॥ २३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, ठेलो चारित्र पाइ ॥ पढ कर सो गया नरक अनता, कह्यो सूत्रमांहि ॥ इह जीव उपजे थावर जाइ रे ॥इ०॥ एसी समज कर भूलो कर्मसें, श का कछु नांही ॥ वात ए जिनवर फरमाइ रे ॥ वा० ॥ क०॥२४॥ उंगणीशें अडतीस वैशाख छुदि छठ, दक्षिणदेश जाणी ॥ सेका काल रह्या मिरिगाममें, नविजन हित आणी ॥ कर्मफल दृष्टांत वताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोड्या कर्म सब, सो शिव सुख पाया ॥ धर्म हे सदाहि सुखदाइ रे ॥ ध० ॥ क० ॥ २५ ॥

॥ अथ मूर्ख उपर लावणी ॥

॥ वालक सगत करे सो मूरख, काम विना पर घर जावे ॥ मात पितादिक वडे जो उनके, देत गालि नहिं सरमावे ॥ विना कामें सो वडेके सामे, वार वार इत उत फिरता ॥ विना हुंकारे वात करे शव, परकुइ दान मना करता ॥ प्रछन्न वात कहे त्रिया के आगें, नीच निगुणा नरसु यारी ॥ एसे मूरखसें दूर रहो तुम, जो चहाते शोना सारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ धर्मकथामें चित्त न राखे, के कथे के वात करे ॥ आपसें अधिक उससे अकडाइ, नरपतिका विश्वास धरे ॥ मरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद कहे ॥ अपणी पहूच न देखे जराजर, वडे वडेकी होड चहे ॥ सहे ज वात पर हाथ चलावे, विन मतलब देवे गाली ॥ ए० ॥ २ ॥ विण जाणेसें करे मस्करी, देन लेन घर साथ करे ॥ शुकन वर्जे

ता जावे अगाडी, वदल जाय जव गरज सरें ॥ नरी सन्नामें मी सर दाखे, विना दोष कडवु वोलें ॥ परनुकशानी देखि आणदे, सत्य फूठ पक्ष नहिं तोले ॥ अपनी वडाइ करे पण्डित विच, नली शिक्षा लागे खारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोइ, ल कड फाडे जहां खडा रहे ॥ चाडि चूगल अहि सोनीका दिल,विस वास धरि मन माहे चहे ॥ धर्मी पुरुषकी करे निंदना, सज्जन रु स्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीता हसे मूढ नर, रस्ते चलतां रोटी खावे ॥ लडका चेला रखे लाडमें,निरर्थक तोडे तरु मारी ॥ए०॥ ॥ ४ ॥ दान दे कें मगरूरी करे उर, कियो उपगार न माने रति ॥ हलकी बोली बोले परकुं, सतापे डु:खी साधु सती ॥ सुलटी कहे तां उलटी माने,हांसिकी वात पर रीश नरे ॥ छती शक्ति उपगार करे नहिं, दया दानमें शर्में मरे ॥ विनां सुदातो गायन गावे, वा त करे विन विचारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ विशवास दे कें वदल जावे उर, जूठ जूठ सोगन खावे ॥ अपना धर्मकी करे हीनता, पा प कर कें दिल पोमावे ॥ दो नर वात करे वसि तामें, कान त्री जो नर लगावे ॥ प्रछन्न वात करे प्रगट परकी, त्रिया पर हाथज ठठावे ॥ रांम नामसु करे अडी उर, वद परेजी करे बिमारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ गर्व करे तन धन जोबनका, बुद्धि नली नहिं फेलावे ॥ ज्ञान ध्यानको करे न उद्यम, विकथामें दिल रमावे ॥ तप ज प करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगेवानी ॥ नर नव रत न फोकटमें खोवे, ए सव हे मूरख प्रानी ॥ तिलोकरिख कहे सत सगतसु, वेगें तरो नवजल पारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का वत्तीसी उपर लावणी ॥

॥ कक्का कर्मकी अजव गति हे, मत करना तुम नर नारी ॥ हस्तें हस्तें वांधे जीवडा, भुगते तव मुसकिल भारी ॥ तिनमें रा

डुनीयांका वदे, इइ धनुप वादल जेसा ॥ ठग पांचूका संग न कर नां, परनवका रख अदेसा ॥ फफ्फा फंक मत रखो दीलमें,साफीकी सुधरे करणी ॥ जिस्की वुराइ जिस्कु पढाडे, जाय पडेगा नर्क वे तरणी ॥ वाप मारणकी दिलमें विचारी, नंदिवर्धन कुमर गयो मारी ॥क०॥७॥ ढढा ढूढ ले सार वस्तुकु, देव निरजन जसवता ॥ गुरु निर्ग्रंथ उर धर्म दयामें, तीन रत्न ए शिव कता ॥ नन्ना नमो नित अरिहत सिध्दकु,आचारज उवझाय सदा ॥ साधु साधवी स जमी सरणो,लेतां डुःख नहि आवे कदा ॥ इनसुं जो रखे करडाइ, वे डुःख पाते गति चारी ॥क०॥८॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय, त्रणकु जाणो त्रणकुं ढमो ॥ सवर निर्झरा मोक्ष ए तीनु, इनकुं शुध्द मनसु ममो ॥ थथ्था थिर नहिं इदर चदर, अस्थिर ग्रह नक्षत्र तारा ॥ थिर नहि इइ चइ हरि चक्री, सकल चराचर ससारा ॥ जन्मे सो मरे फुले सो कुमलावे,रखो धर्मकी हुशियारी ॥ क० ॥ए॥ दद्दा दया नित्त पालो सियाना, दान देनां दिल हरखाइ ॥ विपय कपाय इद्रीकु दमन कर, ए करणी हे सुखदाइ ॥ धध्धा धर्मका सोदा कर लो,ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ए करणी हे स्वर्ग मोक्षकी, इस विन सव सौदा कच्चा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हर्दम, जो चहाते आतम तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया नर नव, आरजदेश उत्तम कुलमें ॥ लवो आउखो जोग मुनिको, क्यु तुं पडा हे जग भुलमें ॥ फप्फा फूल मत तन धन देखी, चार रोज चटको मटको ॥ आखरमें सव जाना छोड कें, एसी समझके दिल हटको ॥ वव्वा वडाइ जिनकी खलमें, रखे धर्मकी ते प्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ नभ्भा नलाइ कर लो नइया, पुण्य पाप सग आवेगा ॥ धरा रहेगा माल खजाना, जस अपजस रह जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी,मन वंदरकुं कर वशमें॥ मान माया मोह ममत मेट दे, आयु छिजे ज्यों जल पसमें ॥ मि

वका रक बणावे, छिनमें रांकको राय करे ॥ लक्ष चोराशी चार गतिमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ इद चद नरेंद सुरासुर, किस सुं नहिं रखे यारी ॥ क० ॥ १ ॥ खख्खा खजाना सगी धर्मका, आगेकु सुखदायक हे ॥ धर्म मूल क्षमा अगेवानी,जगतपतिका वायक हे ॥ गग्गा गर्व मत करो सियाना, गुरु कहेणी करो नि श का ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनी दममें लका ॥ गर्व रह्या नहि किसका जगमें, मगरूरी हे दुःखकारी ॥ क० ॥ २ ॥ घघ्घा तु घर जो मानत मेरा, सो नहि हे सगी तेरा ॥ तु परदेशी चार दीनोंका, क्यु करता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाइ रखना दिल में, नरमाइ जगमें प्यारी ॥ करडा निसरडा वाजे जगमें, पावे न व नव दुःख नारी ॥ एरन्ड वृक्ष फल उपमा उसकें, धर्मी सक्ससु नहि यारी ॥ क० ॥ ३ ॥ चच्चा चर्चा तुम कर लो धर्मकी, कर्म जर्मकी खबर पडे ॥ मूढसु वात करो मत वंदे, राग द्वेष उर क्ले श घढे ॥ छछ्छा छिन छिन छिजे उमर सब, किस्के जरोंसें तुं अक डे ॥ काल अचानक एकदम अदर, जेसें वाज तित्तर पकडे ॥ ए सी समजकें छोड दे ममता, सतगुरु कहे रख हुशियारी ॥ क० ॥ ४ ॥ जज्जा जरासी कहु हकीगत, जरा आया जोवन जावे ॥ जोर हटे जर जोरु जमी जन, तेरे सग कोइ नहि आवे ॥ एसी जाण करो जेनधर्मकुं, जीवजज्ञा विन हे खुवारी ॥ झझ्झा झूठ मत बोलो बंदे,झूठी हे ममता माया ॥ झूठा लेणा झूठा देणा,झूठा झूठमें ललचाया ॥ आयुका मर रख कर नेया, झूठ वात दे नीवारी ॥ क० ॥५॥ नन्ना नीम व्रत कर लो पहेली, जब लग बूढापा नहि आवे ॥ रोग बदनमें आवे नहिं डर, इछिका पूरण बल पावे ॥ टट्टा टेक तुम रखो धर्मकी, जब लग जीव रहे तनमें ॥ पापकी टेक करो मत कबहु, मिले बदनामी जगजनमें ॥ सुभूमचक्री रा वण चक्री,खोटी टेक लहो दुःख नारी ॥ क० ॥ ६ ॥ ठठ्ठा ठाठ

॥ केदी उपर नावदृष्टांतनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामें जीव सो, नूल रहे नर्ममांय ॥ समजानेके वास्ते, कहुं दृष्टात वणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमुं जिनराज चरणकुं, ए देशीमें छे ॥ इस दुनियाके अंदर नैया, केदी खाना नयंकार ॥ जीसमें केदी पडे अपार ॥ एक रोजका जक्रि सुनो सव, सफी लगी री महा नार ॥ केदी कोइ जागे सोच सवार ॥ वसी वखतमें विजली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते निद मफार ॥ दोहो ॥ केदी कहे सुणो यार, अव वखत मल्या श्रीकार ॥ जेज करो मत पलककी, निकलो तुरगके वहार ॥ गफलतसे होवेंगे खूव खुवार, समजके निकल चलो हुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोइ कहे तव तनक निद ले,फेर चलेंगे यार ॥ इरादा हेगा हमारा सार ॥ लेट रहे सो रहे केदमें, पस्तावे दिल सोय ॥ गुजारे रोज सवे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहोंचे घरकुं,माने मोज अपार ॥ मिला जिनकु अपना परिवार ॥ दोहो ॥ इस दृष्टांतें पड रहे, मोह तुरगके माय ॥ जगतवासी सव दुख सहे, लक्ष चोराशी मांय ॥ रस्ता हे जैनधर्म सुखकार ॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी नींत पडे कवी, विजली दमक अवतार ॥ इसीमें चेते नवि नर नार ॥ तूटे मोहके केद खानासें, जावे मुगत मफार ॥ मिले निज गुण सपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सिद्ध सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लियां निस्तार ॥ दोहो ॥ कर्म नर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपथ साधन किया, वरते मगल चार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥ स० ॥ ३ ॥ विपय कपायमें मस्त रहे केइ, दिलमें रखे अहंकार ॥ नहिं हे हमसो कोइ शिरदार ॥ टेडी टेडी पघडी रखके,चले निरखतो छांय ॥ मरो हे मूछ रहे अकडाय ॥ कर्मगतिका अजव तमासा, छिनकमाहि

त्रपणु कर ठक्कायासु, अजयदान दे सुखकारी ॥ क० ॥ १२ ॥ यय्या याद रख चर्चा धर्मकी, या देही मुश्कल पाया ॥ एसी ब खतमें धर्म किया नहि, सो जव जवमें पस्ताया ॥ ररा रोष मत करो किसीकु, रोप किया तप फल हारे ॥ खंधक द्वीपायन रोष कियासु, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण दुःख लहेगा ज गमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १३ ॥ लल्ला लोजकी लाय बुरी है, लालच वश दुःकृत करते ॥ हत्या करे बोले मुख जुठा, थापण ठवे परधन हरते ॥ वव्वा वाणी वीतराग प्ररूपी, सच्चि जाणि व्रत आदरनां ॥ विना धर्मको मूल जमा कर, आ ठ कर्म वशमें करना ॥ शश्शा सत्य है सार सकलमें, साचकु आंच न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ पष्पा करो पट् कायकी रक्षा, निज आतम सम सव प्राणी ॥ दुःख मरण सो कोइ न चहाते, दया जगोती सुखदाणी ॥ सस्सा ए ससार समूदर, विपय जोग कीचड जाणी ॥ अव थव आव करमका इसमें, अनत वर्गणाका पाणी ॥ धर्म जाजमें वेठ सियाना, उतर जाउ जवजल पारी ॥ क० ॥ १५॥ हहा हाल ए सुन के हियामें, हर्दम श्रीजिनकु ज जना ॥ हेत रखो ठक्काय जीवसें, हाय हरामी हठ तजनां ॥ ह रो क्रोध माया मद तृष्णा, पाप करता दिलमें लजना ॥ दया दान सत्यशील अमम, धर्म क्रिया करता गजना ॥ इण जवमें तन धन जन सपति, परजवमें लहो जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥ ठगणीशें अडतिस वैशाख उज्जल पर्व, तिथि वारस दिन बुधवा र ॥ तिलोकरिख कहे ककाबत्तीसी, सुणकें जविजन अवधारे ॥ तो ठनकु सुमति शुद्ध आवे, मिथ्या जर्म सो जग जावे ॥ जाने अथिर ससारकी रचना, जैनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म जर्मको मर्म विचारी, परम पद होय अधिकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

को ॥ हिमायतिच्या वळें गरीब गुरि,वाला तू घुरकावु नको ॥ दो दिवसाची जाइल सत्ता, अपयश माथा घेउ नको ॥ बहुत कर्ज बाजारी होउनी, बोज आपला दौडुं नको ॥ स्नेहासाठी पदर मोड कर, परतु जामिन होउ नको ॥ चाल ॥ विडपैजाचा उचलुं नको, वणी तराजु तोलु नको ॥ गहाण कुणाचा रुलवु नको, असल्यावर भिख मागू नको ॥ चाल पहेली ॥ नसल्यावर सांगणे कशाला, गाव तुझा भिड धरू नको ॥ लु० ॥ २ ॥ उगीच निंदा स्तुति कुणाची, स्वहिता साठी करूं नको ॥ बरी खुशामत शाहाणाचीही, मूर्खाची ती मैत्री नको ॥ कष्टाची बरि भाजी भाकरी, तुप साकरेची चोरी नको ॥ आल्या अतिथि मूठभर द्यावा, मागे पुढती पाहु नको ॥ दिल्ही स्थिती देवाने तीतज, मानी सुख कधी विहु नको ॥ आसल्या गांठी धन सचय कर, सत्कार्या व्यय हर्दुं नको ॥ आतां तुझेही गोष्ठ सांगतो, सत्कर्मा औसरु नको ॥ सत्कीर्ती नौबतिचा मका, गाजे मग शकाच नको ॥ चाल ॥ सुविचारा कातरूं नको, सतसगत अतरू नको ॥ द्वैताला अनुसरू नको, हरि भजना विस्मरू नको ॥ गावयांस अनतफदीचे, फटके मागे सरू नको ॥ लु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ लावणी बीजी मराठी भाषामा ॥

॥ येउ देवाचे नाम देवाचें, अष्टौ प्रहरा जप जिनवर ॥ दे टाकुनि दे वंद वावुगे, फद विषयेंची काय मजा, प्रभु नामाची लावी ध्वजा, असार हा ससार त्यजा, शांति गुणाला देवरजा, रजकर्माची दूर भजा, भाव विमलची करी पूजा, क्षमा शांति मन धरी तजा ॥ पंच महाव्रत सुमति गुप्ति, भिक्षा मागे घर घर ॥ येउ दे०॥१॥ परोपकारा शरीर झिजावे,जैसा मैला गिरि चदन, करी सज्जन चरणी वदन, काम शत्रुचे निकदन, गृह

के अग्निभूतिआदि,अग्गविश फरमाया रे ॥ अगारा मुनि सुव्रतस्वामी, मल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नमि नाथजीके गणधर सतरा, शुभ नामें शुभकारी रे ॥ रिष्टनेमजीके वरदत्त आदि, इग्यारा सुविचारी रे ॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिन्नादिक पारस प्रभुके, दश कह्या सूत्र मझारो रे ॥ महावीरजीके इन्द्रभूति प्रमुख, इग्यारा गणधारो रे ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पूर्वधर सारा, सिद्ध पदवी सहु पाई रे ॥ तिलोकरिखजी कहे मन वचन तन, वंदना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ जमी कदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमुं, श्री श्री सौधर्मा स्वामी ॥ मगध देशें रे को राखी पुर जलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धर्मिल रे माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण जण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार छे शास्तर वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमल ब्राह्मण यज्ञके कारणें, बुलाया देइ सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रिशला नंदजी, घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपुरें, जगनायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इन्द्र आया तिणपुरमें, वली सुर सुरि अपार ॥ रच्यो त्रिगडो रे महिमा विस्तरी, आव्यो सो अर्हंकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा रे गया उमगछु, रचना देखी सो नयण ॥ गर्वज उतर्यो रे संशय टालियो,प्रभुनां अमृत वयण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागछुं, पचसया परिवार ॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि ऊपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि रे मन परजव वली, उपना ज्ञान ए चार ॥ निशिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो, जावना जावे सो वार ॥वी०

॥ ग० ॥ ५ ॥ जबू जैसा चेला रे थईया, कोडि नन्याणु त्याग सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगा लियो सजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मन्डितपुत्र छठा रे कहियें, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकंपित आठमा रे वदो, नव नव दु कृत दूर निकदो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, नव नव दु कृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म नर्म नय दूर पलावो ॥ ग० ॥८॥ प्रनासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछया प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग०॥ ९ ॥ तप कियो दु कर रे कारी ॥ तास्या वहु नवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना कस्या चकचूरा ॥ गु० ॥ १० ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुगति सिधाया ॥ ते सव प्रणमू रे नावें, जनम मरण नय जिम मिट जावे ॥ ग०॥ ११ ॥ उगणीसें छतिस रे सालें, चोमासें रह्या घोडनदी वरसाले ॥ गणधर मुनिवर रें गाया, तिलोकरिखजी प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥

॥ अथ द्वितीय सचाय प्रारम्न ॥

॥ देशी केरवार्मे ॥ गणधर ग्यारा वदियेंजी, जिनने किनो महा उपगार ॥ नर्जा रे मुनि किनो० ॥ ग० ॥१॥ मान धरी गया वाद करणकू, दियो हे नर्म निवार ॥ न०॥दि०॥ग०॥२॥ इन्द्रनूतिजी लियो सजम प्रजुपें, छठ छठ तप लियो धार ॥ न०॥छ०॥ग० ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, नणिया अंग प्रचु वार ॥ न०॥न०॥ग०॥४ ॥ अग्निनूति वायुनूति त्रीजाजी, ए तीनु वधव विचार ॥ न० ॥ए०॥ग०॥५॥ वसुनूति चोथा नित्य प्रणमु, शूर वीर शिरदार ॥ न० ॥ शू०॥ ग०॥६॥ वीर पट्टोधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥न०॥रू०॥ग०॥७॥ मन्डितपुत्रजी ने मौर्यपुत्तर, अकपित सुखकार ॥ न० ॥ अ०॥ग०॥८॥ अचल वली प्रणमू मे

॥ ८ ॥ वरस पचासें रे रह्या गृहवासमें, त्रीश वरस लग जाण॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रञ्जु पहुता निर्वाण ॥ वी०॥ ए॥ आचारज पद वार वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूरव करण शुक्ल ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥१०॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जवुसारिखा, नन्याणु कोडी रे इव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें पर एया रे आठ कामिनी, पांचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगता रे संजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता मुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासता, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ संवत् उंगणी शेंरें उगण चालीसका, पौष शुद्ध आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सझाय ए, दक्षिण देश वखाण ॥वी० ॥ १४ ॥ तिलो करिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनति ए अवधार ॥ वी०॥ १५॥

॥ अथ इग्यारागणधरकी सझाय प्रारंभ ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी॥ गणधर समरो रे भाइ॥ दिनदिन अधिक संपत सुखदाइ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, ह्रीं श्रीं मनवंछित लहे सोइ ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रञ्जु केवलरे पाया, वाद करणने अधिक उमाया ॥ नर्म निवार्यो रे स्वामी, संजम प्रञ्जुयें लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सब शिष्यमांही रे पहिला, इन्द्रनूति प्रणमूं अलवेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीनूति रे बीजा, वायुनूति प्रणमूं नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहू सगा रे भ्राता, तोड दिया मोहनी दुःख ताता ॥ ग० ॥४॥ वसुनूति चोथा रे जाणो, पंचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरखत नविजनना मन मोहे

लिशईं एकदिनमें दीक्षा धारी, झ्याराई गया शिवमदिरकूं ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीशें अडतीस आंवोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमे सदा मुनिवरकू ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सझाय प्रारम्भ ॥

॥ दया धरम दिलमांही लावे रे ॥ ए देशी ॥ वदो नित गण धर ग्यारा रे,मिटे जिम जर्म अधारा रे ॥ ए टेक ॥ चवदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवत ॥ इन्द्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी,वायु भूति त्रीजा जाण ॥ ए तीनू सगा वधवा जी,गोतम गोत्र वखाण ॥ वं० ॥ २ ॥ वसुभूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ व० ॥ ३ ॥ वीरजीरे पाटे दीपता जी,धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपाइने जी, सारियां वछित काम ॥ व० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जबू सरिखा जी, रातें ते परण्या नार ॥ कोडि नन्याणु त्यागिने जी, लिधो सजम भार ॥ व० ॥ ५ ॥ मण्डितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी, अकपित जस धार ॥ अचलजीने जपता थकां जी, तरियें भव जलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज किया सिद्ध ॥ वडे प्रभासजी इग्यारमा जी, जाका नाम लिया नव निध ॥ व० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चवदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशशें परिवार ॥व०॥ ८ ॥ इण दुखम आरा विषे जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ ते सव जाणो भविजना जी, गणधरजी उपगार ॥ व० ॥ ए ॥ तिलोकरिख कहे जगतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित नित जय जय कार ॥ व० ॥ १० ॥

तारज, सब गया मुगति मझार ॥ न० ॥ स० ॥ ग० ॥ ए ॥ प
रनास जी इग्यारमा प्रणमू, शिवसपतिना दातार ॥ न० ॥ शि०
॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजीकू, नित नित होज्यो
नमस्कार ॥ न० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥

॥ अथ तृतीय सझाय प्रारंभ ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उठि प्रणमो भवि भावें, नित नित ग
णधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इंद्रभूति अग्नि भूति वदूं, वायुभूति
सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मा स्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥
प्रा० ॥ १ ॥ मन्डितपुत्र मौर्यपुत्र अकपित, अचल अचल अवि
कारा ॥ मेतारज आरजबुध्दिवता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥
प्रा०॥२॥ अग्यारा गणधर महा गुणसागर, चुम्मालिशसें परिवा
रा ॥ वीरप्रभुके पासें एकदिनमें, व्रत किया अंगीकारा ॥ प्रा०
॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल
केवल कमलाधारी, कर गया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इ
ण समरता संकट नासे, रहे अखूट भंडारा ॥ तिलोकरिख कहे
चरण सरण मुझ, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सझाय प्रारम्भ ॥

॥देशी फागणका ख्यालमें॥समरोनित समरो नित,ग्याराइ गण
धरकू ॥स०॥ इद्रभूति अग्निभूति वदो,वायुभूति वदो जोडी करकू ॥
स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी वदो, मन्डितपुत्र छोडी जगह
रकू ॥ स० ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचलजी, मेतारज जी छो
ड्या साते भरकू ॥ स० ॥ ३ ॥ इग्यारमा श्रीपरभासजीकू वदो,
छोड दिया हे सज्जन घरकू ॥स०॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सा
रा, उपदेश दिया हे धर्मका परकू ॥स०॥ ५ ॥ ग्याराहि तप सज
म शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरिकू ॥ स० ॥ ६ ॥ खुमा

लिशईं एकदिनमें दीक्षा धारी, इग्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीशें अडतीस ग्रांबोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमे सदा मुनिवरकू ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सझाय प्रारंभ ॥

॥ दया धरम दिलमांही लावे रे ॥ ए देशी ॥ वंदो नित गण धर ग्यारा रे, मिटे जिम भर्म अंधारा रे ॥ ए टेक ॥ चउदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवंत ॥ इंद्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १ ॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी, वायु भूति त्रीजा जाण ॥ ए तीनू सगा बंधवा जी, गोतम गोत्र वखाण ॥ वं० ॥ २ ॥ वसुभूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ वं० ॥ ३ ॥ वीरजीरे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपाइने जी, सारिया वंछित काम ॥ वं० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जंबू सरिखा जी, रातें ते परण्या नार ॥ कोडि नन्याणु त्यागिने जी, लिधो संजम भार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी, अकंपित जस धार ॥ अचलजीने जपतां थकां जी, तरियें भव जलपार ॥ वं० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज किया सिद्ध ॥ वडे प्रभासजी इग्यारमा जी, जाका नाम लिया नव निध ॥ वं० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चउदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशशें परिवार ॥ वं० ॥ ८ ॥ इण दुखम आरा विषे जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ ते सव जाणो भविजना जी, गणधरजी उपगार ॥ वं० ॥ ए ॥ तिलोकरिख कहे ज गतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित नित जय जय कार ॥ वं० ॥ १० ॥

तारज, सब गया मुगति मजार ॥ न० ॥ स० ॥ ग० ॥ ए ॥ प्रनास जी इग्यारमा प्रणमू, शिवसपतिना दातार ॥ न० ॥ शि० ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजीकूं, नित नित होज्यो नमस्कार ॥ न० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥

॥ अथ तृतीय सद्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उवि प्रणमो नवि नावें, नित नित गणधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इन्द्रभूति अग्नि भूति वंदूं, वायुभूति सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मा स्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥ प्रा० ॥ १ ॥ मण्डितपुत्र मोर्यपुत्र अकंपित, अचल अचल अविकारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥ प्रा०॥२॥ अग्यारा गणधर महा गुणसागर, चुम्मालिशसें परिवारा ॥ वीरप्रभुके पासें एकदिनमें, व्रत किया अंगीकारा ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल केवल कमलाधारी, कर गया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इण समरंता सकट नासे, रहे अखूट भंडारा ॥ तिलोकरिख कहे चरण सरण मुज, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सज्झाय प्रारंभ ॥

॥देशी फागणका ख्यालमें॥समरोनित समरो नित,ग्याराइ गणधरकू ॥स०॥ इन्द्रभूति अग्निभूति वंदो,वायुभूति वंदो जोडी करकू ॥ स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी वंदो, मण्डितपुत्र ठोडी जगदरकू ॥ स० ॥ २ ॥ मोर्यपुत्र अकंपित अचलजी, मेतारज जी ठोड्या साते मरकू ॥ स० ॥ ३ ॥ इग्यारमा श्रीपरभासजीकू वंदो, ठोड दिया हे सज्ञान घरकू ॥स०॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सारा, उपदेश दिया हे धर्मका परकू ॥स०॥ ५ ॥ ग्याराहि तप संजम शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरिकू ॥ स० ॥ ६ ॥ चुमा

लिशईं एकदिनमें दीक्षा धारी, इग्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीशें अडतीस आंबोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमे सदा मुनिवरकू ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सघाय प्रारन्न ॥

॥ दया धरम दिलमांही नावे रे ॥ ए देशी ॥ वदो नित गण धर ग्यारा रे, मिटे जिम नर्मे अधारा रे ॥ ए टेक ॥ चवदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवत ॥ इन्नूति सुख कारणा जी, रचिया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १॥ अग्निनूति स्वामी दूसरा जी, वायु नूति त्रीजा जाण ॥ ए तीनू सगा बधवा जी, गोतम गोत्र वखाण ॥ वं० ॥ २ ॥ वसुनूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र नगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ वं० ॥ ३ ॥ वीरजीरे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपाइने जी, सारिया वछित काम ॥ व० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जबू सरिखा जी, रातें ते परण्या नार ॥ कोडि नन्याणु त्यागिने जी, लियो सजम नार ॥ व० ॥ ५ ॥ मन्डितपुत्र मोर्यपुत्र दीपता जी, अकपित जस धार ॥ अचलजीने जपता थका जी, तरियें नव जलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज कियां सिद्ध ॥ वडे प्रनासजी इग्यारमा जी, जाका नाम लिया नव निध ॥ व० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चवदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशशें परिवार ॥व०॥ ८ ॥ इण डुखम आरा विषे जी, सूत्र तणो वे आधार ॥ ते सव जाणो न विजना जी, गणधरजी उपगार ॥ व० ॥ ए ॥ तिलोकरिख कहे ज गतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित नित जय जय कार ॥ वं० ॥ १० ॥

निक्खम्म माणाय बुद्धिवयणें, अंत मंगलिक सोंचो दीर्घनयणें ॥ जे० ॥ १८ ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशंसा, द्वुतियाध्ययनें धीरज पर अंसा ॥ जे० ॥ १९ ॥ अनाचीरनको त्रीजामें विस्तारो, चोथे छकाय तणो हितकारो ॥ जे० ॥ २० ॥ पंचमे विशुद्ध भिक्षा शिक्षा आणी, छठे मुनिगुण किरिया वखाणी ॥ जे० ॥ २१ ॥ वचन सुधी सातमे परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो ॥ जे० ॥२२॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे,दशमे अध्ययने भिक्खुगुण नाखे ॥ जे० ॥ २३ ॥ समुच्चय नाम कह्यां इहां संतो, अनंत नयातम वचन महंतो ॥ जे० ॥२४॥ सूत्र समुद्रपार कुण पावे, गगन शशी शिशु देख उमावे ॥ जे०॥२५॥ तैसें हूं आलसी महा अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहि पूरण शुद्धि ॥ जे० ॥ २६ ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहुं निज नापामें गुरु उपगारो ॥ जे० ॥ २७ ॥ पाळे आराधे नाव शुद्ध आणी, तिलोकरिखजी कहे सो वरे शिवराणी ॥ जे० ॥२८॥ इति पीठिका सज्झाय ॥

॥ अथ प्रथम द्रुम्मपुप्फियाध्ययन सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ धर्म मंगळ उत्कृष्ट छे, सासतो ए त्रिहु काळो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, नाख्यो छे दीनदयाळो जी ॥ १ ॥ धरम आराधो जी नावशुं, संजम सतरे प्रकारो जी ॥ बारे नेदें तपस्या करे, द्रव्य नाव सुविचारो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म विषे सदा मन रहे, तिणने नमे वारवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम तरु फूलें अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीडा नहि देवे कुसुमने, पोतें तृप्ति आणंदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक विषे कह्या, आरंन परिग्रह निवारो जी॥ नमर निक्षायें खणी ग्रहे, जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ संजम नार निनाववा,

॥८॥ धिक्कार हो तुझ अपजस कामी, असंजम जीवित चहावे ॥ वम्यो नोग वह्यो नहिं छगतो, मरण नलो तुझ थावे के ॥ सु० ॥ ए ॥ जिहां जिहां तुं देखिस त्रिया नयणें, अथिर नाव तुझ था सी ॥ हडवृक्ष जिम पडे पवन प्रतापें, तिम तुझ संजम जासी के ॥ सु० ॥ १० ॥ अंकुशथी जिम गज वश थावे,जिम सती मावत जेमो ॥ ज्ञान अंकुश करीने वश लाइ, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥ सु० ॥ ११ ॥ धर्मे खुटे मुनि थिर करि थाप्यो, दोनु लह्यो शिव वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, छूटें तस गर्नवासो के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपूर्वि अध्ययन छे दूजो, बुझो नविज न नावें ॥ तिलोकरिख कहे सुझो जिनमारग, सो इम मन सम झावे के ॥सु०॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययनं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय खुडियाराध्ययन सचाय प्रारम्न ॥

॥ यें करज्यो शाणा धर्म ते वार, आखा तीजको ॥ अथवा ॥ आरस सेलडी आदिजिणेसर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ सजम धा रे ममत निवारे, छक्काया प्रतिपाल ॥ ते वावन अनाचीरण व रजे, जिन आणा चजमाल हो ॥ यें सुणो नवि प्राणी, धन जे परमेश्वर वाणी, आदेरे आज्ञा आदरे ॥ १ ॥ आरन्न करी कियो आहार उद्देशिक, मोल आण्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिंम वली सा हामो आण्यो, सो नहिं ले रिखराज हो ॥ यें० ॥ २ ॥ रात्रिन्नो जन स्नान सुगध तन, पेहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो रात्रे स्निगध दे, गृहस्थ पातर टाल हो ॥ यें० ॥ ३ ॥ दानशा लानो आहार न सेवो, मर्दन नहिं करे तेल ॥ दातण मीसी गृ हस्थसें शाता, तजे चोपडादिक खेल हो ॥ यें० ॥ ४ ॥ मुख नहिं जोवे दर्पणमांही, छत्र धरे नहिं शीश ॥ सावद्य ओषधि वर्जे पगरखी, साचा जेह मुनीश हो ॥ यें० ॥ ५ ॥ तेउ आरंन तजे

आहार सिज्यातरी,बैठे न मांचे पलग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बैठे,टाले उवटणो अंग हो ॥ थें०॥ ६॥ वेयावञ्च गृहस्थकी करे न रिखजी, जाति जणाइ आहार ॥ मिश्र पाणी वली डुख आया, सरणो न वछे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदू ख म्म सेलम्मी, कद मूल फल वीज ॥ सचलादिक पंच लूण आदि दे, तजे सचेत सब चीज हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ शोजा कारण वस्त्र धूप धोवण, वमन वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अजण दत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ए ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाले, निर्ग्रंथ सजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थे० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना लेवे, शीतकालें सहे ठम्म ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मम्म हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह दगावे, डुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार ॥ थें० ॥ १२ ॥ खुडियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शुद्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वार वार ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ छज्जीवणियाध्ययन सद्याय प्रारम्भ ॥

॥ मानव जनम जनम, रतन तेने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ शु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जबु पूछे तिणसु शिर नामी रे ॥ चौथा अध्ययन मझारो, किस्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहूं तुझसु सुणवायो रे ॥ पृथिवी वली पाणी, तेउ वाउ बखाणी ॥ वनस्पति तस गणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या छकाया, सुखवछक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे,डु खसु थररावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध नव प्रा

णी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मत बोलो भाषा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर व न अल्प बहु छोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर न र तिरजंचो, मैथुनथकी वचो ॥ त्यागो यह परपचो ॥ श्री० ॥ ॥ ५ ॥ अल्पबहु छोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ प रिग्रह ड खकारो, भरमावे ससारो ॥ करियें परिहारो ॥श्री०॥६॥ अ सणादिक जे कह्या चउ आहारो, निशिभोजन परिहारो रे ॥ एह खटव्रत सुखकारो, पाल्यां भव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥श्री० ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारां, ते पूजो पलेवो वारं वारा रे ॥ त्रस थावर प्राणी, करो जत्न पेछाणी ॥ इम आगम वाणी ॥श्री० ॥८॥ अजयणासु चाले तथा उभो रहेवे, बेठे सुवे खावे मुख केवे रें ॥ प्राणीनी हिंसा थावे,पापकर्म वधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥ श्री० ॥ ए ॥ शिष्य पुछे तब किणविध करीयें, गुरु कहे जयणा आदरीयें रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूधे आश्रव सागे ॥ अविचल सुख आगें ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछें दया थाणी, कांइ जाणे जे पाप अनाणी रे ॥ सूत्र सुण्यां बोध आवे, आश्रव छिट कावे ॥ सजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट सजम धा रो, कर्म भर्म करे छारो रे ॥ केवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥ शाश्वतां सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी दृढ पणे पण किरिया, धारी अनताही तरिया रे ॥ छक्कीवणीया अधिकारो, शुद्ध पाले नर नारो ॥ तिलोकरिखजी सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति॥

॥ अथ पचम पिंमेषणाध्ययनस्य प्रथम उद्देशा सश्याय प्रारभ ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया शुद्ध आदरे, इव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम भति सचरे,देखी

आहार सिज्यातरी,बैठे न मांचे पलग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बैठे,टाले उवटणो अंग हो ॥ थें०॥ ६॥ वेयावच्च गृहस्थकी करे न रिखजी, जाति जणाइ आहार ॥ मिश्र पाणी वली ऊख आया, सरणो न वढे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदू ख म्म सेलम्मी, कद मूल फल वीज ॥ सचलादिक पंच लूण आदि दे, तजे सचेत सव चीज हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ शोभा कारण वस्त्र भूप धोवण, वमन वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ए ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाळे, निर्ग्रंथ सजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थे० ॥ १० ॥ उष्ण काले आतापना लेवे, शीतकाळे सहे ठम्म ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मम्म हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह हटावे, डुष्कर किरिया धार ॥ के इक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार ॥ थें० ॥ १२ ॥ खु ड्डियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शु द्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वार वार ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ ठज्जीवणियाध्ययन सचाय प्रारंभ ॥

॥ मानव जनम जनम, रतन तेने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जम्बु पूछे तिणसु शिर नामी रे ॥ चौथा अ ध्ययन मझारो, किम्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहूं तुम्ह सु णवायो रे ॥ पृथिवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति तस गाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या ठकाया, सुखवछक प्रभु दरसाया रे ॥ सव जीवणो चहावे,ऊ खसु थररावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध नव आ

णी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मत वोलो भाषा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर व न अल्प बहु छोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर न र तिरजंचो, मैथुनथकी वंचो ॥ त्यागो यह परपंचो ॥ श्री० ॥ ॥ ५ ॥ अल्पबहु छोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ प रिग्रह दु खकारो, भरमावे संसारो ॥ करियें परिहारो ॥श्री०॥६॥ अ सणादिक जें कह्या चउ आहारो, निशिभोजन परिहारो रे ॥ एह खटव्रत सुखकारो, पाल्यां भव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥श्री० ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारां, ते पूजो पलेवो वार वारा रे ॥ त्रस थावर प्राणी, करो जत्न पेछाणी ॥ इम आगम वाणी ॥श्री० ॥८॥ अजयणासु चाले तथा उभो रहेवे, बेठे सुवे खावे मुख केवे रें ॥ प्राणीनी हिंसा थावे,पापकर्म वधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥ श्री० ॥ ए ॥ शिष्य पूछे तव किणविध करीयें, गुरु कहे जयणा आदरीयें रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूधे आश्रव सागे ॥ अविचल सुख आगें ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछें दया थाणी, कांइ जाणे जे पाप अनाणी रे ॥ सूत्र सुण्या बोध आवे, आश्रव छिट कावे ॥ संजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट संजम धा रो, कर्म भर्म करे छारो रे ॥ केवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥ शाश्वतां सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृद्ध पणे पण किरिया, धारी अनंताही तरिया रे ॥ छज्जीवणीया अधिकारो, शुद्ध पाले नर नारो ॥ तिलोकरिखजी सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३॥इति॥

॥ अथ पंचम पिंडेषणाध्ययनस्य प्रथम उद्देशा सझाय प्रारंभ ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया शुद्ध आदरे, द्रव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम जति संचरे,देखी

धुसरा प्रमाण रे ॥१॥ हुं बलिहारी जाउं रिखचरणकी, त्रस थाव र प्रतिपाल रे ॥ कोयला रुंख नस्मी पुंज पर, चाले नहिं शंका निहाल रे ॥व०॥२॥ वेश्यावासमें नहि संचरे, नवी प्रसूत श्वानिनि गाय रे ॥ उन्मत्त वेल हय गज जिहां लडे, मुनि दूर वर्जीने जा य रे ॥ व० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहि, हसे बोले नहिं पंथ रे ॥ चाले नहि महेल देखतो, अंधारु घर ते तजत रे ॥व० ॥ ४ ॥ छुगछनिक अप्रतीति कारीयो,कुल तिहां मुनि नहि जाय रे ॥ पडदो किमाड आग्या विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दोष वियालीस टालिनें, सुझतो ले निकु आहार रे ॥ उ परत दोष विधि पिंमनो, सुणजो काईक अधिकार रे ॥ व० ६ ॥ दोजणा सामिल आहार ते,निमत्रें एक तिण वार रे॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहरे छुगहामी जेवार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ गर्निणी अर्थे नोजन कियो, जिस्या पहिली परिहार रे ॥ उठेसरके वोराव ण नणी, पूरण मास गर्नपुत नार रे ॥ व० ॥ ८ ॥ बालक धव रावती छुवती, छोडावता रोवे जे बाल रे ॥ दान पुण्य मगत अर्थे जे, कियो ए सहु वे रिख टाल रे ॥ व० ॥ ए ॥ अल्प खाणो बहु नाखणो, मुनिजन ते वर्जत रे ॥ तरखा बूझे नहिं जिण ज लें,ते नहिं वहोरे गुणवत रे ॥ व० ॥ १० ॥ उपयोग विना लेवा णो कदा, परठवे तेह एकत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी, गृहस्थ घरे आज्ञा एहंत रें ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार क रतां कदा,काष्ठ काकरो निकलत रे ॥हाथमें ग्रही मूके तदा, पण मुखथी नहिं थूकत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मु नि, निसही शब्द कहंत रे॥ करे काउस्सग्ग इरियावहि, अतिचा र सहु ते चिंतत रे ॥ व०॥१३॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जि णघर जिणविधि अहार रे ॥ सज्झाय करो विश्रामो लेई, आमत्रें जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस

विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि नोगवे,स्वाद न करे लगार रे ॥ व० ॥ १५ ॥ डुल्लहा उहा मुहा दोई कह्या, मुहा जीवि इम जाण रे ॥ दोई जावे सुगति विषे,अनुक्रमें लहे निरवाण रे ॥ व० ॥ १६ ॥ पंचमुं अध्ययन पिंमेषणा, प्रथम उद्देशा मझार रें ॥ तिलोक रिखजी कहे वर्णव सी, पाले सो धन अणगार रे ॥ व० ॥ १७ ॥ इति पिंमेषणाध्ययन प्रथमउद्देक सचाय ॥

॥ अथ पचम पिंमेषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सचाय प्रारंन ॥

॥ प्राणी आगखो टुब्याने,सांधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रावि षे जे मुनि वहोरीयो रे,डुर्गंध सुगध जे कोई आहार रे ॥ नोगवे जिम सुजग बीलमें धसे रे,पण परठवे नहि सो लगार रे ॥ प्रचु आग्या आराधो मुनिवर नावशु रे ॥ १ ॥ जो चाहो नवोदधि पार रे ॥ अल्पकाल ठे डुख देहीने रे, सुख अनत अपार रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमलियाथी शोच न कोय रे ॥ चुगो जो लेवे जिहां पंखीयां रे,वली निकुक मागतो होय रे ॥ प्र० ॥३॥ ते देखी मुनि नहिं सचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं डुहवाय रे॥ जो करे गृहस्थी आदर वंदणा रे,वलि वलि तिन घर नहिं जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वदे तो हरख आणे नहिं रे, विण वाद्यांसु नहि कुमलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता साग र मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ बिन बताया गुरुदेवने रे, नोगवे न हिं सो लगार रे ॥ किंचित ठानो सो राखे नहिं रे, कपट न करे आपागार रे ॥ प्र०॥ ६ ॥ नीसा सहित आहार नहिं नोगवे रे, जिणथकी सजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष महोटो कह्यो रे,त्याग्याथी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वलि नावना रे, चोर कह्या पच प्रकार रे ॥ ते पावे किल्विषी देवता रे, कह्यो डुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एलक मूकपणे होवे ति

हांथी मरी रे, नरक तिरियंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म अर्जुन कह्यो रे, इम जाणी छोडे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ शिक्षा निक्षु शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी मांय रे ॥ तिलोकरिखजी कहे जे व्रतें क्रिया रे, तिनने हुं वदू शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ धर्मार्थकामाध्ययन सद्मायप्रारंभ ॥

॥ आज नलो दिन ज्ग्यो जी, श्रीसीमंधर स्वामी जिन वंदस्या ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरिसणे संपूर्ण छे हो कर्मगिरि चूरण कारणें, मुनि तप सजम वज्रधार ॥ ध्रु० ॥ एहवा गुणमणि गणिवर हो मुनिसर आइ समोसर्या, कांई कोइक उद्यान मझार ॥ राय प्रधान जो आवे हो उमाहे क्षत्री माहणा, कांई पूछे प्रश्न विचार ॥ग्या० ॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म किस्यो कह्यो, कांई तो दाखो अणगार ॥ तो निसुणी इम बोले हो कांई खोले हो आगम सघने, कांई निन्न निन्न करि विस्तार ॥ ग्या० ॥ २ ॥ जे धर्मारथ कामी हो शिवगामी वामी जोगने, मुनि वर्जे स्थानक अढार ॥ परथम थानक दाखे हो अनिलाखे जीवदया नली, मुनि सब जीवा हितकार ॥ ग्या० ॥ ३ ॥ सहु जीव जीवणो चावे हो थरर विमरण विमासिने, कांइ प्राणवध नयंकार ॥ इम जाणी मुनिराया हो मन काया वचन जोगथी, त्रिकरण हिंसा परिहार ॥ ग्या० ॥ ॥ ४ ॥ निजपर अरथें सावद्य हो क्रोधादिक वश मृषा गिरा, कांई निंदीसहू अणगार ॥ अविश्वासनु कारण फूलज हो ते उंच समुं जाणी करी, करो अलिक नापापरिहार ॥ ग्या० ॥ ५ ॥ तुष तरणादिक चोरी हो डुख उंरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख सहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो काइ केतु अपकीर्त्ति तणी, कांइ कुशील डुःशील आचार ॥ ग्या० ॥ ६ ॥ लुण वली विग य पाची हो जाची नहिं गखे रेणमें, कांइ ए आज्ञा जगतार ॥

वस्तर पातर धारे हो ते संजम लज्जा कारणें, रिख करे मूर्छा प रिहार ॥ ग्या० ॥ ७ ॥ अहोनिश तप जे कहीयें हो कांइ हियें समता भावने, कांइ एक भक्त परिहार ॥ पृथिवी पाणी तेउ वाउ हो वनस्पति त्रस जाणियें, कांइ छेइ काया जीव उगार ॥ ग्या० ॥ ८ ॥ एकेकीकायनघावे हो हणावे तिहां प्राणी घणा, कांइ गोचर अगोचर धार ॥ दुःख दुर्गति वधारण हो भवारण्य कारण जाणिने, कांइ हिंसा सर्व निवार ॥ ग्या० ॥ए॥ छ व्रत वली छका या हो पाले त्रिकरण जोगसुं, कांइ ए थया स्थानक वार ॥ पिंम शय्या वस्त्र पात्रां हो चातुर मुनि लेवे सूफता, कांइ दोष न क रे अंगीकार ॥ ग्या० ॥ १० ॥ कांस्यादिक पात्रमांही हो नहिं भोगवे आहार पाणी कदा,कांइ भ्रष्ट थाय आचार ॥ पलग मांचा दि आसण हो सिंहासण पर वेसे नहि, कांइ पडिलेहण दुःक रकार ॥ ग्या० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काजें हो विराजे नहिं गृह स्थी घरे, कांइ उपजे दोष अपार ॥ वृद्ध रोगिया तपसी राया हो जस कायामें शक्ति नहिं, कांइ कल्पे त्रिहुं अणगार ॥ ग्या० ॥ १२ ॥ स्नान वर्ज्यो जिनराया हो बहु काया थाये विराधना, कांइ व्रतमें लागे अतिचार ॥ सुगंधिकें चंदन केशर हो परमेश्वर वर्ज्या साधने, कांइ दृढ कर्म बंधणहार ॥ ग्या० ॥ १३ ॥ जे श म दम उपशम सागर हो रतनागर रिख बहु गुण तणा, कांइ क र्म खपावण हार ॥ पापपुंज खपावे हो तन तावें तप जप साध णा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ग्या० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रंग राता हो जगना ताता तोडयों,कांइ शशिसम जस निर्मल धार ॥ तिलोकरिखजी कहे धर्मार्थि साधी हो आराधी सीधी कोइ स्वर्गमें, कांइ उपजे त्रायी अणगार ॥ ग्या० ॥ १५ ॥ इति धर्मार्थाध्ययन ॥

॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्ध्यध्ययन सच्चाय प्रारंभ ॥

॥ बधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ चउभाषा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवंता हो ॥ दो सीखे दो वर्जित करे, जे च तुर मह्ता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वस्र बोले हो, जिहां सावद्य तिहां सत्य नहीं, इम अनुभव तोले हो के ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य विहार समाचरे, कूड मिश्र टाले हो ॥ निरवद्य अकर्कश असंदेह सो, बुद्धिवंत गिरा जाले हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत वर्तमानमें, एकांत नहि ताणे हो ॥ नि संदेह निर्भे तजे, जे अ वसर जाणे हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ नि संदेह साची वली, जिणथी जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही,जिहा पाप वधावे हो के॥ मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकनेत्रीने, पन्नग पंन्नगरोगी हो ॥ चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥ मूरख गोलो कूतरो, क्रोधी कपटी भिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक भाषा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दादी पडदादी माता,धुया सखी चोरी ठकुराणी हो ॥ इत्यादिक शोलें प्रकारनी, वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिम तेहनां, तिमहीज बतलावे हो ॥ तिमही पुरुष नाता सहू,वर्जे बतलावे हो के ॥ मु० ॥ ९ ॥ मनुष्य पशु पंखी अही, गाय बेल तरु खेती हो ॥ भोजनादिकये सहू, देखी बोले सो चेती हो के ॥ मु० ॥ १० ॥ रुडो विवाद किधो इणे, भली निपजी रसोई हो के ॥ वारु ठेयो शाक भलो मरखो, दाखे नहिं रिख जोई हो के ॥ मु० ॥ ११ ॥ भलुं हराणु इव्य मुजीनुं, भलुं गयु धन एहनो हो ॥ ए कन्या सुदर सी रे, इम वचन केहणो हो ॥ मु० ॥ १२॥ रूडो कीधो तप परिपक्वशीलें, ठेयो मोहणी तातो हो ॥ पंमितम रण क्रोधादिक हलो, भलो कह्यो तिण वातो हो के ॥ मु०॥ १३॥ भलो थयो कर्म खाली थयो,साधुकिरिया भलेरी हो ॥ इत्यादिक भाषा वदे वली, जिणमें बुद्धि गहेरी हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ वो जावो तेडी लावो, ठगे बेठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक सु

नि जंपे नहि, जाके अनुजव दीवो हो के ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर जो सामायिक पडिक्कमणो, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो द या देवाणुप्रिया, वोलो मृडु सत्यवाणी हो के ॥ मु० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंचमें, होवे क्लेश लडाई हो ॥ हार जीत असुका तणी, चिंते नहिं मनमांई हो के ॥ मु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत नष्णता, वढे नहिं वृद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोज जय हास्यकारि णी, रिख वोले न वाणी हो के ॥ मु० ॥ १८ ॥ सुवाक्य सूधी वि चारीने, जापा दोष निवारे हो ॥ कषाय टाले पाले देवा, क र्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लेइ शिवपुर लहे, सु वाक्यशुद्धि प्रजावें हो ॥ तिलोकरिखजी कहे आराधिक, सदा तस शीश नमावे हो के ॥ मु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययन ॥

॥ अथाष्टमाचाराध्ययन सत्राय प्रारंज ॥

॥ दया धर्म दिलमाही जावे रे ॥ ए देशी ॥ मुनिजन आज्ञा आराधो रे, निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान ने पामीनें जी, वरते जिम अणगार ॥ सुण जवु किरिया जली जी, जंपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथिवी पाणी तेउ वायरो जी, वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसु जी, हिंसा वर्जे मु निराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुवर फुल कथुवा जी, किडी नांगरा दिक उत्तग ॥ फूलण खसखसादिक वीज सो जी, उगता अकूरा अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ इन्हा कीडादिकना कह्या जी, ए अष्ट सूक्ष्म जाण ॥ दया पालो गाढा उपयोगसु जी, पडिलेहणा परिमाण ॥ मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिरे रिख गोचरी जी, देखे सुणे वहु कान ॥ थिर राखे निज आतमा जी, तप सजम सावधान ॥ मु० ॥ ५ ॥ थोडो थोडो ग्रहे आहार सो जी, लूख वृत्ति अणगार ॥ ऊणोदरी आहार तृसा रहे जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ देहें डु ख दीधा सपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चचल नहिं ती

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य प्रथम उद्देशक सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ श्रीजिन मुजने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ रे जाई विनय धर्म सुखदाई ॥ तिणसुं कर्म तिणसुं कर्म रहे नहि काई रे जाई ॥ विन मान क्रोध छल लोजसुं प्राणी, विनयनहिं सीखे गुरु पासें ॥ ग्यान जणे तोई विपत सवाई, फल आया वास विनासे रे जाई ॥ वि० ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुत वय छोटा, हिलणार्थी आशातना लागे ॥ आचारवत वर श्रुतगुण सागर, तिणनोही विनय कोइ त्यागे रे जाई ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि जस्म करे वस्तु, तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प छोटो तोइ मस्या प्राण खोवे, अविनीत दुर्गति दुखि पासें रे जाई ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविष प्राण लेवे एक जवमें, गुरु आशातना जव जवमें ॥ दुख देवे वो धबीज नहिं आवे, जाय पड़े दुखदवमें रे जाई ॥ वि० ॥ ४ ॥ अग्निने पग करीने जो चाहे, सर्पने कोप चढावे ॥ जीवितअर्थे खावे जहेर हलाहल, पर्वत शिरथी हणावे रे जाई ॥ वि०॥ ५ ॥ सूतो सिंह जगावे बोला कर, बरछी पर हथेली प्रहारे ॥ इण दृ ष्टांतें आशातना करे गुरुनी, वली सुख चित्त विचारें रे जाई ॥वि० ॥ ६ ॥ देवजोगें जो वरते सुखदायी, आशाताना फल टले नाई ॥ विनयविमोखो गुरुहिलणियो, जगतारक फरमाई रे जाई ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरु ने सरीजें ॥ धर्मपद एक शिखे जिण पासें, तिणनो पण विनय करीजें रे जाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्जा दया सजम शील ए चारु, अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ करें गुरुजक्ति तो जर्म पुलावे, तम हरे ज्यु दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ए ॥ जिम शशी सोहे ग्रहगण माही, तिम आचारज पण गाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो,

मुक्तिके मांही विराजे रे नाई ॥ वि० ॥१०॥ विनयसमाधि प्रथ म उदेशामें, एह वरणन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिखजी कहे विनय जो आराधे, सोही लहे नवपारो रे नाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य द्वितीय उद्देशक सद्याय प्रारंभ. ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खंद पछें शाखा, पान फूल विस्तार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो कांइ, जो चाहो नवनिस्तार ॥ नलां रे ज्ञानी ॥जो०॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल पर्यंप्यो, जगतारक जसधार ॥ न० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी छुष्ट नायक, क पटी धूरत नर नार ॥न०॥क०॥ वि०॥३॥ ससार सागरमें तणावे एसा छुष्टी, काठ नदीपूर मफार ॥ न० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ नली शीख देतां उलटी धारे ज्यूं, शिरे अति दंम प्रहार ॥ न० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत नवदंम छुःख पावे, सदा दारिद्र घर वार ॥ न० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण न व सुखसंपत, परनवमें जय जयकार ॥ न० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७॥ सुर नवपद विचारकर होवे, अविनीतपणुं छुःखकार ॥ न० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अनिप्रायनो जाणक, नमन करे वारंवार ॥ न० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे नवजल पार ॥ न० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ ति लोकरिखजी कहे अध्ययन नवमामें, दूजे उदेशें अधिकार ॥ न० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उदेश सद्याय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय उद्देशक सद्याय प्रारंभ ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सेवो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारवार ॥ वि० ॥ वय ठोटा दीक्षा करि वडो, साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि०॥ श्री०॥२॥ दोष बयालीस टालिने, सेवतो सुजतो आहार ॥ वि० ॥ संथारो शय्यासन जोगवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रियवचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकीमाइपणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशंसा निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामार्थी गुणथी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह करो, राग द्वेष दोइ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या जणी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि०॥ तिम गुरु सुशिष्यने जणी, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री०॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे सुगतिने माय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो नवमाध्ययननो, तिलोकरिखजी कहे वखाय ॥ वि० ॥श्री०॥८॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सझाय प्रारंभ ॥

॥ चार पहोरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सौधर्मास्वामी रूडी रीतसुं रे, आर्जजंबूसुं कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मुजसुं कह्यो रे, दाखूं हूं तुजयकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥१॥ प्रथम विनय विचार रे ॥च०॥ गुरुशिक्षा सुणो खंतसूं रे, वरतो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें किरिया करणी कही रे, साचवो कालो काल रे ॥ च० ॥ मन अभिमान आणो मति रे, हुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ चा०

यके टाले, ध्रुवजोगी धनवत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावद्य समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे, जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध०॥६॥ चार आहार वाशी नहिं राखे, जोगवे साधर्मिकी आमत्र हो ॥ सज्झाय ध्यान मेली नहि रहे नित आतमा, निज राखे स्वतंत्र हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ विग्रहकारिणी डुःख वधारणी, न कथे विकथा प्रबध हो ॥ न करे राग द्वेष क्षमा धारक, संजम तप ध्रुव बध हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पच इंडीने कंटक सम लागे, आक्रोश वचन परिहार हो ॥ अट्ट हास्य शब्द परम नयंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ ए ॥ पडिमाधारक सात नय वारक, ममता नहि तन तुप तोल हो ॥ पृथिवी समान उपधान आराधे, वर्जे नियाणो कितोल हो ॥ ध०॥ १० ॥ सहत परिसह लहत अरिसें, कुगतिसें आतम टालत हो ॥ जनम मरण नव वर्जण कारण, सजम तपस्या साधत हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हाथ पाय वाह इंडिय सजय, सद्यायरक्त सूत्र जाण हो ॥ नाम उपकरण मूर्छा नहिं राखे, जे निरकु चाहे कल्याण हो ॥ ध०॥ १२ ॥ अज्ञात कुलें गृहे अल्प आहार रिख, न करे विणज वेपार हो ॥ गेडे कुसग मूर्छे नही नोजन, नहिं वछे पूजा सत्कार हो ॥ध०॥१३॥ कोप वर्जे कुनापा न जंपे, उछे उल अनिमान हो ॥ पुण्य पाप फल प्रत्यें विचारे, जे निरकुआगम जाण हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ धर्मदेव धर्मदेशना दायक, नायक या एक जेम हो ॥ श्रीजैनधर्मने धीरे धरावे, वरजे कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वास अशुचि डुर्वासक, असासतो विद्युत्सकावान हो ॥ ममता त्यागी अनुरागी सुगतिका, निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ ॥ १६ ॥ जनममरण रण मरण मिटाइ, चरण करण उद्धार हो ॥ चरण सरण धर तरण तारणको, केवल कमला नरतार हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुक्ति महेलकी सहेल अचल पद, अजर अमर अविकार हो ॥ अलख निरंजन नविम

न रजन, वरते जेजेकार हो ॥ ध० ॥ १८॥ दशमुं अध्ययन भिक्षु मारगनुं, जे कर्मभेदनहार हो॥ आराधना करे शम दम परिणामें, पावे भव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ सवत् पंदरेशें एकतिस संवछर, उतस्यो भसमगृहकूर हो ॥ श्रीजिनसासण उदे पूजा प्रगटी, समकित जोत सनूर ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेष प्रसिद्धता, अहमदाबाद मझार हो ॥ शुद्ध श्रद्धाधारक श्रावक लुंका जी, किनो ज्ञान उपगार हो ॥ध० ॥ २१ ॥ ततदेशना सुणि एकदिनमांही,मुख्य भाणो जी वखाण हो ॥ पैंतालिस जणा सगें सजम धार्यो, चित्त दृढता अति आण हो ॥ ध०॥२१॥ दु कर दु कर करणी धारी, दयाधरम थयो परकाश हो ॥ सातमे पाटे सत्तरेसें पूज, पद धारक विमास हो॥ध०॥ २३ ॥ श्रीश्री कान्हजी रिख महाराया, दीपायो जैनधर्म हो ॥ चालीस सहस्र ग्रंथ आगम कणगर, टाल्यो अज्ञान को भर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्यता रिखजी, काला रिखजी गुणवत हो ॥ बगस्तु रिखजी तस पाट विराज्या,शूरवीर मदमत्त हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अतेवासी पूज्य धनजी, शम दम उपशम धार हो॥तत् शिष्य श्रीअयवता रिखजी, चरण करण दातार हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस महण करीने,बाल स्याल जिम जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशाकी किंचित,रची रचना हित आण हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ हीण अधिक पद अर्थ जो दीसे, बुधजनसु अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजो, जयणा शुद्ध भणजो उल्लास हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ सवत् उगणीशें चालीस सवछर, चैत्र शुक्ल बीज जाण हो ॥ वार चड देश दक्षिणमाही,अहमद नगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ तिलोकरिखजी कहे धन जिनागम,सर्धे जो भविक मन खत हो॥ अनत ससार परित कर देवे,पाले सो होय शिव कत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आग्यानी बाहिर, जो कोइ जोडाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखें,

मेच्छामि डुक्कड मोय हो ॥ध०॥३१॥ अरिहंत सिद्ध साधु धर्म ए च्यारी,होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख सपत अविच ल, दीजो परम दातार हो ॥ध०॥३२॥ कलश ॥ जिनराज वाणी, सुरकदाणी, नविक प्राणी,सुख नणी ॥ सप्त नंगी,कही चंगी,नविक रंगी,रुचि घणी॥ जे पाले नावें,कर्म धावे,केवल पावे,सार ए ॥ तिलोक रिख जी इम, सीख गुरुगम,ए रचि सभाय,सुखकार ए ॥ध०॥३३॥ इति निरकुध्ध्ययनम् ॥ इति दशवैकालिकसूत्रजीकी पीठिका सहित अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नर सज्झाय संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥४३४॥

॥ अथ गुरुगुण सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ प्रणमुं गुरु गुणवंत नगीना, रिद्ध सिद्ध दा तार ॥ नवां रे ज्ञानी ॥ रिद्ध० ॥ गुरुगुण हिरदे वस रह्या, म्हारे जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम उजा गर, नागर नवल व्रतधार ॥ न० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान को अंजण दे मनरंजण, नंजण नर्म अंधार ॥ न० ॥ न० ॥ गु० ॥३॥ धीरज मंदिर सोम ज्युं चंदर, धरम धुरंधर धार ॥न०॥ ध० ॥ गु० ॥ ४ ॥ करमके गंजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥ न० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे पर तारण हारा,राग द्वेष प रिहार ॥ न० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत भ्रात कामि नी, सगपण सर्व असार ॥ न० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम नहि को हित कारक छे, विपत विम्भारणहार ॥ न० ॥ वि० ॥ गु० ॥ ८ ॥ चित्रावेल चिंतामणि पारस, इण नवमें सुखकार ॥ न० ॥ इ० ॥ गु० ॥ ९ ॥ सतगुरु इणनव परनवमांही, दे सुखसंपत सार ॥ न० ॥ दे० ॥ गु० ॥ १० ॥ मोतिसा मलीने खामसा खा रा, आतमा समअपियार ॥ न० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु रुपासें रायसजेती, लीयो सजम नार ॥ न० ॥ ली० ॥गु०॥१२॥ पापी पूरो परदेशी राजा, दीयो सुर अवतार ॥ न० ॥ दी० ॥गु०

रोग दुःख आवे जो तनमें, शरणागत नहि कोइ ॥ तेरो सादाय क जैन धर्म हे, इण नव पर नव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रनु सरणा विना चउगति नटक्यो, पायो दुःख अनतां ॥ ते वेदना निज आतमा जाणे, के जाणे नगवता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म लियो जव कोइ न साथी, मरतां पण नहि लारी ॥ वधी मुठीयें जन्मज लीनो, जावे हाथ पसारी रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो जायो कहे जनमता, वाहेर पडियो रोवे ॥ जन्मतांही अपशुकन जो लीधा, रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ सुख दुःख करता आतमा जाणो, नूगते आप अकेलो ॥ इम जानी दुःकृत परहरियें, सुकृत किरिया सो फेलो रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुंब रिद्ध सपत पाइ, सो निज पुण्य प्रनावें ॥ जिण समे पुण्यको छेहोज आवे, देखतमें विरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर आवे पंखेरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान ऊडे पंखी वड जावे, वेठे हुवा वृक्षठामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ वाजीगर जव ख्याल रचावें, लोक होवे वहु नेला ॥ वाजी नयासुं सव नग जावे, जेसा जीव अकेला रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ गुवालके संगें गायको टोलो, कहे धेनु सव महारी ॥ जव आवे सो अपने घरमें, रहे अकेलो दंमधारी रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम धिनापन, मल मूतरकी या क्यारी ॥ अशुचि आहार करी ए तन निपज्यो,चर्मकी शोना छे ज हारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो पण शुचि नहि थावे॥ हाम करमिया नंम मीटीकी,इणिपर क्यों तु पो मावे रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक कवोलेवो, जीमे एम सदाही ॥ तो पण दे ठगो एक पलमें, काढे जीवनें साही रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग नय दुःख उचाटण, जनम मरण घर काया ॥ कोड जतन करता पण जावे, इण पर क्यों तु लोनाया रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शका नहि छे लगा

णि नरजव पायो, उत्तम कुल अवतारो ॥ तप जप सुकृत उद्य म कर लो, वाटी साठे मत हारो रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनंत जी व तखा धर्म प्रजावें,वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रनु आ ज्ञा आराधे, सो शिव सुंदर वरसी रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सतगुरु तो कहेणेका हे गरजी, परउपगारी थें जानो ॥ जो नहिं मानो तो मरजी तुमारी, ए घोडा ए मेदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उंगणीशें अडतिश जेठ शुद सातम, गाम खरोंमीके मांही ॥ तिलोकरिख उपदेश बत्तिसी, जावना शुद वणाई रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥

॥ अथ अनित्य जावना सद्याय प्रारंज ॥

॥ सत चरणारी जाउ बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए ससार अनित्य जयकारी, नित्य जैनधर्म लो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ म ढ मंदिर हाट हवेली, जाली ऊरोंकातें बारी ॥ जो वंध्या सो स कल ढल जावे, महेल गवाक्ष अटारी ॥ आरंज मत करजो लगा री ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल ऊशाला, हीर चीर जर तारी ॥ जो वणिया सो सकल विनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो कोई जत्न हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ वाजुबंध जुजदम चोकडां, हारक डा पोंची जारी ॥ घडिया मढिया जडिया सुवर्णसें, हीरा रत्न ऊल कारी ॥ सग नहिं आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इंड चंड सुर मानव, वाल तरुण जराधारी ॥ राव रक नीरोगी सरोगी, अथिर सकल ससारी ॥ देखो जवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ कूवा वावडी वाग बगीचा, वृक्ष विचित्र मनोहारी ॥ न रहे व स्तु न रहे करता, करता क्रोड प्रकारी ॥ वात ए जगमाहे ज हारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पेदल दल रथ तुरंगम, सेना चार प्रकारी ॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रेवे नहीं तस धारी ॥ चराचर हे गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता वधव अरु जगिनी, काका

अनाथी इम जाणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ संसार नावना सद्याय प्रारंन ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे नविका ॥ ए देशी ॥ ए ससार च लाचल श्णमें, नमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दम्क लक्ष चौरासी, पायो डुःख अनाणी ॥ ससार महाडुःख खाणी रे, नवि का,धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनं ती, क्षेत्रवेदना जिहा नारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी,मारे विविध प्रकारी रे ॥ न० ॥ २ ॥ पल सागर थिति नोगवे परवश, आरत अधिकी आणे ॥ के तो तिणरो जीवज वेदे, के परमेश्वर जाणे रे ॥ न० ॥ ३ ॥ तिहांथी मरी तिरजच गतिमें, निगोदपणामें संच रियो ॥ साडी पैंसठ हजार ठत्तिस नव, मुंहूर्त एकमें मरीयो रे ॥ ॥ न० ॥ ४ ॥ सत्त्वविकलेंडी सज्ञी असंज्ञी, नमता नरनव पा यो ॥ देश अनारज नीच उच कुल, डुःखमें जन्म गमायो रे ॥ न० ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरासुं, सुरगतिमें अवतरीयो ॥ ना टक करके रीझाया अपरनें, मरण समे डुःख धरीयो रे ॥ न० ॥ ॥ ६ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, सास उसास मन नाषा ॥ पुजल परावर्त सातुहि कीधा, अनत वार इम आखा रे ॥ न० ॥७॥ इव्य क्षेत्र काल नाव ए चारु, सूक्ष्म बादर कहीयें ॥ ए पण वार अनतही जाणो, सूत्र वचन सर्दहीयें रे ॥ न० ॥ ८ ॥ रोग सोग सजोग विजोग वली,सुख डुःख अनुनव्यां सारा ॥ नाता स ब जोड्या वार अनती, पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ न० ॥ ए ॥ खाया पिया पहेरया उंढया, सब सणगारज कीना ॥ ठाकर चाकर पद सब पायो, मुनिदरिसण नहिं नीना रे ॥ न० ॥ १० ॥ पाप सूत्र सब नणीया सो निन्न निन्न, कर्म ध्यान सब धाया ॥ पाप

तिम जीव ॥ लक्ष चौरासी रें जीवा जोनिमें,ड ख यों पायो अती व ॥रे०॥ए॥ इणविध हो सोची रे नेमी रायजी, ठमी राज भमार॥ तिलोक रिख दाखे रे सजम आदरी,पाया नवजल पार॥ रे० ॥ ए ॥

॥ अथ अन्यत्व नावना सजाय प्रारंन ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ निज गुण उलख रे प्राणी, मान मान श्रीजिनजीकी वाणी ॥ निजपणो निजमें रे आणो, परड्व्य सो अपणो मत जाणो ॥ नि० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज रे तेरो, आंख मीच क्यों करत अंधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे, दोड दोड निज प्राण गमावे ॥ नि० ॥ २ ॥ तिम मत होवो रे नाई, तु निरजन निराकार सदाई ॥ कर्मसुं काया रे बंधी, श्रीजिन आगममें कही सधी ॥ नि० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने रे मातो, फूलो खोटो ए तन नातो ॥ इणसुं ममता रे टालो, अनुनव करी आतम अजुवालो ॥ नि० ॥ ४ ॥ ए तन तेरो रे नांहि, या तो जड तु चेतन माई ॥ इणमें शका रे नांइ, ममत कियासुं अधिक डुख दाई ॥ नि० ॥ ५ ॥ नित नित नाडो रे दीजें, नित नित सार संनाल करीजें ॥ तोही न होवे रे या तेरी,क्यो कहे निरर्थक मेरी या मेरी ॥ नि० ॥६॥ एकपखी प्रीती रे फूठी, या तो तुज पर नव नव रूठी ॥ कायासु ममता रे करणे, क्यौं तु ड ख देवे जीव अपरणे ॥ नि० ॥ ७ ॥ जो जाणे मुज तणी रे काया, सो तो मूढ गिमार कहाया ॥ इणसु नवे नवे रे बीती, डुशमन प्रीति अंत फजीती॥ ॥नि०॥ए॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, सजम ले गया पद निर्वाणी॥ तिलोकरिख दाखे रे जाची, ज्ञान दर्शन किरिया सदा साची ॥

॥ अथ अशुचि नावना सदाय प्रारंन ॥

॥ साधुजी सदाहि सुहामणा ॥ ए देशी ॥ देहसु नेह न कीजीयें, देह अशुचिनु गेह हो ॥ नवियण ॥ मल मूतर रुधिर नरी,

म जलधर सरोवर नरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा छिद्रमें, जल नरीयां मूवावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ अधिक आश्रव कर्मबंधसुं, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थितिसु निगोदमें, अनंतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ ३ ॥ इंद्रिय कषाय अव्रत वली, तीन जोग कहीजें हो ॥ पच्चिश क्रिया नेद जोडतां, बेंतालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रोत्र इंडी वशें मृगलां, वनमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतंग सो, निज अंग दझावे हो के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माछलो, वश प्राण गमावे हो ॥ स्पर्श वश कुंजर मरे, मन महिप हणावे हो के ॥सु०॥६॥ एक एक इंडी वश मस्या, जगजीव अनंता हो ॥ जे छेही वशमें पड्या, नवनवमें मरंता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात लव आवखो, तो मोक्ष सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अव्रतवशें, फिर नव डु:ख पाता हो के ॥सु०॥८॥ शुन आश्रव शुन जोगथी, पुण्य बंधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो हो के ॥ सु०॥९॥ समुद्रपाल इम जाणीने, छंडी जगमाया हो के ॥ तिलोकरिखजी कहे धन सो नवि, आश्रव छिटकाया हो के॥सु०॥१०॥

॥ अथ संवरनावना सझाय प्रारंन ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार संवर क्रिया आदरो, दाखरो ए शिववाट रे ॥ हाट कपाट सम जाणीयें, आश्रव रज देवे दाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव नाला नें, रोकियें मन वच काय रे ॥ कर्म जाल सो कीये तप करी, धोकीयें श्रीजिन राय रे ॥सा०॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन सत आदरो, जीतो परिसह बावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, नावना बारे जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंच चारित्र समाचरो, नेद सत्तावन एह रे ॥ अनुनव ज्ञान दिशा करी, जाण संवर सु

राचे मूरख जेह हो ॥न०॥दे०॥१॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, की धो प्रथम आहार हो ॥ न०॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे किरतार हो ॥ न०॥ दे०॥ २ ॥ मास सवा नव फूलीयो, उंधे मुख गर्भवास हो ॥ न० ॥ जन्म थयो दुःख वीसर्यो, भुलि गयो दुःख राश हो॥न०॥दे०॥३॥ दिन दिन तन महोटो थयो, करे शुश्रूषा अ पार हो ॥ न० ॥ दुगंछा आणे अपर तणी, निज उत्पत्ति तो स नार हो ॥ न० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीमें, सात कही उपधात हो ॥ न० ॥ सातु मल निशिदिन झरे, तन ऊपर त्वचा कही सात हो ॥ न० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातशें सर इणमें सही, ति नसे हाम करंम हो ॥ न०॥ वात पित्त कफ दोष जो, अधिक घि नापन नम्म हो ॥ न० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसुं पखालीयें, तोहि विमल नहि थाय हो ॥ न० ॥ मान करणे किण कारणें, चर्मकी शोभा देखाय हो ॥न० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुंभ तणी उपमा, सझा फूलवो जेम हो ॥ न० ॥ इन्द्रधनुष जल मोतिको, नास होणेको नहि नेम हो ॥न० ॥ दे०॥ ८ ॥ आहार आधा रें ए रहे, रोग तणो नमार हो ॥न०॥ तप जप रत्न संग्रह करो, इणमें एहीज सार हो ॥ न० ॥ दे० ए ॥ जो जाणे शुचि का यने, ते तो मूढ गिमार हो ॥ न० ॥ चिंतामणि नवहारणो, खा वे नरकमाही मार हो ॥ न० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमार जी, जाणी काया असार हो ॥ न०॥ तिलोकरिख कहे तप करी, पाया नवजल पार हो ॥ न० ॥ दे० ॥ ११ ॥

॥ अथ आश्रव नावना सधाय प्रारंभ ॥

॥ वधव घोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमाको वध छे, जगजीवने जाणो हो ॥ शुभ अशुभ नय भेद वो, सिद्धांत पे गणो हो के ॥ सुगुणा आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जि

प फल नोगवे, कांई दोनुई वधन तेम ॥च०॥७॥ जिहां लगें मोक्ष न सर्वथा, कांई तिहां लगें निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय तदा, कांई लहीयें पद निर्वाण ॥ च० ॥ ८ ॥ इम जाणी शम दम नावसुं, कांई करी अर्जुन अणगार ॥ तिलोकरिखजी कहे बमासमें, काई पाया नवजलपार ॥ च० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वनाव तथा लोक सगण नावना सद्याय प्रारंनः ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ लोक स्वरूप विचारीयें, मूल नेद कह्या तीन ॥ सुग्यानी ॥ कर्ध्व अधो तिर्यग् सही, व्यवहार नयें इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥१॥ कर्ध्व सनीचर उपरें, मृदंगके सगण ॥सु०॥ काईक कम सात राजनो, दाखीयो त्रिजगनाण ॥ सु० ॥ लो० ॥२॥ तिणमें कल्प द्वादश कह्या, नव लोकांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रैवेयक तिण उपरें, पंच बे अनुत्तर विमाण ॥ सु०॥लो०॥३॥ तीन किल्बिषी वली तेहमें, बासठ प्रतर गण ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासीके उपरें, सत्ताणु सहस्र विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तेवीश वली अधिका कह्या, रत्न जडित ऊलकत ॥ सु० ॥ तप संजम जिणें आदस्यो, सो सुरगति उपजंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसु, बारा जोजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता बत्र ज्यों, पूरण चंड सगण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ६ ॥ पैंतालिस लक्ष योजन कही, लंबी पहोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाडी मिचें, अर्जुन सुवर्णमय वखाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ जोजन नाग चोविशमो, उपरें सिद्ध अनत ॥ सु० ॥ अनतसुखा मांही ऊिल रह्या, अष्ट कर्म करी अत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ८ ॥ निचें शनिचरें विमाणसु, अगरेसें जोजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्गो लोक श्री जिन कह्यो, ऊम

ख गेह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ संवर अंबर उंढियें, मोडीयें जवडु ख
ताप रे ॥ विषय रूप शीत सो लागे नहिं, चिपके नही आश्र
व आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीव तलाव जलकर्म ते, आश्रव
नाला करो बंध रे ॥ अथ होवो मत मोहमें, ए जिन आगम
सध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कषायनें, छोडवो पंच
प्रमाद रे ॥ आदरो शुद्ध समकित क्रिया, मेटजो जर्म अनाद रे ॥
सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आज्ञा आराधियें, पालीयें संजम जार
रे ॥ जनम मरण विपता टले, उतरो जवजल पार रे ॥ सा०
॥ ८ ॥ एसी जावना मनमें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥
रिख तिलोक कहे धन जिका, धारे संवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ए ॥

॥ अथ निर्जराजावना सचाय प्रारंज ॥

॥ सुरीजन सांजलिजो सव कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग
उंलखो, कांई निर्जरा जाव विचार ॥ सुके सर जल तापथी, कांइ
तिम छिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुजव दृष्टि निहार ॥ ए
टेक ॥ १ ॥ देही जाजन जीव घृत छे, काइ कर्म ते छास समान ॥
तप हुताशन निन्न करे, कांइ हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ २ ॥
ते तप बारे प्रकारनु, कांई अणसण कणोदरी नाम ॥ निख्याच
री रस त्यागणो, कांई जाणी निर्जरा गम ॥ च० ॥ ३ ॥ काय
किलेस सलीनता, कांई बाह्य तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायछित
तप कह्यो, कांई विनय वेयावच्च धार ॥ च० ॥ ४ ॥ सझाय ध्या
न काउसग्ग जलो, कांई ए अभ्निंतर सुविचार ॥ इह लोक पर
लोककिर्ती विना, कांई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ५ ॥
कर्म पहाड जेदण जणी, कांई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल
ममता त्यागीयें, कांई शुद्ध जाव सुख दान ॥ च० ॥ ६ ॥
क्षण अगनि क्षण नीरमें, कांई सुहार साणसी जेम ॥ पुण्य पा

॥ अथ बोधबीज भावना सद्माय प्रारंभः ॥

॥ सीमंधर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चिंतामणि, वंछित सुखनो दातारो जी ॥ जतन करी अति राखजो, टालो पंच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव भव लह्यो, उत्तम कुलमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा छे दोहेली, कोयले भरणो वयारो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधिकी चोकडी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ साते प्रकृति उपशमे तदा, उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ काइक क्षय कांइक उपशमे, क्षयोपशम कहे जगभाणो जी ॥ सास्वादन पडतायकां, की, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ साते क्षयथी क्षायिक होवे, नाखी श्रीजिनराया जी ॥ क्षायिक आइ जावे नही, आगम भेद बताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निश्चे समकित तीका, ते तो केवली जाणे जी ॥ छद्मस्थ तो व्यवहारथी, द्रव्य क्रियाने पेछाणे जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुरु, धर्मजिन आज्ञा प्रमाणो जी ॥ ए तिहुं तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार वखाणो जी ॥ स० ॥ ७ ॥ छे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी ॥ अर्ध पुग्गलमें सो शिव लहे, भाखी केवल नाणी जी ॥स०॥८॥ समकित समकित सब कहे, कठिन छे समकित भावो जी ॥ निश्चय व्यवहार ने उलखे, तारक भवजल नावो जी ॥ स० ॥ ९॥ तप संजम किरियो करे, जो समकित बिना कोई जी ॥ छार उपर जिम लीपणुं, अंक विना शून्य होई जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण कारण सुणो बुध जना, समकित दृढ करी राखो जी ॥ मिथ्या भर्म निवारियें, जो शिवसुख अभिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास मास तपस्या करे, कूस अगर जल आरो जी ॥ समकित सहित नोकारसी, तुल्य न आवे लगारो जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रेणिक क्ष

रीके सगाए ॥ सु० ॥ लो० ॥ ए ॥ समय क्षेत्र अछे सासतो, ल क्ष पैंतालीश मांय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, जांख्या श्री जिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महा विदेहमाही शाश्वतां, जघन्यपदें जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोडी केवली कह्या, दोय कोडी सहस्र मुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सव प्रणमुं जावसुं, थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ जरत ऐरवत दश क्षेत्रमें, ठ आरानो व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मजूमिनां वली, क्षेत्र कह्या प्रभु त्रीश ॥ सु० ॥ अंतर द्वीप छप्पन अछे, जोगवे पुण्य जगीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असंख्याता वाहिरे, सागर पण सुविचार ॥ सु० ॥ जम्बूद्वीप पूर्ण चन्द्रसो, अवर सो वलयाकार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यंतर तलें, वेत्रासन सात राज ॥ सु० ॥ सात नरक डुःख दोहिलु, पाप तणो एह साज ॥ सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ उगणपचास ठे पाथडा, सातुही नरक मिलाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणतां थकां, लाख चोराशी सो थाय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक थारे अंतरा, खाली ठे उपरला दोय ॥ सु० ॥ दशमाहे दश जवनपति, शका मत राखजो कोय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड जवन तेहमें, अधिक वोहोंत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असंख्याता ठे तेहमें, ठे सूत्र तणी साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुद्गल जीव अने काल ॥ सु० ॥ ए खट द्रव्य सदा लोकमें, दाखी दीनदयाल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १९ ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उपन्या शुनठाम ॥ सु० ॥ जिणें डुःकृतपणु आदर्युं, ते पाया डुःख धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इम जावना, नेट्या श्रीवर्द्धमान ॥ सु० ॥ तिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसु,लहीयें शिव पुर थान ॥ सु० ॥ लोक सरूप विचारीयें ॥ इति लोक स्वजाव तथा लोक सगाए जावना सथाय ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत अहारो ॥ से० ॥ ए ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वने, टाल रे टाल, प्रमादघांटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रितपाल तू, वाल रे वाल कूनमे टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जक्त में, ग्यानको सार, एहीज वखाणी ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरि या वृथा, कत विन रामा ज्यों, वेलु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया जगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवा तुंवा तणो, आहार अमृत समो, कर लियो सम परि, णार्मे स्वामी ॥ तीक्ष्ण वेदना, खेद नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, जाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धर्यो, ज्ञान केवल वर्यो, होय अजोगी, मुक्ति सिधा या ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म वरजावना, जो कोई धावेगा, पावेगा सो शिव, गढ नि शंका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परजावथी, इह जवें परजवें, जीत मका ॥ से० ॥ १५ ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सझाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाई कीजो धर्मनी, काइ तेरे काठी या टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछ णियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल वखत छे नाहीं जी समायिक पोसा वखाणकी, काइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पि ता सुत जाइजी कायाने माया कारमी, कांइ जारवी छे जिनराय ॥ तिणसु ममता बांधेजी नही साधे आतम काजनें, काइ मोह काठियो डु खदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांइजी करडाइ राखे जीवडा, काइ लोक वडाई रीत ॥ तडके तोड वोलेजी नहि

भ नरेश्वरु, रिखव जिनंदजीका नंदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्र भावना, टाल्या भवड खफंदो जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित कि या विना जगतमें, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिखजी कहे इम सर्वहो, जे सुगुणां नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ धर्म भावना सझाय प्रारंभः ॥

॥ देशी कडखामें ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरणी,सतोष पाणी ॥ ज्ञानको बीज, तस मूल समकित क्रिया, कंद विनय खंद, दया बखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा महा, भेद प्रतिशाख तस, मधुर वचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसु म शुभध्यानके, कीर्त्तिसौरम्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मो हे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानंद पंथी, सुखा नदगायमें, निजानद प णेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, सताप दूरें हले, बली हारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह ससारमें, धर्म आधारथी, रिद्ध रिद्ध सपदा, अनंत पाया ॥ बापडा जीव केइ, न मै कर्मोवशें, कल्पवृक्ष गेडी, बावुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ के इ हिंसा करे, पाप पिंड भरे, दयाधर्म उपरें,द्वेष राखे ॥ भर्मि ष्ट कुगुरु तणा, कर्म बांधे घणां, गज परें निजशिरें, धूल नाखे॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव फरे, डार चिंतामणि,सो सहे परवशें, खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चउगति, जीव जे कुमति, धारे नहि धर्मके, धिट्ट गिमारा ॥ से०॥६ ॥ धर्म बिन सरण नहिं, धर्म बिन तरण नहीं, धर्म विना नहिं कबु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं हे त्राता ॥से०॥७॥ दोड रे दोड, जैनधर्म तरु महएक, गोड रे गोड, भवताप तांई ॥ पोढ रे पोढ तु, उपशम छायमें, ओड रे ओड ए सुख दाई ॥से०॥८॥ झटक दे झटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भारो ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत अहारो ॥ से० ॥ ए ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिदुंगर्वने, टाल रे टाल, प्रमादघांटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रितपाल तू, वाल रे वाल कूनमें टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जक्त में, ग्यानको सार, एहीज वखाणी ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरिया वृथा, कत विन रामा ज्यों, वेलु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साव नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया नगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा लो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवां तुंबा तणो, आहार अमृत समो, कर लियो सम परि, णामें स्वामी ॥ तीक्ष्ण वेदना, खेव नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, नाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धर्यो, ज्ञान केवल वर्यो, होय अजोगी, मुक्ति सिधाया ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म वरनावना, जो कोई धावेगा, पावेगा सो शिव, गढ नि शका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परनावथी, इह नवें परनवें, जीत मंका ॥ से० ॥ १५ ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सचाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाई कीजो धर्मनी, कांइ तेरे काठीया टाल ॥ ए आकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल वखत ठे नाहीं जी समायिक पोसा वखाणकी, कांइ कालगमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुत नाइजी कायाने माया कारमी, काइ नांखी ठे जिनराय ॥ तिणसुं ममता बांधेजी नही साधे आतम काजनें, कांइ मोह काठियो दुखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांइजी करडाइ राखे जीवडा, कांइ लोक वडाई रीत ॥ तडके तोड बोलेजी नहि

तोले हिरदे न्यावने, कांइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जाणे में हुं शाहाणो जी अकल बलरूपें जातिमें, कांई सयलामें सिरदार ॥ परनी करे बुराईजी वडाई करे आपनी, कांइ राखे मन अहंकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुंकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी, काइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले मर्मज्ञ पारका, कांइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद पणो अग लावे जी नहि नावे धर्मनी वातडी, कांइ समरे नहि नवकार ॥ नरजव एल गमावे जी नहिं चावे जप तप साधना, कांइ धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जीव दोडे देश प्रदेशमें, कांइ तृष्णा अपरंपार ॥ घर गेडया नहि जावे जी किम यावे धर्म तिण जीवडु, काइ लोज महाडुःखकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सरप सुर देणो जी वली घरको खरच निजावणो, कांइ मर आणे मनमांय ॥ धर्म किसविध थाये जी नहिं लावे धीरजता हिये, कांइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट तणो सजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो, कांइ रोगादिक तनमांय ॥ शोक घणेरो लावे जी गजरावे निशदिन प्राणियो, कांइ पामे धर्म अतराय ॥ श्री० ॥ ए ॥ जीव अजीव नहि जाणे जी वली समके नहि पुण्यपापमें, कांइ लीणो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे जी वली खाचे खोटी रूढीने, कांइ अधिका बांधे कर्म ॥ श्री० ॥ १० ॥ विकथा करे पराइ जी कमाइ टोटा खरचकी, कांइ काम जोग अधिकार ॥ हाथ कांइ नहिं आवे जी गमावे निजगुण जीवडा, कांइ जटके अनत ससार ॥श्री०॥ ११ ॥ देखे ख्याल तमासाजी वली बोले जापा हांसीनी, कांइ करे कुतूहल बात ॥ लाखेणी घडी खोवेजी विगोवे जव चिंतामणि, काइ होवे धर्मकी घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजी बजाणा ताणो खेलणो, कांइ नाहाणो धोणो अग ॥ तिणमें काल गम

वे जी नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममे चंग ॥ श्री० ॥१३॥ कातीया ए डु खदायी जी लगा छे संग अनादिका, कांइ धर्मे रतनका चोर ॥ इणसुं बहु डु ख पायो जी नहिं आयो नेडो धर्मेने, कांइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण वा लिशजी वदि मास आषाढतिथि चोथमें, कांइ पुना शहेर मजार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे नावथुं, कांइ उतरो न वजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसें एकसोबत्रीशबोल अथवा
कर्मविपाक माला सथाय प्रारंन ॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध डु ख ठावेगा॥ सुण नाइ रे ववे नर्या पस्तावेगा ॥ सुण नाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके पिंद बिंदकें, गजराहार बणावेगा ॥ इण करणीथी परन्नवमांइ, एक नेत्र नहीं पावेगा ॥ सुण० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके माही रुवावेगा ॥ इण कर तवसें परन्नवमांइ, जनम अधपण आवेगा ॥ सुण० ॥ ३ ॥ माखी मालका ठांता तोडे, धूवे करीने गन्नरावेगा ॥ इण पातकसूं ते परन्नवर्मे, आंधा बेहेरा थावेगा ॥ सु०॥ ४ ॥ रूप रंग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे डुमणो, जनमल तो तास देखावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंड्रिय जीवाको करे जो चूरण, सजिया धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसूं परन्नवमांइ, कूबडापणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बेल घोडादिक चौपद उपर, अधिको नार नरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहि ठोडे, गडगुवड अग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख उखाडे, वृक्षकी माल कटावेगा ॥ इण करणीसूं परन्नवमाही, टूटा पग हो जावेगा ॥सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाडे, पछजीव संतावेगा ॥ मतें मार
ग लीलोतरी चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ए ॥ संयमी
शीलवत्त जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसुं परजव
मांही, गूगो बोबडो थावेगा ॥ सु०॥ १० ॥ करे वैदक उषध मा
त्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसू परजवमांइ, खोजाप
ण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन नेदन, हियसुं
कर पोमावेगा ॥ इण करणीसू परजव प्राणी, वेरो पांगुलो थावे
गा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनकी अव
गुण गावेगा ॥ इण करणीसू परजव मांइ, गुगो बेहेरो हो जावेगा
॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर
खोदावेगा ॥ इण अनरथसू परजवमाही, गलत कोढ अग आवे
गा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य उपध नेखज केरो, अधिको सजोग
मिलावेगा ॥ तिणसू जस करतां पर उपर, अपजस कमावेगा
॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लुणको व्रिणज
कमावेगा ॥ इण करणीसू परजवमांहे, आंख धावणी थावेगा
॥ सु० ॥ १६ ॥ सौम्य सुदर नेत्र जे परनां, द्वेषथी मद कर देवेगा
॥ तिणकरणीसुं परजवमांहि, आख मांजरी रहेवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥
महोटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणी
सू परजवमांही, बावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ मंन्न आ
करो करे उरकूं, अधिको त्रास बतावेगा ॥ इण करणीसू परजव
माही, रूंढ मुढ अग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेंद्रिय जीव हणे
निज हाथें, मुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसें परजवमाही,
रोग जगधर आवेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी,
विच अतराय लगावेगा ॥ तिण कर्मे धन इछा राखे, पण लक्ष्मी
नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रजावें मैथुन सेव्यां, पथरीका
रोगज आवेगा ॥ काटेने विंधि माछला मारे, कठमाल रोग था

वेगा ॥ सु० ॥ २२ ॥ धूणी घाली जीव संतावे, हरस रोग ऊुख आवेगा ॥ ज्रुवारा वोवे वेलडी तोडे, वाल वहू पडजावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइने फूतुं बोले, सच्चाकूं गन्नरावेगा ॥ तिणसू रोग घणो ऊुख अंगमें, लोकके नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणुं कपट घणेरो, मित्रसू ठगपणुं लावेगा ॥ तिणसू सुंख सजोग मिलावे, विजोग आय पड जावेगा ॥सु०॥२५॥ फल तोडी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परन्नवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा वावडी सरवर जलका, वणावे पाल फोडावेगा ॥ इण करतव्यसें परन्नवमांइ, रोगपागको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, वहोत प्राणी मर पावेगा ॥ तिणसूं मरपणपणो घणो अंगमें, मार घणेरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जू मांकडादिक त्रेंड्रिय प्राणी, तावडे नाखीने धावेगा ॥ तिणसूं खाजा फूटणी अगमें, पीडा अधिकी थावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणेरो करे और पर, फूठा आल लगावेगा ॥ तिणसूं मिथ्या सरधा करकें, फूठी वात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तेल मधुआदिकका वासण, उघाडा राखे रखावेगा ॥ सूत्र नणावे करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मागे तव नट जावेगा ॥ तिण करणीसू परन्नवमांहे, इस्त्री नपुसग थावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ पृथिवीको करे खांमण पीसण, आरंन्न अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसू होवे कोढीयो, नव नव गोथा खावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माठलाको करे आहार घणेरो, ज्रुवा अधिक संतावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अतरायज आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृतघन ऊुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे वहुला, पण परने नहिं छुवावेगा ॥ सु० ॥ ३५ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गरन्न जला

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाडे, पट्जीव संतावेगा ॥ उतें मार ग जीलोतरी चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ए॥ संजमी शीलवत जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसुं परजव मांही, गूंगो बोबडो थावेगा ॥ सु०॥ १० ॥ करे वैदक उंषध मा त्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसुं परजवमांइ, खोजाप ण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन जेदन, हियसुं कर पोमावेगा ॥ इण करणीसु परजव प्राणी, बेरो पांगुलो थावे गा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनकी अव गुण गावेगा ॥इण करणीसु परजव मांइ, गुंगो बेहेरो हो जावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर खोदावेगा ॥ इण अनरथसु परजवमांही, गलत कोढ अग आवे गा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य उंषध जेखज केरो, अधिको सजोग मिलावेगा ॥ तिणसुं जस करतां पर वपर, अपजस कमावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लुणको विणज कमावेगा ॥ इण करणीसु परजवमांहे, आंख बावणी थावेगा ॥सु०॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जे परना, द्वेषथी मद कर देवेगा ॥ तिणकरणीसुं परजवमांहि, आंख मांजरी रहेवेगा ॥सु०॥१७॥ महोटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणी सु परजवमांही, बावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ मंम आ करो करे उंरकू, अधिको त्रास बतावेगा ॥ इण करणीसुं परजव माहो, रूंढ मुंढ अग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेंद्रिय जीव हणे निज हाथें, मुखसुं अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसें परजवमाही, रोग जगधर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी, विच्च अंतराय लगावेगा ॥ तिण कर्मे धन इछा राखे, पण लक्ष्मी नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रजावें मैथुन सेव्या, पथरीका रोगज आवेगा ॥ काटाने विधि माछला मारे, कठमाल रोग था

चेगा ॥ सु० ॥ २२ ॥ धूणी घाली जीव सतावे, हरस रोग दुख आवेगा ॥ जुवारा बोवे वेलडी तोडे, वाल वहू पडजावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइने फूटुं बोले, सज्जाकूं गन्नरावेगा ॥ तिणसू रोग घणो दुख अंगमें, लोकके नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणुं कपट घणेरो, मित्रसूं ठलपणुं लावेगा ॥ तिणसू सुख संजोग मिलावे, विजोग आय पड जावेगा ॥सु०॥२५॥ फल तोडी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परन्नवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा वावडी सरवर जलका, वणावे पाल फोडावेगा ॥ इण करतव्यसें परन्नवमांइ, रोगपागको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, बहोत प्राणी मर पावेगा ॥ तिणसूं मरपणपणो घणो अंगमें, मार घणेरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जू मांकडादिक त्रेंद्रिय प्राणी, तावडे नाखीने धावेगा ॥ तिणसू खाजा फूटणी अंगमें, पीडा अधिकी थावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणेरो करे ओर पर, कूडा आल लगावेगा ॥ तिणसूं मिथ्या सरधा करकें, कूडी वात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तेल मधुआदिकका वासण, उघाडा राखे रखावेगा ॥ सूत्र जणावे करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मागे तब नट जावेगा ॥ तिण करणीसू परन्नवमांहे, इस्त्री नपुसग थावेगा ॥ सु० ॥ ३२ ॥ पृथिवीको करे खांमण पीसण, आरन्न अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसू होवे कोढीयो, नव नव गोथा खावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माछलाको करे आहार घणेरो, छुवा अधिक संतावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अंतरायज आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृतघन दुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बहुला, पण परने नहिं सुवावेगा ॥ सु० ॥ ३५ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गरन्न जला

दया नहि पाले, दारिद्रपणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा सरध्या, प्रिय कुटुंव मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोडा कोडी सागर, मोहणी थिति क्षय जावेगा ॥ तव इण चेतनकूं अंतसमे, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोडी सागर उपर, मोहणी थिति वढ जावेगा ॥ तव उण प्राणीने धर्म ध्यानकी, किंचित रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रनावें कुशील सेवावे, मनमें अधिक हर्पावेगा ॥ तिणसूं परधन संपति देखी, निश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुम्न करावे तिण कर्मैं, उन्नस्थ थानकर्मे जावेगा ॥ शिलावट कर्म तिणकर्मैं, रक्तपित्त कीडा पड जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेडावे हल हकावे, क्षुधा घणी उपजावेगा ॥ लीलां जाडकी झालि कटाया, आंगुलि उंठी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रगरेज पणाका कर्म कियाथी, वोलतां जीन अटक जावेगा ॥ लुहार कर्म वली तीव्र रोपसू, मृगीको जोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोवर सडावे उकरडी वधावे, गणां थापे थपावेगा ॥ थुंक लाल चुवे मुखसैंती, मुख डुर्गंध नलकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो, पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसूं नदी समुदरमांही, अचक नाव डुंव जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानो जाडे तिण कर्मैं, वाल मरण मन चावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसूं नाकको, खेल सुंढामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शल्यां धान्य सेकावे निजावे, लिपणे रोगी थावेगा ॥ फूठा सोगन खाया पृथिवीमें, उंठो आवखे जावेगा ॥ सु० ॥६०॥ हांसीमें फूठो वचन वोले, फूठोइज आल लगावेगा ॥ उंठे आवखे प्राणीमांही, उपजी वहु डुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणी, कृत नपुंसक थावेगा ॥ कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्यानव पावेगा ॥ सु० ॥६२॥ नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूंटे चूंटावेगा ॥ जोवन

कदाइ होके, निर्वीज पुरष सो थावेगा ॥ दलालखोरका कर्म किया सूं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ७७ ॥ वनस्पतिको सरखो करावे, आप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्रीपरणें तो पण, सकल वंजा रे जावेगा ॥ सु० ॥ ७८ ॥ बकरा भेंसादिक दोपद मारे, गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति छेदन किया, जन्म मरण दोइ सार्थे आवेगा ॥ सु० ॥ ७९ ॥ उगती कूंपल तोडे तोडावे, मुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणार्मे, मात पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८० ॥ दान तणी अतराय जे देवे, मरमकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाभणकी घणी इछा, अंतराय रहे जावेगा ॥ सु० ॥८१॥ सोनारकी धमण धमावे, तिणसू रोग जलोदर थावेगा ॥ गर्भ पाडिने छानो राखे, गेव धसकें मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८२ ॥ अनतकाय कंद मूलकों छेदी, जिणका चूरण करावेगा ॥ धन सपत पाइने ते नर, चोरगीयो हुइ जावेगा ॥ सु० ॥ ८३ ॥ उलट परिणामें दान देईने, फिर पाछें पस्तावेगा ॥ धनसपत्तको लाभ घणेरो, भोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ८४ ॥ हिंसा करे फूठ मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ भवो आठ लखो रहे दरिद्री, फूर फूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ८५ ॥ देव गुरु धर्मशास्त्र उथापे, निंदा कर दरखावेगा ॥ सो किल्वीषी हूइ होयगा चक्कर, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ८६ ॥ ज्ञानको वेरी निंदक द्वेषी, आशातना अतराय लगावेगा ॥ तिणसू ज्ञानावरणी बंधना, ज्ञान कबू नहीं आवेगा ॥ सु० ॥ ८७ ॥ दर्शनवतको वैरी निंदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनसेंती, नव प्रकृति उपजावेगा ॥सु०॥ ८८ ॥ दान शियल तप भावक्षमा गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसू इणभव परभवमाइ, शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ८९ ॥ धाडा पाडे करे परनिंदा, परप्राणी सतावेगा ॥ तिणसू इणभव परभव मांही, अशाता वे

कढाइ छेके, निर्बीज पुरुष सो थावेगा ॥ दलालखोरका कर्म किया सूं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ वनस्पतिको सरखो करावे, श्राप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्रीपरणें तो पण, सकल वंझा रे जावेगा ॥ सु० ॥ ६८ ॥ बकरा भेंसादिक दोपद मारे, गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति छेदन किया, जन्म मरण दोइ सार्थे श्रावेगा ॥ सु० ॥ ६९ ॥ उगती कूंपल तोडे तोडावे, मुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणामें, मात पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ७० ॥ दान तणी अंतराय जे देवे, मरमकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाभणकी घणी इछा, अंतराय रहे जावेगा ॥ सु० ॥७१॥ सोनारकी धमण धमावे, तिणसूं रोग जलोदर थावेगा ॥ गर्भ पाडिने छानो राखे, गेब धसकें मरजावेगा ॥ सु० ॥ ७२ ॥ अनतकाय कंद मूलकों छेदी, जिणका चूरण करावेगा ॥ धन संपत पाइने ते नर,चोरंगीयो हुइ जावेगा ॥ सु० ॥ ७३ ॥ उलट परिणामें दान देईने, फिर पाछें पस्तावेगा ॥ धनसपत्तको लाभ घणेरो, भोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ७४ ॥ हिंसा करे कूड मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ जवो आयखो रहे दरिद्री, फूर फूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ७५ ॥ देव गुरु धर्मशास्त्र उथापे, निंदा कर दुरखावेगा ॥ सो किल्वीषी हूइ होयगा चाकर, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ७६ ॥ ज्ञानको वेरी निंदक द्वेषी,आशातना अंतराय लगावेगा ॥ तिणसूं ज्ञानावरणी बंधना, ज्ञान कबू नहीं आवेगा ॥ सु० ॥ ७७ ॥ दर्शनवतको वेरी निंदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनसेंती, नव प्रकृति उपजावेगा ॥सु०॥ ७८ ॥ दान शियल तप भावक्षमा गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसू इणभव परभवमांइ, शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ७९ ॥ धाडा पाडे करे परनिंदा, परप्राणी सतावेगा ॥ तिणसू इणभव परभव मांही, अशाता वे

जाणक थावेगा ॥सु०॥ १०३ ॥ मन मचन काया त्रिजोग रोककें, शैलेशी परिणाम चढावेगा ॥ अजर अमर अविकार निरजण, सिद्की पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जेसा जेसा कर्म करेगा, तेसा तेसा पावेगा ॥ मात पिता धन कुटुंव कवीला, पात को इ न पडावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मी नवि प्राणी जिन के, जिनवाणी हिए सुहावेगा ॥ भारीकर्मी अनत ससारी, हांसीमें वात उमावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे कोइ, पाप कर्म घटावेगा ॥ तिलोकरिख कहे सो भवि प्राणी, अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ उगणीशें गुण चालीशवर्षे, माघशुकल त्रयोदशी ॥ देश दक्षिण पेंठ मनचर, सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो वतीस वोले नीरणो, करी तिलोक रिख कहे ॥ धन जिनागम आरधता लहे, शिवसिरी ह्रिँ श्री लहे॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सवैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पाई, करज गाम जावे मती, कूडगाम वसियासुं, लले गाम जावेगा ॥ रत्नापुर वासी तुं तो, हियडामें सोच कर, सो नई विचारेगा तो, वेलापुर पावेगा ॥ काकिणीके काज तु तो, फिरत लाखण गाम, पुना विना कोरे गाम, ठडा होय जावेगा ॥ कहत तिलोक तुं तो, सदरको पंथ धार, वाकी कीजो वाट, लिया धुले गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम वोढे मती, लाम गाम मर राख, जाम गाम लिया विना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढचहाय करो, ठोड दे वावल वाडो, नाण गाम सोध कर, निरालो सिधावेगा ॥ मनवाडा कर ले तो, कोल गाम वास मिले, घाट सरम मिल्यो तोय, जाते पछितावेगा ॥ कहेत है तिलोकरिख, साइ खेडो ध्यान कर, कुदेवाडी ठोड कर रामपुरी पावेगा ॥ २ ॥ इति ॥

तरसनाको, विरथा अवर टालो रे ॥न०॥च०॥सं०॥१२॥ दिवस तथा निशिपेरकी सखा, त्यागो कुशल नर नारी ॥ उरदिन त्याग करो मन नाखे, विरथा पाप टालो रे॥न०॥च०॥स०॥१३॥ उची नीची तिरछीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव त्याग कर लीजो, पालो श्रीजिन आणो रे ॥न०॥च०॥स०॥ १४॥ हाथ पाव मुख धोवणसो, दे सिनान कहावे ॥ सवसनान सरव अंगधोवण, त्याग करी सुख होइ रे ॥न०॥च०॥सं०॥ १५ ॥ जो जन पाणीका वजनकी सख्या, वनमानसुं त्याग करियें॥ मनशुद्ध राखो निर्मल पालो, अविरतिशु अति मरीयें रे ॥न०॥च०॥सं० ॥ १६ ॥ इणविध नीत सांज सवारें, आदि करो नित्य त्यागो ॥ नाम नेम प्रमाद गेडीने, मोहनिशायकी जागो रे ॥न०॥च०॥सं० ॥ १७ ॥ उगणीसें गुणचालीश फागण, शुकल परख ठठ जाणो ॥ तिलोकरिखजी कहे जिन आण आराधो, लेशोपद निर्वाणो रे ॥ न० ॥ च० ॥ स० ॥ १८ ॥ ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लौकिक पर्व तथा अध्यात्मस्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पजूसणपर्वस्वाध्याय प्रारंन ॥

॥ सिद्ध चक्रने पुजो ॥ए देशी॥ पर्वपजूसण कीजो रे नविका, नर नव सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पजूसण सम परव नहिं दूजो, जैन धरम यत्न साचो ॥ इणने जो कोई साधे नावशु, मिटे कषायकी आंचो रे॥ न० ॥प०॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण, आठ मदके सव गेडो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टसिद्धि, अष्ट गुणातम जोडो रे॥ न० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निर

थणी ॥ क्लेश केकसी राणी है उसकी, अकलदार समजो ज हारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जद, दश मिथ्या दश आनन हे॥ विस आश्रवकी भुजा दे उस्के, कपटविद्या की खानन हे ॥ सम्यक्तमोहनी विजीपण दूजा, नदन सो कुछ दे न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुनकर्ण ए,लचपिच वातमें अधिकाई ॥ मा हामोहके ए तिहु नदन, समजो सुगुणा नर नारी ॥धर्म०॥ २ ॥ परपच नाम मदोदरी नामें,मिथ्यामोह रावन राणी॥ विपय इङजित अर्ह मेघवाहन, मिथ्या रावणकें सुखदाणी ॥ कुमति नाम, चंड्न खा वहेन हे, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूपण दूपण तिन शल्य त्रिशिरा, ए दोनुंहि उस्के जाई ॥ सज्वल तिक चड्नखा सबुक,कछु एक आयो हुसियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहस खड्गकू, साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका हुकम न माना, रह्या वो उपशम रणमाइ ॥ उसी वखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण द शरथ राया ॥ सवर जावना राणी कौशल्या, धर्मराम पूतर जाया ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लछमनकी महतारी ॥ धर्म०॥४॥ सुमति सीतासें धर्मरामका, वहोत गठसें वियाव जया ॥ एक दिवस वो पिता हुकुमसें, तिनुही सजम वनमें गया ॥ सत लछमन वो खड्ग पकड कर,सजल सबुकका शिर घाया ॥ कुम ति चड्नखा कही पतिसु, खर दूपण त्रिशिरा धाया ॥ सतलछ मन तब चढे सामने, उन तीनुंकु लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ मिथ्यामोह रावणके पास वो,सुमति सीता की वडाइ ॥ करी वो त तव लालच वश वहा, चल आया लका सांई ॥ छल विद्याका नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि हे चोरी ॥ राम लछमन जव जाना जेद ए, सोचे अवलानी हे दोरी॥ जूठ साहीसक्कड्टि हे वसकी, सतलछमणनें करी खुवारी ॥धर्म० ॥६॥ सतोपसुग्रीव जव जया पक्षपर,बहोत जूप वसकी सगें ॥ जाम जावुवाहन नीज

र ॥ न० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तिन गुपति, ए तेरस सुखकार ॥ न० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खति मुत्ति अज्जव मद्दव, त्रीजे अंगें कह्यां डुवार ॥ न० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चव द्वार खुल्ला शिवमंदिर, शिवलछमी हे तैयार ॥ न० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासु लछमी जावें, शंका नहिं हे लगार ॥ न० ॥ श० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर हे, खरचता आवे नहिं पार ॥ न० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ए ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ धन धन आज दिवस नलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ एसी रूपचवदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥ इंद्रिय मन मुंदन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ए०॥१॥ पापको मेल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज धोती सुव्रत वाधो, संवरपाग शिर गाजे रे ॥ए०॥ २ ॥ दया डुपट्टो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला चंदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी, चित्तमें राखो उमेदो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंबोल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक नमेकी वाती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ उगणीसें अडतिश रूप चवदश दिन, एह सज्झाय बणाई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो चाहो, तो इम करो भाई वाई रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेने पायो रे ॥ए देशी॥ दीपमाला दीपमाला परव एसो करीयें रे, सिद्ध लछमी वरीयें ॥ दीप० ॥ ए टेक॥ इध्यातम घर निर्मल करियें, कषायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव खाम पूरावो, त्याग लींपण लींपावो, गुण रंग लगावो ॥ दी०॥ १ ॥ पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमतिगा

र ॥ न० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तिन गुपति, ए तेरस सुखकार ॥ न० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खति मुत्ति अज्जव म द्दव, त्रीजे अगें कह्यां डुवार ॥ न० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ द्वार खुला शिवमदिर, शिवलक्ष्मी हे तैयार ॥ न० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासुं लक्ष्मी जावे, शंका नहिं हे लगार ॥ न० ॥ श० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर हे, खरचता आवे नहिं पार ॥ न० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ए ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारम्भ ॥

॥ धन धन आज दिवस नलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ एसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥ इन्द्रिय मन मुन्डन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ए०॥१॥ पापको मेल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज धोती सुव्रत वाघो, संवरपाग शिर गाजे रे ॥ए०॥ २ ॥ दया डुप ट्टो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला नेदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी, चित्तमें राखो उमेदो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंबो ल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक नमेकी वा ती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ उगणीसें अडतिश रूप चउदश दिन, एह सज्झाय बणाई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो चाहो, तो इम करो नाई बाई रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारम्भ ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेने पायो रे ॥ए देशी॥ दीपमाला दीपमाला परव एसो करीयें रे, सिद्ध लक्ष्मी वरीयें ॥ दीप० ॥ ए टेक॥ इव्यातम घर निर्मल करियें, कषायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव खाम्न पूरावो, त्याग लींपण लींपावो, गुण रग लगावो ॥ दी०॥ १ ॥ पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमतिगा

रे ॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता,सो नित नित आदरजो रे ॥मं०॥६॥

॥ अथ षष्ठ अनुभव सक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ भ्यालदेकी देशीमें ॥ पर्व सक्रांति मनावियें जी२ कांइ, अनुभव दृष्टि लगाय ॥ जिम सघति लहे शाश्वती जी२ कांइ, कर्मी रहे नहि काय ॥ प० ॥ १॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी२ कांइ, कुमति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरें घणी जी२ कांइ,मिथ्या हेमालो गलत ॥ प० ॥ २॥ तृष्णाजलहानी होवे जी२ कांइ, संतोष भूमि देखाय ॥ धर्मदिवस महोटो हुवे जी२ कांइ,भविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी२ काइ,समता सकर मिलाय ॥ प्रेमकी पापडी वणावजो जी२ कांई, धीरजकी थाली वनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच वणावजोजी२ कांई, दयारूपी दूध वनाय ॥ मेवो मिलावो शुभ मन तणो जी२ कांइ, हिरदे हांमीके माय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंडुल शुद्ध करो जी२ कांइ, इंद्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचडी इण विध राधजो जी२ काइ, धर्मरुचि घृत माल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अभय नित दीजियें जी२ कांइ,पालो शीयल अखंड ॥ बारेई भावना भावजो जी२ काइ, छोडो मिथ्या अफंड ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसका जी२ कांइ, पौषशुद्धपचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पुनासहेरमें जी२ काइ, धर्मसक्रांति वखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वसतपचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारम्भ ॥

॥ देशी वसतमें छे ॥ सदा वसत पंचमी एसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके माही, भावनाचित्र अदर रे ॥ केवल भूप सुमति पट्टरागणी, धर्म नामें मत्रीसर रे ॥स०॥ १ ॥ चोकस चपडासी दान हलकारो,समकित कर तलवार रे ॥ साधुसाधवी श्रावक श्राविका,तीर्थसभा रही भर रे ॥स०॥२॥ मन मादल

शुद्ध्यानकी नेरी,सुगुण वाजां विचित्तर रे ॥ पंच सज्झाय सूत्र बह रागें, धर्मकथासुं उच्चर रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सवर अंबके ज्ञान मंब री ले, सत्यवचन पत्तर रे ॥ बंधनमाल कर त्याग मोरमें, बांध ले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील सिरपाव शरमको नूषण, सुजस गुलाल प्रवर रे ॥ हिरदेको होद सतोषको पाणी, शुन लेश्या रंग धर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधर्मी अग रग छिटकावो, दीजें अति आदर रे ॥ इण नवें शोजा परजव संपत, हिंसापर्व परिहर रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उगणीसें अडतिस बसंत पंचमी दिन, अह मद नाम नगर रे ॥ तिलोकरिख कहे एसी करे जो पंचमी, सो वसतपंचमी गत नर रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम अध्यात्म स्वाध्यायफाग प्रारंन. ॥

॥ देशी फागकी छे ॥ ऐसो खेलजो हाेरे ॥नविका॥ऐ०॥ फाग सदा सुख पावो ॥ ऐसो खेलजो० ॥ ए टेक ॥ धर्म बाग फूली सम कित सरव्हा, बिरति कोयलनाद करे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ कुमति होलि काने दीजो मगलायने, कर्मकी धूल उमावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मेल पखालो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो थें पहेरो घणा प्रेमसुं, जय णाको जामो थें पहेरो ॥ न० ॥ऐ०॥ ४ ॥ परमारथ पाघडी अ पोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच थें बाधो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ क्षमारुप छोगो मेली टाटो बांधो सांचको, तप रूपी तुररो फूका वो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुमल चोकसीका चोकडा, नक्तिकी नमरकडी पहेरो ॥न०॥ऐ०॥७॥ दशविध धर्मको हार हिये पहेरजो, दान मान कडा हाथ पहेरो ॥न०॥ऐ०॥८॥ वेयावच्च विंटी दश आगुलीमें पहेर लो,किरियाको कदोरो थें पहेरो॥ न० ॥ ऐ०॥ ९ ॥ नावकी नागकु थें घुंट घुंट पीवजो, सतोषकी सक्कर मिला

वो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण, हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ सज्झायको ढफ लो ने झांझ लो नजनकी, प्रनुगुण ख्याल खूब गावो ॥न०॥ ऐ० ॥ १२ ॥ लोनरूपें लो जी महानिर्लज जगमें,जिणके थें खु ब निरसावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पानी वेराग रंग घोलजो, उपदेशकी पिचरकी नर मारो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ शु क्ललेश्याकी झोली गुलाल शुनध्यानकी, नर नर मुग उमावो ॥न० ऐ० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें वाजां रे वजावजो,नेमका निसा ण थें फररावो ॥ न०॥ ऐ०॥ १६ ॥ सवरकी सुखडीने गोठ करो ज्ञानकी,गेर काढो चार तीरथ ॥ न० ॥ ऐ०॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको थें न्हावण करजो, दयाकी डुकान माफ वेठो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ॥ १८ ॥ एसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें व सो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १९ ॥ नारी करमा जाके दाय नहिं आवसी, हलुकरमी सो हरखावे ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २० ॥ जो नहि मानसो तो आगें पसतावसो, सतगुरु ज्ञान वतायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥२१॥ उंगणीसें सेंतीस फागणविदमें, वीज वुधवार दिन आयो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे मिरज गाममें, धर्मको फाग स रसायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम शीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ नावपूजा नित्य कीजीयें ॥ ए देशी ॥ पूजो जिनवाणी माता शीतला, शीतल चित्त करो नावें जी ॥ ससारदावानल उपशमे, नविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराई चूलो थापजो, कर्म इंधण करो नावो जी ॥ तप अग्नि सधूकजो, कायाकडाई चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो मेंदो जी ॥ क्षमारूप खाजा करो, सुगुण गुंजा उमेदो जी ॥ पू०

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी तीजकीमें छे ॥ शिवरमणीका साहेवा, थे तो देखोने एह गिणगोर ॥ मुगतिका साहेवा थें तो, राचो ने एह गिणगोर ॥ ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी, क्षमामिटी अनुभव नीर ॥ सत्यको बीज थें वोवजो कांइ, सुख अकूरा वृद्धि थिर ॥ शि० ॥ १ ॥ केवल ज्ञान सरोवर तणो जी, जल हिरदेकलशमाय ॥ श्रद्धानारी सोहागणी कांइ, तिण सिर दीजो चढाय ॥ शि० ॥ २ ॥ भावना नार सोहासिणी कांई, भूपण सुअध्यवसाय ॥ गीतगुणी गुण गावणां कांइ, सुजसका वाजां वजाय ॥ शि० ॥ ३ ॥ इम काढो कलशा भणी, नित नित अधिक आणंद ॥ धर्मतत्त्व तिजतिथि दिने काइ, तिज शणगारो गुणिवृंद ॥शि०॥४॥ सुमति विरति गोर वणाय जो कांइ, द्वादश अग शरीर ॥ उपांग बारेइ दीपता कांइ, शीलको उढावो थें चीर ॥शि०॥५॥ लज्जाको लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कंचुकी पहेराय ॥ मद्दमद मारद मापा तणो जी कांइ, राखडी रुचिकी वणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥ समझकी बिंदी शिरें कही कांइ, अयोगका उगन्यां कान ॥ पुण्यकी पानडी झगमगे कांइ, तपस्याको तिलक वखाण ॥शि०॥७॥ विनयको बोर विचारजो काइ, तत्त्वकी टोटी ने झाल ॥ झुमणा पहेरावो विवेक कांइ, झेलो जयणाको रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चोंप जडावो चोखा वचनकी काइ, मिष्ट वचन मसी जाण ॥ निरवद्य सत्य वचन तणां कांई, मुखतंबोल वखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काजल आंजवो काई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गलसीरी कठमें काइ, दशविध धर्मको हार ॥ शि० ॥ १० ॥ तुसी संतोपकी जाणजो काइ, तेळ्यो परतीतको जाण ॥ तणमन्यो देव गुरु धर्मको कांइ, चेतना चपकली ठाण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चद्दहार सौम्यतापणो

कांई, बाजूबंध विवेक ॥ जुवा फूंदा तरंगका कांइ, जवल्यो करो श तटेक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुन्न करणकी कांइ, सुकला ककण सार ॥ चूडो बत्तिस जोग संग्रहको जी कांइ, मणगण सुम न विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वींटी पहेरावजो कांइ, अनु मोदना मेंदी लाल ॥ सुनय सांकला पायमें कांइ, साहस कडां सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोडा सझायका वाजणा कांइ, नीति नेउर झणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका कांइ, विद्याका विंछिया सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईर्याका अणवट सासता कांइ, प्रीतिकी पोलरी जाण ॥ भग तरगकी सांकली काइ, घुघरी प्रश्न बखान ॥ शि० ॥ १६॥ चेतनजी ईश्वर दीपता जी कांइ,चार तीरथ परि वार ॥ धर्मबागमाही सचरो कांइ, स्तवनगीत उच्चार ॥ शि० ॥ ॥ १७ ॥ विज्ञानका बाजोठ पर थापिने काइ, ज्ञानादिक चार प्रकार ॥ फेरा फेरावो तेहशु कांइ, होमजो कर्मविकार ॥ शि० ॥ ॥१८॥ ध्यानकी धूप लगावजो कांइ,प्रीतिका फूल चढाय ॥ सुकृत नैवेद्य चढावजो कांइ, पावो शिवमदिरमाय ॥ शि० ॥ १९ ॥ ऐसी तीज मनावसी काइ, जे नविषण नर नार ॥ ते सुख पावे सासता काइ, शका नहिं छे लगार ॥शि०॥२०॥ पाप तहेवार मना वता काइ, कर्मको बधन थाय ॥ रूले चउगतिमें जीवडा कांइ विप ए महा दु खदाय ॥ शि०॥ २१ ॥ अनुनव ज्ञान लगावजो काइ,सुगणा मनावो तहेवार॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो काइ, बर्त्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश अखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ या रस सेलडी, आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ यें कर लो स्याणा, धर्म तहेवार आखातीजको ॥ यें० ॥ ए टेक ॥ आखातीज तहेवार नलेरो, कर लो धर्मविचार ॥ इण

सरखो नहि उंर जगतमें,बारा मासको सार रे ॥ थे० ॥ १ ॥ दान पुण्य सुकृतकी करणी, करजो मनशुद्ध चहाय ॥ सदा तृप्त रहो जूख न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ थें०॥ २॥ अक्षयगुणका आखा लीजें, करवल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सोकांइ, मोहणी तुप निवार हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ शुद्धजावको सुपडो करिने, ऊटको पापरज दूर ॥ क्षमाचुलो सतोपकी हांमी, कर्म इधन जरपूर हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ तपकी अगनि सलगावजो जीकाइ, विनयको जल सुविचार ॥ उंरो आखा खीच वणावो, समता सक्कररस सार हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ करुणा कडठी थिरमन थाली, जीमो सुगुणा लोक ॥ सदा तृपत रहो सुख अनता, मिलसी सारो थोक हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र निजगुण, अखे आशातनमांय ॥ इनमें शका रंच न आणो, शोधो श्रीजिनवाय हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ ठगणीसें अडतिस आखातिज दिन, मिरी गामके मांय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, एसो पर्व सुखदाय हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश राखीपर्व अध्यात्म स्वध्याय प्रारंज ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ राखी तहेवार करो धर्म राखी, मिथ्याडुर्मति द्यो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत रूपी वधव महासुखकारी, सुबुद्धि नाम वेन गुणधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जावकी मोर रक्षा हीर जाणो,मन गुप्तिको ल्यो मोतिको दाणो ॥ रा० ॥ ३ ॥ जावको जोमल लेश्या शुजरगी, धर्मरिद्धिकी राखी शुज चगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गाठ दे कर माही बाधो, समताकी सेवा जली विध राधो ॥ रा०॥ ५॥ करुणा कसार करो जलि जातें, समताको श्रीफल देवणो हाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्यानको नाणो सो रोकडो दीजें, किरियाकी कचूकीको खम दीजें ॥

माहा कहे महा शत्रु कर्म हे, इनमें फरक न कोय ॥ धर्म राजा हे निपट जोरावर, सरणासुं सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फाग ण कहे यें खेलजो फागण, कुमति होलिका वाल ॥ कर्म धूल उमाय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥या०॥ १२ ॥ वारे मास कहे वारे अव्रत, छोडो सुगुणा लोक ॥ वारे भेदें तप वारे भावना, धारयासु शिवयोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उंगणीसें अडति श, पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकरिख कहे परउपगारें, पेठ श्रां वोरी मझार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ वारे मास इम सुन कर सरधे,भ विजन मन उल्लास ॥ कर्मभर्म सव दूर निवारी, पासी शिवपुर वास रे ॥या०॥ १५ ॥ इति ॥१३॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यात्म स्वाध्याय प्रारम्भ ॥

॥ देशी उपर प्रमाणें छे ॥ पडवा कहे एकनिश्चे राखो,धर्मयकी सुख होय ॥ छै आवलिका फरस्या सुगति, अर्ध पुजलके माय हो ॥ १ ॥ इम पंदरा तिथिको, अनुभव थें विचारो सूतर न्यायसु ॥ ध्रु० ॥ दूज कहे दो विध हे वधन,राग द्वेष दुखकार ॥ तप जप क रिने काटो इणने, पामो भवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज कहे तिन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शल्य तिन दम्भ त जीने, अनत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चोथ कहे चौभे व सुगतका, आराधो भविलोक ॥ चार कषायकी लाय वुझाई, ल हो अविचल शिवयोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पचमी कहे पचमीगति इछा, तो पच महाव्रत पाल ॥ पंच समिति शुद्ध भाव आराधो, पंच प्रमाद यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ छठ कहे छकाय वचावे, छ व्रत लीजो धार ॥ वाह्य अभ्यिंतर छै छै तप कर, उतरो भवजल पार रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित साति वार थें, सात विसन दो छो ड ॥ सात भय सव दूर निवारो, पामो अविचल ठोर रे ॥ इ०

चइवार कहे चइ ज्यों शीतल,राखो सम परिणाम ॥ चार कषाय को ताप निवारो, लहेशो शिवसुखधाम रे ॥ छु० ॥ २ ॥ मंगल वार कहे मंगल चारू, उत्तम सरणां चार ॥ धर्मको मंगल हिरदे धारो, जिम होवे जवपार रे ॥ छु० ॥ ३ ॥ बुधवार कहे बुद्धि पाय कें, खरचो धर्म मझार ॥ पाप घटावो पुण्य वधावो, बुद्धिको एहिज सार रे ॥ छु० ॥ ४ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुविन छुगति मुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु पाय रे ॥ छु० ॥ ५ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसूं जंग रे ॥ छु० ॥६॥ स्थावर कहे थिर मन तन करिने, थापो समकित नीव ॥ पाप पराल ढाल दे ठिनमें, लहिसो सुख अतीव रे ॥ छु० ॥ ७ ॥ सातु वार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे जगतमें,ए जिन आगम मर्म रे ॥ छु० ॥ ८ ॥ उंगणिसें अढतिस चेतकी पूनम, पेठ अवोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसायें, पासी नविजन दाय रे छु० ॥ ए ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मवाग स्वाध्याय प्रारंज ॥

॥ देशी केरवामें ठे ॥ बाग वगीचा देखण किम जटके, कर्मवंधण छु खकार ॥ नजां रे ज्ञानी ॥क०॥१॥ धर्मका वाग वनाय लेनां, तेरी कायामें गुल्लजार ॥ ज० ॥ ते० ॥ ध० ॥२॥ मनका रे माली कर ले स्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ ज० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञानको पाणी निर्मलशीतल, धीरजकी धरती सुधार ॥ ज० ॥ ॥ धी० ॥ ध० ॥ ४ ॥ कपट लोजकी खाम बूर दे, पावडी संतोष समार ॥ ज० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ५ ॥ रूंख उखा दो क्रोध मानका, क्षमा कुदाली करो त्यार ॥ज०॥क्ष०॥ ध० ॥६॥ किरियाकी क्यारी खात क्रोधका, समजकी धोरण धार ॥ ज० ॥ स० ॥ ध० ॥ ७ ॥ नि

॥ १ ॥ वाण वणावजो ज्ञानको जी कांइ, सतोष सेज रसाल ज्ञानी ॥ सजम झुलाई तुम पाथरो कांइ, विनय उसीसो लाल ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समकित गालमछुरीयां जी कांइ, विंजणो व्यो व्रत वारें ज्ञानी ॥ क्षमाको खाट पलेवडो कांइ,लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धरम सीरख भली उढजो जी कांइ, पडपाया शुभध्यान ज्ञानी ॥ दश पच्चखाणकी दावणी जी कांइ, सरधानां वंधणी जाण ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चडवो जी कांइ, किरिया कसीदोकढावो ज्ञानी ॥ मच्छरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मच्छर भगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेलमें जी कांइ, ऐसी सेज बिछावो ज्ञानी ॥ विरति किमाड लगावजो जी कांइ, जिनशिक्षा सांकल लगावो ज्ञानी ॥ ऐ०॥६॥ समता निदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार भगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिस सपदा जी कांइ, सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ ऐ०॥७॥ एसी सुखसेजमें पोढिने जी कांइ, पाया छे सुख अनत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही, जी कांइ, सो होसी भगवत ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ श्री अध्यात्मभवानीस्वाध्याय प्रारंभ. ॥

॥ देशी भेरूजीका गीतरी ॥ या दया भवानी माता रे, देवे श्री सघने शाता रे ॥ या समता देवल छाजे रे, या विनय सिंहासण राजे ॥ १ ॥ यो सीयलको लेंगो जाणो रे, लज्जाको चीर वखाणो ॥ या क्रियाकचुकी सोहे रे, शिर तत्त्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ करुणाका कुंमल झलके रे, संवर मुख अधिको भलके ॥ तिन गुप्ति त्रिशूल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सर्व नमावें ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजिनपासें रे, स्थापना निजहिरदे भासे रे ॥ जात्री चच तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढावे रे,

क्विंध वेग सब माह्या ॥ गंगोदक कचनकी झारी, वेग जिमण सव हुसियारी ॥ १२ ॥ जव लग भोजन होवे त्यारी, मेवा परो से सुंदर नारी ॥ पेद्दली किसमिस द्दास्व मनुका, केला कतली देश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंम खजूर गुटली करी न्यारी, काजू कली वदाम सुप्यारी ॥ चिरोजी अजिर पिस्तां नलेरां, अंगुर दाडिम खो परां गद्देरां ॥ १४ ॥ चटका करकें सकर मिलाइ, भर भर मूग मे ले वमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पकान्नकी मनवारा चाली ॥ १५ ॥ लाड्डु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चौगणीका नीका ॥ चुटिया चुरमा लाड्डु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥ वेसण उर घाटीका जाणो, मूंग दालका सरस वखाणो ॥ स क्कर चासणी वडद दालका, ज्वार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥ कंसारकिटीयां जुवार धाणीका, वतीसा संधाणा साणीका ॥ चा वल उर उंलाका भारी, राजगरा तिल्लिका जद्दारी ॥ १८ ॥ सुठ गुंदका और पिस्ताई, वदाम चिरोजी सकर मिलाई ॥ इत्यादिक वावन्न प्रकारी, कव लग नाम कहुं में न्यारी ॥ १९ ॥ दूधपेंमा कुं दाका ताजी, घी सुकोमल खांम ने खाजी ॥ चरपरा गांठ्या सक्कर पारा, कुधरा वध्या मांही कुहारा ॥ २० ॥ वरफी केसरिया पिस्ता ई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, ठोडे नहि कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकंदमें मेवा झाजा, होय खुसी देखी सव राजा ॥ असल चिरोजी सेव सिगोडां, ठावा भर भर मेली गोडा ॥ २२ ॥ सूत्रफेणी और चिरोजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकवरी और अदरकभाणा, मुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसां खांमका फीका, मुरकी पतासा पेडा नीका ॥ दहिंथरां और सूठ ने खुमी, घी सक्कर मेवाका चुमी ॥ ॥ २४ ॥ दरावो दोगां पूरी कचोरी, मालपुवा और सेंवडी सोरी ॥ सिरो सावुणी मिठी सुवाली, तिलकी पापडी सक्कर घाली ॥

ढीली ॥३८ ॥ घृतगायको नवो तपाई, विलोडी मुख आडि नमाई ॥ ज्यो ज्यो करतां मुंढो थाके, कुण जोरावर जो फिर ढाके॥३९॥ सक्कर बूरो गोल ने मिशरी, काकव मेलन रंचन विसरी ॥ सेव खीच और खीर वणाई, खिचडो घुघरी राव सवाई ॥ ४० ॥ खीच्यो पापड मुंग उडदका, चणा वटला रुयर विधविधका ॥ सेक्या तलिया पतला मोटा, पाली पीव बाजरी मोठा ॥ ४१ ॥ मकीमा लक गुनी जव जाणी, रालोवरटी कुलथ वखाणी ॥ जालरो तिवडो सामो जाणो, कोदरा वरटी रोट वखाणो ॥४२॥ कर चतुराई मख्या मसाला, धान्य चोविसकी जिनस रसाला ॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ वह्रोत नेदका॥४३॥मिरची पकोडी चरमरी नावे, तलण वडी वडा अरवि आवे ॥ दाल मुंग और मठ मसुरकी, उडद चणा वटला विध तुयरकी ॥४४॥ पतली काठी सीसवांतलीया, मसाला नानाविध नलिया ॥ कढी गठ अमचूरकी जाणो, आवलां नाजी की पण मानो ॥ ४५ ॥ वेलां मवका रेलमाचूरकी, अमटी अमरत्यो नाजी झुरकी ॥ वडी झोलकी उंर कोरडी, निपजायो अति चतुर गोरडी ॥ ४६ ॥ डाख वडी नाजीको रायतो, अमलपाणी वघार घायतो ॥ कंनी गठ वघारी नारी, लुण मिरच राई ठमकारी ॥४७॥ दह्रिको सीखरण मेथी वाणा, सक्कर सामल अमल घाणा ॥ खारावडी गठवडी नलेरी, पेंमा वडी और चिणी घह्रुतेरी ॥ ४८ ॥ पापडवडी खीचावडी जाणो, पतलापतो डकी अधिक रसाणो ॥ पातवडी पतोड कुढलाई, रसो गवो दक्षिणमांही ॥ ४९ ॥ अंमृत्यो रसको ठमकाख्यो, पुरवो अंबाको सूधाख्यो ॥ करपटा नीला चणा करेलां, टींमोरी और काचां केलां ॥ ५० ॥ निला वेर केर खढवूजा, फूट काकडी फोग तरवूजा ॥ कलिंगडा और गिलकी तरोई, वगा काचरी मुह्रिमातोई ॥ ५१ ॥ भिमा झिमा कोवकी कोडा, खेलराटिढसी करमदा उंडा ॥ कोलां

ना करडा थावे ॥ ६५ ॥ मेले ग्रुनसुंगंधिक पाणी, हाथ धोया स व हट अधिकाणी ॥ हलवे हलवे पुरे पुपु, गोडे हाथ देईने करे ॥ ६६ ॥ पेट नराणां तंग मतंगा, सहु अघाणा ठोड वमगा ॥ सघला हलवे हलवे चाले, वतावला फिर कोइ न हाले ॥ ६७ ॥ बोले धीरें धीरें चाजो, नोजण जिम तिम वैठो थालो॥ एसी रीतें चल कर आया, जाजम गादी तकिया बिठाया ॥ ६८ ॥ तिन अहोरको कियो वखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जाय पत्री और लविंग सुपारी, दालचिणी एलायची प्यारी ॥ ६९ ॥ काली मिरच सुंठ सवादी, कवावचणी पीपर हरे व्याधि ॥ कपूर सुवासिक कठो चूनो, नागरवेलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ बिडो वालकें देवे आई, लेवे सघला चित्त हरखाई ॥ सिंमीपिंपर सरसो अजमो, चूरणसवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूलनकी माला, देवे पचरंगी जरी डुसाला ॥ केइने दूपट्टावर जोडी, केइने चीरा पाग पिठोडी ॥ ७२ ॥ पंच पोशाक पेरावे चगी, जामो अंगरखी वर पचरगी ॥ दीवि मनिल वालाबंदी, देखत तन मन होय आणंदी ॥ ७३ ॥ केइके कठी हारज दीना, केइने कुंमल अधिक नवीना ॥ बाजुबध अगुठी चगी, सिर सिरपेच दीवी मनरंगी ॥७४॥ हाथी घोडा रथ पालखी, केइने दीना गाम नालकी ॥ जथाजोग सबने सन्माने, द्वादशमे दिन मोछव ठाने ॥७५॥ सिद्धारथ नृप सहुने बोले, कुवरनाम थापणने खोले॥ जिण दिन राणी कूखें आया, तिण दिनथी दलवल सवाया ॥७६॥ दिन दिन वृद्धि कारण मानो, वर्द्धमान कुंवर इम ठाणो ॥ सहु सुणी हरखाणा गोती, नाम यथागुण कुमल मोत्ती ॥ ७७ ॥ घर घर मगलमाल वधावे, गोरडिया मिल मगल गावे ॥ तिडकिड तिडकिड त्रांसां वाजे, धि धिं धि धिं नौवत्त गाजे ॥ ७८ ॥ दों दों धप मप मादल रगी, क्रुण क्रुण क्रुणक्रुण करे सारगी ॥ झालर वाजे झण झण झण झण,

॥ ढाल पहेली ॥

॥ धर्म पावेतो कोइ पुण्यवत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय सास
ण स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम न
वमांही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरन
वथिति क्षय करिने, थया नरतजीका नदो जी ॥ मिरियच ना
म कहाणो तिण नव, सजम मद स्वछदो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ ता
पस व्रत पाली नव चोथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहांथी
.तापस निर्जरनव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥
तिहांथी अवर तापस किरिया, वली गया देव विमाणे जी ॥ ति
हांथी तापस सुरपद पाया, तापसनाकने गणे जी ॥ ज० ॥४॥
ए सोला नव महोटा करीने, रुलीयो वहुससारो जी ॥ विश्वनू
तिनवे करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥ ज०॥५ ॥ उग
णीशमे नवें हरिपद पाया, नाम त्रिपृष्ठ कहाणो जी ॥ सातमी पृ
थिवी निकली तिहाथी, सिहतणो नव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥
नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्त्तिपद पाया जी ॥ सजम
पाल्यो कोडि वरस लग, अंते अणसण गया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥
तिहांथी सातमे सरग सिधाया, चोविशमा नवमांय जी ॥ तिहां
थी पच्चिशमा नवमांइ, हुवा नंद महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥
संजम ले कर तप आदरियो, मास मास तप गया जी ॥ एक
सव सहस्र ने लाख अग्यारा, वोर्से अधिक दरसाया जी ॥ ज०
॥ ए ॥ वीश वोल सेवन कर वाध्यो, गोत्रतीर्थंकर तामो जी ॥
तिहांथी दशमे सर्ग सिधाया, विश सागरथिति गमो जी ॥ ज०
॥ १० ॥ तिहाथी नवथिति क्षय करी स्वामी, मास अषाढ मझा
रो जी ॥ शुकलपक्ष छठ मध्यनिशामें, फाल्गुणी उत्तरा विचा
रो जी ॥ च० ॥ ११ ॥ खत्रीकुंम सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे
राणी सुजाणो जी ॥ चउदे सपना देइने उपना, पुण्य तणे प

एक कम साडातिनसें, पारणे तास्या दातार ॥ जि०॥ध०॥७॥ देश अनारज विचरिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कूतां लगाया म्रामणां, वध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे खीला खोडीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ मक दीयो चंमकोशीये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ९ ॥ अजन्यसंगमो देवता, आणी डुष्ट परिणाम ॥ जि०॥ छमास लगें डुख दीयो, राखी समता स्वाम ॥ जि०॥ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यचना सहु, सह्या परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम नावसु, रंच न आण्यो गर्व ॥ जि०॥ध०॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निद्रा मुहूरत एक

[illegible] डुज आसण टेक ॥
[illegible] णी, धन करणी क
[illegible] या, धन जाया एह
[illegible] ायो एहवो, दूजो न
[illegible] उपमा सूत्रमजार ॥
[illegible] ा, दूजी ढालमजार ॥
[illegible] र ॥ जि०॥ध०॥ १५ ॥

[illegible] रमाण ॥ वीर जिनेश्व

एक कम साढातिनसें, पारणे ताख्या दातार ॥ जि०॥ध०॥७॥ देश
अनारज विचरिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कूतां लगाया
म्रामणां, वध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे
खीला खोडीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ मंक दीयो चमकोशी
ये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ए ॥ अनन्यपर्संगमो देव
ता, आणी दुष्ट परिणाम ॥जि०॥छमास लगें डुःख दीयो, राखी स
मता स्वाम ॥ जि०॥ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यंचना सहु, सह्या
परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम नावधु, रच न आण्यो
गर्व ॥ जि०॥ध०॥११॥ चउविहार तपस्या सहु, निड़ा मुहूरत एक
॥ जि० ॥ तिणमांही सपनां दश लह्यां, गोदूज आसण टेक ॥
जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रभुजी तणी, धन करणी क
रतुत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रभु जनमिया, धन जाया एह
वा पूत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी जायो एहवो, दूजो न
[illegible]ार ॥ जि० ॥ क्षमाशूरा अरिहंतजी, उपमा सूत्रमजार ॥
॥[illegible] ॥ ध०॥ १४ ॥ करम नरम चकचूरिया, दूजी ढालमजार ॥
जि० । तिलोकरिख कहे धन प्रभु, प्रणमुं वार वार ॥ जि०॥ध०॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन छगत परमाण ॥ वीर जिनेश्व
र पामिया, निर्मल केवल नाण ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ जाणी लोकालोककी रच
ना, खटद्रव्य गुणपरजायो ॥ चोतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग
तारक जिनरायो रे ॥नविका॥ श्रीजिनपर उपगारी ॥ तार्यां वहु नर
नारी रे ॥न०॥१॥ चोसठ इंद्र आया तिण अवसर, त्रिगडो रच्यो तिण
वारें ॥ स्फाटिक सिंहासन उपर विराजे, अमृतवेण उचारे रे॥न०॥२
॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यज्ञ रचाणो छे नारी ॥ वहु पंमि

तनो थयो समागम, जावे सुर गगनविहारी रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मदि
मा देखी मानविशेषे, पंचसया परिवारें॥ इंद्रनूति चल आया प्रजु
पें, संशय गर्व निवारी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ संजम ले गणधर पद ली
नो, अग्निनूति चल आवे ॥ ते पण संशय दूर नयासुं, संजममें
चित्त लावे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इम अग्यारा गणधर रचना, चुम्मालि
शसें संख्या जाणो ॥ एकण दिनमें लीनी ज्यां दीक्षा, गुण रत्नागर
खाणो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ तिनसें चौदा पूरवधारक, तेरशें रिख उ
हिनाणी ॥ पांचशें मन परजव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी
रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ सातशें वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसें चर्चावा
दी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसें रिख शिव साधी रे
॥ज० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख संपदा सारी, ज्येष्ठ गौतम गण
धारी ॥ चंदनबालादिक सहस्र छत्तिसी, थइ समणी सुविचारी
रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ एक लाख गुणसठ सहस्रश्रावक, आणंदादिक व्र
तधारी ॥ अगरा सहस्र तिन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिका
री रे ॥ ज० ॥ १० ॥ विचस्यागाम नगर पुर पाटण, तार्या बहु
नर नारी ॥प्रथम चोमासो अस्थिग्राममें, दूजो प्रष्टचपा मोझारी रे
॥ ज० ॥ ११ ॥ त्रीजो चंपा चतुरसावत्थी, विशाला वाणिय क
ह्या बारा ॥ चवदा चोमासा राजगृहीमें, मथुरामें खट सारा रे ॥
॥ ज० ॥ १२ ॥ नहलपुरीमें दोय दिपाया, आठतीस एम जा
णो ॥ एक आलविका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ ज०
॥ १३ ॥ तास्या बहु नवियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥
अनुक्रमें आया पावापुरीमें, हस्तिपाल जिहा राया रे ॥ज०॥ १४॥
कर जोडी प्रनुथु करे अरजी, रथशालाने मफारो ॥ अबके चो
मासो इहा करो प्रजुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ज०॥ १५ ॥ छे
त्रफरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवा
कर धर्म दीपायो, पूरी नविजन आशो रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोक

रिख कहे त्रीजी ढालें, धन धन अंतरजामी ॥ गुण रतनागर पर म उजागर, वउ नित शिर नामी रे ॥ न० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो गण ॥ तेरश आधी रातसुं, अणसण धार्यो जाण ॥ १ ॥ देश अढारना नृपति, ठठ तप पोषध कीध ॥ सोला प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥ ॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उचर्यो, उत्तराध्ययन ठत्तिस ॥ नविजीवां हितकारणें, पूरी एह जगीश ॥ ३ ॥ गौतम मोहिणी टालवा, जोइ अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवसुखना दातार ॥ ॥ ४ ॥ कार्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतमसुंस्वामि ॥ देवशर्मा विप्र बोधवा, जावो तिणने गाम ॥ ५॥ तहत्ति करी तिहां संचर्या, पीछें दीन दयाल ॥ जाय बिराज्या मोक्षमें, नवफेरा दिया टाल ॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ क्षमावत जोय नगवतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनशिव पुर संचर्या जी, थयो जगमें अंधकार ॥ गौतमस्वामी जाणीयो जी, आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥ ए टेक ॥ धसकी पड्या धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लगार ॥ धिक धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुंझक वण आधार ॥ २ ॥ एक मुहूरतने आंतरे जी, आइ चेतना ताम ॥ मोहवशें करे फूरणा जी, ठोडी गया केम स्वाम ॥ जि०॥ह०॥३॥ अंतेवासी हु आपको जी, रहेतो जिम तन गय ॥ ठेले समे कियो आंतरो जी, ए तुम जुगतुं नाथ ॥जि०॥ह०॥४॥ हु पल्लो नहि फालतो जी, जातां मोक्ष मजार ॥ जाग्या पण नहि रोकतो जी, किम आ यो तुम खार ॥जि०॥ह०॥५॥ बाल ज्यों आंमो न मांमतो जी, नाग न मागतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपसु जी, लागो तुमसु घ्यान ॥जि०॥ह०॥६॥ कारमो राग होतो नहि जी, तुमसु माहरो नाथ

॥ तुम सम माहरे दूसरी जी, होती नहीं कोइ आय ॥ जि॰॥ ह०॥७॥ एकपखी जे प्रीतडी जी, पार पडे नहिं तेह ॥ आज जाणी में परतिखे जी, इणमें नहिं संदेह ॥ जि०॥ह०॥८॥ गोयम गोयम नाम ले जी, कुण बोलावसी मोय ॥ कुणकने लेशुं आज्ञा जी, चिंता मुऊने सोय ॥जि०॥ह०॥९॥ जो मुऊ मन शंका होती जी, पूबतो सहु तत्काल ॥ जर्मे सहु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष दीनद याल ॥जि०॥ह०॥१०॥ तुम दरिसण अविलोकतां जी, रोमरोम उल्लसत ॥ हवे दरिसण किहां आपनां जी, नयनंजण नमवत ॥ ॥जि०॥ह०॥११॥ तुम वाणी अमृत समी जी, साकर दूध सवाय ॥ हवे किणनी सुणशुं गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥ ह०॥१२॥ वली मनमांही चिंतवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥ धन धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥जि०॥ह०॥१३॥ तुपकर्मपरजावथी जी, रुलियो चउगतिमांय ॥ एकाकी तिहुं कालमें जी, ए जिनशासन राय ॥जि०॥ह०॥१४॥ वीतराग प्रभुनी दिशा जी, शंका नहिं लगार ॥ तुं किम जूल्यो जर्ममें जी, सम दम उपशम धार ॥जि०॥ह०॥१५॥ ध्यान शुकल तिहां ध्याइयो जी, हीनां कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं कांय ॥जि०॥ह०॥१६॥ केवलमहोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पछ तिण गम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा साम ॥ जि०॥ह०॥१७॥ शिष्य थया जंबु जिस्या जी, रातें परणीया नार ॥ कोडि नन्याणुं त्यागिने जी, दिन ऊगां व्रत धार ॥जि०॥ह०॥१८॥ तिन पाट थया केवली जी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे जवि प्राणीया जी, उघडे अंतर नयण ॥ जि०॥ह०॥१९ ॥ दीपायो जिन धर्मने जी, पूरव वर्ष हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार ठे जी, हवणां परम आधार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे प्रवचन आधार ॥ ए टेक ॥२०॥ ए परमार्थे चालसी जी, टालसी आतमदोष ॥ तो जवि प्राणी

जीवडा जी, अनुक्रमें जासी मोक्ष॥जि०॥ह०॥२१ ॥ सवत उगणी
शें जाणीयें जी, सेंतिस वर्ष मझार ॥ दीपमाला दिने ए कष्योजी,
तिलोकरिख सुविचार ॥जि०॥ह०॥२२ ॥ अहमद नगर देश दक्षि
णें जी, सुखे रहिया चोमास ॥ नणशे गुणशें नावशुं जी, लेहेशे
शिवसुख वास ॥जि०॥ह०॥२३॥ कलश ॥ समकीत पाया, नव
घटाया, सत्ताविश थुल, जाणिया ॥ तेह वरणव, नवि कहे ते, चा
र ढाल, वखाणीया ॥ सासण नायक, सुखदायक, प्रणमु वार, वा
र ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो नव, निस्तार ए ॥
ह्रु वीजो जेजे, कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर चोढा
ीयु सपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खधकजीको चोढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं जगनायक सदा, नयनजण नगवत ॥ श्राचारिज उ
मझाय जी, गौतमादिक सव सत ॥१॥ श्रीगुरुचरणांबुज नमुं, सम
रु सरस्वति माय ॥ खधक मुनिगुण गावशु, सुणजो चित्त लगाय ॥२॥

॥ ढाल पेहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ सावछि नामें न
गरी नलेरी, गढ मठ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेल मालीयां,
शोना विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कन
ककेतु तिहा नूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवतो ॥ शूरवीर महीमम
लमांही, प्रजा जनक जसवतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी
पतिसुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चइवदन मृगनयणी
शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नदन सुखक
द सकलने, खधक नामें कुमारो ॥ गुण तस वदक चद ज्यों शीत
ल, शुरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥४॥ वोहोंतेर कलामाही अधिक
विचक्षण, दिन दिन कीर्ति सवाई ॥ मात पिताकी नक्ति कारक,

नइक नाव समाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विजय सेण रिख, गुणरतनाकर नारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंघमग्रण नर्मे विदंमण, बहु शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, नवि प्राणी बहु तारे रे ॥ प्रा० ॥७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांही, उतरया बाग मझारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आणदे, वंदण गया अणगारो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ नृपति निजसपति सव लेइ, मुनिवंदण परवरिया ॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥ ॥ए ॥ ए ससार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन संपत सव कारमी जाणो, ज्यों वादलदल ठावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नीट नीट एह नरनव पायो, शेटीसाटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो अतिजतने, परनव खरचिया लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो नवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढालके मांही ॥ तिलोकरिख कहे नविजन प्राणी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ खधक कुमर तव वीनवे, जोडी दोनुइ हाथ ॥ सतवाणी प्रभु ताहरी, धर्म बोलावु साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, में जाणी निर्धार ॥ मात पिता आज्ञा लेई, लेशुं हु सजमनार ॥ २ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवे, तेम करो ततकाल ॥ धर्मे ढील न कीजियें, नांखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वदी घर आविया, खंधक नाम कुमार ॥ किणविध मागे आगना, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदन जसवारी, हुवा ठे देवकी मायना ॥ अथवा ॥ मात्रका दूहामें देशी ठे ॥ कुमर कहे करजोडिने सो काइ, यह ससार असार ॥

धन सपत सब कारमी स कांइ,शका नही लगार हो ॥ माताजी मो रां, श्राज्ञा देवो तो संजम श्रादरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी इम पुत्रका स कांइ, मूर्छाणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीस री स कांइ, मोहकी महोटी फाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर समीर प्रजावें, कांइक थई हुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल व रसे, ज्यु श्रावण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुं मुफ नंद ए काकी कुलमें, जीवन प्राण श्राधार ॥ ववरफूल सम दरिसण था रो, मत ले सजमन्नार हो ॥ सुण नद हमारा, जोवन ढलिया सु लीजें जोगने ॥ ए टेक॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर प्रपंपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इद चद नहिं गोडे, तिनमें करे वेहाल हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत होय कालरिपुसें, न्नाग जाणे की पहोंच ॥ श्रयवा जाणे हु कदी न मरसु, उणके तो न हि सोच हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी सपत वहुली, हय गय दल बल पूर ॥ ए न्नोगव फिर सजम लीजे, मान केणी जरूर हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दोलत उर माल खजीना, ज्यों विजली फल कार ॥ चोर श्रग्नि सजन न्नय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ कोमल काया कचन वरणी, तरुणीसु सुख न्नोग ॥ वृ द्धपणो जब श्रावे तनमें, तव श्रादरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ९ ॥ काया माया वादल गया, मल मूतरन्नमार ॥ रोग शोगको न्नाज न इणमें, तप जप सजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ न्नोग ह लाहल फहेरसु जादा, फल किंपाक समान ॥ श्रल्प सुखसु दुःख श्रनर्ता, सहेतकुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतनपिंजरे शुक नहि राजी, तिम हु इण ससार ॥ जनम मरण दुःख मो हनी वधण, कहेता न श्रावे पार हो ॥ मा० ॥१२॥ मोह ताता वश माता वोले,तु वत्स श्रति सुकुमाल ॥ पंच महाव्रत मेरु समा ना, तोडणो मोहजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा,सजम लेवो जी

नइक नाव समाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मु
सेण रिख, गुणरतनाकर नारी ॥ परम वैरागी आश्रव
रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंघमंमण नमे
शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, न
तारे रे ॥ प्रा० ॥७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांहे
मजारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आणंदे, वंदण ग
॥ प्रा० ॥ ८ ॥ नृपति निजसंपति सब लेइ, मुनि
॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो द
॥ए ॥ ए संसार स्वपनवत् आधार ॥ मात पित
आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कियो मोछव दीक्षा तणो,सूत्रमांहे विस्तार ॥ पे
आदर्यां, धन खंधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी
चसया परिवार ॥ राख्या रक्षाकारणें, सुनट वडा हुसियार ॥ २ ॥
जिहां जिहां मुनिवर सचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥ नृप
कावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणंद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमु
नि गुणवदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पांच समिति ति
न गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥ छे
काया प्रतिपाल दयानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदें
संजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख० ॥ २ ॥ चाकर ग
शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर
नागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ ख० ॥ ३ ॥ सहे परि
शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप
निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ खं० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्र

सुनि सु पे
मधंधक नहें
प्रशमकं ॥ १ ॥
ी तत्काल ॥
भत हो ॥ मा०
सियार ॥ करुणा
॥ मा० ॥ ३ ॥
गार ॥ व्रतफल
ण भेद हमारा,

मुनि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ खं० ॥ ५ ॥ एक दा मासखमण तप करतां, कुंति नगरीमें आया रे लो ॥ सुनट विचारे इहां मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ ख० ॥ ६ ॥ इहां भर कारण नहिं जरा नर, उतरया बाग मकारो रे लो ॥ लागा सहु नोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ ख० ॥ ७ ॥ प्रथम पहेरमें सूत्र चितारे, डुजीमें ध्यानज गाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ ख० ॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुवाणे, परसेवे नींज्यो शरीरो रे लो ॥ खड खड वाजे हाड मुनिनां, चाल चले अति धीरो रे लो ॥ खं० ॥ ए ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे लो ॥ राणीसघातें चोपड खेले, हर्षवदन हुसियारो रे लो ॥ ख० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पडी रिख उपर, मनमें ताम विचारी रे लो ॥ मुक बधव पण संजम लीधो, सहेतो होसी डुःख नारी रे लो ॥ खं० ॥ ११ ॥ कणारत आणी अति राणी, आंसु त तक्षण आयां रे लो ॥ नृप पूछे सा कांइ न बोली, नीचें देख्यो तब राया रे लो ॥खं०॥१२॥ मुनिवर देखी वेरज जाग्यो,अधिको क्रोध नराणो रे लो॥ ए मोडो इण पंथें क्यों आयो,चाकरसु कहेवाणो रे लो ॥ख०॥ १३ ॥ पकड ले जावो जंगलमाही, सब तन खाल उतारो रे लो ॥ ढोडो मत एह कोइ प्रकारें, मानो हुकम ए माहरो रे लो ॥ खं० ॥ १४ ॥ आघी पाछी कांइ न सोची, पूरव वैरभजावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥ ख० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुनट आया तत्क्षण तदा, ते मुनिवरनी पास ॥ भद्वा ला ग्या कर नणी, तब पूछे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आज्ञा राय

डुक्करकार छे ॥ एटेक ॥१३॥ पग अणवाणे चालणो स कांइ,लोचन सोच अपार ॥ वाविश परिसह जीतणा स कांइ,चलणो खांडाधार हो ॥ सु०॥१४॥ घर घर भिक्षा मागणी स कांइ, दोष बइयालीस टाल ॥ कोइक देशे उलट प्रणामें, कोइक देशे गाल हो ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ वाय जरेवो कोथलो स कांइ, डुक्कर छे जगमाय ॥ भिला अलूणी चाटणी स कांइ, दीक्षा अति डुखदाय हो ॥ सु०॥१६॥ कुंवर पयपे सत्य कही सव, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहेज छे संजम, शका रच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख, कहे दूजी ढालें, लीनी दृढता धार ॥ मात पिता थाका समजातां, आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो मोछव दीक्षा तणो,सूत्रमांहे विस्तार ॥ पंच महाव्रत आदर्यां, धन खधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पं चसया परिवार ॥ राख्या रक्षाकारणें, सुभट वडा हुसियार ॥ १॥ जिहां जिहां मुनिवर सचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥ नृप चु कावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणंद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि गुणवदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पाच समिति तिन गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥ छै काया प्रतिपाल दयानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदें संजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख०॥२॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर गुणआगर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ ख० ॥ ३ ॥ सहे परिसह शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ ख० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रजज

जाइ, शोधे नगर मजार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ तिणसमे दासी राव ली रे, उंलखिया असवार ॥ पूछ्यु कारण तिणे दाखीयुं जाइ, राणीथी कह्या समाचार रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ राणी कह्यु निजकतसुं रे, सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही तदा जाइ, राणी पडी मूर्छाय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ फिट फिट कंता शुं कियो रे, महोटो एह अकाज ॥ मुझ वीरो हीरो गुण तणो जाइ, महामहोटो रिखराज रे ॥ध०॥ १५॥ क्षण एक तो धरणी ढले रे, क्षण एक नाखे निसास ॥ क्षणएक दे उंलजहा जाइ, रुदन करे अति त्रास रे॥ध०॥ १६ ॥ रोवे राणी रावली रे, कानें सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां जाइ, हाहाकार पुरमाय रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ झूरे सुनदा वेनडी रे, झूरे पुरिससेण राय ॥ महोटु अकारज ए थयु जाइ, घात करी मुनिराय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, समोसर्या मुनिराय ॥ राय गयो वदण जणी जाइ, पुछे शीश नमाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष ॥ पूरव वैर काइ हुतो जाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ध० ॥ २० ॥ मुनिवर कहे सुण नृपति रे, पूरव नवह मझार ॥ काचरानो जीव तुं हतो जाइ, नृपनद खधकुमार रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ छाल उतारी हरख्यु रे, आणद अग न माय ॥ कीधी सरावणा तिण तिहां जाइ, वार वार मन वाय रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कर्म निकाचित वांधियो रे, तेरे क्रोड नव मांय ॥ काचरानो जीव तु थयो जाइ, ते तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ वैर जाग्यो रिख देखीने रे, कर्म न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर जणी जाइ,हिरदे विमासी जोय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म समो शत्रु नहि रे, कर्म करो मत लोय ॥ रखवाला पाचशें सुनट था जाइ, आडो न आयो कोय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ राणी राय अने सुनटा रे, साजली ए अधिकार ॥ सजम लेइ मुक्तें गया जाइ,वरत्यो जयजयकार रे ॥ध०

नी, खाल उतारण काज ॥ ले जावा समसानमें, तब बोल्या रिख राज ॥ २ ॥ हाथ ग्रहो मत माहरा, हुं आवुं तुम लार ॥ मुनि पहुता समसानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बलती द्वारिका देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि समसानमें रे, आलोयणा शुद्ध कीध ॥ नमोथ्थुण सिद्धने वियो, दुजो अरिहंताने दीध रे ॥ धन धन मुनिराया ॥ १ ॥ पाप अढारा त्यागीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो, पादोपगमन संथार रे ॥ ध० ॥२॥ उभा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों पाव्यो शोभे सुतार ॥ राय सुभट लीया पाछणां जाइ,तीखी छे तिणरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड चरड तिण वार ॥ तरड तरड रुधिर वहे जाइ, दया न आणी लगार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ शिरसुं लगाइ पग लगें रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाकें सल लाया नहिं जाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ उजली वेदना ऋपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख जाणे आतमा जाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें चिंतवे रे, उदे थया तुझ कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थका जाइ, निपजसी आतमधर्म रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरखहुं रे, बांध्यां निकाचित पाप ॥ भुक्त्या विण छूटे नहि जाइ, भोगवे आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तुं पुद्गलथी भिन्नता रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहिं त्रिहुं कालमें जाइ, मनमांही साहसधार रे ॥ ध० ॥९॥ थिरपरिणामें मुनिवरु रे, ध्यायो शुकलज ध्यान ॥ अंतगडकेवल पायने, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन जननी जिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाछें वेही पडी भूपरें जाइ, पहेली लह्यो भवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ हवे वीतक सुणो पाछलु रे,सुभट जे मुनिवर लार ॥ वेख्या नहिं रिख नयणडुं

कदा गर्भे रह्यो तेहने, चितवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक माह्रे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करु कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥ स० ॥४॥ तिणने एकातें लेई करी, दीयो घणो सन मान रे ॥ संपति छे मुझ घर घणी, जीवे नहि मुझनां संतान रे॥स० ॥ ५ ॥ जो तुझ होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे तु निशिने समे, ठीक पडे नहि कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ द्रव्य देशु तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पूत रे ॥ प्रेम हुं राखछुं अतिघ णो, रहेसी मुझ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणे मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे॥ प्रछन्नपणे तिणें मोकल्यो, ठिक नहिं पुर नर नार रें ॥स० ॥८॥ जनम मोछव सबही कियो, दिवस थया जव बार रे ॥ दीयो दशोट्टण जातमें, वरतियां मंगल चार रे ॥ स०॥ ए ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंच धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रभावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥स०॥१०॥ कुलमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥११॥ बहोंतेर कलामें पंमित थयो, आवियो यौवनमाय रे ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥स० ॥ १२ ॥इति॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इन्द्रिय सुख भोगवे, आणंदमें दिन रात॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विषे, पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशे, ले तुं संजम भार ॥ २ ॥ तल्लालीन ते भोगवे, माने नहिं लगार ॥ किनी सगाइ वली तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण मरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली ॥ माह्रारा लाल उ०

॥ २६ ॥ संवत उंगणीशें गुणचालिशमें रे, ज्येष्ठशुक्ल छज जाण ॥ जइकरघोडनदीविषे नाइ, गुणि गुण कीयां वखाण रे ॥ध०
॥ २७ ॥ खधक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो नवपार ॥ तिलो करिख कहे चोथी ढालमें नाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥२८॥

॥ अथ मेतारज मुनिनु चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरु नावशुं, सतगुरु लागु पाय ॥ कथाअनुसा, रें गावशुं, मेतारज मुनिराय ॥ १॥ पूरवनव दो मित्र था, ब्राह्मण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, सजम लियो सघात ॥२॥ सजम पाले नावशुं, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अकूर ॥३॥ जैनधर्म श्रीकार छे, शका नहिं अ लगार ॥ स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद आं ठ नावथी, नीच कुलबंधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सु रगति दोनु लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमां य ॥ जो पहेलो नरनव लहे, घालीजें धर्ममांय ॥ ६ ॥ संजम छे वाणो तिण नणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम सकेत कीधो सुरनव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिण कीनो हुतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥ मातंगकुलमें अवतस्यो, उदय कर्मके हेत ॥८॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो सपति सार ॥ किणविध तिण सजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सहेर राजगृही दीप तु, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शेठ सुगधर दीपतो, लक्ष्मीवत कहा य रे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीमतीनार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रनावथी, मृतवछणी ते थाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ ए

कदा गर्ने रह्यो तेह्नने, चितवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक माह्नरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करु कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्नवती सा देखाय रे ॥ स० ॥४॥ तिणने एकांतें लेई करी, दीयो घणो सन मान रे ॥ सपति छे मुज घर घणी, जीवे नहि मुजनां सतान रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जो तुज होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे तु निशिने समे, ठीक पडे नहि कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इव्य देश तुज सामटुं, होसी सुखी तुज पूत रे ॥ प्रेम दु राखचुं अतिघ णो, रहेसी मुज घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणे मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रछन्नपणे तिणें मोकल्यो; लिक नहिं पुर नर नार रें ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम मोछव सवही कियो, दिवस थया जब वार रे ॥ दीयो दशोट्टण जातमें, वरतियां मगल चार रे ॥ स० ॥ ए ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंच धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रनावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥ १० ॥ कुलमद कियो तिण कर्मथी, मह्नेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ वहोंतेर क लामें पंमित थयो, आवियो यौवनमांय रे ॥ तिलोकरिख कहे प हेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इन्द्रिय सुख नोगवे, आणदमें दिन रात ॥ १ ॥ ह्वे तिण अवसरने विषे, पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशे, ले तु संजम नार ॥ २ ॥ तल्लालीन ते नोगवे, माने नहिं लगार ॥ किनी सगाइ वली तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, उन्नी दोय रावली ॥ माह्नारा लाल उ०

॥ २६ ॥ सवत उंगणीशें गुणचालिशमें रे, ज्येष्ठशुक्ल ऋज जाण ॥ लश्करघोडनदीविषे नाइ, गुणि गुण कीयां वखाण रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ खधक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो नवपार ॥ तिलो करिख कहे चोथी ढालमें नाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥२८॥

॥ अथ मेतारज मुनिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरुं नावसु, सतगुरु लागु पाय ॥ कथाअनुसा रें गावसु, मेतारज मुनिराय ॥ १॥ पूरवनव दो मित्र था, ब्राह्मण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, संजम लियो सधात ॥२॥ सजम पाले नावसु, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अकूर ॥३॥ जैनधर्म श्रीकार ठे, शका नहिंय लगार ॥ स्नान नहि इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद मं ग नावथी, नीच कुलबधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सु रगति दोनुं लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमां य ॥ जो पहेलो नरनव लहे, घालीजें धर्ममाय ॥ ६ ॥ संजम छे वाणो तिण नणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम सकेत कीधो उने, सुरनव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिण कीनो हुतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥ मातंगकुलमें अवतस्यो, उदय कर्मके हेत ॥८॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो सपति सार ॥ किणविध तिण सजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सहेर राजगृही दीप तु, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शेठ सुगंधर दीपतो, लक्ष्मीवत कहा य रे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीमतीनार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रनावथी, मृतवछणी ते थाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ ए

लोक, धोको सवने पड्यो ॥मा०॥ धो०॥ साची दीसे ए वात, जो ग इसडो घड्यो ॥ मा०॥ जो०॥ लोक गयां सव गाम, विंद रह्यो एकलो ॥ मा० ॥ विं०॥ अधिक खीसियाणो होय, देखे सो नूंड त लो ॥ मा०॥ दे० ॥ ८ ॥ तिणसमे सो सुरवेण, कहे शरवण विपे ॥मा०॥क०॥ ले हवे संजम ताम, कहे सो नूंमी दीसे ॥मा०॥क० हवे पाछो होय सुजस, परणु कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥ नवमी परणु नूप, धूया श्रेणिकनी ॥ मा०॥ धू० ॥ ए ॥ वारा वर्ष गृहवास, रहुं तदनतरें ॥ मा० ॥ त० ॥ लेशु पछें संजम नार, वचन ए नहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुरवे ण, सेण मन फेरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ जूठी मातंगनी वात, वींद वली हेरीयो ॥ मा० ॥ विं० ॥१०॥ हुइ सजाइ सर्व, तिहां वली व्यावनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया सोही वजार, वात थइ न्यावनी ॥ मा० ॥ वा० ॥ महेतर आयो सो चाल, जानमाही दोडिने ॥ मा० ॥ कण मदिरा पीध, वोले कर जोडिने ॥ मा० ॥ वो० ॥११॥ ए नहि माहरो नद, खोटो हु वोलियो ॥मा० ॥ खो० ॥ माफ करो अपराध, कह्यो वे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ जन मे टल्यो सहु लोक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलोक रिख कहे दूजी ढाल, झुंधा राखी नही ॥ मा० ॥ झु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर सोचीने तास ॥ दीनी वकरी रूयडी, वगले रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि जगमग करे, देखे बहु नर नार ॥ पुरमें पसरी वारता, मेतारज पुण्य सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वेदर्भीशुं मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता, मनमें विस्मय थाय हो लाल ॥ वकरी लावो वेगशु, जेम करो म ति काय हो लाल ॥रा० ॥१॥ सुनट सुणी चल आविया, सुगध

॥एआंकणी॥ आठमी कन्या तेह,परणवा अम्मह्या॥ माहारा जा० परणवा०॥कीनी सफाइ जान,जानी नेला थया ॥मा०॥जा०॥ रीयो जामो पहेर, मुकुट शिरपर धस्यो॥ मा०॥ मु०॥ माथे मोड, विंदनो वेश कस्यो ॥मा०॥विं०॥१॥ शिरपर शिरपेच जडाव, तुरो जगजगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलगी तिण उपर जाण, अधिक नलकी रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जगमगे कुंमल कान, हार ज गजग करे ॥ मा० ॥हा०॥ बाजुबंध भुजदम, पहोंची कडां कर सिरे ॥ मा० ॥ प० ॥२ ॥ मुडी अंगुलीके मांय, जलके हीरातणी ॥ मा० ॥ ज० ॥ कमर कदोरो जडाव, सुवर्णकी खिखणी ॥मा०॥ सु० ॥ अत्तर अंग लगाय, तिलक नाखें कस्यो ॥ मा० ॥ ति० ॥ कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं मस्यो ॥ मा० ॥सु०॥३॥ बेगे हय असवार, लाभो वस्यो सो सही ॥ मा० ॥ ला० ॥ गावे म गल नार, अधिक उछावही ॥ मा० ॥ अ०॥ धप मप मादल ना द, के साद सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धडिंदा धडिंदा ढोल, तिह किह त्रांसा तणो ॥मा०॥ ति० ॥ ४॥ चाल्या अधिक उल्लास, व्याव करवा नणी ॥ मा० ॥व्या०॥ आया मध्य बजार, बसी शोना घणी ॥ मा० ॥ व० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, वात कौतुक तणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ ॥ मातंग मन दियो फेर, देर अवसर अणी ॥ मा० ॥ दे० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमें लठ, धठ धीठो घणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमांय, धरी कुलरपणो ॥ मा० ॥ध० ॥ माने नहिं कबु शक, धक एकी जणो ॥ मा० ॥ बं० ॥ आयो सो विंद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा०॥ का० ॥ ६ ॥ स घलाही रहीया देख, बोले सुणो नदना ॥मा०॥बो०॥ हुं बु सगो तुज बाप, जाणे मत फदना ॥ मा० ॥जा०॥ सात कन्या आहि वणिक, परणाउं एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकडी अश्व ल गाम, कोई नहिं वाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ बदलायो चित्त

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी नली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ नोग वे सुख ससारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ बारा वर्ष इम वी तिया, सो सुर आयो चाल ॥ कहे ले हवे तु वेगसु, सजम चित्त उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो देवं संकट घणो, इणमें फेर न फार ॥ सियालपरें श्रीवीरपें, लीधो सजमन्नार ॥३॥ मनमें ताम विचारीयो, धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकमें, महेतर घर अवतार ॥ ४ ॥ हवे करणी डुकर करु, कर्म करु सब गार ॥ मास मास तप धारीयो, नीरंतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ नित नित प्रण मुं रे मेतारज मुनि, तारण तरण जहाज ॥ परम वैरागी रे रागी धर्मना, साधे आतमकाज ॥नि०॥१॥ थिविरापासें रे शीख्या थिर मनें,नव पूरवको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो,ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥२ ॥ कोइसमे आया रे राजगृही वली, पा रणो आयो रे ताम ॥ प्रनुआज्ञा लेइ गोचरी पांगुख्या, निर्वद्य निर वद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जातां रे सुवर्णकारकें, उनखिया रिखराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा,गोचरी कारण जाय ॥ नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिरा य ॥ वहोरो सूजतो आहार ले मादरे, बोले ते एम उमाय ॥ नि० ॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहा वहोरण गया, वना रहिया रे बा र ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, वहोरावण नणी आहार ॥ नि० ॥६॥ सोवन जव था रे राय श्रेणिकना, कुर्कुट आयो रे चाल ॥ सो जव चूगिने रे गयो ते शीघ्रसु, मुनिवर रहिया रे न्नाल ॥ नि० ॥ ॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वेहेरायने, जव नहि दीठा रे नयण ॥ कहो किण लीधा रे कुण आयो इहा, कहे रोपें नखो वयण ॥

रने गेह हो लाल ॥ मागे बकरी शेठथी, उगले रतज जेह हो लाल ॥ रा० ॥ २ ॥ शेठ वदे सुनटा नणी, में नहिं मालक तास हो लाल॥ मेतारजने पूछिने, लेइ जावो थें उल्लास हो लाल॥ रा० ॥३॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल॥ बकरी जीवन प्राण छे, रत्नपुज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुनट गया फिर रायपें, दाख्या सहु समाचार हो लाल ॥ सुणि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा०॥५॥ हलकाख्या सुनटा नणी, धसमस करता जाय हो लाल ॥ गली लाया गेडिने, पूछयो तिणसुं नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ राय कचेरी लाविया, क्षणअंतरनी माय हो लाल ॥ बकरी छेरी तिण समे, दुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥७॥ सना सहु व्याकुल थइ, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल ॥ पूछे नूप कारण किस्यु, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुनट कहे दूजी नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पूछे कारण कुमरशुं, सुनट गया तिण वार हो ॥ रा० ॥ ए ॥ पूछयो कारण कुमरथी, किण कारण दुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहिं किम रत्न ते, दाखो तेह प्रबध हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ सो कहे मुफ राजी करे, रत्न उगले श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो एछे रे बूरी, शका नहिं लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ राय कहे जे गलिका, देवे रत्न श्रीमोय हो लाल ॥ मुख मागी वस्तु तिका, देशु हु खुशी होय हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुफने परणाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए नला, हाम नरी तब राय हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ गुणमंजरी कन्या नली, कीधो व्याव उत्साह हो लाल ॥ तिलोकरिख कहे श्रीजी ढालमें, कुमरनो पूरो उमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥ इति ॥

गाया उमाय ॥ तिलोकरिख दाखे रे चोथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥ नि० ॥ ११ ॥ सवत उंगणीशें रे गुणचालीशमें, अषाढ वदि पडवा वखाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेठ में जाण ॥ नि०॥ १३ ॥ जोड जमावी रे विपरीत जो कह्यो, मिछामिदुक्कड मोय ॥ जणशे गुणशे रे विधि शुद्धनावशुं, तस घर मगल होय ॥ नि० ॥ १४ ॥ इति मेतारजमुनिनु चोढालीयुं सपूर्ण ॥

॥ अथ आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयु लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं परमातम प्रजु,शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ श्रावक जला, आणद आणदधाम ॥१॥ नाम गाम ठुज काम जिण, कीनां व्रत अगीकार ॥ सप्तमे अगें वर्णव्या, ते सुणजो विस्तार ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण कालें तिण अवसरें जी २ काइ, वाणिय गाम मजार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी २ कांइ, प्रजा जणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी२ कांइ, सूत्र तणे अनुसार,समकित व्रत होवे निर्मलोजी२कांइ, होवे ज्युं जवनिस्तार ॥सु०॥२॥तिणपुरआणद नामथीजी२कांइ, गाथापति धनवान ॥ वारे कोडी सुनैयाजी२काइ,कह्युं तस धन परिमाण॥सु०॥३॥ दशसहस्र गायां तणो जी२कांइ,एक गोकुल इम चार॥ धेनुवर्ग वखाणीयें जी२काइ, शिवानदा तस नार॥सु०॥४॥ पंच विषय सुख जोगवेजी२ कांइ,माने वहुजन वाय॥इम करतां बहुज दिन गयाजी२कांइ,कोइक अवसरमाय॥सु०॥५॥ दुतिपलाश नामें जलो जी२कांइ,चैत्य मनोहर जाण ॥ समोसखा जगगुरु तिहांजी२काइ, जगनायक जगजाण ॥सु० ॥ ६ ॥ नृप सुणी वंदण गयो जी २ कांइ, आणद श्रावक ताम ॥ पाय विहारें संचस्था जी२ कांइ, जेट्या त्रिभुवन स्वाम ॥ सु० ॥

नि० ॥ ८ ॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कह्युं, फुल्ज लागे रे सो
थ ॥ कुर्कट चूगिया रे इम उच्चारतां, हिंसा पातक होय ॥ नि०॥
॥९॥ देख्यो अदेख्यो रे कांइ न बोलणो, निश्चय कियो अणगार
मौनज पकडी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणाभंमार ॥ नि०
॥ १० ॥ मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इण
ना भेदमें थइ चोरी सही, पुछे वारं वार ॥नि० ॥ ११ ॥ मारे थपे
टा रे कहे वलि चोर तुं, किम नहि बोले रे साच ॥ मुनिवर क्षमा
रे धारी तन मनें, बोले नहि मुख वाच ॥ नि०॥१२॥ तिम तिम
अधिको रे सो क्रोधें भर्यो, सोचे ए अति धिठ ॥ कूट्या विण रस ए
देवे नहि, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १३ ॥ मुनि कर पकडी
रे ले गयो वाडामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बांध्या रे ता
वडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १४ ॥ लोचन उट
कीरे बाहिर नीकल्यां,तड तड तूटी रे नाड ॥ मुनिवर थिर मन द
ढ करी राखियुं, जेम सुदर्शन पहाड ॥ नि० ॥ १५ ॥ केवल पा
ई रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव वजावे रे दुं
दुभि गगनमें, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १६ ॥ तिणसमे मोली
रे एक कठियारडे, नाखी धमकसु ताम ॥ बिटज कीनी रे कुर्कटन
यवज्रों, जव पडिया तिण ठाम ॥नि०॥१७॥ सोनी देखी रे थर थर ध्रु
जीयो, कीधो महोटो अकाज ॥ में मूढभावें रे निरअपराधिया,
घात करी रिखराज ॥नि०॥ १८॥ राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे,
करशे कुटुंब सहार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो संज
म भार ॥ नि० ॥ १९ ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा,
पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मो
क्ष मझार ॥ नि० ॥ २० ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, न
वविध ब्रह्मचर्यधार ॥ नव पुरवधर नव सवर करी, पाया भवज
लपार ॥ नि० ॥ २१ ॥ एहवा मुनिवर क्षमासागरु, तस गुण

वाहण आठ ॥ उपनोग परिनोग व्रतकी विधि, कहुं जिम सूत्र पाठ हो ॥ज०॥७॥ स्नान कीया पीछें अंग लूवणनो, रातो वस्त्र जाण ॥ दातण कारण आलुं जेठीमध, अवरवीर आमलफल ठाण हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ शतपाक हजार औषधको, तेलमर्दन ने काज ॥ सुगध सहित गोधूमकी पीठी, ए उवट्टणां साज हो ॥ ज० ॥ ए ॥ आठ लोटी प्रमाण घडो एक, स्नान करणने नीर ॥ क्षौमयुगल कपासको निपनो, राख्यो उढण चीर हो ॥ ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ अगर कुंकुम वावनाचदन, विलेपन मरजाद ॥ धोलो कमल मालती कुसुम, सुंघणो नहि तस वाद हो ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ कुंमल अने नामाकत मुद्रा, राख्यां आनरण दोय ॥ अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ घृत तैल तव्या तंदूल पह्नुवा, डधकी रावडी जाण ॥ पेज विधि परिमाण कह्यो ए, उपरतका पच्चक्खाण हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ घृत पूरित घेवर मन गमतां, खाम्म खाजां आगार ॥ कमल साल तंदुल उपरत सब, उदनको परिहार हो ॥ ज० ॥१४॥ मूग उडद मसूर ए तीनु, उपरंत त्यागी दाल॥ नितको निपज्यो घृतशरद ऋतु ते, प्रातसन्ध्याको काल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ तिण वेलाको घृत जिण राख्यो, उपरांत को कियो त्याग ॥ अगथीयो स्वस्तिक रायमोमी, उंर नहिं खाणो साग हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ आमलरस युत पालक सालणो, अवर तणो सब त्याग ॥ मूग दालका वडां कचोरी, उपरंत नहि अनुराग हो॥ज०॥१७॥ टाकाको नीर सो पीणो राख्यो, जे ल्यो जेह आकाश॥ कंकोल जायफल लविंग एलायची, कपूर ए पंच मुखवास हो ॥ ज० ॥१८॥ चार अनरथा दमका सोगन, इम अष्टम व्रत धार ॥ शक्ति मुजब शिक्षा व्रत चारु, हरि हर देव परिहार हो ॥ ज० ॥१ए॥ ज्ञानका चौदे पंच समकितका, पंच्योत्तर व्रत बार ॥ पांच सलेषणा ए सवि टालुं, नन्याणु अतिचार हो ॥ज०॥२१॥

॥ ७ ॥ प्रभुजी दी उपदेशना जी२कांइ, यो संसार असार ॥ तब न जोवन कारिमो जी२ कांइ, कारिमो सहु परिवार ॥ सु० ॥ ८॥ ए जीव आयो एकलो जी२ कांइ, परजव एकलो जाय ॥ समद् करो जी२ कांइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥सु०॥ए॥ इत्यादिक उपदेशना जी२ कांइ, प्रथम ढाल मझार ॥ तिलोकरिख कहे आगलें जी२ कांइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु०॥ १० ॥इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आणद सुणि देशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्रभु ताहरी, यह ससार असार ॥ १ ॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, लेवे संजम जार ॥ मुऊ शक्ति ए छे नही, आदरशुं व्रत बार ॥ २ ॥ प्रभु कहे जिम सुख तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी सांजलो, सूत्र तणे अणुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ या रस शेलडी, आदिजिणद कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम व्रतमें धारीयो जी कांइ, त्रस प्राणी जगमांय ॥ जाणी प्रीछी निर अपराधी, सो सब हणवा नांय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आणंदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दूजो व्रत थूल मुषावादको, नूकन्या पशु काज ॥ कूड न बोलुं छलुं न थापण, नहि लुं जोले व्याज हो ॥ ज० ॥२॥ त्रीजो यूल अदत्त निवारुं, खात्र खणी गांठ छोड॥॥ पडछी देइ न करु चोरी, त्यागुं विरुद्ध जे खोड हो ॥ज०॥३॥ चोथो थूल मेहुण व्रतमें, सेवानदा निज नार ॥ वर्जीने त्यागी सकल कांइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पंचमो इछा परिमाणे, चार क्रोड नूमांय ॥ चार कोडि घरवखरी राखी, एतोही व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार धेनुका राख्या, से तू वहु जाण ॥ पाचसें हलकी सख्या धरणी, गाडा गाडी सहस्र प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार मोटी चार छोटी जहाजां, राख्यां

ध चितवी, कांइ ज्येष्ठपुत्र घरजार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कां इ कोल्लागनाम सनिवेशों, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ कोल्लाग सन्निवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे पोषधशाला मजार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परठेव ण नूमिका, वली कीनो दर्जसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली जां रख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणंदश्रु, कांइ प्रथम पडिमा म जार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वदे नहिं कोइ अन्य जणी, कांइ डै ठम्मी परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अ धिकाइ बारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें शुद्ध सामा यिक हो चित्त लाई पाले शुद्धपणे, कांइ बत्तिस दोष निवार ॥ आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चउदश ने आठम पूर्णिमा, काइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥७ ॥ पंचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोजा वली, कांइ दिवसें अब्रह्म निवार ॥ जे जाणे जोजन आवे हो नहिं खावे आप मगायने, करे काउस्सग्ग पोषा मजार ॥ आ०॥ ८ ॥ ठठी पडिमा सेवे हो नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी प्रति मा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, काइ नहिं करे सचित्त आहार ॥ आ० ॥ए॥ आठमीमें आरंज ठम्मे हो ते मम्मे प्रीति ठ कायसु,काइ तेविशके जागे विचार ॥ नवमीमें इम जांखे हो नहिं राखे दासी दासने, काइ पोतें काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ द शमी डुकरकारी हो निज अरथें जोजन जे कस्यो, कांइ ते वरजे निरधार ॥ शिरपर मुंम करावे हो पयंपे जापा दो जली, कांइ सत्य अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥अग्यारमी पडिमा सेवे हो नहिं सेवे आश्रवद्वारने, काइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच क रावे हो फरमावे डु साधू नहिं, कांइ जेख मुनिनो धार ॥ आ० ॥

पार्श्वसतानीया गोशालकमें,जिम ते मिलीया जाय॥तिम अन्य तीर्थ ग्रहिया साधु, तिणने द्व वड नाय हो॥ज०॥२१॥वतलाउं नहिं पहेलं वपति,धर्मबुद्धि सुविचार ॥ चार आहार नहि देउ तिणने, छ छकी आगार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ समण निर्ग्रंथने देउ सुफतो, चउदे प्र कारनु दान ॥ इम व्रतधारी प्रभुने वदी, आव्या ते निज थान हो॥ ज० ॥ २३ ॥ निजपत्नीसुं कहे प्रभु पासें, में धार्या व्रत बार ॥ तुमें पण जाइ करो प्रभु वदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज० ॥२४॥ कंत वचन सुणी रथमें बेठी, वाद्या श्री जगदीश ॥ तिण पण श्रावक व्रतज धार्यु, पूरी मनह जगीश हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ छै छै पोसा करे मासमें, नव तत्त्वका जाण ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वारे व्रत पाले भला,चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ चितवे, धारे शरणा चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एक विश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतियां, करता धर्म उदार ॥ २ ॥ पंदरमु वर्ष वर्तता, एक दिन आधी रात ॥ जागरणा करे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज भलो दिन उग्योजी, सीमधर स्वामीने वदसां ॥ ए देशी ॥ आणदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी,कांइ भवजल तारण हार ॥ वाणिय ग्रामपुरमाइ हो प्रभुताइ गवी माहरी, कांइ बहु नरने आधार ॥ मुझ पर ममत सवाइ हो समरथाइ नहि माहरी, काइ हु कर सजम भार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब थावे दिन उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने,कांइ बुलाइ निज परिवार ॥ सब ण सजन जीमाइ हो समलाइ कामज घर तणा, कांइ धारणी व हिमा ग्यार ॥ आ०॥ २ ॥ घइ दिनकर उगाई हो कराई सहु वि

ध चितवी, काइ ज्येष्ठपुत्र घरनार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कां
इ कोलागनाम सनिवेशें, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥
कोलाग सन्निवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे
पोषधशाला मकार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परठेव
ण नूमिका, वली कीनो दर्नसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली नां
ख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणदशुं, कांइ प्रथम पडिमा म
जार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वदे नहिं कोइ अन्य नणी,
कांइ ठे ठंनी परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अ
धिकाइ बारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें शुद्ध सामा
यिक हो चित्त लाई पाले शुद्धपणे, कांइ बत्तिस दोष निवार ॥
आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चयदश ने आठम पूर्णिमा,
कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते
शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥७॥ पंचमी
पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोना वली, कांइ दिवसें अब्रह्म
निवार ॥ जे नाणे नोजन आवे हो नहिं खावे आप मगायने,
करे काउस्सग्ग पोषा मकार ॥ आ०॥ ८ ॥ उठी पडिमा लेवे हो
नहिं सेवे ते कुशीलनें, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी प्रति
मा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, काइ नहिं करे सचित्त
आहार ॥ आ० ॥ए॥ आठमीमें आरंन ठंमे हो ते मंमे प्रीति ठ
कायसु, काइ तेविशके नागे विचार ॥ नवमीमें इम नांखे हो नहि
राखे दासी दासने, काइ पोतें काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ द
शमी उ करकारी हो निज अरथें नोजन जे कस्यो, काइ ते वरजे
निरधार ॥ शिरपर मुंमन करावे हो पर्यंपे नाषा गोचली, काइ सत्य
अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ अग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं
सेवे आश्रवद्वारने, कांइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच क
रावे हो फरमावे हुं साधू नहिं, काइ नेख मुनिनो धार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकांतर हो कांइ बुजी पडिमा वो मासवी कांइ छठ छठ तपस्या धार ॥ त्रीजी तिन मासमें तेलां हो चोथी ते चारज मासनी, कांइ चोले चोले आहार ॥ आ०॥१३॥ एक एक मास वधावे हो वढावे तप इम एमही, कांइ इम पडिमा अग्या र॥ करता सुके सुके हो लूखो अंग पडियो तदा, कांइ तन थयो पिंजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ श्रावक सो विचारे हो नहिं सारे मा हरी देहडी, कांइ शक्ति नहिं लगार ॥ आलोवि निंदी आतम हो नि शल्य थया शूरापणे, कांइ प्रणमी जगकिरतार ॥आ०॥ १५ ॥ पाप अगरा त्यागे हो काइ वली जागे मोहनी निवर्से, कांइ पा गे सवरद्वार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो कांइ त्यागे चारी आहा रनें, कांइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निश्चल मन थापी हो तिण कापी ममता जालनें, कांइ धास्यो अणसण ता र ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहि काची जाची जावमें, कांइ सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर आणदजी, विशुद्ध लेश्या शुभध्यान ॥ ज्ञा नावरणी क्षयोपशमे, उपन्नु अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण समु द्रमें, पंचसे योजन जाण ॥ एतोही दक्षिण पश्चिमें, उत्तर हिमवत प्रमाण ॥ २ ॥ जाणे देखे ऊपरें, परथम सर्ग विचार ॥ नीचें आ णे रत्नप्रभा, स्थित चोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कीधा रे कर्म न छूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमारग जिनराज नो, भवडुख भजणहार लाल रे ॥ रिपुगजण हग अजणो, शिव पदनो दातार लाल रें ॥ न्या० ॥१ ॥ तिणकालें तिण अवसरें, स मोसस्या जगदीश लाल रे ॥ गौतम छठ्ठतप पारणो, प्रभुने नमा यो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुज छठ्ठतप पारणो, जो

तुम आज्ञा थाय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विषे, गोचरी जा
ऊ चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुह प्रभुजी कह्यो, गौत
मजी तिण वार लाल रे॥आज्ञा लेइने सचखा,जोवतां ईर्याविहार
लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां सांजल्यो, आणंद अणसण
लीध लाल रे ॥ चिंतवे हुं देखुं जई, इम निश्चे मन कीध लाल रे
॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोषधशाला तिहां आविया, देखी आणंद सोय
लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥
न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहिं प्रभु माहरी, आवणरी तुम पास लाल
रे ॥ उरहा पधारो नाथजी, मानो मुऊ अरदास लाल रे ॥ न्या०
॥ ७ ॥ चरणपें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पू
छे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मऊार लाल रे ॥ न्या० ॥ ८ ॥
गौतम सुणि हामी नणी, तव सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुऊ प
ण अवधि उपनो, कह्यो उणदिशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ए ॥
इम निसुणी गोयम वदे, उंहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एत्तो
दीर्घ न उपजे, ए निश्चे वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥
ए स्थानक तुमें आलवो, ल्यो तप प्रायश्चित्त अंगीकार लाल रे ॥
तव आणंद वलता कहे, प्रभु सांजलो मुऊ समाचार लाल रे ॥
न्या० ॥ ११ ॥ सत्य उतां यथाजाव ते, कहेतां नहिं दोष लगार
लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शंका पडी तिण वार ला
ल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आई पूछे प्रभुखुं तदा, आणंद कह्यो जे
विचार लाल रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे, थें लो प्रायश्चित्त तप
सार लाल रे ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय खमावो तिण प्रत्यें, इम सां
जली गौतम वाय लाल रे ॥ प्रायश्चित्त लीनो प्रभु कने, खमावाने
गया उमाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १४ ॥ वीश वर्ष श्रावकपणो, धारी
पडिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कह्यो, सौधर्मक
ल्प मऊार लाल रे ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतंसक विमानथी,

कूण ईशाणने मांय लाल रे ॥ अरुणविमानमें ऊपना, चार पल्यो
पम आय लाल रे ॥ न्या० ॥ १६ ॥ सुख नोगवी त्यांथकी
चवी, महाविदेहक्षेत्र मझार लाल रे ॥ संजम ले करणी करी,
में करी सहु ठार लाल रे ॥ न्या० ॥ १७ ॥ केवलज्ञान लेई करी,
जावसी मुगतिनी मांय लाल रे ॥ अजर अमर सुख शाश्वतां, वे
सी सुख सवाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १८ ॥ संवत उंगणीशें गुण
चालीसे, पोष कृष्ण बुधवार लाल रे ॥ त्रीज तिथि दिन रूयडो,
दक्षिणदेश विचार लाल रे ॥ न्या० ॥ १९ ॥ सहेर सतारो प्रसिद्ध
ठे, पेठ नवानी वखाण लाल रे ॥ जोड्यो चोढालियो चूंपशुं, सात
मा अग प्रमाण लाल रे ॥ न्या० ॥ २० ॥ अधिको उंगे जोड्यो
हुवे, ते मिच्छामि डुक्कड मोय लाल रे ॥ तिलोकरिख कहे सुणि धा
रसी, तस शिव सपत होय लाल रे ॥ न्या० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ कामदेव श्रावकनु चोढालीयु प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचारजी, उवझाया मुनिराज ॥ प्रणमुं स
तगुरु देवजी, पूरो वंछितकाज ॥ १ ॥ सातमे अगें जाणीयें,
जा अध्ययन मझार ॥ कामदेव श्रावक तणो, चाल्यो ठे अधिका
र ॥ २ ॥ तस अनुसारें वर्णवु, किंचित तास समास ॥ सुणो श्रो
ता छुद्धनावथी, समकित रत्न उजास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ घोडा देश कमोदना ॥ ए देशी ॥ तिण कालें तिण अवसरें,
चपानगरी मझारो जी ॥ जितशत्रु तिहां राजवी, प्रजा नणी सु
खकारो जी ॥ १ ॥ धन्य श्रावक जे शुन्नमति, कामदेव गाथाप
ति जाणो जी॥ ठकोडी द्रव्य धरणी विषे, ठकोडी व्याज वखाणो
जी ॥ध०॥२॥ ठकोडी घर वखरी अठे,ठ गोकुल वर्गे ठे तासो जी॥

नड़ा घरणी जाणीयें, नोगवे नोग उल्लासो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ अवररिद्धि आणद परें, दाखी छे सूत्रके मांइ जी ॥ तिणकाले तिण अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर विचरता, चपानगरी मझारो जी ॥ वीरजिणद समोसस्या, करवा परउपगारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वांदवा, कामदेव पायविहारो जी ॥ वदी वेग प्रन्नु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रन्नु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥ जो आराधे नावच्चुं, उतरे नवजलपारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ कामदेव सुणि हरखीया, कहे सत्य वेण छे थारो जी॥ संयमनी शक्ति नहिं, धरावो व्रत बारो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ आणदनी पेरें जाणीयें, धन उपरत पच्चरकाणो जी ॥ त्याग कस्या शुद्ध नावशु, बारा व्रत परिमाणो जी॥ध०॥ए॥ सेवानंदा तिम नड़ायें, धार्या व्रत रसालो जी ॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, ए थइ परथम ढालो जी॥ध०॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक नला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउद वर्ष इम वीतियां, पन्नरमा वर्ष मझार ॥ १ ॥ जागरणा आणद जिम, ज्येष्ठ पुत्र घरन्नार ॥ देईने धारी तदा, पडिमा शुद्ध इग्यार ॥ २ ॥ एक दिन पोपधशालमें, पोपध लीनो नाव ॥ धर्मध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेंद्र सौधर्मपति, बेठा सन्ना मझार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख जयणा करी बोलीयो, नरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुप निश्चलमति, कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धिक तेरा जीवड़ा न करता धरमकु ॥ ए देशी ॥ निश्चल श्रद्धा समकित व्रतमांइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न स

के चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन ति
ण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सुर
तिणवारें, सुण कर सो मनमांहे विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको
कीडो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक छिनमें देउं चलाइ ॥ नि० ॥
॥ ५ ॥ एसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चला
इ ॥ नि० ॥६॥ महत पिशाचको रूप बणायो, महा विरूप नयंक
रकायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शिश बनायो, शूकर सरि
खा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो,
तालीकी पूंछ ज्यु भ्रमु विकरालो ॥ नि०॥९॥ बाहिर ऊटक्या नेत्र
का मोला,सूपडा सरिखा कान कुमोला ॥ नि०॥ १० ॥ गागर जि
म चपटी तस नासा, फालीया सरखा दतस त्रासा ॥ नि० ॥
॥ ११ ॥ लटके ऊट सा होठ कुरगी, जिह्वा कतरणी जेम विरंगी
॥ नि० ॥ १२ ॥ खध कख्या मृदंग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों
हियो नयंकारो ॥ नि०॥ १३ ॥ भुजा बीभत्स शिला सी हथेली,
खल बतासी अगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४॥ सीपपुडसा तस न
ख विस्तारो, नाइपेटी समथण नयनारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढीलो
ढे सधी बंध सरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥
कार्कीडा उदराकी तनमाला,कुंभल नोलका अति विकराला ॥ नि०
॥१७॥ वत्तरासणभुजगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करंतो
॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण खाम्रो कर सायो, पोषधशाला
तिहा चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो का
लो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ऽर्हनो कामदेव श्राब तुं,मृत्युनो वञ्छणहार ॥ खोटा लक्षण ताहरां,
हिरिसिरिवर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य सर्ग मोक्षनो,तु अछे वंछणहार॥
कल्पे नहिं तुझ खमवा, शीलादिक व्रत चार ॥ २ ॥ पण हु आज

जंजावच्युं, पोषधादिक व्रत जेह ॥ नहि तो येही खड्गथुं, खंम खंम करुं देह ॥ ३ ॥ आरत रौद्र ध्यानवश, मरसी आज जरूर ॥ एक दोय तिन वार ते, वोले वेण करूर ॥४॥ वयण सुणी इम तेहनां, म रिया नही लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सूरिजन सांजलजो सव कोय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस मिस थको कांइ, त्रिशूल निलाडें चडाय ॥ तीक्ष्ण पाठणा धार सो कांइ, खड्गथुं खम्मे काय ॥ जविकजन धन धन साहस धीर ॥ १ ॥ वजलीवेदना कपनी कांइ, कहेतां न आवे पार ॥ के तो जाणे आतमा कांइ, के तो जाणे किरतार ॥ ज० ॥ २ ॥ त्रास नहिं एक रोममें कांइ, राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव सोचे तदा कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए खम्मे मुज कायनें काइ, मुज समकित व्रतवार ॥ खंमवा समरथ ठे नहिं कांइ, जो आवे देव हजार ॥ ज० ॥ ४ ॥ थाक्यो देव तिण अवसरें कांइ, जोर न चाल्युं लगार ॥ पोषधशालाथी नीकली कांइ, पिशाचको रूप निवार ॥ ज० ॥ ५ ॥ सत्त अंग लागे धरणीथुं कांइ, धाव्यो तिणें गजरूप ॥ अंजनगिरिनी ऊपमा कांइ, दीसे महा विरूप ॥ ज० ॥ ६ ॥ पोषधशालामें आयीने कांइ, तीन वार वली जेह ॥ वोल्यो वचन पहेली तणा काइ, रंच मस्या नहिं तेह ॥ ज० ॥ ७ ॥ क्रोधातुर महा सुंढमें कांइ, पोषधशालानी वहार ॥ उगाल्या आकाशमें कांइ, तीक्ष्ण दंत मऊार ॥ ज० ॥ ८ ॥ जालीने निज पगतलें काइ, जोलव्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणें अनुजवी कांइ, च लिया नहीअ लगार ॥ ज० ॥ए॥ हस्तिरूप ठोडी करी कांइ, सर्प वण्यो जयंकार ॥ लाल नेत्र मशीपुंज सो कांइ, करतो फूंफूकार ॥ ज० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्या काइ, अणवोल्या रह्या सोय ॥ निश्चलपणु जाणी करी काइ, क्रोधातुर अति होय ॥ ज० ॥ ११ ॥

के चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन धि
ण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सु
तिणवारें, सुण कर सो मनमांहे विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अमक
कीडो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक छिनमें देउं चलाइ ॥ नि० ।
॥ ५ ॥ एसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चल
इ ॥ नि० ॥६॥ महत पिशाचको रूप बणायो, महा विरूप नयंक
रकायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शिश बनायो, शूकर सरि
खा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो,
तालीकी पूंछ ज्युं भ्रमु विकरालो ॥ नि०॥ए॥ बाहिर छटक्या नेत्र
का मोला,सूपडा सरिखा कान कुमोला ॥ नि०॥ १० ॥ गाभर जि
म चपटी तस नासा, फालीया सरखा दतस त्रासा ॥ नि० ॥
॥ ११ ॥ लटके उट सा होठ कुरंगी, जिह्वा कतरणी जेम विर्चंगी
॥ नि० ॥ १२ ॥ खंध कखा मृदग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों
हियो नयंकारो ॥ नि०॥ १३ ॥ भुजा बीनत्स शिला सी हथेली,
खल वतासी अंगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुडसा तस न
ख विस्तारो, नाइ पेटी समथण नयनारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढीलो
ढे सधी बध सरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥
कार्कीडा उदराकी तनमाला,कुम्ल नोलका अति विकराला ॥ नि०
॥१७॥ छत्तरासणभुजंगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करंतो
॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण खांभो कर सायो, पोषधशाला
तिहां चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो का
लो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ऽहनो कामदेव श्राद्ध तु,मृत्युनो वंछणहार ॥ खोटा लक्षण नाहरां,
हिरिसिरिवर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य सर्ग मोक्षनो,तु अढे वछणहार॥
कल्पे नहिं तुज खमवा, शीलादिक व्रत धार ॥ २ ॥ पण हुं आज

चन करियां सहु, श्रमणादिक राखी उपयोग रे लाला ॥का०॥६॥
प्रश्न उत्तर नगवतने, पूछी सहु गया निजगेह रे लाला ॥ श्राणंद
जिम पडिमा वही, अंते गयो अणसण तेह रे लाला ॥का०॥७॥
एकमास संलेषणा,प्रथम सरग मकार रे लाला ॥ अरुणान विमा
नें उपना, थिति राखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८॥ च
विने विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला ॥ संजम
ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मकार रे लाला ॥का०॥ए ॥ सं
त उंगणीशें गुणचालीशमें,पोषवदि चोथ तिथि जाण रे लाला ॥ दे
दक्षिण कोंकन विषे, शहेर सतारो वखाण रे लाला ॥का०॥१०॥
तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायथी, चोढालीयु रच्युं सुखकार रे लाला ॥
नणसी गुणसी शुद्ध सरधसी, तस होवसी खेवा पार रे लाला
॥ का० ॥ ११ ॥ इति कामदेव श्रावकनुं चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ एषणासमितिनुं चोढालीयुं प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धरम मंगल उत्कृष्ट छे, संयम तपस्या मांय ॥ प्रणमे सुर नर
इंदने, सदा धर्म चित्त चहाय ॥१॥ जिम मधुकर कुसुम नणी, छुःख
नहिं देवे लगार ॥ रस ले तृप्त करे आत्मा, तिम जाणो अणगार ॥२॥
तप संजम प्रतिपालवा, नाडो देत शरीर ॥ दोष बश्यालीस टा
लिने, आहार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ निन निन वर्णन तासको, कहुं
सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो नवियण तुमें, आलस उंघ निवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ त्रीजी समिति
एषणा नामें, नाखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें, शि
वसुख गरजी माह्या ॥ नोला श्रावक दोष लगावे, मुनिवर जाणे तो
नट जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधू कारण कीनो, असणादिक

तीन वींटा दिया कंठमें कांइ,विष सहित ह्या मांय ॥ मंक कियो तिजोरसुं कांइ, तो पण चलिया नांय ॥न०॥१२॥ थाको ते वे देवतां कांइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी कांइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ न० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप छोडी करी, निजरूप दिव्य ते धार ॥ कानें कुंमल ऊ गमगे, सजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रजा करतो थको, कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोडिने वीनवे, लुल लुल वारं वार ॥ २ ॥ धन्यपुण्यकृत लक्षणा, सफल तुऊ अवतार ॥ इंद्रें करी प्रशासना, सौधर्मसज्ञामऊार ॥ ३ ॥ में मिथ्यात्वतणे वशें, सत्य न मानी वाय ॥ धर्म ढिगावण कारणें, दीयो परिसह आय ॥४॥ खमजो मुऊ अपराध थें, नहि करुं दूजी वार ॥ इम जखुंता करी देव ते, सचयो सर्गमऊार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ मोने वालो लागे विठीयो ॥ ए देशी ॥ हांरे लाला तिणकालें तिण अवसरें, समोसस्या वीर जिनंद रे लाला ॥ कामदेव सुणि धारीयो,पारणो करुं प्रजु पेली वंद रे लाला ॥१॥ कामदेव श्रावक सिरें,जिणें पहेस्या सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रजु प्रणम्या शुद्ध जाव छुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का०॥ २ ॥ प्रजु दीनी उप देशना, द्वादश परिषदाने मऊार रे लाला ॥ कहे कामदेवथकी त वा, आजे आधी रात मऊार रें लाला ॥का०॥३॥ तीन उपसर्ग दे वें दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथ छे के नहि, सो दाखे हंता छे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गौतमादिक साधु साधवी, आमंत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्था श्रमें परिसह सह्या, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥५॥ द्वादश अंग नणीया तुमें, परिसह सहेवा जोग रे लाला ॥ तहत्ति व

जी॥विण मिलीयां मुखडो कुमलावे,जिम राजानो गयो राजजी॥सो०॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें,बोले भिखारी जेम जी ॥ विणिमग दोष कह्यो जगदीशें,आहार मिल्या चितहेम जी ॥ सो०॥४॥ उंपध भेपज केरें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिछा दोष कह्यो जगदीशें, निपजे महोटो अकाज जी ॥ सो० ॥ ५ ॥ क्रोधें भर्यो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हाणी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुज लार जी ॥सो०॥६॥ तुम दातार उदार भलेरा, उर नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो तो कुण देशे, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध दहीदिक वढना मनमें, मुखसुं मांगे ठास जी ॥ दाखे सीराविक पातरामांही, भापा बदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार सरस अधिको ते वहोरे,लोभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासु अधिको मिलशे, लोभ दोष ए उदार जी ॥सो०॥९॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछो, वडाइ दोष दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आहार खुशामत, मत्र जंत्र करि छेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बुटी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुकन शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख छुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आहारलोभथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विहवाकारण गर्भ गळावे, मूलकरम एह दोष जी ॥ आहार लोलुपी करम करे ईम, पाप तणो करे पोष जी ॥ सो० ॥१३ ॥ ए सोला दोषसो लागे साधुथी, सजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख कहे दोष निवार्या, लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा, दोष कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन कठिया, टाळे विशवा वीश ॥१॥ गृहस्थघरे गोचरी गया, दश वली

चव आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोष विचा रो ॥ नोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीनें, करे सो जाणो ॥ सुजतामांही सीत मिले सो, पूईकरम वखाणो ॥ ॥३॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथें, नेलो करि निपजावे ॥ कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ नोला० ॥ ४ ॥ अवराने रख दइने, थापे मुनिवर काजें ॥ पाहुणा आघा पाछाने ते, आहारी रिख साजे ॥ नोला० ॥५॥ अंधाराथी करे उजवालो, वली वेचातो लावे ॥ उधारो मांगीने देवे, बदलो कर पलटावे ॥ नो० ॥६॥ रिखजी काजें घरथी आणे, छांदो उघाडी देवे ॥ अबके ग में चढीने आपे, चढे गाम तले देवे ॥ नोला० ॥७॥ निबला पा सथी सबलो खोसे, अछिन्न दोस ते कहीयें ॥ सबकी पातीमें एकज देवे, अणिसिठ दोष ते लहीयें ॥नोला०॥८॥ आंधणमांही अधि को उरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी को छदो हे जामें ॥नोला०॥९॥ असुझतो आहार वेरावे जो कोइ, ढंढो आउखो पावे ॥ सूत्र नगवती तथा ठाणागें, श्रीजिनवर दर सावे॥नो०॥१०॥ देवावालो झहेरको दाता,तिणसु अधिको जाणो॥ तिलोकरिख कहे सूझतो देवो,पावो पद निर्वाणो ॥ नोला०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
निन्न निन्नवर्णन करु, सुणजो सब नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ बाल रमावे चित्र बतावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥१॥ सोला दोप गुणीजन टाले, पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय सजम साधो, पावो वास वि शुद्ध जी॥सो०॥२॥ जात जणावे गोत बतावे, आहार लेवणने काज

जी॥विण मिलीयां मुखडो कुमलावे,जिम राजानो गयो राजजी॥सो०
॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें,बोले भिखारी जेम जी ॥ विणिम
गदोष कह्यो जगदीशें,आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो०॥४॥ उप
ध भेषज केरें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिछा दोष
कह्यो जगदीशें, निपजे महोटो अकाज जी ॥ सो० ॥ ५ ॥ क्रोधें
नर्यो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हा
णी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुज लार जी ॥सो०॥६॥
तुम दातार वदार जलेरा, उंर नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो
तो कुण देशे, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध द
हीदिक वहना मनमें, मुखसुं मांगे ठास जी ॥ दाखे सीरादिक
पातरामांही, नाषा वदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार स
रस अधिको ते वहोरे,लोन्न जणावे दातार जी ॥ दान दियासुं अधि
को मिलशे, लोन्न दोप ए जहार जी ॥सो०॥९॥ वहोरतां पहेली
अथवा पाछो, वडाइ दोप दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक,
इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आ
हार खुशामत, मन्त्र जन्त्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बु
टी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुकन
शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आ
हारलोनथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विहवा
कारण गर्न्न गलावे, मूलकरम एह दोप जी ॥ आहार लोलुपी
करम करे ईम, पाप तणो करे पोप जी ॥ सो० ॥१३ ॥ ए सोला
दोपसो लागे साधुथी, संजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख क
हे दोप निवास्या, लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा, दोप कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन
कठिया, टाले विशवा वीश ॥१॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया, दश वली

चउ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोष वि
रो ॥ जोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीनें, करे सो उदेशि
जाणो ॥ सुजतामांही मीत मिले सो, पुईकरम वखाणो ॥ जो
॥३॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथे, जेलो करि निपजावे ॥ मिश्रदो
कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ जोला० ॥ ४ ॥ अवराने अं
रथ दइने, थापे मुनिवर काजें ॥ पाहुणा आघा पाछने ते,सरस
आहारी रिख साजे ॥ जोला० ॥५॥ अधाराथी करे उजवालो, व
स्ती वेचातो लावे ॥ उधारो मांगीने देवे, बदलो कर पलटावे ॥ जो०
॥६॥ रिखजी काजें घरथी आणे, छांदो उघाडी देवे ॥ अबके ग
में चडीने आपे, चढे गाम तले ठेवे ॥ जोला० ॥७॥ निबला पा
सथी सबलो खोसे,अछिन्न दोस ते कहीयें ॥ सबकी पातीमें एकज
देवे, अणिसिठ दोष ते लहीयें ॥जोला०॥८॥ आंधणमांही अधि
को उरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी
को छंदो हे जामें ॥जोला०॥९॥ असुझतो आहार वेरावे जो कोइ,
उंछो आवखो पावे ॥ सूत्र जगवती तथा ठाणांगें, श्रीजिनवर दर
सावे॥जो०॥१०॥ देवावालो फहेरको दाता,तिणसुं अधिको जाणो॥
तिलोकरिख कहे सूझतो देवो,पावो पद निर्वाणो ॥ जोला०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
भिन्न भिन्नवर्णन करु, सुणजो सब नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ बाल रमावे
चित्र बतावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा
सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥१॥ सोला दोष गुणीजन टाले,
पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय संजम साधो, पावो वास वि
शुद्ध जी॥सो०॥२॥ जात जणावे गोत बतावे, आहार लेवणने काज

अणगम तो करे च सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जावें, ताजा ताजा माल जावे ॥ नीरसने वहोरे रे न, ांइ,वण रह्यां कुदोलाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने लाज न आवे ॥ मिलियाळुं शोना रे करतो, अणमिलीया पर निंदा उच्चरतो ॥ ए०॥ ३ ॥ नांम ज्युं कहीयें रे तेहने, परजव खटको रच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया लागस को ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण विनातो स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे नगे, वली आशाता अति वपजत अगें ॥ ए० ॥ ६ ॥ नोजन आयो रे नातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ सवडका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो वजावे ॥ ए०॥ ७ ॥ रम मशालो रे नारी, वघारी धुगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, वण घरे जावणो विशवाविशे ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता प्रशसा रे करतो,दिन अ्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाहज रे लागे, अंगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ए॥ आहारज नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचा लूणज रे नाइ, वडनारी ए नही उमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखथी रे खोटो, पाछे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना अहारज रे खावे, पंचमो दोप ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मऋलदूषण रे पाची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें बत्तिस रे साले, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशाले ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूपण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूपण रे सेवे, ते तो नवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ उनु दूपण रे सारा, टाले सो धनधन अणगारा ॥ इण नव शोना रे नारी, आगें अजर अमर सुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, नांख्यो श्रीजगवत ॥ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ जावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष
जना, एताह्नी उतपातो जी ॥ उर कोइ दूषण तणी, शंका
कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥
...सरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारनें, शंका
...णो जी॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुलादिक अ
...॥ चोटी पटा माढी मूठमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥
तो० ॥ ३ ॥ सचित्त इव्य नीचें धस्यो, उपर इव्य अचेतो जी ॥
अचेत उपर सचित्त धस्यो, गृहस्थी सो इव्य देतो जी ॥तो०॥४॥
लूण खडी जल सचित्तछं, गाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें
सो लावे आहारने, एहवो जाजन जोवे जी ॥तो०॥ ५ ॥ दातार
अधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति न
ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं प
रगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाउबी पुंखडा आदि रे,
गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आं
गणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिन
वर फरमावे जी ॥ तो० ॥८॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो
जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें,दोषण तेणो विचारो जी॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष बश्यालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच मां
मला उपरें,दोष करे परिहार ॥१॥ ते सुणजो सुगुणा रखी,रसना
वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वतां,सर्वसिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नां
इ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे

अणगम तो करे [illegible] सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी, ताकी रे जावे, ताजा ताजा माल लावे ॥ नीरसने वहोरे रे नांइ,वण रह्यां कुटोलाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने लाज न आवे ॥ मिलियाशुं शोजा रे करतो, अणमिलीया पर निंदा उच्चरतो ॥ ए०॥ ३ ॥ नांम ज्यु कहीयें रे तेहने, परजव खटको रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया लागसीको ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण विनातो स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे जंगे, वली आशाता अति उपजत अगें ॥ ए० ॥ ६ ॥ जोजन आयो रे जातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ लबडका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो बजावे ॥ ए०॥ ७ ॥ गरम मशालो रे जारी, वघारी धुगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, उण घरे जावणो विशवाविशे ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता प्रशंसा रे करतो,दिन उग्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाहज रे लागे, अगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥९॥ आहारज नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां लूणज रे नाइ, बडनारी ए नही उमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखशुं रे खोटो, पाछे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना अहारज रे खावे, पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मण्डलदूषण रे पांची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें उत्तिस रे साले, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशाले ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूषण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूषण रे सेवे, ते तो जवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ उत्तु दूषण रे सारा, टाले सो धनधन अणगारा ॥ इण जव शोजा रे जारी, आगें अप्र अमर सुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, नांख्यो श्रीनगवत ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष नना, एताही उतपातो जी ॥ जंर कोइ दूषण तणी, शंका कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ ...सरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शंका अनिप्राय ...णो जी॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुलादिक ग... ॥ चोटी पटा फाढी मूबमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥ तो० ॥ ३ ॥ सचित्त द्रव्य नीचें धस्यो, उपर द्रव्य अचेतो जी ॥ अचेत उपर सचित्त धस्यो, गृहस्थी सो द्रव्य देतो जी ॥तो०॥४॥ लूण खडी जल सचित्तसु, गाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें सो लावे आहारने, एहवो नाजन जोवे जी ॥तो०॥ ५ ॥ दातार अधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति नही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाउंबी पुखडा आद है, गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आंगणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिनवर फरमावे जी ॥ तो० ॥८॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें,दोषण तेणो विचारो जी॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष बइयालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच मांमला उपरें,दोष करे परिहार ॥१॥ ते सुणजो सुगुणा रखी,रसना वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वतां,सर्वसिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नांइ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ रानी गमतो रे

अणगम तो करे ...च सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी, ...ै, ताजा ताजा माल्ज लावे ॥ नीरसने वहोरे रे न... कुदोलाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धा... लाज न आवे ॥ मिलियाछुं शोना रे करतो, अणमिलीया ... दा उच्चरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ नांफ ज्यु कहीयें रे तेहने, परलग ... रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया लागरी ... को ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण विनातो स्वाद न, कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध संजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दाबी चांपीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे भंगे, वली आशाता अति उपजत अंगे ॥ ए० ॥ ६ ॥ भोजन आयो रे भातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ सबडका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो वजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥ गरम मशालो रे भारी, वघारी धुंगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी ना रीरे दीसे, उण घरें जावणो विशवाविशें ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता प्रशंसा रे करतो, दिन उग्यार्थी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाग ज रे लागे, अंगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ए॥ आहारज नी रसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां लूणज रे नां ह, वहनारी ए नही उमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखछुं रे खो टो, पाडे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना अहारज रे खावे, पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मफलदूषण रे पां ची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें उनिस रे साले, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूषण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूषण रे सेवे, ते तो भवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ उलु दूषण रे साग, टाले सो धनधन अणगारा ॥ इण भव शोभा रे भारी, आगें ... ग्र अमर सुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

टाले संत ॥ ते सुणजो श्रालस तजी, नांख्यो श्रीनगवत ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उ नना, एलादी ग्रतपातो जी ॥ उर कोइ दूषण तणी, शंका कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ ...सरका जाणो जी ॥ श्राप तथा दातारनें, शंका अनिप्राय ...णो जी ॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा श्राली होवे, अग्रुगधिक ग... ॥ चोटी पटा माढी मूछमें, श्रालो रहे कोइ जामो जी त... ॥ ३ ॥ सचित्त द्रव्य नीचें धस्यो, उपर द्रव्य अचेतो जी ॥ श्रचेत उपर सचित्त धस्यो, गृहस्थी सो द्रव्य देतो जी ॥तो०॥४॥ लूण खडी जल सचित्तसु, गम जो खरडियो होवे जी ॥ तिण सो लावे श्राहारने, एहवो नाजन जोवे जी ॥तो०॥ ५ ॥ दाता श्रंधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति ... ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं रगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाथंबी पुंखडा आद ... गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो अ गणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिन वर फरमावे जी ॥ तो० ॥८॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातार जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी॥ए

॥ दोहा ॥

॥ दोप वश्यालीस टालीने, श्राहार लावे श्रणगार ॥ पंच म मला उपरें, दोप करे परिहार ॥१॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसन वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वतां, सर्वसिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नां ६, स्वाद करण करे श्राहार उमाही ॥ राजी गमतो रे श्राग...

॥ अ ॥ विनयआराधनानुं चोढालीयुं प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम
वे आदरो, तूटें आठू कर्म ॥ १ ॥ विनय विना सोना म
दिना जिम नूर ॥ जीवविना जिम देहडी, शस्त्रविना
॥ २ ॥ नमसी सो सुख आपने, इणमें शंक न कोय ॥ का
तगाडु तोलीयें, नमे सो नारी होय ॥ ३ ॥ आंब आंबली
दिक, उत्तम वृक्ष नमंत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीयें, मध्यम
नरु अकडत ॥४॥ मात पिताथी अधिकता, गुरुउपगार अपार
टालो अशातना सर्वथें, जो तरणो संसार ॥ ५ ॥ धर्मगुरु
वीसरो, पल पल गुण करो याद ॥ सुगुणा जन सुणजो तमें,
गुण अगम अनाद ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥पास जिनेश्वर रे स्वामी॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे नावें,
क्षमार्ग गुरु विना नहि पावे ॥ गुरु गुण सागर रे दरिया,
करण रत्नागर जरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ मोति जेसा मेला रे
यें, सक्कर सरिखा खारा मनश्यें ॥सुमेरु ज्युं समजो रे न्हाना,
मता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा
केसरीसिंह जेम कायर कहेवा ॥ गुणधर जेहवा रे विरागि,
रूपखी जिम परमावी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरुजेहवा रे
वैश्रमण जेहवा मुनि सो थुणीया ॥ क्रोधी पूरा रे दीसे, टाले
जे कर्म शत्रु अरिसें ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम उण्णता रे जाणो,
प्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्री
जेहवा लोजी विख्याता ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम उपशम रे करणी,
करे गुरुदेव सदा जगतरणी ॥ जवजल तारक रे वाणी, वे